शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : ग्यारहवीं

व्यावसायिक अध्ययन

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. रीता शर्मा
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभास कुमार	श्रीमती सुनीता दुआ	श्री राजकुमार	श्री कृष्ण कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में राजेश कुमार, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसेट, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

Message

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself", I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of Schools and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

MESSAGE

> "A good education is a foundation for a better future."
> - Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating the latest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph.: 23890185

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमिक समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई. के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन पाठ्य सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को **:**

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**
व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022–2023)

व्यावसायिक अध्ययन

कक्षा : ग्यारहवीं

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

LIST OF GROUP LEADER AND SUBJECT EXPERTS FOR PREPARATION/REVIEW OF SUPPORT MATERIAL

CLASS-XI

S.No.	*Subject*	*Subject Expert*	*Designation*	*School*
1.	Business Studies	Ms. Neeru Prabhakar	Vice-Principal	SKV No. 1, Keshawpuram
2.		Ms. Jyoti Kaushik Mannan	Lecturer (Commerce)	SOE, Sec-23, Rohini
3.		Ms. Anuradha Bose	Lecturer (Commerce)	RPVV, B-Block, Yamuna Vihar
4.		Mr. Mahesh Jain	Lecturer (Commerce)	RPVV, Sec-10, Dwarka
5.		Ms. Lucky Solanki	Lecturer (Commerce)	SKV, No.-1, Sarojini Nagar
6.		Ms. Anita Kardam	Lecturer (Commerce)	School of Excellence, Sec-22, Dwarka

BUSINESS STUDIES (Code No. 054)

Rationale

The courses in Business Studies and Accountancy are introduced at + 2 stage of Senior Secondary Education as formal commerce education is provided after first ten years of schooling. Therefore, it becomes necessary that instructions in these subjects are given in such a manner that students have a good understanding of the principles and practices bearing in business (trade and industry) as well as their relationship with the society.

Business is a dynamic process that brings together technology, natural resources and human initiative in a constantly changing global environment. To understand the framework in which a business operates, a detailed study of the organisation and management of business processes and its interaction with the environment is required. Globalisation has changed the way organizations transact their business.

Information Technology is becoming a part of business operations in more and more organisations. Computerised systems are fast replacing other systems. E-business and other related concepts are picking up fast which need to be emphasized in the curriculum.

The course in Business Studies prepares students to analyse, manage, evaluate and respond to changes which affect business. It provides a way of looking at and interacting with the business environment. It recognizes the fact that business influences and is influenced by social, political, legal and economic forces.

It allows students to appreciate that business is an integral component of society and develops an understanding of many social and ethical issues.

Therefore, to acquire basic knowledge of the business world, a course in Business Studies would be useful. It also informs students of a range of study and work options and bridges the gap between school and work.

Objectives:

- To inculcate business attitude and develop skills among students to pursue higher education, world of work including self employment;
- To Develop students with an understanding of the processes of business and its environment;
- To acquaint students with the dynamic nature and interdependent aspects of business;
- To develop an interest in the theory and practice of business, trade and industry;
- To familiarize students with theoretical foundations of the process of organizing and managing the operation of a business firm;
- To help students appreciate the economic and social significance of business activity and the social cost and benefits arising there from;
- To acquaint students with the practice of managing the operations and resources of business;
- To enable students to act more effectively and responsibility as consumers, employers, employees and citizens

BUSINESS STUDIES (Code No. 054)
CLASS–XI (2022-23)

Theory: 80 Marks **3 Hours**
Project: 20 Marks

Units		**Periods**	**Marks**
Part A	**Foundation of Business**		
1	Nature and Purpose of Business	18	16
2	Forms of Business organisations	24	14
3	Public, Private and Global Enterprises	18	10
4	Business Services	18	
5	Emerging Modes of Business	10	10
6	Social Responsibility of Business and Business Ethics	12	
	Total	**100**	**40**
Part B	**Finance and Trade**		
7	Sources of Business Finance	30	20
8	Small Business	16	
9	Internal Trade	30	20
10	International Business	14	
	Total	**90**	**40**
	Project Work (One)	**30**	**20**

Part A: Foundation of Business
Concept includes meaning and features

Unit 1: Evolution and Fundamentals of Business

Content	**After going through this unit, the student/learner would be able to:**
History of Trade and Commerce in India: Indigenous Banking System, Rise of Intermediaries, Transport, Trading Communities: Merchant Corporation, Major Trade Centres, Major Imports and Exports, Position of India Sub-Continent in the World Economy.	• To acquait the History of Trade and Commerce in India
Business–meaning and characteristics	• Understand the meaning of business with special reference to economic and non-economic activity. • Discuss the characteristics of business

Business, profession and employment-Concept	• Understand the concept of business, profession and employment. • Differentiate between business, profession and employment.
Objectives of business	• Appreciate the economic and social objectives of business. • Examine the role of profit in business.
Classification of business activities-Industry and Commerce	• Understand the broad categories of business activities- industry and commerce.
Industry-types: primary, secondary, tertiary Meaning and subgroups	• Describe the various types of industries.
Commerce-trade: (types-internal, external; wholesale and retail) and auxiliaries to trade; (banking, insurance, transportation, warehousing, communication, and advertising) - meaning	• Discuss the meaning of commerce, trade and auxiliaries to trade. • Discuss the meaning of different types of trade and auxiliaries to trade. • Examine the nature and causes of business risks.
Business risk-Concept	• Understand the concept of risk as a special characteristic of business. • Examine the nature and causes of business risks.

Unit 2: Forms of Businesss organizations

Sole Proprietorship-Concept, merits and limitations.	• List the different forms of business organizations and understand their meaning. • Identify and explain the concept, merits and limitations of Sole Proprietorship.
Partnership-Concept, types, merits and limitation of partnership, registration of a partnership firm, partnership deed. Types of partners	• Identify and explain the concept, merits and limitations of a Partnership firm. • Understand the types of partnership on the basis of duration and on the basis of liability. • State the need for registration of a partnership firm. • Discuss types of partners-active, sleeping, secret, nominal and partner by estoppel.

Hindu Undivided Family Business: Concept	- Understand the concept of Hindu Undivided Family Business.
Cooperative Societies-Concept, merits, and limitations.	- Identify and explain the concept, merits and limitations of Cooperative Societies. - Understand the concept of consumers, producers, marketing, farmers, credit and housing co-operatives.
Company - Concept, merits and limitations, Types: Private, Public and One Person Company - Concept	- Identify and explain the concept, merits and limitations of private and public companies. - Understand the meaning of one person company. - Distinguish between a private company and a public company.
Formation of company - Stages, important documents to be used in formation of a compnay	- Highlight the stages in the formation of a company. - Discuss the important documents used in the various stages in the formation of a company.
Choice of form of business organization	- Distinguish between the various forms of business organizations. - Explain the factors that influence the choice of a suitable form of business organization.

Unit 3: Public, Private and Multinational Company

Public sector and private secotr enterprises—Concept	- Develop an understanding of Public sector and private sector enterprises
Forms of public sector enterprises: Departmental Undertaking, Statutory Corporation and Government Company	- Identify and explain the features, merits and limitations of different forms of public sector enterprises
Multinational Company — Features. Joint concept	- Develop an understanding of multinational company, joint ventures and public private partnership by studying their meaning and features.

Unit 4: Business Services

Business services — meaning and types. Banking: Types of bank account-savings, current, recurring, fixed deposit and multiple option deposit account	- Understand the meaning and types of business services. - Discuss the meaning and types of Business service Banking - Develop an understanding of different types of bank account

Banking Services with particular reference to Bank Draft, Bank Overdraft, Cash credit. E-Banking meaning, Types of digital payments	• Develop an understanding of the different services provided by banks
Insurance — Principles. Types – life, health fire and marine insurance – concept	• Recall the concept of insurance • Understand Utmost Good Faith, Insurable Interest, Indemnity, Contribution, Doctrine of Subrogation and Causa Proxima as principles of insurance • Discuss the meaning of different types of insurance-life, health, fire, marine insurance.
Postal Services - Mail, Registered Post, Parcel, Speed Post, Courier - meaning	• Understand the utility of different telecom services

Unit 5: Emerging Modes of Business

E - business: concept, scope and benefits	• Give the meaning of e-business. • Discuss the scope of e-business. • Appreciate the benefits of e-business • Distinguish e-business form traditional business.
Business Process Outsourcing (BPO) Concept, need and scope	• Understand the concept of outsourcing. • Examine the scope of outsourcing appreciate the need of outsourcing. • Discuss the meaning of Business Process Outsourcing and Knowledge Process Outsourcing

Unit 6: Social Responsibility of Business and Business Ethics

Concept of social responsibility	• State the concept of social responsibility.
Case of social responsibility	• Examine the case for social responsibility.
Responsibility towards owners, investors, consumers, employees, government and community.	• identify the social responsibility towards different interest groups.
Role of business in environment protection	• Appreciate the role of business in environment protection.
Business Ethics - Concept and Elements	• State the concept of business ethics. • Describe the elements of business ethics.

Part B: Finance and Trade

Unit 7: Sources of Business Finance

Concept of business finance	• State the meaning, nature and importance of business finance
Owners funds- equity shares, preference share, retained earnings, Global Depository receipt (GDR), American Depository Receipts (ADR) and International Depository Receipt (IDR) - concept	• Classify the various sources of funds into owner's funds • State the meaning of owners' funds. • Understand the meaning of Global Depository receipts, American Depository Receipts and International Depository Receipts.
Borrowed funds: debentures and bonds, loans from financial institutions and commercial banks, public deposits, trade credit, Inter Corporate Deposits (ICD)	• State the meaning of borrowed funds. • Discuss the concept of debentures, bonds, loans from financial institutions and commercial banks, Trade credit and inter corporate deposits. • Distinguish between owner's funds and borrowed funds.

Unit 8: Small Busines and Enterprises

Entrepreneurship Development (ED): Concept, Characteristics and Need. Process of Entrepreneurship Development: Startup. Intellectual Property Rights and Entrepreneurship	• Understand the concept of Entrepreneurship Development (AND), Intellectual Property Rights
Small scale enterprise and defined by MSMED Act 2006 (Micro, Small and Medium Enterprises Development Act)	• Understand the meaning of small business
Role of small business in India with special reference to rural areas	• Discuss the role of small business in India
Government schemes and agencies for small scale industries: National Small Industries Corporation (NSIC) and District Industries Centre (DIC) with special reference to rural, backward areas	• Appreciate the various Government schemes and agencies for development of small scale Industries. NSIC and DIC with special reference to rural, backward area

Unit 9: Internal Trade

Internal trade - meaning and types services rendered by a wholesaler and a retailer	• State the meaning and types of internal trade. • Appreciate the services of wholesalers and retailers.
Types of retail-trade-itinerant and small scale fixed shop retailers	• Explain the different types of retail trade.
Large scale retailers-Departmental store, chain store-concept	• Highlight the distinctive features of departmental store, chain stores and mail order business.
GST (Goods and Services Tax): Concept and key-features	• Understand the concept of GST

Unit 10: International Trade

International trade: concept and benefits	• Understand the concept of international trade. • Describe the scope of international trade to the nation and business firms.
Export Trade - Meaning and procedure	• State the meaning and objectives of export trade. • Explain the important steps involved in executing export trade.
Import Trade - Meaning and procedure	• State the meaning and objectives of import trade. • Discuss the important steps involved in executing import trade.
Documents involved in international Trade; indent, letter of credit, shipping order, shipping bill, mate's receipt (DA/DP)	• Develop an understanding of the various documents used in international trade. • Identify the specimen of the various documents used in international trade. • Highlight the importance of the documents needed in connection with international trade transactions
World Trade Organization (WTO) meaning objectives	• State the meaning of World Trade Organization. • Discuss the objectives of World Trade Organization in promoting international trade.

Unite 11 : Project Work

As per CBSE guidelines.

Suggested Question Paper Design
Business Studies (Code No. 054)
Class XI (2022-23)
March 2022 Examination

Marks:80 **Duration: 3 hrs.**

SN	Typology of Questions	Marks	Percentage
1	**Remembering and Understanding:** Exhibit memory of previously learned material by recalling facts, terms, basic concepts, and answers. Demonstrate understanding of facts and ideas by organizing, comparing, translating, interpreting, giving descriptions, and stating main ideas	44	55%
2	**Applying:** Solve problems to new situations by applying acquired knowledge, facts, techniques and rules in a different way.	19	23.75%
3	**Analysing, Evaluating and Creating:** Examine and break information into parts by identifying motives or causes. Make inferences and find evidence to support generalization. Present and defend opinion by making judgments about information, validity of ideas, or quality of work bases on a set of criteria. Compile information together in a different way by combining elements in a new pattern for proposing alternative solutions	17	21.25%
	Total	**80**	**100%**

PROJECT WORK IN BUSINESS STUDIES FOR CLASS XI AND XII

Introduction

The course in Business Studies is introduced at Senior School level to provide studi with a sound understanding of the principles and practices bearing in business (trade and industry) as well as their relationship with the society. Business is a came process that brings together technology, natural resources and human initiate in a constantly changing global environment. With the purpose to help them understand the framework within which a business operates, and its interaction with the social economic technological and legal environment, the CBSE has introduced Project Work in the Business Studies Syllabus for Classes Xi and XII. The projects have been designed to allow students to appreciate that business is an integral component of society and help them develop an understanding of the social and ethical issues concerning them

The project work also aims to empower the teacher to relate all the concepts with what is happening around the world and the student's surroundings, making them appear mors clear and contextual. This will enable the student to enjoy studios and use his free time effectively in observing what's happening around

By means of Project Work the students are exposed to life beyond textbooks giving them opportunities to refer materials, gather information, analyze it further to obtain relevant information and decide what matter to keep

Objectives

After doing the Project Work in Business Studies, the students will be able to do the following:

- develop a practical approach by using modern technologies in the field of business and management;
- gel an opportunity for exposure to the operational environment in the fold of business management and related services;
- inculcate important skills of team work problem solving, time management information collection processing analysing and synthesizing relevant information to derive meaningful conclusions;
- get involved in the process of research work, demonstrate his or her capablis while working independently and
- make studies an enjoyable experience to cherish

CLASS XI: GUIDELINES FOR TEACHERS

This section provides some basic guidelines for the teachers to launch the projects in Business Studies. It is very necessary to interact, support, guide, facilitate and encourage students while assigning projects to them

The teachers must ensure that the project work assigned to the students wheiner individually or in group are discussed at different stages night from assignment to drafts review and finalization. Students should be facilitated in terms of providing relevant materials or suggesting webtes, or obtaining require permission from houses, mas ele for the project The periods assigned to the Pet Workout to suitably spaced throughout the academic session The teachers MUST students actually go through the rigors and enjoy the process of doing the predo than depending on any readymade material available communally

The following steps might be followed:

1. Students must take any one lepic during the academic session of Class XI.
2. The project may be done in a group or individually.
3. The topic should be assigned after discussion with the students in the cas should then be discussed at every stage of submission of the drama projec work.
4. The teacher should play the role of a facilitator and should closely supervise process of project completion.
5. The teachers must ensure that the student's self esteem should go up, and he fshe should be able to enjoy this process.
6. The project work for each term should culminate in the form of Powite Pors Presentation/Exhibition/Skit before the entire class. This wil help in developing ICT and communication skills among them

The teacher should help students to identify any one project from the given topics.

I. Project One: Field Visit

The objective of introducing this project among the students is to give a frat hand expenence to them regarding the different types of business units operating in the surroundings, to observe ineir features and activities and relate them to the theoretical knowledge given in the text books. The students should select a place of field visit from the following-(Add more as per local area availability.)

1. Visit to a Handicraft unil
2. Visit to an Industry
3. Visit to a Whole sale market (vegetables, fruits, flowers, grains, garments, etc
4. Visit to a Departmental state
5. Visit to a Mall.

The following points should be kept in mind while preparing this visit.

1. Select a suitable day free from rush/crowd with lean business hours
2. The leacher must visit the place first and check out on logistics. It's better to permission from the concerned business-incharge.
3. Visit to be discussed with the students in advance. They should be encouraged to prepare a workshool containing points of observation and reporting.
4. Students may carry their cameras (al their own risk) with prior permission for collecting evidence of their observations

1. Visit to a Handicraft Unit

The purpose of visiting a Handicrall unit is to understand nature and scope of its business, stake holders involved and other aspects as outlined below

a) The raw material and the processes used in the business People parties firms from which they obtain their raw material.

b) The market, the buyers, the middlemen, and the areas covered,

c) The countries to which exports are made.

d) Mode of payment to workers, suppliers etc

e) Working conditions

f) Modemization of the process over a period of time.

g) Facilities, security and training for the staff and workers.

h) Subsidies available/ availed.

i) Any other aspect that the teachers deem fit.

2. Visit to an Industry.

The students are required to observe the following:

a) Nature of the business organisation.

b) Determinants for location of business unit

c) Form of business enterprise: Sole Proprietorship, Partnership, Undivided Hindu Family, Jont Stock Company (a Mullinational Company).

d) Different stages of production/process

e) Auxiliaries involved in the process.

f) Workers employed, method of wage payment training programmes and facilities available.

g) Social responsibilities discharged towards workers, investors, society, environment and government.

h) Levels of management

i) Code of conduct for employers and employees.

j) Capital structure employed-borrowed vis owned.

k) Quality control, recycling of defective goods.

l) Subsidies available/availed.

m) Safety Measures employed.

n) Working conditions for labour in observation of Labour Laws.

o) Storage of raw material and finished goods.

p) Transport management for employees, raw material and finished goods.

q) Functioning of various departments and coordination among them (Production, Human Resource, Finance and Markeling)

r) Waste Management

s) Any other observation.

3. Visit to a whole sale market vegetables/fruits/flowers/grains/garments etc

The students are required to observe the following:

a) Sources of merchandise

b) Local market practices.

c) Any linked up businesses like transporters, packagers, money lenders, agents, etc.

d) Nature of the goods dealt in.

e) Types of buyers and sellers.

f) Mode of the goods dispersed, minimum quantity sold, types of packaging employed

g) Factors determining the price fluctuations

h) Seasonal factors (if any) affecting the business

i) Weekly/monthly non working days.

j) Strikes, if any causes there of

k) Mode of payments.

l) Wastage and disposal of dead stock.

m) Nature of price fluctuations; reason thereof

n) Warehousing facilities availabletavailed

o) Any other aspect

4. Visit to a Departmental store

The students are required to observe the following:

a) Different departments and their lay out.

b) Nature of products offered for sale.

c) Display of frosh arrivals

d) Promotional campaigns

e) Spaces and advertisements

f) Assistance by Sales Personnel

g) Billing counter at store Cash, Credit Card Debit Card, swipe facility Added attractions and facilition at the counter.

h) Additional facilities offered to customers

i) Any other relevant aspect.

5. Visit to a Mall

The students are required to observe the following:

a) Number of floors, shops occupied and unoccupied

b) Nature of shops, their ownership status

c) Nature of goods dealt in: local brands international brands

d) Service business shops- Spas, gym, saloons etc.

e) Rented spaces, owned spaces,

f) Different types of promotional schemes.

g) Most visited shops.

h) Special attractions of the Mall- Food court, Gaming zona or Cinema etc.

i) Innovative facilites.

j) Parking facilities. Teachers may add more to the list.

II. Project Two: Case Study on a Product

a) Take a product naving seasonal growth and regular demand with which students can relate For example.

- Apples from Himachal Pradesh, Kashmir.
- Oranges from Nagpur
- Mangoes from Maharashtra/ U.P./ Bihar/ Andhra Pradesh etc
- Strawberries from Panchgani
- Aloe vera from Rajasthan.
- Walnuts/almonds from Kashmir.
- Jackfrull from South,
- Guavas from Allahabad,

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं.
1.	व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य	1
2.	व्यावसायिक संगठन के प्रारूप	27
3.	सार्वजनिक निजी व भूमंडलीय उपक्रम	62
4	व्यावसायिक सेवाऐं	75
5.	ई-बिजनेस एवं सेवाओं का बाह्यकरण	99
6.	व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता	110
7.	व्यावसायिक वित्त के स्रोत	120
8.	लघु व्यवसाय और उपक्रम, उद्यमिता विकास	138
9.	आंतरिक व्यापार	158
10.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	179
	अभ्यास प्रश्न पत्र-II	202
	उत्तरमाला	210

अध्याय-1

व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य

1. वाणिज्य एवं व्यवसाय का इतिहास

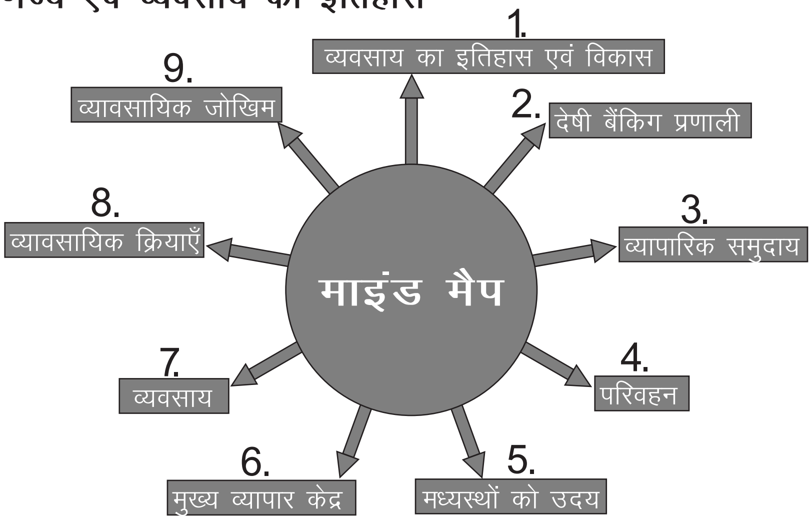
माइंड मैप
1. व्यवसाय का इतिहास एवं विकास
2. देषी बैंकिग प्रणाली
3. व्यापारिक समुदाय
4. परिवहन
5. मध्यस्थों को उदय
6. मुख्य व्यापार केद्र
7. व्यवसाय
8. व्यावसायिक क्रियाएँ
9. व्यावसायिक जोखिम

1. व्यवसाय का इतिहास एवं विकास

प्राचीन समय से अर्थव्यवस्था की वृद्धि में व्यापार तथा वाणिज्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उदाहरण के लिए 3000 ई. पू. भारतीय उपमहाद्वीप में हड्‌डपा और मोहनजोदड़ो व्यापारिक शहर थे। प्राचीन समय से ही भारतीय उपमहाद्वीप के भौतिक वातावरण ने अर्थव्यवस्था की दुनिया में भारत की मुख्य शक्ति के रूप में उभरने में सहायता की है। घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति में रेशम मार्ग (पूर्व और पश्चिमी देशों को जोड़ने वाला व्यापारिक मार्ग) का बहुत योगदान रहा।

व्यापार और वाणिज्य का फैलाव—

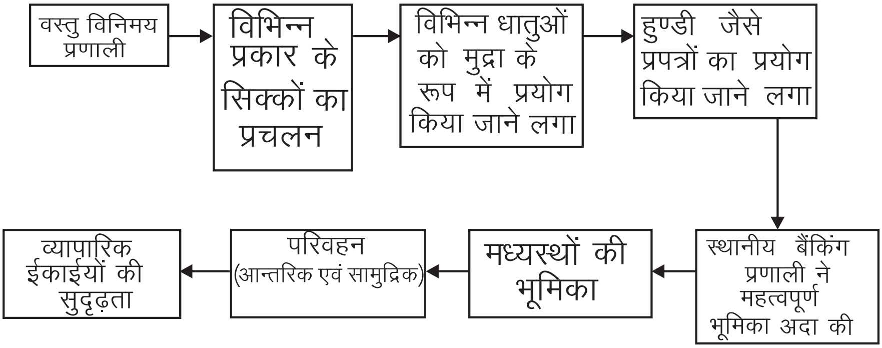
वस्तु विनिमय प्रणाली
विभिन्न प्रकार के सिक्कों का प्रचलन
विभिन्न धातुओं को मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाने लगा
हुण्डी जैसे प्रपत्रों का प्रयोग किया जाने लगा
स्थानीय बैंकिंग प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की
मध्यस्थों की भूमिका
परिवहन (आन्तरिक एवं सामुद्रिक)
व्यापारिक ईकाईयों की सुदृढ़ता

2 स्थानीय बैंकिंग प्रणाली–

- घरेलू और विदेशी व्यापार के लिए उधार देना तथा वित की व्यवस्था करना मुद्रा तथा साख पत्र (LOC) के रूप में।
- लोग अपनी बहुमूल्य धातुएँ साहूकारों जिन्हें सेठ कहते थे, के पास जमा कराने लगे।
- अतिरिक्त काल के उत्पादन के साथ निर्माण प्रक्रिया के लिए मुद्रा एक साधन बन गई।

हुण्डी : भारतीय उपमहाद्वीप में विनिमय का एक साधन/प्रपत्र था। यह एक अनुबंध होता था जो आश्वस्त करता था–

(i) शर्तरहित भुगतान का वचन।

(ii) वैद्य सौदेबाजी के हस्तातंरण द्वारा परिवर्तन योग्य।

भारतीय व्यापारी वर्ग द्वारा प्रयोग की जाने वाली हुण्डी

हुण्डी का नाम	वर्गीकरण	हुण्डी के कार्य
1. धनी–ज़ोग	दर्शनी	किसी भी व्यक्ति को देय–भुगतान प्राप्त करने वाले व्यक्ति का कोई उत्तरदायित्व नहीं।
2. सह–जोग	दर्शनी	सम्मानजनक विशिष्ट व्यक्ति को देय। भुगतान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पर उत्तरदायित्व।
3. फरमान–जोग	दर्शनी	हुण्डी आदेश पर देय।
4. देखन–हार	दर्शनी	वाहक/प्रस्तुतकर्ता को देय।
5. धनी–जोग	मुद्दती	किसी भी व्यक्त को देय–भुगतान प्राप्त करने वाले पर कोई उत्तरदायित्व नहीं। परन्तु निश्चित मद पर भुगतान।
6. फरमान–जोग	मुद्दती	हुण्डी विशेष मद पर आदेश पर देय।
7. जोखमी	मुद्दती	भेजे गए माल को विरूद्ध लिखी जाएगी। यदि माल रास्ते में खो जाए। नष्ट हो जाए तो हुण्डी लिखने वाला व्यक्ति सारी लागत वहन करेगा और प्राप्त करने वाले की कोई जिम्मेदारी नहीं।

3 व्यापारिक समुदाय—

देष के विभिन्न हिस्सों में, व्यापार पर विभिन्न समुदायों का वर्चस्व रहा।

(I) पंजाबी एवं मुल्तानी व्यापारी, देष के उत्तर भाग पर तथा 'भट्‌ट', गुजरात व राजस्थान राज्यों में व्यापारिक प्रबंध करते थे।

(ii) पष्चिमी भारत में, ये समुदाय 'महाजन' कहलाते।

(iii) षहरी केंद्रों जैसे अहमदाबाद आदि में महाजन समुदाय के लोगों का मुव्यिया 'नगरसेठ' कहलाता था।

(iv) दूसरे शहरों के समुदायों मे वैद्य, हकीम, वकील, पण्डित, मुल्ला (षिक्षक), चित्रकार, संगीतज्ञ, रचनाकार इत्यादि पेषायुक्त वर्ग भी थे।

(v) व्यापारी निगम बनाये गये। व्यापारियों ने सहकारी समितियों से शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त किए। सहकारी समितियों का गठन व्यापारियों की सहायता के लिए एक स्वायत निगम के रूप में किया गया था

4 परिवहन—

प्राचीन काल में, जल (समुद्र) एवं सड़क परिवहन लोकप्रिय थे।

5 मध्यस्थों का उदय—

- **दलाल, कमीशन एजेन्ट, वितरक—थोक व्यापारी व फुटकर व्यापारी**
  - — मध्यस्थ जोखिम का उत्तरदायित्व लेते हुए उत्पादकों को सुरक्षा प्रदान करते थे।
  - — व्यापारिक परिचालनों को बढ़ाने के लिए उधार लेनेदेन, ऋण एवं अग्रिमों की शुरूआत हुई।
- **परिवहन** :— प्राचीन समय में भूमि एवं जल परिवहन बहुत प्रसिद्ध था।
- **व्यापारी वर्ग की सुदृढ़ता—**
  - — देश के विभिन्न भागों विभिन्न व्यापारी वर्ग हावी थे—जैसे पंजाबी और मुलतानी उत्तर भारत में, भाटी गुजरात और राजस्थान में, महाजन पश्चिमी भारत में आदि।

— इन निगमों ने सदस्यता के लिए अपने नियम बनाए तथा पेशे के लिए आचार संहिता बनाई जिसको राजा भी स्वीकार करते थे और उसका सम्मान करते थे।

— सहकारी समिति का मुखिया प्रत्यक्ष रूप से कर एकत्रित करता था और सभी व्यापारियों की ओर से बाजार कर प्रमाणित करता था।

प्राचीन समय से एक अर्थव्यवस्था की वृद्धि में व्यापार तथा वाणिज्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उदाहरण के लिए 3000 ई. पू. भारतीय उपमहाद्वीप ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ों व्यापारिक शहर थे। प्राचीन समय से ही भारतीय उपमहाद्वीप के भौतिक वातावरण ने अर्थव्यवस्था की दुनिया में भारत को मुख्य शक्ति के रूप में उभरने में सहायता की है। घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति में रेशम मार्ग का बहुत योगदान रहा।

प्रश्न 1. हुण्डी क्या है?

प्रश्न 2. प्राचीन भारत में व्यापारी वर्ग के द्वारा विभिन्न प्रकार की हुण्डियों का प्रयोग कैसे किया जाता था?

प्रश्न 3. प्राचीन भारत के दो व्यापारिक शहरों के नाम बताइये।

प्रश्न 4. प्राचीन भारत में आयात व निर्यात की जाने वाली चार मुख्य वस्तुओं के नाम बताइये।

प्रश्न 5. ''प्राचीन समय में व्यापार और वाणिज्य के दृष्टिकोण से भारतीय उपमहाद्वीप सबसे अग्रणी रहा।'' क्या आप ऐसा सोचते हैं। क्यों?

प्रश्न 6. व्यापार और वाणिज्य को बढ़ाने में स्थानीय बैकिंग प्रणाली की क्या भूमिका थी?

प्रश्न 7. प्राचीन भारत के दो व्यापारिक वर्गों के नाम बताओ।

प्रश्न 8. जब ब्रिटिश भारत पर शासनकर रहे थे तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारतीय उपमहाद्वीप की स्थिति एक 'स्वर्णभूमि' के रूप में कैसे परिवर्तित हो गयी?

स्वतन्त्रता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत की गई। इन प्रयासों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विकास नहीं कर सकी। पूंजी निर्माण की कमी, जनसंख्या वृद्धि, सुरक्षा पर अत्यधिक खर्च तथा असन्तुलित आधारभूत ढ़ांचा मुख्य कारण थे।

अन्ततः 1991 में भारत आर्थिक उदारीकरण के लिए सहमत हुआ। इसके कारण आज भारत विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। ''डिजीटल इण्डिया'', ''मेक इन इण्डिया'', 'स्किल इण्डिया'' की शुरूआत से आयात और निर्यात के सन्दर्भ में अर्थव्यवस्था में सहायता होने की उम्मीद है।

विश्व अर्थव्यवस्था में भारतीय उपमहाद्वीप की स्थिति (प्रथम ई. से 1991)

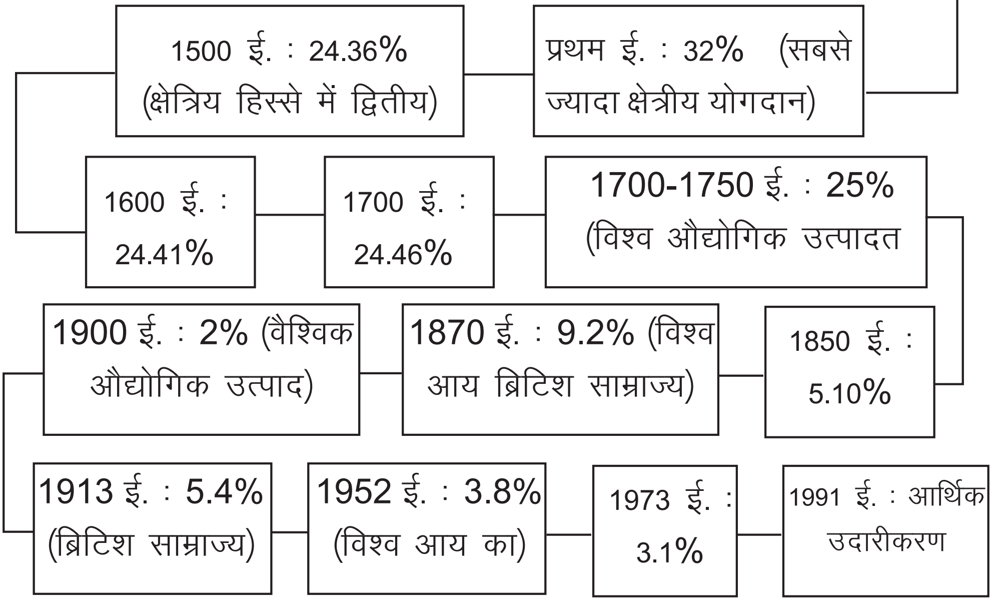
प्रथम ई. : 32% (सबसे ज्यादा क्षेत्रीय योगदान)
1500 ई. : 24.36% (क्षेत्रिय हिस्से में द्वितीय)
1600 ई. : 24.41%
1700 ई. : 24.46%
1700-1750 ई. : 25% (विश्व औद्योगिक उत्पादत
1850 ई. : 5.10%
1870 ई. : 9.2% (विश्व आय ब्रिटिश साम्राज्य)
1900 ई. : 2% (वैश्विक औद्योगिक उत्पाद)
1913 ई. : 5.4% (ब्रिटिश साम्राज्य)
1952 ई. : 3.8% (विश्व आय का)
1973 ई. : 3.1%
1991 ई. : आर्थिक उदारीकरण

Source: Angles maddison (2001 and 2003), the world economy: A millennial perspective, OECD

6 मुख्य व्यापार केन्द्रः

पाटलीपुत्र, पेशावर, तक्षशिला, इन्द्रप्रस्थ, मथुरा, वाराणसी, मिथिला, उज्जैन, सूरत काँची, मदुरै, भरुच, कोवरीपट्टा, ताम्रलिप्ति।

पाटलीपुत्र	–	रेशम व लकड़ी का काम
पेशावर	–	घोड़ों के आयात व ऊन का निर्यातक
तक्षशिला	–	वित्तीय वाणिज्यक शहर व विश्वविद्यालय
इन्द्रप्रस्थ	–	पूर्व, पश्चिम, दक्षिण व उत्तर में जाने वाले मार्गों का एकीकरण
मथुरा	–	मिट्टी के बर्त्तन व मूर्तिकला
वाराणसी	–	सोने चाँदी व रेशम से बुने वस्त्र

मिथिला	–	प्राकृतिक रंगों से बनी चित्रकला
उज्जैन	–	सुलेमानी व कार्नेलियन पत्थर व मलमल
सूरत काँची	–	सुनहरे जरी के बार्डर वाले कपड़े
मदुरै	–	मोती, गहने, फैन्सी कपड़े
भड़ौच (भरूच)	–	नर्मदा नदी पर स्थित महानतम व्यापारिक जंक्शन
कोवरीपट्टा	–	सौन्दर्य प्रसाधन, रेशम, इत्र, कपास
ताम्रलिप्ति	–	सबसे बड़े बन्दरगाहों में से एक

मुख्य आयात व निर्यात उत्पादः

निर्यातः मसाले, गेहूँ, चीनी, नील, अफीम, तिल का तेल, कपास, जानवर व जानवरों से बने उत्पाद।

आयातः घोड़े, जानवरों से बने उत्पाद, चीनी सिल्क, अलसी, लिनेन, सोना, चाँदी, टिन आदि।

आर्थिक और गैर आर्थिक क्रियाएं

सभी व्यक्तियों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएं होती है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मानव को विभिन्न क्रियाओं द्वारा धन कमाना पड़ता है। मानवीय क्रियाओं को दो भागों में बांटा गया है। आर्थिक और गैर आर्थिक क्रियाएं :–

आधार	**आर्थिक क्रियाएँ**	**गैर–आर्थिक क्रियाएँ**
अर्थ	आर्थिक क्रियाएँ जीविकोपार्जन के उद्देश्य से की जाती है।	अनार्थिक क्रियाएँ प्रेम, सहानुभूति, भावनाओं देशभक्ति आदि से प्रेरित होती है।
उद्देश्य	वे क्रियाएं जिनका मुख्य उद्देश्य धन कमाना होता है।	इन क्रियाओं का उद्देश्य लाभ व धन कमाना नहीं होती अपितु ये सामाजिक स्नेह व भावनाओं की आत्म संतुष्टि के लिए की जाती है।
उदाहरण	–लोगों का कारखानों में काम करना एक रेस्टोरेंट में खाना बनाना – एक अध्यापक द्वारा विद्यालय में पढ़ाना	–एक गृहिणी का अपने परिवार के लिए खाना बनाना । – एक अध्यापक द्वारा घर पर अपने बच्चों को पढ़ाना ।

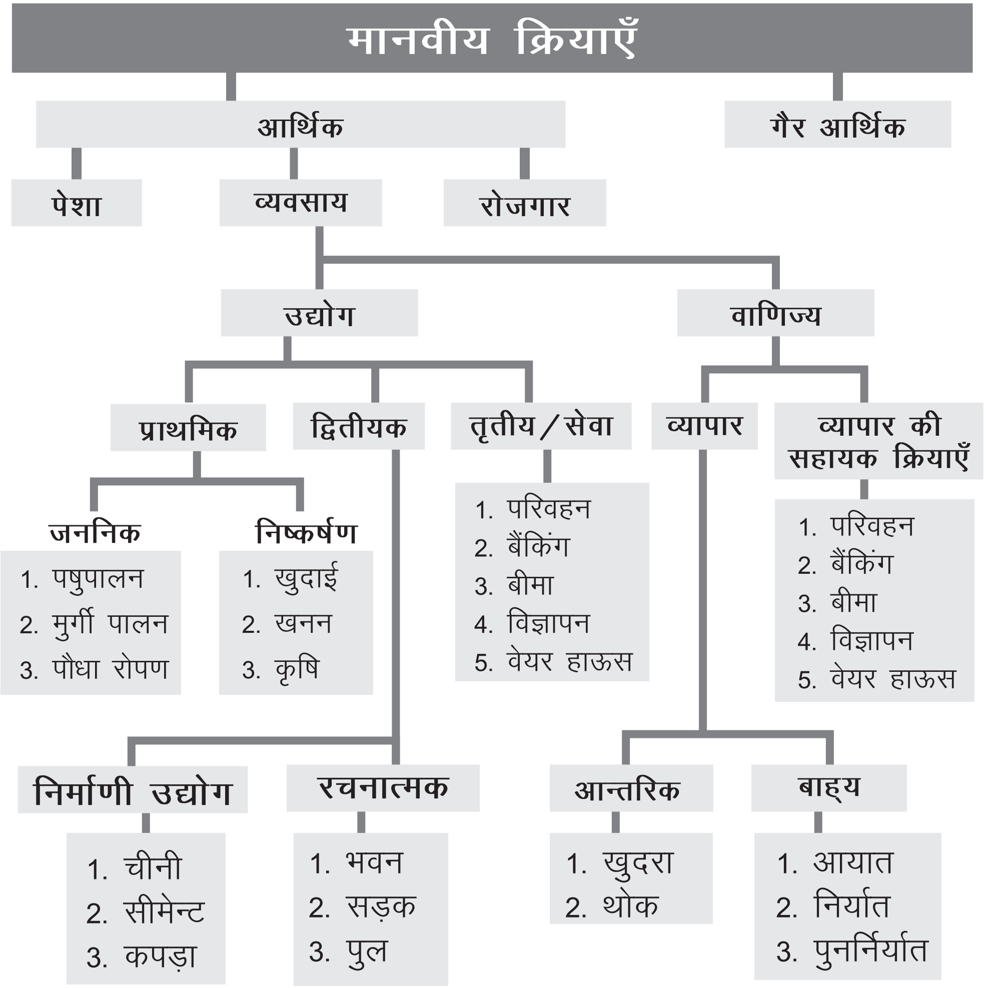
मानवीय क्रियाएँ
आर्थिक
गैर आर्थिक
पेशा
व्यवसाय
रोजगार
उद्योग
वाणिज्य
प्राथमिक
द्वितीयक
तृतीय/सेवा
व्यापार
व्यापार की सहायक क्रियाएँ
जननिक
1. पषुपालन
2. मुर्गी पालन
3. पौधा रोपण
निष्कर्षण
1. खुदाई
2. खनन
3. कृषि
1. परिवहन
2. बैंकिंग
3. बीमा
4. विज्ञापन
5. वेयर हाऊस
1. परिवहन
2. बैंकिंग
3. बीमा
4. विज्ञापन
5. वेयर हाऊस
निर्माणी उद्योग
1. चीनी
2. सीमेन्ट
3. कपड़ा
रचनात्मक
1. भवन
2. सड़क
3. पुल
आन्तरिक
1. खुदरा
2. थोक
बाह्य
1. आयात
2. निर्यात
3. पुनर्निर्यात

7. व्यवसाय का अर्थ –

व्यवसाय की अवधारणा– यह एक आर्थिक क्रिया है, इसका तात्पर्य वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन, क्रय, विक्रय अथवा बटवारा, लाभ कमाने के उद्देष्य की पूर्ति हेतु मानवीय आवष्यकताओं की संतुष्टि से है।

व्यवसाय की विशेषताएं–

1. **आर्थिक क्रिया** :– व्यवसाय एक प्रकार की आर्थिक क्रिया हैं जो धन अथवा आजीविका कमाने के लिए की जाती है।
2. **उत्पादन एवं वितरण** :– व्यवसाय में वे सभी क्रियाएं सम्मिलित हैं जो वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन अथवा वितरण से संबंधित होती है।
3. **वस्तुओं एवं सेवाओं का लेन–देन** :– व्यवसाय के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का लेन–देन अति आवश्यक है। जिन वस्तुओं का निर्माण किया गया है अथवा वे क्रय करके प्राप्त की गई है उन्हें बेचना व्यवसाय का सार है।
4. **नियमित लेन–देन** :– व्यवसाय में वस्तुओं व सेवाओं का क्रय–विक्रय नियमित या बार–बार होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो वह व्यवसाय नहीं कहलाता।
5. **लाभ कमाने का उद्देश्य** :– प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना होता है किसी भी व्यवसाय का कायम रहना उसकी लाभ कमाने की योग्यता पर निर्भर करता है। इसलिए व्यवसायकर्ता व्यवसाय का विक्रय की मात्रा बढ़ाकर या लागत कम करके अधिकतम लाभ कमाने का हर संभव प्रयास करता है।
6. **अनिश्चितता** :– व्यवसाय करने से लाभ होगा अथवा हानि इस संबंध में अनिश्चितता रहती है।
7. **जोखिम का तत्व** :– सभी व्यावसायिक क्रियाओं में कुछ जोखिम व अनिश्चितता का तत्व रहता है। ये जोखिम हड़ताल, आग, चोरी, उपभोक्ताओं की रूचि में बदलाव इत्यादि से संबंधित हो सकते हैं।

शिक्षक एवं साथियों से प्रश्न विवेचन–

प्र.1 प्रकाश एक किसान हैं जो बाजार जाकर चावलों के बदले में दालें लेकर आता है। क्या यह एक आर्थिक क्रिया है?

प्र.2 मोहन अपना पुराना टेबल OLX पर ₹4,000 में बेचता है। क्या यह व्यावसायिक क्रिया है? औचित्य सिद्ध करें।

प्र.3 ललिता एक गृहिणी है जो दो महीने पुराने अखबार और पुरानी किताबें ₹300 में कबाड़ी को बेचती है। क्या आप इस क्रिया को व्यावसायिक क्रिया कहेंगे और क्यों?

आर्थिक क्रियाएं

आधार	व्यवसाय	पेशा	व्यवसाय
1. अवधारणा	इसमें वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन धन कमाने के उद्देश्य से किया जाता है।	जब एक व्यक्ति विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करके समाज को अपनी सेवाएं देता है तथा बदले में पेशेवर फीस प्राप्त करता है।	यह एक ऐसी आर्थिक क्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के लिए कार्य करता है और बदलमें में मजदूरी, वेतन या परिश्रमिक प्राप्त करता है
2. उदाहरण	– व्यापार – इलैक्ट्रोनिक सामान की बिक्री – मछली पकड़ना – बैकिंग – परिवहन	– मेडिकल – कानूनी – चार्टड एकाउन्टेन्ट्स	– श्रमिक – प्रबन्धक – सेल्समैन

व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में तुलना

आधार	व्यवसाय	पेशा	रोजगार
1. प्रारंभ	व्यवसाय निर्णय द्वारा या कोई कानूनी कार्यवाही पूरी करके शुरू किया जाता है।	संबंधित अधिकारियों से प्रमाण पत्र लेकर प्रारंभ किया जाता है।	इसमें नियुक्ति पत्र प्राप्त करना पड़ता है।
2. कार्य की प्रकृति	इसमें वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन व लेन–देन आता है।	अपनी विशिष्ट सेवाओं को व्यक्तियों को प्रदान करना।	जो काम मालिक सौंप दे वहीं पूरा करना।
3. योग्यताएं	इसमें किसी औपचारिक योग्यता का होना जरूरी नहीं है।	औपचारिक योग्यता का होना जरूरी है।	मालिक द्वारा जो योग्यताएं निर्धारित की जाएं।
4. लाभ अथवा परिश्रमिक पूंजी निवेश	इसमें लाभ प्राप्त होता है।	पेशेवर फीस प्राप्त होती है।	मजदूरी या वेतन आदि प्राप्त होता है।
5. पूंजी निवेश	व्यवसाय के आकार एवं स्वरूप के अनुसार पूंजी की आवश्यकता होती है।	कार्यालय की स्थापना के लिए सीमित पूंजी की आवश्यकता।	पूंजी की आवश्यकता नहीं होती।
6. जोखिम	अधिक होता है।	कम होता है।	नहीं होता है।
7. आचार संहिता	नहीं होती।	आचार संहिता का पालन करना होता है।	स्वामी द्वारा बनाए गए नियम महत्वपूर्ण होते हैं।
8. हितहस्तांतरण	कुछ औपचारिकताओं के साथ संभव	संभव नहीं।	संभव नहीं ।

शिक्षक एवं साथियों के साथ प्रश्न विवेचन।

प्र.1 डॉ. हुसैन अपना स्वंय का चिकित्सालय चलाते हैं। उनकी आर्थिक गतिविधि को वर्गीकृत करें।

प्र. 2 रंजना की अपनी बेकरी की दुकान है। वह किस प्रकार की आर्थिक क्रिया कर रही है?

प्र.3 जॉन, रंजना की बेकरी में कार्यरत है। उसे महीने के ₹10,000 वेतन के रुप में मिलता है। वह किस प्रकार की क्रिया में कार्यरत है?

व्यवसाय के उद्देश्य :–

व्यवसाय के उद्देश्य से अभिप्राय उस प्रयोजन से है जिसके द्वारा व्यवसाय की स्थापना करी जाती है व उसे चलाया जाता है। सही उद्देश्य का चुनाव व्यवसाय की सफलता के लिए अनिवार्य है।

व्यवसाय के उद्देश्य बहुआयामी है। इन्हें मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है (1) आर्थिक उद्देश्य (2) सामाजिक उद्देश्य

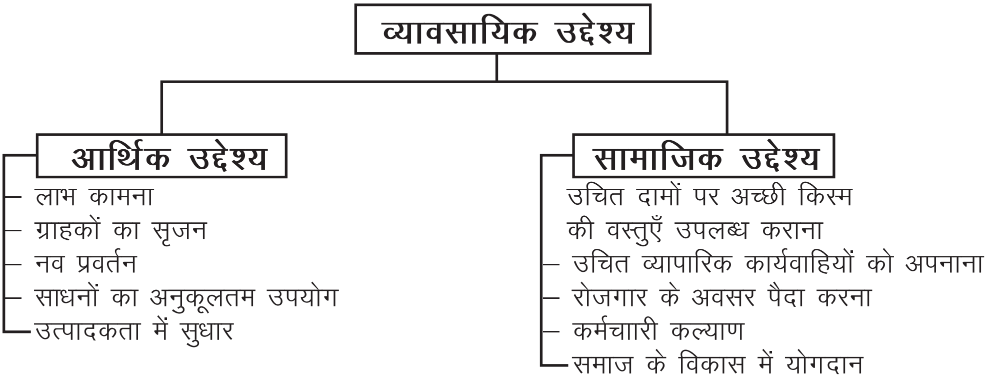
व्यावसायिक उद्देश्य
आर्थिक उद्देश्य
लाभ कामना
ग्राहकों का सृजन
नव प्रवर्तन
साधनों का अनुकूलतम उपयोग
उत्पादकता में सुधार
सामाजिक उद्देश्य
उचित दामों पर अच्छी किस्म की वस्तुएँ उपलब्ध कराना
उचित व्यापारिक कार्यवाहियों को अपनाना
रोजगार के अवसर पैदा करना
कर्मचाारी कल्याण
समाज के विकास में योगदान

1. आर्थिक उद्देश्य

व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्य निम्नलिखित है :–

(1) **लाभ कमाना** – आय के व्यय पर अधिक्य को लाभ कहते हैं। लाभ कमाना व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। यह केवल व्यवसाय के जीवित रहने के लिए ही आवश्यक नहीं है। अपितु उसके विकास और विस्तार के लिए भी आवश्यक हैं।

(2) **ग्राहकों का सृजन** – व्यवसाय का दूसरा आर्थिक उद्देश्य ग्राहकों का सृजन करना है। एक व्यवसाय तभी जीवित रह सकता है जब वह उचित वस्तुओं व सेवाओं को प्रदान करके उनकी आवश्यकताओं को संतुष्ट करें। अर्थात् ग्राहकों का सृजन व उनकी संतुष्टि व्यवसाय का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

(3) **नव प्रवर्तन** – नव प्रवर्तन से अभिप्राय कुछ नया करने से है जैसे नए उत्पाद का निर्माण पुराने उत्पाद के उपयोग के नए तरीके बनाना, उत्पादन तथा विपणन के तरीकों में सुधार करना नए बाजार की खोज करना इत्यादि। आज के प्रतियोगितापूर्ण समय में व्यवसाय की सफलता में नवप्रवर्तन अनिवार्य है।

(4) **साधनों का अनुकूलतम उपयोग** – व्यवसाय में मनुष्य, मशीनों व सामग्री के प्रयोग की आवश्यकता होती है जिन्हें दुर्लभ साधन माना जाता है। प्रत्येक व्यवसाय से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन साधनों का श्रेष्ठतम् उपयोग करेगा।

(5) **उत्पादकता में सुधार** – व्यवसाय के विभिन्न स्रोतों व साधनों का पूर्ण रुप से उपयोग करने से उत्पादकता में सुधार किया जाना आवश्यक है।

2. सामाजिक उद्देश्य

व्यवसाय समाज का अभिन्न अंग है। वह समाज के साधनों का प्रयोग करता है। समाज के सदस्यों को वस्तुओं व सेवाएं बेचकर लाभ कमाता है, इसलिए यह उसका दायित्व बन जाता है कि समाज के लिए कुछ करे। व्यवसाय के महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

(1) **उचित दामों पर अच्छी किस्म की वस्तुएं उपलब्ध कराना** – व्यवसाय का प्रथम सामाजिक उद्देश्य उपभोक्ताओं को लगातार उच्च किस्म की वस्तुएँ, पर्याप्त मात्रा में तथा उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना है।

(2) **उचित व्यापारिक कार्यवाहियों को अपनाना** – व्यवसाय को सदैव जैसे–जमाखोरी, कालाबाजारी आदि से बचना चाहिए। इसे भ्रामक विज्ञापन तथा नकली माल बेचने जैसी अनुचित व्यापारिक कार्यवाहियों में भी संलिप्त नहीं होना चाहिए।

(3) **रोजगार के अवसर पैदा करना** – प्रत्येक व्यवसाय को समाज के लिए रोजगार के नये अवसर पैदा करने के लिए अपनी क्रियाओं का विस्तार करना चाहिए। इसमें विकलांग लोगों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(4) **कर्मचारी कल्याण** – व्यवसाय को अपने कर्मचारियों के कल्याण को बढ़ावा देना चाहिए। उचित मजदूरी प्रदान करने के अलावा, व्यवसाय को अपने कर्मचारियों के काम करने को अच्छी दशाओं, कैंटीन सुविधा, आवास, परिवहन एवं चिकित्सा सुविधाओं का भी प्रबन्ध करना चाहिए ।

(5) **समाज के विकास में योगदान** – व्यवसाय जिस समाज में जन्म लेता है और फलता–फूलता है उसके विकास में उसे निश्चित रूप में कुछ योगदान देना चाहिए। पुस्तकालय, चिकित्सालय, शैक्षिणक संस्था आदि स्थापित करके वह अपने इस उद्देश्य को पूरा कर सकता है।

व्यवसाय में लाभ की भूमिका

व्यवसाय की स्थापना लाभ कमाने के उद्देश्य से ही जाती है। व्यवसाय में इसकी अहम भूमिका है जिसे निम्नलिखित तथ्यों से समझा जा सकता है :—

(1) **लम्बे समय तक जीवित रहने के लिए** — लाभ ही व्यवसाय को लम्बे समय तक चलते रहने में सहायक होता है। लाभ के अभाव में व्यवसाय का औचित्य ही समाप्त हो जाता है।

(2) **व्यवसाय के विकास और विस्तार के लिए** — सभी व्यवसायी अपने व्यवसाय का विकास और विस्तार करना चाहते हैं। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता होती है। संचित लाभ पूंजी का एक अच्छा स्रोत है। जिस व्यवसाय में जितना अधिक लाभ होता है उतना ही अधिक लाभ का पुनः विनियोग संभव होता है और परिणामतः उस व्यवसाय की उतना ही अधिक विकास और विस्तार की संभावनाएं होती है।

(3) **कुशलता वृद्धि के लिए** — लाभ वह शक्ति है जो मालिक व कर्मचारी—दोनों को ही अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करती है। अच्छे लाभ की परिस्थिति में ही कर्मचारी को बेहतर वेतन तथा मालिक को ज्यादा लाभ मिलने की संभावना होती है। अतः इससे व्यवसाय की कुशलता में वृद्धि होती है ।

(4) **प्रतिष्ठा व पहचान बनाने के लिए** — समाज में व्यवसाय की प्रतिष्ठा व पहचान बनाने के लिए व्यवसायी को सभी संबंधित पक्षकारों को संतुष्ट करना होता है। इसके लिए उसे ग्राहकों को उचित कीमत पर अच्छी किस्म की वस्तुएं उपलब्ध करानी होगी। कर्मचारी वर्ग को उचित पारिश्रमिक देना होगा, अंशधारियों को पर्याप्त लाभांश देना होगा। तथा इन सब कार्यों के लिए उचित लाभ की आवश्यकता होती है।

8. व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण

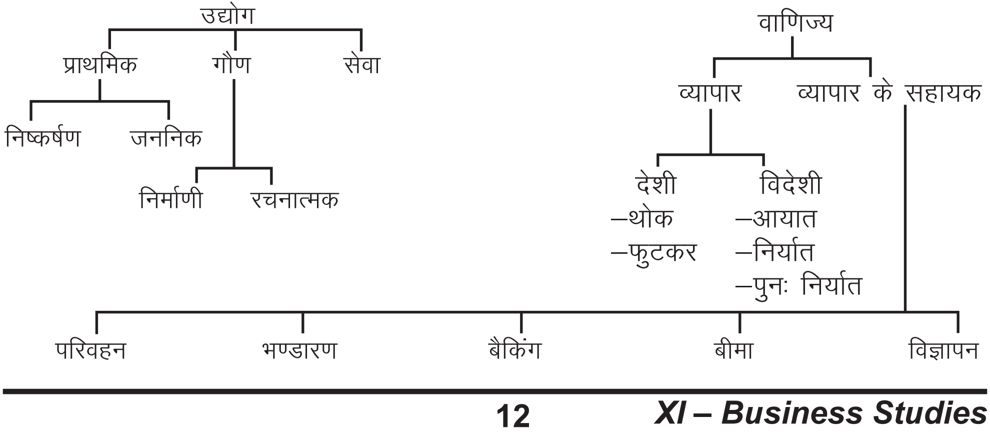
उद्योग
वाणिज्य
प्राथमिक
गौण
सेवा
निष्कर्षण
जननिक
निर्माणी
रचनात्मक
व्यापार
व्यापार के सहायक
देशी
—थोक
—फुटकर
विदेशी
—आयात
—निर्यात
—पुनः निर्यात
परिवहन
भण्डारण
बैकिंग
बीमा
विज्ञापन

I. उद्योग का अर्थ

ये समस्त क्रियाएँ जिनके माध्यम से कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तित किया जाता है तथा वे सेवाएँ जो व्यवसाय को निर्बाध गति से चलाने में मदद करती है उद्योग कहलाती है।

जैसा कि चित्र में दिखाया गया है उद्योगों को हम दो भागों में बांटते हैं :–

1. **प्राथमिक उद्योग** – प्राथमिक उद्योग में वे क्रियाएं आती हैं जिनके द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके अन्य उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध किया जाता है। प्राकृतिक उद्योग दो प्रकार के होते हैं।

प्राथमिक उद्योग

निष्कषर्ण उद्योग

इसमें वे उद्योग सम्मिलित किए जाते हैं जो पृथ्वी या पृथ्वी के तल या समुद्र तल से विभिन्न प्रकार के पदार्थ निकालने से संबंध रखते हैं।

उदाहरण : कृषि, खानों से विभिन्न पदार्थ निकालना, मछली पकड़ना इत्यादि।

जननिक उद्योग

इसमें वनस्पति एवं पशुओं की विशिष्ट नस्लों में सुधार एवं उनकी संख्या को बढ़ाया जाता है।

उदाहरण : पशुपालन, मुर्गी पालन, बागवानी आदि ।

2. **द्वितीयक या गौण उद्योग** – इन उद्योगों में प्राथमिक उद्योगों से जो पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं। उनको नई वस्तुओं का निर्माण करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जैसे कपास प्राथमिक उद्योग की क्रिया है और उससे कपड़ा गौण उद्योग की। गौण उद्योग दो प्रकार के होते हैं–

(क) **निर्माण उद्योग** – ये उद्योग कच्चे माल को पक्के माल में परिवर्तित करते हैं जैसे गन्ने से चीनी बनाना। निर्माणी उद्योग को पुनः चार भागों में बांटा जा सकता है।

निर्माण उद्योग

विश्लेषणात्मक

इसके अंतर्गत एक प्रकार के कच्चे माल से अनेक प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

उदाहरणः कच्चे तेल से पेट्रोल, डीजल आदि।

प्राविधिक

वह उद्योग जिनमें कच्चे माल को विभिन्न उत्पादन प्रक्रिया से निकालकर उपयोगी वस्तुएं तैयार की जाती है।

उदाहरण –कच्चे लोहे से इस्पात, चीनी व कागज उद्योग आदि।

सम्मिश्रण उद्योग

यहाँ अनेक कच्चे पदार्थों को मिलाकर एक नया उपयोगी पदार्थ तैयार किया जाता है।

उदाहरण – चूना, पत्थर, जिप्सम व कोयले को मिलाकर सीमेंट तैयार करना, साबुन, उर्वरक आदि।

संयोग उद्योग

इसमें विभिन्न उद्योगों द्वारा निर्मित पुर्जों को जोड़कर नई–नई उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

उदाहरण–घड़ियाँ, टेलीविज़न, कम्प्यूटर, कार आदि।

(ख)**रचनात्मक उद्योग** – इन उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग करके रचनात्मक कार्य किये जाते है जैसे सीमेंट, लोहा, ईंट, लकड़ी इत्यादि का इस्तेमाल करके भवन सड़के, बांध, पुल आदि बनाये जाते हैं।

(3) **तृतीयक अथवा सेवा क्षेत्र** – इन उद्योगों में उन सेवाओं को शामिल किया जाता है जो व्यवसाय को नियमित गति से चलने में सहायता करती है जैसे, यातायात, बैंक, बीमा, विज्ञापन, संग्रहण आदि।

प्र. निम्नलिखित उद्योगों को वर्गीकृत करें।

1) छोटा नागपुर पठार क्षेत्र में खनन कार्य।
2) गुजरात में तेल रिफाइनरियाँ ।
3) मैंगलोर (कर्नाटक) में सीमेंट फैक्ट्रियाँ।
4) उत्तर प्रदेश की चीनी की फैक्ट्रियाँ जहाँ गन्ने से चीनी बनती है।

II. वाणिज्य का अर्थ एवं कार्य – वाणिज्य उन सभी क्रियाओं का समूह है जो वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पादकों से उपभोक्ताओं तक पहुंचाने से संबंधित है। उत्पादक तथरा उपभोक्ता की वस्तु विनिमय संबंधी सभी कठिनाईयाँ वाणिज्य द्वारा दूर की जाती है।

वाणिज्य के कार्य निम्नलिखित है :–

1) व्यक्तियों से संबंधित बाधा को दूर करना – उत्पादको व उपभोक्ताओं के बीच यह बाधा दूर करने के लिए थोक व्यापारी, फुटकर व्यापारी व एजेंटों आदि को सम्मिलित किया जाता है।
2) स्थान संबंधी बाधा को दूर करना – परिवहन के विभिन्न साधनों द्वारा दूर किया जाता है।
3) समय संबंधी बाधा दूर करना – भंडारग्रह या संग्रहन के द्वारा किया जाता है।
4) वित्त की बाधा को दूर करना बैंक अथवा वित्तीय संस्थाओं द्वारा हल की जाती है।
5) जोखिम की बाधा को दूर करना – बीमा की सहायता से की जाती है।
6) सूचना की बाधा को दूर करना – विज्ञापन द्वारा उपभोक्ताओं के ज्ञान की बाधा को दूर किया जा सकता है।

बाधाएं	**समाधान**
व्यक्तियों की बाधा	व्यापार
स्थान की बाधा	परिवहन एवं संदेशवाहन
समय की बाधा	संग्रहण
जोखिम की बाधा	बीमा
वित्त की बाधा	बैंकिंग
सूचना की बाधा	विज्ञापन

व्यापार का अर्थ एवं प्रकार – जब वस्तुओं और सेवाओं का क्रय–विक्रय लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है तो इसे व्यापार कहा जाता है। व्यापार दो प्रकार का होता है –

1) **देशी व्यापार** – इस व्यापार में देश की सीमाओं के अंदर ही वस्तुओं का क्रय–विक्रय किया जाता है। देशी व्यापार को दो भागों में बांट सकते हैं।

   (अ) थोक व्यापार – यह विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं को अधिक मात्रा में क्रय एवं विक्रय करने से संबंधित है।

   (ब) फुटकर व्यापार – फुटकर व्यापार वस्तुओं को विक्रय थोड़ी मात्रा में करता है और ग्राहकों को थोड़ी मात्रा में नकद व उधार बेचता है।

2) विदेशी व्यापार – यह व्यापार दो या दो से अधिक देशों के बीच किया जाता है। विदेशी व्यापार के प्रकार निम्नलिखित है :

   (अ) आयात व्यापार – जब एक देश का व्यापारी दूसरे देश के व्यापारी से माल क्रय करता है।

   (ब) निर्यात व्यापार – जब माल एक देश के व्यापारी द्वारा दूसरे देश के व्यापारियों को बेचा जाता है। तब माल बेचने वाले व्यापारी के देश के लिए निर्यात व्यापार कहलायेगा।

   (स) पुनः निर्यात व्यापार – जब एक देश द्वारा माल किसी अन्य देश से आयात करके किसी तीसरे देश को निर्यात कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए जैसे भारतीय फर्म ने श्रीलंका से समान मंगवाकर नेपाल को निर्यात कर दिया।

विदेशी व्यापार

चीन से खिलौने खरीद कर भारत में बेचना।

आयात व्यापार

अमेरीका को भारत से बासमती चावल बेचना।

निर्यात व्यापार

भारतीय फर्म द्वारा जापान से इल्कट्रोनिक सामान खरीदकर थाईलैंड में बेचना।

पुनः निर्यात व्यापार

व्यापार की सहायक क्रियाएँ – ऐसी सभी क्रियाएँ जो व्यापार में आने वाली विभिन्न बाधाओं को दूर करने के लिए की जाती है, व्यापार की सहायक क्रियाएँ कहलाती है। व्यापार की सहायक क्रियाएं निम्नलिखित है :

1. **परिवहन एवं संदेशावाहन** – वस्तुओं को उत्पादन स्थान से उपभोक्ता स्थान तक पहुंचाने में बाधा उत्पन्न होती है जिसे परिवहन द्वारा दूर किया जा सकता है। इस बाधा का दूसरा पहलू यह भी है कि उत्पादक व क्रेता दूर–दूर स्थानों पर होते हैं। तो वस्तुओं के सौंदे करने में बाधा आती है। इस समस्या का समाधान संदेशवाहन जैसे टेलीफोन, डाकघर सेवाएं, इंटरनेट आदि द्वारा किया जाता है।
2. **बैंकिंग** – उद्योगों व व्यावसायिक फर्मों को समय–समय पर वित्त की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि वित्त के अभाव में व्यापार करना कठिन हो जाता हे। इस बाधा को बैंकिंग की सहायता से दूर किया जा सकता है।
3. **बीमा**– जब वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है तब मार्ग में सामान लाने–ले जाने या संग्रहण के समय वस्तुओं के चोरी हो जाने या टूट–फूट जाने का खतरा रहता है। इसका समाधान बीमा की सहायता से किया जा सकता है।
4. **संग्रहण**– कुछ वस्तुएं ऐसी होती है जिनके उत्पादन और उपभोग के बीच कुछ समय का अंतर होता है अतः तैयार माल को उसके उत्पादन समय से उपभोग समय तक संग्रह करके रखना पड़ता है। इस समस्या का भंडारगृहों की सहायता से दूर किया जा सकता है।
5. **विज्ञापन** – आज बढ़ती हुई प्रतियोगिता को देखते हुए उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। ग्राहकों को अपनी और आकर्षित करने के लिए अतः उत्पादित माल को शीघ्र और नियमित बिक्री करने के लिए विज्ञापन की सहायता ली जाती है।

9. व्यावसायिक जोखिम

व्यावसायिक जोखिम का अर्थ– इसका अभिप्राय अनिश्चितताओं के कारण व्यवसाय में अपर्याप्त लाभ अथवा हानि की संभावना का होना।

व्यावसायिक जोखिम – भविष्य अनिश्चित होता है और वह अनिश्चितता जोखिम को जन्म देती है। व्यवसाय के संदर्भ में जोखिम के उदाहरण इस प्रकार दिए जा सकते हैं जैसे ग्राहकों की रूचि में बदलाव, श्रमिकों की हड़ताल, बाढ़ या भूकंप इत्यादि।

व्यावसायिक जोखिमों की प्रकृति :

1. **जोखिम अनिश्चितताओं का परिणाम** – सभी व्यावसायिक जोखिम अनिश्चितताओं के कारण उत्पन्न होते हैं, जैसे कि हड़ताल, मूल्यों में परिवर्तन, मांग का गलत अनुमान, सूखा इत्यादि।

2. **जोखिम से बचा नहीं जा सकता** – जोखिमों के जाल से निकलना व्यवसायी के लिए संभव नहीं है क्योंकि व्यवसाय भविष्य के लिए किया जाता है और भविष्य अनिश्चित है। जोखिमों को समाप्त नहीं किया जा सकता है।
3. **जोखिम की मात्रा व्यवसाय के आकार के अनुसार** – जोखिम की मात्रा छोटे आकार के व्यवसाय के लिए कम और बड़े आकार के व्यवसाय में अधिक होती है।
4. **जोखिम का प्रतिफल लाभ** – व्यवसाय में जोखिम उठाने के बदले जो कुछ व्यवसायी को मिलता है वह उसका लाभ होता है। जिन व्यवसायों में जोखिम नहीं होता उसमें लाभ भी नहीं होता। जितना अधिक जोखिम होता है उतने अधिक लाभ की संभावना होती है।

व्यावसायिक जोखिमों के कारण

1. **प्राकृतिक कारण** – इसके अन्तर्गत वे कारण आते हैं जिन पर मनुष्य का कोई वश नहीं चलता जैसे, तूफान, भूचाल आदि।
2. **मानवीय कारण** – मानव की असावधानी हड़ताल बेईमानी या जल्दबाजी के कारण ये जोखिम उत्पन्न होते हैं।
3. **आर्थिक कारण** – मांग व मूल्यों में उतार–चढ़ाव, कड़ी प्रतियोगिता, फैशन में परिवर्तन, तकनीकी परिवर्तन से संबंधित होते हैं।
4. **अन्य कारण** – उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त वे सभी कारण आते है जिनसे व्यावसायिक जोखिम उत्पन्न होते है जैसे कि राजनीतिक कारण, यान्त्रिक कारण, अकुशल व्यावसायिक प्रबन्धन इत्यादि।

व्यवसाय प्रारंभ करते समय ध्यान रखने योग्य बातें :–

1. **व्यवसाय का चुनाव** – एक व्यवसायी को भलीभांति सोचकर ही व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए। उसे यह निर्णय लेना होता है कि वह ट्रेडिंग, निर्माणी तथा सेवा में से किस प्रकार का व्यापार करना चाहता है।
2. **व्यवसाय का पैमाना** – व्यवसाय के चयन के बाद उसके आकार का निर्णय लिया जाता है। इसको निर्धारित करते समय पूंजी की उपलब्धि, जोखिम तत्व, प्रबन्धकीय क्षमता आदि का ध्यान रखना चाहिए।
3. **व्यवसाय के प्रारूप का चयन** – यदि छोटे पैमाने पर व्यवसाय करना हो और व्यवसायी के स्वयं के पास उसे प्रारंभ करने के लिए पर्याप्त पूंजी है तो एकाकी व्यवसाय उपयुक्त रहता है अन्यथा साझेदारी या कम्पनी में से चयन करना होगा।

4. **व्यवसाय के स्थान का चुनाव** – यह निर्णय बहुत सोच, समझ कर लेना चाहिए। निर्णय लेते समय कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए, जैसे कच्चे माल की सुविधा श्रमिक सस्ते व पर्याप्त मात्रा में यातायात व बैंकिंग सुविधाएं इत्यादि ।
5. **वित्त की व्यवस्था करना** – पूंजी की मात्रा का निर्धारण करना चाहिए इसके बाद इसे प्राप्ति के स्त्रोतों का निर्धारण करना चाहिए।
6. **भौतिक सुविधाएँ** – एक नया उपक्रम शुरू करने से पहले वस्तुओं के उत्पादन के लिए मशीनों एवं उपकरणों का चुनाव करना भी एक नाजुक समस्या है।
7. **संयंत्र की स्थापना** – मशीनों को क्रय करने के बाद इन्हें कारखानों के भवन में लगाने की योजना बनाई जाती है।
8. **कार्यबल** – व्यवसाय को चलाने के लिए बहुत से कर्मचारियों की आवश्यकता होती है जिसमें कुशल एवं अकुशल श्रमिक तथा प्रबंधकीय कर्मचाारी शामिल होते हैं। उपक्रम के लिए सही व्यक्तियों का चुनाव करना आवश्यक है।
9. **कर नियोजन** – व्यवसाय अथवा व्यवसाय के आकार का निर्णय लेते समय कर संबंधी विभिन्न कानूनों को भी ध्यान में रखना चाहिए।
10. **व्यवसाय आरंभ करना** – उपरोक्त समस्त कार्यवाही पूरी करने के बाद व्यवसाय प्रारंभ करने की बारी आती है। इसके लिए संगठनात्मक ढांचा तैयार किया जाएगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न–

1. निम्नलिखित में से कौन सी आर्थिक क्रिया नहीं है?

(क) बैंक मे कलर्क का कार्य (ख) सरकारी विद्यालय मे पढाना
(ग) गृहिणी द्वारा घर में खाना बनाना (घ) कार उत्पादन

2. व्यापार की सहायक क्रियाओं में क्या शामिल नहीं है?

(क) पशुपालन (ख) बीमा
(ग) परिवहन (घ) वेयरहाऊस

3. निष्कर्षण उद्योग कौन सा है?

(क) भवन निर्माण (ख) पौधारोपण
(ग) खनन (घ) कपड़ा उत्पादन।

4. सेवा उद्योग कौन सा है?

(क) चीनी (ख) सीमेन्ट
(ग) मुर्गी पालन (घ) बैंकिंग

5. जोखिम परिणाम है–
(क) अनिश्चितताओं का (ख) निश्चितताओं का
(ग) व्यावसायिक क्रियाओं का (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

6. निम्नलिखित में से क्या व्यवसाय का उद्देश्य नहीं है?
(क) लाभ कमाना (ख) ग्राहक सृजन
(ग) निवेश (घ) नवप्रर्वतन

7. पूँजी की आवश्यकता होती है–
(क) पेशे में (ख) रोजगार में
(ग) व्यवसाय में (घ) गैर आर्थिक क्रियाओं मै।

8. आचार संहिता होती है–
(क) व्यवसाय में (ख) पेशे में
(ग) रोजगार में (घ) इन सभी में

9. ''कर्मचारी द्वारा कपट'' व्यावसायिक जोखिम का एक प्रकार है–
(क) चीनी (ख) सीमेन्ट
(ग) मुर्गी पालन (घ) बैंकिंग

10. किस आर्थिक क्रिया में शून्य जोखिम होता है–
(क) व्यवसाय (ख) पेशा
(ग) रोजगार (घ) सभी मे।

उचित मिलान करो–

स्तम्भ (क)	**स्तम्भ (क)**
1. निर्माणी उद्योग	1. खनन
2. जननीक	2. भवन
3. द्वितीयक उद्योग	3. आयात
4. व्यापार केन्द्र	4. तकनीकी परिवर्तन
5. आचार संहिता	5. ईमानदारी
6. व्यावसायिक जोखिम	6. विज्ञापन
7. बाह्य व्यापार	7. कोलकाता
8. रचनात्मक उद्योग	8. सीमेन्ट

9. निष्कर्षण उद्योग	9. कपड़ा उद्योग
10. सेवा उद्योग	10. मुर्गी पालन

प्रश्नोत्तर (एक अंक)

1. एक ऐसी मानवीय क्रिया का उदाहरण दीजिए जो कि एक तरफ आर्थिक और दूसरी तरफ गैर–आर्थिक मानी जाए?
2. व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया क्यों कहा जाता है?
3. एक व्यक्ति अपने घर का कम्प्यूटर लाभ पर बेचता है क्या आप इसे व्यापार मानेंगे। व्यवसाय की किस विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।
4. उस आर्थिक क्रिया का नाम बताइए जिसमें विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है।
5. बीमा को तृतीयक या सेवा उद्योग क्यों माना जाता है?
6. श्री रजनीश, लंदन स्थानातंत्रित होने के कारण अपना फर्नीचर मोटर साईकिल OLX पर बेच रहे हैं । क्या यह एक व्यावसयिक क्रिया है? यहाँ व्यवसाय के कौन–से तत्व के संदर्भ में उल्लेख किया गया है?
7. श्री रणजीत बरमन ने LLB की है और अब वह एक KPO संगठन में कार्यरत हैं। वह किस प्रकार की आर्थिक क्रिया कर रहें हैं?
8. कोई कम्पनी अपनी बिक्री का 1% NGO's को दान करती है। NGO's मानसिक रूप से विकृत मनुष्यों के लिए काम करते हैं जनता इस पहल के लिए कम्पनी को अत्यधिक सरहाति है जिससे कम्पनी की बिक्री 10% बढ़ जाती है।

   इस उदाहरण में व्यवसाय का कौन–सा उद्देश्य दर्शाया गया है?

3/4 अंक के प्रश्न

9. ABC लि० सड़क के किनारे पेड़ लगा रही है। वह कौन–सा उद्देश्य पाना चाहती है?
10. सभी मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए कुछ गतिविधियाँ करते हैं। वह क्या हैं? अपने सुझाव देकर विस्तार से समझाएँ।
11. व्यापार, पेशा और रोजगार में चार अन्तर लिखिए?
12. ''कोई भी व्यवसाय जोखिम रहित नहीं है'' इस कथन के प्रकाश में व्यावसायिक जोखिम की अवधारणा की व्याख्या करें।

13. व्यवसाय के किन्हीं चार उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

14. वाणिज्य की परिभाषा दीजिए। इसका आधुनिक जीवन में अत्यधिक महत्व क्यों है?

15. प्राथमिक व गौण उद्योगों में क्या अंतर है? उदाहरण सहित सपष्ट कीजिए।

16. चाय मुख्यतः आसाम में उत्पादित होती है जबकि कपास गुजरात और महाराष्ट्र में परन्तु इनकी खपत देश के विभिन्न भागों में होती है। यह स्थान की बाधा किस प्रकार हटाई जा सकती है व किसी व्यावसायिक क्रिया में वर्गीकृत की जा सकती है।

17. यह एक ऐसी क्रिया है जो व्यापार में सहायता करती है तथा जो उपभोक्ताओं को जानकारी देकर वस्तुओं के संवर्धन में सहायता करती है। कोई भी व्यावसायिक इकाई अकेले व्यवसाय नहीं कर सकती है, इसे दूसरों के साथ संप्रेषण करना पड़ता है तथा यह क्रिया उपभोक्ताओं को वस्तु के बारे में बताती है तथा कम्पनी के उत्पाद की जानकारी देती है एवं उपभोक्ताओं को वस्तु क्रय करने के लिए तत्पर करती है।

(i) उपरोक्त में कौन–सी क्रिया का वर्णन किया गया है?

(ii) उन क्रियाओं को क्या कहते हैं जो व्यापार में सहायता करती हैं?

(iii) संप्रेषण सेवाओं को किन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है? उनका वर्णन कीजिए ।

18. एक चीनी निर्माणी फैक्ट्री बहुत से धुएँ और प्रदूषण का उत्सर्जन करती है। वह पर्यावरण पर इन गतिविधियों के प्रभाव की अनदेखी कर रही है और सिर्फ लाभ अधिकतम करने के उद्देश्य पर जोर दे रही है।

(i) यहाँ निर्माताओं द्वारा कौन–सा उद्देश्य पूरा नहीं किया जा रहा ?

(ii) आप चीनी उत्पादन को किस प्रकार के उद्योग में वर्गीकृत करेंगे ?

19. राइजिंग हाइट ली. अपना विकास व विस्तार करना चाहती है। इसके लिए उन्हें जमीन, बिल्डिंग, मशीने आदि खरीदने के लिए कोषों की आवश्यकता है। इन परिसंपत्तियों की लागत अधिक होने के कारण वह इनसे संबंधित जोखिम भी कम करना चाहते हैं।

यहाँ प्रस्तुत बाधाओं को पहचानिए और वह किस प्रकार हट सकती हैं, समझाइए।

(संकेत : वित्त की बाधा, जोखिम की बाधा)

20. रमेश दिसम्बर, जनवरी और फरवरी के महीने में सर्दियों के कपड़ बेचता है परन्तु वह अपना पूरा माल नहीं बेच पाता है।

(i) यहाँ कौन–सी बाधा प्रस्तुत की गई है?

(ii) वह किस प्रकार इस बाधा का निवारण कर सकता है? समझाइए ।

(iii) क्या यह बाधा सदैव उत्पन्न होगी ? क्यों?

(संकेत – समय की बाधा, भण्डारण से हल होगी क्योंकि उत्पादन व उपभोग में समय अंतराल है।)

21. रजनी, एक गृहिणी है। वह समय–समय पर पुराने कपड़ों के बदले बरतन लेती है। क्या यह व्यवसाय है और क्यों?

22. श्री x और श्री y के बीच में विचार–विमर्श हो रहा था। श्री x का मानना था कि व्यवसाय अधिक से अधिक लाभ कमाने की स्वार्थी इच्छा से किया जाता है। जबकि श्री y मानते हैं कि व्यवसाय हेतु लाभ आवश्यक है। क्या आप श्री y के समर्थन में कुछ बिन्दु दे सकते हैं?

5/6 अंक के प्रश्न

23. निम्नलिखित को व्यवसाय, पेशा व रोजगार में श्रेणीबद्ध कीजिए :–

(i) किसान (ii) वकील (iii) क्लर्क

(iv) बच्चों के लिए खिलौने बेचने वाला, फेरी वाला (v) डाक्टर

(vi) सड़क किनारे सकूटर की मरम्मत करने वाला व्यक्ति

24. व्यवसाय की परिभाषा दीजिए और उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

25. 'वाणिज्य उन समस्त क्रियाओं का जोड़ है जो कि उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच की दीवार को तोड़ने में सहायता करती है' इस कथन की व्याख्या कीजिए?

26. व्यवसाय का चुनाव करते समय कौन–सी छः बातें ध्यान में रखनी चाहिए?

27. उद्योग, वाणिज्य और व्यापार में कोई पांच अन्तर लिखिए ।

28. 'लाभ को अधिकतम करना व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता' टिप्पणी कीजिए ?

29. ''वाणिज्य उद्योग को रीढ़ की हड्डी और अन्य व्यावयासिक गतिविधियों के रूप में माना जाता है।'' वाणिज्य के द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों का वर्णन करो।

30. 'क्रियेटिव स्ट्रोक्स', रोहित, शगुन व प्रतिमा द्वारा संचालित एक विज्ञापन एजैन्सी है। इन सभी ने निम्न दिए गए बिन्दुओं की चर्चा हेतु एक बैठक बुलाई है :–

(i) मई में लाभ सीमा को 10 प्रतिशत से बढ़ाना।

(ii) बाजार की एक बड़ी हिस्सेदारी पाना।

(iii) कैमरा, लाईट, कैमरा संचाल, वित्त आदि का अनुकूलतम प्रयोग करना।

(iv) नए कैमरे व तकनीकों का प्रयोग करना।

(v) व्यवसाय के हर क्षेत्र की उत्पादकता में सुधार करना।

   (a) व्यावसायिक उद्देश्य के किस पहलू के बारें में यहाँ उल्लेख किया गया है?

   (b) हर बिन्दु को वर्गीकृत कर, विस्तार से लिखें।
   (संकेत : आर्थिक उद्देश्य)

31. नत्थूलाल, प्रतिवर्ष दिवाली पर, अपने ग्राहकों को सोनपापड़ी बेचता है। इस बार उसने माँग से अधिक सोनपापड़ी बना ली। इस कार्य के लिए उसने महिलाओं और बच्चों को भी काम पर लगा लिया व उन्हें पुरुषों से कम मजदूरी दी। अपना पूरा माल बेचने के लिए उसने निर्माण की तारीख भी डिब्बों पर बदल दी। इस प्रकार उसने लाभ प्राप्त कर लिया।

(a) क्या नत्थूराम ने व्यवसाय के सभी उद्देश्यों को पूर्ण किया?

(b) अगर नहीं तो, वह उद्देश्य बताइए जो उसके द्वारा पूर्ण नहीं किया गया व उसके किन्हीं दो पहलुओं पर चर्चा कीजिए।

32. निम्न दिए गए व्यवसायों को विभिन्न प्रकार के उद्योगों में वर्गीकृत कीजिए ।

(i) कच्चे तेल का व्यवसाय

(ii) कच्चे लोहे से इस्पात

(iii) कॉस्मैटिक निर्माण

(iv) कम्प्यूटर उत्पादन

(v) बाँध की रचना

33. व्यावसायिक क्रियाओं में कुछ क्रियाएँ विनिमय प्रक्रिया में जाने वाली बाधाओं को रोकने के लिए की जाती हैं। उन्हें पहचानिए व निम्नलिखित बाधाओं को दूर करने वाली क्रियाओं में वर्गीकृत कीजिए।

(i) स्थान की बाधा

(ii) जोखिम की बाधा

(iii) समय की बाधा

(iv) वित्त की बाधा

(v) सूचना की बाधा

34. विभिन्न व्यवसायों की विभिन्न परिस्थितियों का उल्लेख नीचे किया गया है :

(i) नेपाल में भूकंप आने से रघुनाथ गोरखा की माचिस की फैक्ट्री विलुप्त हो गई।

(ii) श्री आर्या एक टेलीकॉम कम्पनी के उच्च प्रबंधक है जिन्होंने अपनी कम्पनी की गोपनीय जानकारी उसकी प्रतिस्पर्धा कम्पनी को दे दी, जिसके कारण कम्पनी को बहुत हानि हुई ।

(iii) वोडाफोन कम्पनी पर टैक्स की चोरी के आरोप लगाए गए व उसे जुर्माने का भुगतान करने के लिए कहा गया जिसको देने से उसे बहुत हानि होगी।

(iv) कम्प्यूटर के बाजार में आगमन से टाइपराइटर निरर्थक हो गए ।

(a) व्यवसाय की कौन–सी विशेषता इन सभी परिस्थितियों में दी गई है?

(b) आप इन सभी परिस्थितियों को उसे विशेषता के आधार पर किस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं।

35. डॉ. कुमार, जयपुर गोल्डन अस्पताल में हड्डी विशेषज्ञ हैं व उनके मित्र, डॉ महाजन एक बालरोग विशेषज्ञ हैं। डॉ महाजन की पत्नी अपना ज्वैलरी स्टोर चलाती हैं। सभी की कार्यों की प्रकृति की तुलना करें व अंतर स्पष्ट करें।

36. जैनब, शैली व रवीना दोस्त हैं। उन्होंने अपना फैशन डिजाइनिंग कोर्स अभी खत्म किया है। वह अपना व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं। उने पास 10 लाख की पूंजी है और बाकी दस लाख रुपये का वह ऋण लेना चाहती हैं। उन्हें करोल बाग में एक चुनिंदा स्थान मिल गया है जहाँ वे अपना बुटीक खोलेंगी। उन्होंने निर्णय लिया कि वह शुरूआत में बहुत बड़े ऑडर नहीं लेंगी।

उपर्युक्त जानकारी से पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए व्यवसाय प्रारंभ करते समय किन घटकों का ध्यान रखना होता है, समझाइए।

37. इमरान, मनप्रीत, जोसेफ तथा प्रियंका कक्षा दस में सहपाठी रहे हैं। उनकी परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद वे रुचिका के घर में इकट्ठे होते हैं, जो उन सभी की मित्र हैं। वहाँ रुचिका के पिताजी श्री रघुराज चौधरी उनका हाल–चाल पूछते हैं। वे प्रत्येक से जानना चाहते हैं कि उनकी भावी योजना क्या है? लेकिन कोई भी सुनिश्चित उत्तर नहीं दे पाता। श्री रघुराज स्वयं में एक व्यवसायी हैं, वे उन्हें व्यवसाय को चुनने की सलाह देते हैं जो एक आशाजनक व चुनौतीपूर्ण जीवनवृत्ति है। जोसेफ इस विचार से उत्तेजित होकर कहता है कि 'हाँ, व्यवसाय वास्तव में ढेर सारा धन कमाने के लिए बहुत अच्छा है। यहाँ तक कि इंजीनियर तथा डॉक्टर बनने पर भी इतना धन नहीं कमाया जा सकता है। श्री रघुराज अपना मत जताते हुए कहते हैं–

''भाई, व्यवसाय में धन के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है।''

क्या आप श्री रघुराज के इस कथन से सहमत है? आपके अनुसार व्यवसाय के अन्य और क्या उद्देश्य हैं? विस्तार से समझाए।

38. 'रामलाल एंड सन्स' एक कपड़ा निर्माता है जो अपने कपड़े श्री लंका, थाईलैंड और बंगलादेश में उपलब्ध कराता है उत्पादन के समय कुछ माल दोषपूर्ण पाया गया जिसे अलग कर दिया गया क्योंकि उनका मानना है कि अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद ही उपलब्ध कराए जाने चाहिए। दोषपूर्ण माल नारी निकेतन की महिलाओं से कम दामों पर ठीक कराकर अनाथालय में दान किया गया।

i) 'रामलाल एंड सन्स' किस प्रकार के उद्योगों से जुड़े हुए हैं?

ii) व्यवसाय द्वारा किन सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति की जा रही है?

39. नवेली ने गृह विज्ञान में स्नातक एक प्रख्यात कॉलेज से किया और हाल ही में एक विभिन्न प्रकार के व्यजंनों को बनाने का भी कोर्स किया। अब वह एक अपना उद्यम शुरू करना चाहती है जो 'स्वास्थ्यकर भोजन' उचित मूल्य पर उपलब्ध करेगा। सभी विकल्पों का विश्लेषण करने पर उसने 'बना बनाया' व 'बनाने के लिए तैयार' सब्जियों का शेक (जूस) व 'मिल्क शेक' बनाने व बेचने का निर्णय लिया।

उसके पास ₹5,00,000 की बचत है और वह ₹10 लाख रुपये का ऋण ले लेगी।

उपरोक्त दिए गए अनुच्छेद से उन कारकों को पहचाने व उद्धत करें जिनका नवेली ने व्यवसाय आरंभ करने में ध्यान रखा।

कोई अन्य तीन कारकों को भी समझाएं जिनका ध्यान व्यवसाय शुरू करते समय करना चाहिए।

40. निम्नलिखित को व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में वगीकृत करो–

(i) हरि का अपने कर्मचारी की ओर से मोबाइल फोन का बेचना।

(ii) न्यूनतम योग्यता का होना अनिवार्य है।

(iii) एक फेरी वाले का कार्यक्रम (Function) के बाहर खिलौने बेचना।

(iv) संजय का हाई–कोर्ट में वकील होना।

(vi) ध्रुव का किसी कम्पनी में मैनेजर होना।

(vii) सड़क–किनारे किसी व्यक्ति द्वारा स्कूटर मरम्मत करना।

42. मीना कालेज में प्रोफेसर है जिसे 72,000 का पारिश्रमिक प्राप्त होता है। कमल एक किसान है जो अपने परिवार के लिए 20 क्विंटल तथा बेचने के 2,000

क्विटंल गेहूँ का उत्पादन करता है। कीर्ति एक पत्रकार है तथा ऑफिस के बाद, झुग्गी–झोपड़ी के बच्चों को पढ़ाती है। वह उनसे कुछ नहीं लेती। इससे उसे मनोवैज्ञानिक तथा मानसिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

(i) मीना के कालेज में पढ़ाने में कौन–सी मानवीय क्रिया का पता चलता है?

(ii) कमल का अपने लिए गेहूँ का उत्पादन कौन–सी मानवीय क्रिया को दर्शाता है और क्यों?

(iii) कीर्ति द्वारा बच्चों को पढ़ाना किस प्रकार की क्रिया है? व्याख्या करो।

अध्याय-2

व्यावसायिक संगठन के प्रारूप

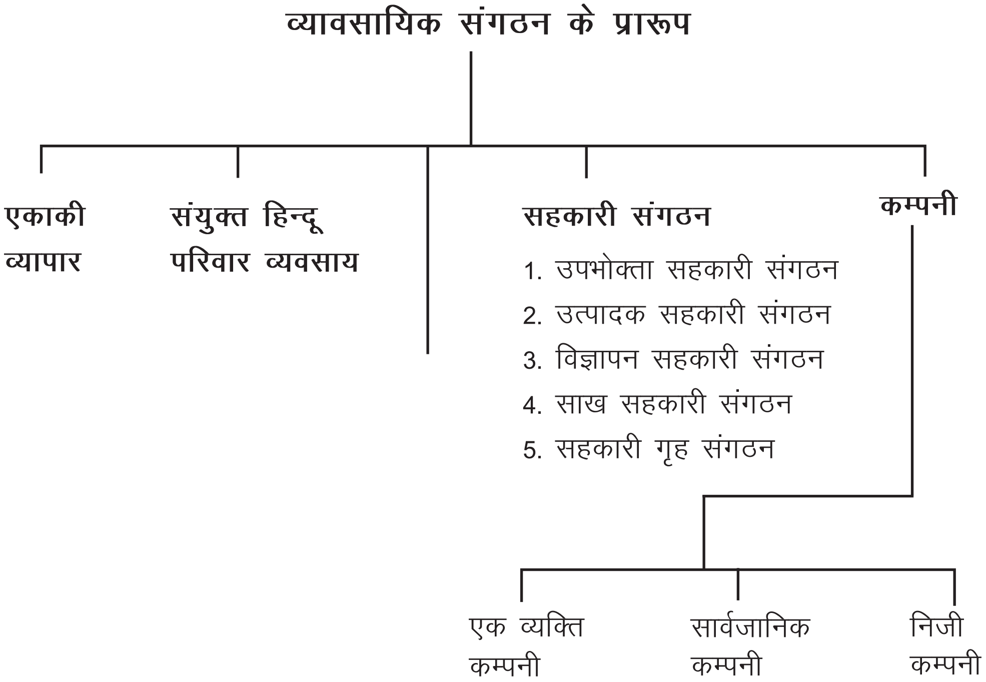
व्यावसायिक संगठन के प्रारूप
एकाकी व्यापार
संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय
सहकारी संगठन
1. उपभोक्ता सहकारी संगठन
2. उत्पादक सहकारी संगठन
3. विज्ञापन सहकारी संगठन
4. साख सहकारी संगठन
5. सहकारी गृह संगठन
कम्पनी
एक व्यक्ति कम्पनी
सार्वजानिक कम्पनी
निजी कम्पनी

Project work: (1) उद्योग यात्रा (2) हस्तकरद्या इकाई यात्रा

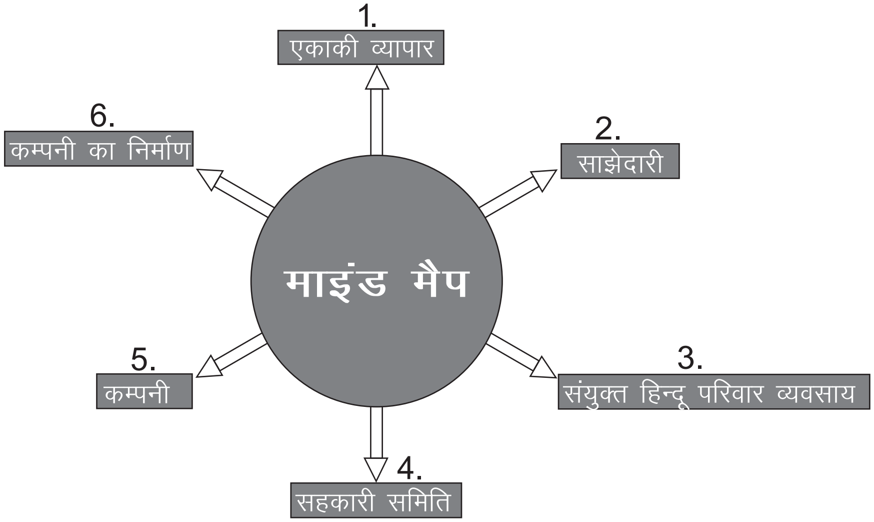
माइंड मैप
1. एकाकी व्यापार
2. साझेदारी
3. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय
4. सहकारी समिति
5. कम्पनी
6. कम्पनी का निर्माण

पाठ परिचय

एक व्यावसायिक उपक्रम एक संगठन है जो किसी व्यवसाय या वाणिज्यिक क्रिया में संलग्न होता है। स्वामित्व के आधार पर व्यावसायिक संगठनों को तीन वर्णों में विभाजित किया जा सकता है :–

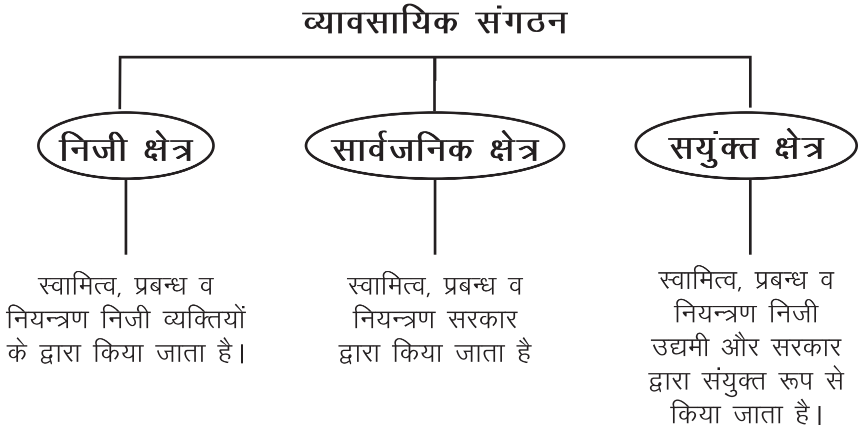

व्यावसायिक संगठन

- **निजी क्षेत्र**
  - स्वामित्व, प्रबन्ध व नियन्त्रण निजी व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है।
- **सार्वजनिक क्षेत्र**
  - स्वामित्व, प्रबन्ध व नियन्त्रण सरकार द्वारा किया जाता है
- **सयुंक्त क्षेत्र**
  - स्वामित्व, प्रबन्ध व नियन्त्रण निजी उद्यमी और सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है।

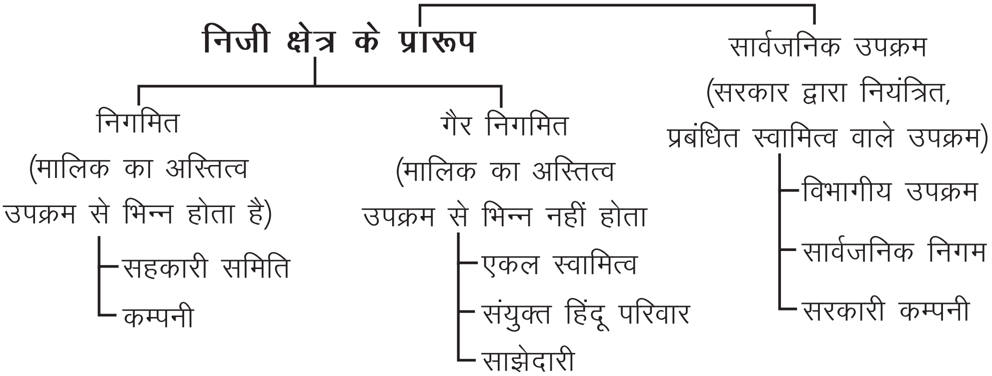

- **निजी क्षेत्र के प्रारूप**
  - निगमित (मालिक का अस्तित्व उपक्रम से भिन्न होता है)
    - सहकारी समिति
    - कम्पनी
  - गैर निगमित (मालिक का अस्तित्व उपक्रम से भिन्न नहीं होता
    - एकल स्वामित्व
    - संयुक्त हिंदू परिवार
    - साझेदारी
- सार्वजनिक उपक्रम (सरकार द्वारा नियंत्रित, प्रबंधित स्वामित्व वाले उपक्रम)
  - विभागीय उपक्रम
  - सार्वजनिक निगम
  - सरकारी कम्पनी

1. एकल स्वामित्व (Sole -Proprietorship)

अर्थ – एकल ↓ अकेला   स्वामित्व ↓ स्वामी

अर्थात् 'एकल स्वामित्व' का अभिप्राय व्यावसायिक संगठनों के उस प्रारूप से है जिसका स्वामी एक अकेला व्यक्ति होता है। वह ही इसका प्रबंध करता है तथा सम्पूर्ण लाभ–हानि प्राप्त करता है।

एकल स्वामित्व के लक्षण या विशेषताएँ :–

1. **एकाकी स्वामित्व** – व्यवसाय की सारी सम्पत्ति व साधनों का अकेला स्वामी होता है।
2. **पृथक वैधानिक अस्तित्व नहीं** – इस प्रारुप में व्यवसाय तथा व्यवसायी में कोई अंतर नहीं माना जाता। अर्थात् जो भी सम्पत्ति व दायित्व व्यवसाय के हैं, वे सभी व्यवसायी के ही होते हैं।
3. **निर्माण** – इस प्रारूप के निर्माण के लिए किन्हीं वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करने की आवश्यकता नहीं होती।
4. **प्रबन्ध व नियन्त्रण** – व्यवसाय का प्रबन्ध व संचालन केवल एक ही व्यापारी द्वारा किया जाता है।
5. **असीमित दायित्व** – एकल स्वामी का दायित्व असीमित होता है। यदि व्यावसायिक संपत्तियाँ ऋणों के भुगतान के लिए पर्याप्त नहीं हैं तो उसकी निजी संपत्ति का प्रयोग भी देनदारों को भुगतान करने के लिए किया जा सकता है।

असीमित दायित्व

इसका अभिप्राय है कि यदि व्यवसाय कठिनाई में आ जाए और वह अपनी देनदारियों का भुगतान न कर सके तो व्यवसाय का स्वामी व्यक्तिगत रूप से इन देनदारियों के भुगतान के लिए जिम्मेदार होता है।

6. **अविभाजित जोखिम** – अर्थात् लाभ भी उसका तथा जोखिम (हानि) भी उसका।
7. **व्यवसायों के लिए उपयुक्त** – ग्राहकों को निजी सेवाएँ प्रदान करने के लिए व छोटे पैमाने के व्यवसाय जैसे कृषि, सिलाई का कार्य, बेकरी, ब्यूटी पार्लर आदि के लिए इस प्रकार का प्रारूप अत्यधिक उपयुक्त है।
8. **गोपनीयता** – सभी महत्वपूर्ण बातों की जानकारी केवल स्वामी को ही होती है इसलिए कोई भी बाहरी पक्षकार इनसे अनुचित लाभ नहीं उठा सकता।

एकल व्यापार के गुण –

1. **स्थापना में सुगमता** – इसकी स्थापना करना तथा बंद करना बहुत आसान है क्योंकि इसके लिए किसी प्रकार की वैद्यानिक औपचारिकताओं को पूरा नहीं करना पड़ता।
2. **शीघ्र–निर्णय** – एकल व्यापारी निर्णय शीघ्रता से ले सकता है क्योंकि उसे निर्णय लेने के लिए किसी से सलाह या अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती।
3. **गोपनीयता का लाभ** – व्यवसाय के महत्वपूर्ण रहस्य सुरक्षित रहते हैं क्योंकि उनका ज्ञान केवल एक ही व्यक्ति स्वामी को होता है।
4. **प्रत्यक्ष प्रेरणा** – परिश्रम व प्रतिफल में सीधा सम्बन्ध होने के कारण स्वामी को कठिन परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है।
5. **व्यक्तिगत नियंत्रण** – एकल व्यापारी अपने ग्राहकों व कर्मचारियों से व्यक्तिगत संपर्क बनाए रखता है जिससे कम समय व लागत पर अधिक व अचछा कार्य संभव होता है।

एकल व्यापार की सीमाएं–

1. **सीमित वित्तीय साधन** – एकाकी व्यापार में वित्तीय साधन व्यवसायी की अपनी स्वयं की पूंजी तथा उसकी रुपया उधार लेने की क्षमता तक सीमित होते हैं।
2. **सीमित प्रबंधकीय कुशलता** – इसमें सभी कार्य एकाकी व्यापारी द्वारा किए जाते हैं जो सभी क्षेत्रों में कुशल नहीं हो सकता । वह कुशल कर्मचारी की नियुक्ति करने में भी सक्षम नहीं होता।
3. **असीमित दायित्व** – एकाकी स्वामी निजी रूप से सभी ऋणों के लिए उत्तरदायी होता है, इस कारण वह जोखिम लेने से कतराता है।
4. **अस्थायी अस्तित्व** – व्यवसाय का जीवन, पूर्ण रूप में स्वामी से जुड़ा हुआ होता है। स्वामी की मृत्यु, पागलपन, दिवालिया होने की दशा में व्यवसाय बंद करना पड़ता है।
5. **विस्तार के लिए सीमित अवसर** – सीमित पूंजी तथा प्रबन्धकीय कुशलता के कारण व्यवसाय का विस्तार बहुत अधिक नहीं किया जा सकता।

एकल स्वामित्त्व की उपयुक्तता

संगठन का यह स्वरूप निम्नलिखित दशाओं में उपयुक्त हैं।

– उन व्यवसायों में जहाँ कम पूंजी व सीमित प्रबन्धकीय योग्यता की आवश्यकता पड़ती हो। जैसे फुटकर व्यापार ।

- उन व्यवसायों में जहाँ ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान की जाती हैं जैसे कपड़े सिलने में, बाल काटने में, दवा तथा कानून संबंधी सलाह देने में।
- अप्रमाणित वस्तुओं जैसे ऑर्डर पर जेवर बनाने के उत्पादन में।

2. साझेदारी

परिभाषा– भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार 'साझेदारी उन व्यक्तियों के मध्य एक संबंध है जिन्होंने ऐसे व्यवसाय के लाभ को परस्पर बांटने का समझौता किया है जिसे वे सब चला रहे हैं या उन सबकी ओर से कोई एक चला रहा है।

लक्षण :–

1) **एक से अधिक व्यक्तियों का होना** – साझेदारी के निर्माण के लिए न्यूनतम दो सदस्यों तथा अधिकतम 20 सदस्यों का होना अनिवार्य है।
2) **समझौता** – साझेदारी, साझेदारों के बीच लिखित या मौखिक समझौते का परिणाम होता है।
3) **उद्देश्य लाभ कमाना तथा आपस में बांटना** – साझेदारी का मुख्य लक्षण व्यवसाय में लाभ कमाना तथा उसे साझेदारों में परस्पर बांटना है।
4) **प्रबंध व नियंत्रण** – प्रत्येक साझेदार को प्रबंध में हिस्सा लेने का पूरा अधिकार होता है।
5) **असीमित दायित्व** – प्रत्येक साझेदार का दायित्व असीमित होता है।
6) **स्थायित्व का अभाव** – किसी भी साझेदार की मृत्यु, अवकाश ग्रहण करने, दिवालिया होने या फिर पागल होने पर, साझेदारी समाप्त हो सकती है।
7) **स्वामी एवं एजेंट का संबंध** – प्रत्येक साझेदार स्वामी तथा एजेंट दोनों के रूप में होता है।

साझेदारी के गुण :–

1) **निर्माण की सुविधा** – इसका निर्माण आसानी से बिना किसी कानूनी औपचारिकताओं को पूरा किए बिना किया जा सकता है।
2) **विशाल वित्तीय साधन** – सभी साझेदारों की पूंजी लगने से वित्तीय साधन अधिक हो जाते हैं तथा लाभ भी बढ़ जाता है।
3) **बेहतर निर्णय** – सभी महत्वपूर्ण निर्णय सभी साझेदारों की सहमति से लिए जाते हैं, परिणामस्वरूव बेहतर तथा संतुलित निर्णय होते हैं।
4) **जोख़िम का बँटवारा** – सारा जोखिम सभी साझेदारों में बंट जाता है। जिससे वह चिन्ता मुक्त होकर कार्य करता है।
5) **गोपनीयता** – साझेदारी फर्म को अपने खाते प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए साझेदारी के महत्त्वपूर्ण भेद गुप्त रखे जा सकते हैं।

सीमाएँ :–

1) **सीमित साधन** – एक साझेदारी फर्म में साझेदारों की संख्या सीमित होने के कारण उनके द्वारा लगाई गई पूंजी भी सीमित होती है।
2) **असीमित दायित्व** – साझेदारों का दायित्व असीमित होता है।
3) **निरतंरता का अभाव** – किसी भी साझेदार की मृत्यु, पागलपन या दिवालिया हो जाने पर व्यवसाय समाप्त हो जाता है।
4) **जन–विश्वास की कमी** – जनता का विश्वास साझेदारी फर्म में कम होता है क्योंकि फर्म के द्वारा वार्षिक रिपोर्ट तथा खाते प्रकाशित नहीं किए जाते।
5) **समन्वय का अभाव** – अधिक व्यक्ति होने से उनके विचारों में भिन्नता हो सकती है। जिसके कारण उनमें झगड़े होने लगते हैं और समन्वय का अभाव हो जाता है।

नोट – जब व्यवसाय का आकार मध्य स्तर का हो तथा साझेदारों में आपसी समझ–बूझ व सद्भावना हो तो यह प्रारूप अर्थात् साझेदारी सर्वोत्तम है। उदाहरण – C.A. फर्म, Law फर्म, होटलों तथा मध्य–स्तर के कारखानों में, etc.

साझेदारी काल और दायित्व के आधार पर बांटी जाती हैं।

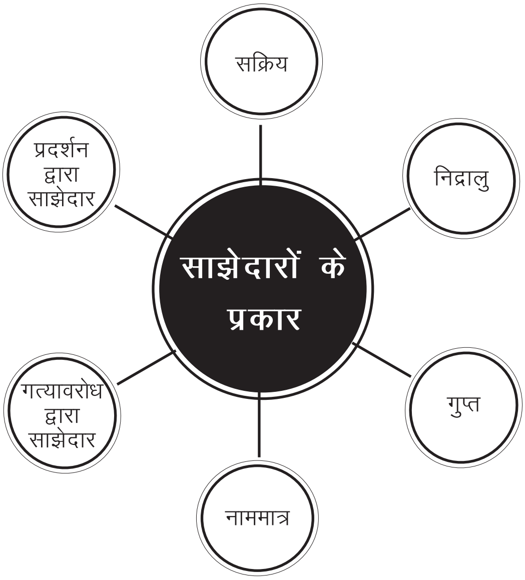
साझेदारों के प्रकार
सक्रिय
निद्रालु
गुप्त
नाममात्र
गत्यावरोध द्वारा साझेदार
प्रदर्शन द्वारा साझेदार

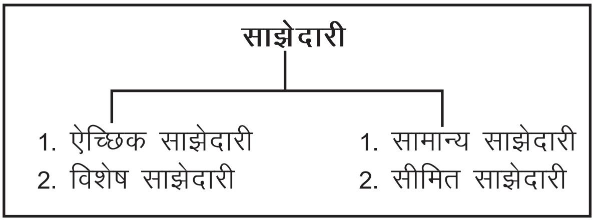

(1) काल के आधार पर –

ऐच्छिक साझेदारी	विशेष साझेदारी
यह साझेदारों की इच्छा पर निर्भर करती है तथा अनिश्चित काल तक चलती है।	यह साझेदारी किसी विशेष उद्देश्य के लिए प्रारम्भ की जाती है तथा उद्देश्य पूरा होने पर समाप्त की जाती है।

(2) दायित्व के आधार पर –

सामान्य साझेदारी	सीमित साझेदारी
1. इसमें साझेदारों का दायित्व असीमित तथा इकट्ठा होता है। 2. इसमें प्रत्येक साझेदार को फर्म के प्रबंध में भाग लेने का अधिकार है। 3. पंजीकरण अनिवार्य नहीं है 4. किसी भी साझेदार की मृत्यु, पागलपन, दिवालियापन से फर्म पर प्रभाव पड़ता है।	1. इसमें कम से कम एक साझेदार असीमित दायित्व वाला होना जरूरी है तथा बाकी साझेदारों का दायित्व सीमित होता है। 2. सीमित साझेदारों को प्रबंध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता। 3. पंजीकरण अनिवार्य है। 4. केवल सीमित साझेदार की मृत्यु पागलपन या दिवालियापन होने से फर्म पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

Types of Partners साझेदारों के प्रकार

प्रकार	फर्म में पूंजी	प्रबंध में भाग	लाभ–हानि का बंटवारा	दायित्त्व
सक्रिय साझेदार	फर्म में पूंजी लगाता है	प्रबंध में भाग लेता है।	लाभ–हानि बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
सुप्त / निष्क्रिय साझेदार	पूंजी लगाता है।	प्रबंध में भाग नहीं लेता।	लाभ–हानि बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
गुप्त साझेदार	पूंजी लगाता है परंतु आम–जनता में नहीं जाना जाता	प्रबंध में भाग लेता है।	लाभ–हानि बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
नाममात्र का साझेदार	पूंजी नहीं लगाता परंतु उसका नाम प्रयोग होता है।	प्रबंध में भाग नहीं लेता है।	आमतौर पर लाभ–हानि नहीं बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
गत्यावरोध द्वारा साझेदार	पूंजी नहीं लगाता परंतु अपने आचरण और व्यवहार से अपनी उपस्थिति का आभास देता है	प्रबंध में भाग नहीं लेता है।	लाभ–हानि नहीं बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
प्रदर्शन द्वारा साझेदार	पूंजी नहीं लगाता। दूसरों द्वारा साझेदार कहे जाने पर कोई आपत्ति नहीं करता।	प्रबंध में भाग नहीं लेता है।	लाभ–हानि नहीं बाँटता है।	असीमित दायित्त्व
अवयस्क साझेदार (18 वर्ष से कम आयु)	पूंजी नहीं लगाता	प्रबंध में भाग नहीं लेता है।	लाभ–हानि बाँटता है।	सीमित दायित्त्व (विनियोग की गई पूंजी तक)

साझेदारी संलेख – साझेदारों के बीच हुआ अनुबंध या समझौता जो मुद्रित कागज पर लिखा होता है तथा जिसमें साझेदारी के नियम तथा शर्तों का वर्णन होता है, साझेदारी संलेख कहलाता है। सामान्यतः इसमें निम्न जानकारियाँ दी जाती हैः–

1) फर्म का नाम व पता
2) साझेदारों के नाम व पते
3) साझेदारी की अवधि
4) व्यापार का क्षेत्र
5) साझेदारी द्वारा दी जाने वाली पूँजी
6) लाभ–हानि का अनुपात
7) साझेदारों के वेतन, आहरण, पूँजी पर ब्याज तथा आहरण पर ब्याज सम्बन्धित नियम
8) साझेदारों के अधिकार तथा दायित्व
9) साझेदारों के आगमन, निवृत्ति व फर्म में समापन से सम्बन्धित प्रावधन / नियम
10) विवादों को हल करने की विधियाँ
11) ख्याति का मूल्यांकन आदि ।

साझेदारी फर्म का पंजीकरण – कानूनी रूप से साझेदारी फर्म का पंजीकरण कराना अनिवार्य नहीं है। परंतु पंजीकरण फर्म तथा साझेदारों के हित में होता है एक अपंजीकृत फर्म को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

1) अपंजीकृत फर्म का साझेदार अन्य साझेदार के विरूद्ध कोई मुकदमा दायर नहीं कर सकता ।
2) अपंजीकृत फर्म किसी बाहरी पक्ष के विरूद्ध मुकदमा दायर नहीं कर सकती।
3) अपंजीकृत फर्म किसी साझेदार के विरूद्ध भी मुकदमा दायर नहीं कर सकती।

3. संयुक्त हिंदू परिवार व्यवसाय

संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय का स्वामित्व एवं संचालन एक संयुक्त हिन्दू परिवार के सदस्य करते हैं। व्यवसाय का प्रबंध तथा नियंत्रण परिवार के वरिष्ठ पुरूष सदस्य (मुखिया), जिसे 'कर्ता' कहा जाता है, के द्वारा किया जाता है। इसका प्रशासन हिंदू कानून के द्वारा किया जाता है। इसमें सदस्यता का आधार–परिवार में जन्म होता है। इसका का निर्माण दो बातों पर निर्भर करता है–

i) परिवार में कम से कम दो सदस्यों का होना।
ii) पूर्वजों की सम्पत्ति का होना।

इसमें सदस्यता को नियंत्रित करने की दो प्रणालियाँ है।

	दायभाग प्रणाली		मिताक्षरा प्रणाली
i)	यह प्रणाली पश्चिम बंगाल में प्रचलित है।	i)	यह प्रणाली पश्चिम बंगाल को छोड़कर सारे भारत में प्रचलित है।
ii)	इसके अंतर्गत परिवार के पुरूष व महिला दोनों ही सहभागी होते हैं।	ii)	इसमें केवल परिवार के पुरूष सदस्य ही सहभागी होते हैं।

2005 में हिन्दू उत्तराधिकार कानून के अन्तर्गत महिलाओं को भी सहभागी अधिकार दिया गया है।

संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय के लक्षण–

1) **निर्माण** – इसमें परिवार में कम से कम दो सदस्य एवं पैतृक संपत्ति जो उन्हें विरासत में मिली हो, का होना आवश्यक है।
2) **सदस्यता**– इसकी सदस्यता परिवार में जन्म लेते ही आरम्भ हो जाती है।
3) **नियन्त्रण**– व्यवसाय के संचालन का पूरा अधिकार केवल कर्ता के पास होता है। परिवार के अन्य सदस्य केवल उसे सलाह दे सकते हैं।
4) **दायित्व**– कर्ता के अलावा अन्य सभी सदस्यों का दायित्व संयुक्त संपत्ति में उनके व्यक्तिगत हित के मूल्य तक सीमित होता है।
5) **स्थायी अस्तित्व**– व्यवसाय का अस्तित्व स्थाई होता है। सदस्यों की मृत्यु, दिवालियापन या पागलपन का कोई प्रभाव व्यवसाय पर नहीं होता।
6) **नाबालिग सदस्य** – इसमें सदस्यता परिवार में जन्म लेने के कारण होती है, इसलिए नाबालिग भी व्यवसाय के सदस्य होते हैं।
7) **पंजीकरण** – इसके लिए किसी भी प्रकार के पंजीकरण की आवश्यकता नहीं होती।

संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय के गुण :–

1) सीमित पूँजी–कर्ता के पास व्यवसाय के प्रबन्ध तथा नियंत्रण का पूर्ण अधिकार होने के कारण वह निर्णय शीघ्रता से लेता है। इसमें किसी भी अन्य सदस्य को हस्ताक्षेप करने का अधिकार नहीं होता है।
2) कर्ता का असीमित दायित्व– इसमें कर्ता का दायित्व असीमित होता है जिसके कारण वह नये तथा जोखिम भरे निर्णय लेने से हिचकिचाता है।
3) कर्ता का प्रभुत्व–कर्ता अकेले ही व्यवसाय का प्रबंध करता है जो कभी–कभी अन्य सदस्यों को मान्य नहीं होता है। इससे उनमें टकराव हो सकता है व पारिवारिक इकाई भी भंग हो सकती है।
4) सीमित प्रबंधकीय क्षमता – व्यवसाय के प्रबन्ध की पूरी जिम्मेदारी कर्ता

पर होती है, परन्तु वह व्यवसाय के हर क्षेत्र में कुशल नहीं हो सकता तथा उसके द्वारा लिया गया कोई निर्णय व्यवसाय को बर्बाद कर सकता है।

5) असंतुलित निर्णय – कर्ता को निर्णय लेते समय किसी से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण उसके द्वारा लिया गया निर्णय कई बार असंतुलित होता है।

संयुक्त हिन्दू परिवार के व्यवसाय की सीमाएँ :–

1) **सीमित साधन**– संयुक्त हिन्दू परिवार के साधन सीमित होते हैं जिसके कारण बड़े पैमाने के व्यवसाय की स्थापना नहीं की जा सकती है।
2) **सीमित प्रबंधकीय क्षमता**–इसमें सभी निर्णय कर्ता को लेने होते है परंतु वह व्यवसाय के हर क्षेत्र में कुशल नहीं हो सकता तथा उसके द्वारा लिया गया कोई निर्णय व्यवसाय को बर्बाद कर सकता है।
3) **असीमित उत्तरदायित्व**– इसमें कर्ता का दायित्व असीमित होता है जिसके कारण वह नये तथा जोखिम भरे निर्णय लेने से हिचकिचाता है।
4) **असंतुलित निर्णय**– कर्ता को निर्णय लेते समय किसी से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण उसके द्वारा लिया गया निर्णय कई बार असंतुलित होता है।
5) **प्रेरणा की कमी**– कर्ता के अतिरिक्त सदस्यों का दायित्व सीमित तथा लाभ में बराबर हिस्सा होता है। परंतु इनकी प्रबंध में भागीदारी नहीं होती। अतः इनमें प्रेरणा में कमी पाई जाती है।
6) **अस्थिरता**– संयुक्त हिन्दू व्यवसाय की निरंतरता पर हमेशा खतरा बना रहता है। व्यापार में छोटी–सी अनबन भी व्यापार को समाप्त कर सकती हैं।

नोट – देश में संयुक्त हिन्दू परिवारों की संख्या कम होती जा रही है, इसी कारण व्यवसाय के इस प्रारूप का चलन भी कम होता जा रहा है।

दिमागी कसरत

प्र. अब्दुल एक जूते बनाने वाली फैक्टरी का अकेला स्वामी है। फैक्टरी का काम फैल रहा है और आगे बढ़ रहा है परंतु उसे फैक्टरी को सीमित वित्तीय साधन तथा सीमित प्रबंधकीय कुशलता के कारण अब मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

i) उस व्यावसायिक संगठन के प्रारुप को पहचानिए जो अब्दुल चला रहा है?

ii) कोई दो विकल्प इस समसया को दूर करने के लिए लिखिए।

प्र. एक साझेदारी फर्म में अधिकतम साझेदारों की संख्या कितनी होनी चाहिए–

i) बैंकिंग व्यवसाय ii) बैंकों के अतिरिक्त दूसरे व्यवसायों में

4. सहकारी समिति

सहकारिता
सह   कारिता
↓   ↓
मिलकर   कार्य

सहकारिता का अर्थ है किसी समान उद्देश्य के लिए मिलकर कार्य करना। सहकारिता संगठन या समिति से अभिप्राय ऐसे ऐच्छिक संगठन से है जिसकी स्थापना कुछ व्यक्तियों द्वारा सहकारिता एवं समानता के आधार पर पारस्परिक आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए की जाती है।

उद्देश्य – अपने सदस्यों को पूंजीपति वर्ग व मध्यस्थों के द्वारा किए जाने वाले शोषण से बचाना, न कि लाभ कमाना।

विशेषताएँ या लक्षण :–

1. **स्वैच्छिक सदस्यता** – समान हित रखने वाला कोई भी व्यक्ति समिति का सदस्य बन सकता है।
2. **वैधानिक स्थिति** – सहकारी समिति का पंजीकरण अनिवार्य है। इसके बाद समिति का अस्तित्व अपने सदस्यों से अलग हो जाता हैं
3. **सीमित दायित्व** – सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा लगाई गई पूँजी तक सीमित होता है।
4. **नियंत्रण** – इनका नियंत्रण स्वयं सदस्यों द्वारा प्रजातंत्रात्मक आधार पर किया जाता है।
5. **मुख्य उद्देश्य** – इसका मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों की अधिकतम संभव सहायता प्रदान करना है।
6. **नकद व्यापार** – सहकारी समितियाँ नकद व्यापार को प्राथमिकता देती है।
7. **सरकारी नियन्त्रण** – सरकारी समितियों को अपनी वार्षिक रिपोर्ट एवं लेखे रजिस्ट्रार के पास भेजने होते हैं ताकि सरकार समय–समय पर इन लेखों का निरिक्षण करके इन पर नियन्त्रण रख सकें।
8. **वित्त की व्यवस्था** – सरकारी समितियाँ सदस्यों को बेचे गए अंशों से, सरकार से प्राप्त ऋृण से वित्त को एकत्रित करती हैं।

सहकारी समिति के लाभ :–

1. **निर्माण में सुविधा** – समान हित वाले कोई भी दस व्यस्क व्यक्ति मिलकर इसका निर्माण कर सकते हैं। पंजीकरण की प्रक्रिया भी साधारण होती है।
2. **वैधानिक स्थिति (स्थायित्त्व)** पृथक वैधानिक अस्तित्व होने के कारण सदस्यों की मृत्यु, दिवालियापन एवं अक्षमता का समिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. **सीमित दायित्त्व** – इसके सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा लगाई गई पूंजी तक सीमित होता है।
4. **सस्ती दर पर वस्तुएँ उपलब्ध कराना** – ये समितियाँ, वस्तुएँ सीधे थोक व्यापारियों से खरीदकर, अपने सदस्यों को बाजार से कम दर पर वस्तुएँ विक्रय करके उनके लाभ पहुँचाती हैं।
5. **सरकारी सहायता** – सरकार सहकारी समितियों को बहुत से वित्तीय अनुदान जैसे कम टैक्स, नीची ब्याज दर पर ऋण देकर सहायता प्रदान करती है।

सीमाएँ :–

1. **पूँजी की कमी** – सरकारी संगठन प्रायः सीमित साधनों वाले व्यक्तियों द्वारा बनाए जाते हैं इसलिए इन्हें सीमित पूँजी की समस्या का सामना करना पड़ता है।
2. **अकुशल प्रबन्ध** – इनका प्रबंध स्वयं ही उनके सदस्यों द्वारा किया जाता है जो कि पेशेवर कुशल और अनुभवी नहीं होते तथा समिति का संचालन प्रभावपूर्ण ढंग से नहीं कर सकते ।
3. **गोपनीयता का अभाव** – इनको अपनी वार्षिक रिपोर्ट और खाते रजिस्ट्रार के पास भेजने होते हैं जिससे व्यवसाय की गोपनीय बातें भी सबके सामने आ जाती है।
4. **अत्यधिक सरकारी नियंत्रण** – सरकारी समितियाँ, राज्य सरकार के सहकारी विभाग के कानूनों और नियमों के अधीन होती हैं।
5. **सदस्यों के बीच मतभेद** – इनमें बहुत सी दशाओं में प्रबन्धकीय समिति तथा सदसयों के बीच मतभेद–विवाद उत्पन्न हो जाते हैं तथरा प्रबन्धकीय समिति सेवा के उद्देश्य को भूलकर, अपने स्वार्थ के लिए शासन करना आरम्भ कर देती है।

सहकारी संगठन के प्रकार

1. **उपभोक्ता सहकारी समिति**– इनका मुख्य उद्देश्य मध्यस्थों के द्वारा किए जाने वाले ग्राहकों को शोषण को खत्म करना है। यह आम जरूरत की सभी वस्तुएँ सीधे उत्पादकों तथा थोक व्यापारियों से खरीदकर सदस्यों को उचित कीमतों पर उपलब्ध कराती हैं।
2. **उत्पादक सहकारी समिति** – इनका मुख्य उद्देश्य छोटे उत्पादकों को मदद प्रदान करना है जिन्हें व्यक्तिगत रूप में उत्पादन के लिए जरूरी कच्चा माल, मशीनरी और आधुनिक तकनीक को जुटाने में कठिनाई होती है। ये समितियाँ दो प्रकार की होती है :

(अ) एक दो जो अपने सदसयों को आवश्यक कच्चा माल, आगते, मशीनरी इत्यादि उचित मूल्य पर उपलब्ध कराती है।

(ब) दूसरी जो इन उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचती हैं।

3. **सहकारी विपणन समितियाँ** – यह छोटे उत्पादकों तथा कृषकों को जिन्हें अपने माल को लाभकारी मूल्यों में बेचने में कठिनाई होती है, की मदद करती है। यह अपने सदस्यों के लिए विभिन्न प्रकार की विपणन सम्बन्धी सुविधाएँ जैसे परिवहन, भण्डारण, पैकेजिंग, ग्रेडिंग व बाजार सर्वेक्षण का इंतजाम करती है। तथा यह अपने सदस्यों को उनके द्वारा तैयार किए गए माल के लिए उचित मूल्य दिलाने में मदद करती है।

4. **सहकारी कृषि समिति** – इनके सदस्य ये छोटे किसान होते है जो मिलकर कृषि कार्यों को करना चाहते हैं यह समितियाँ अपने सदस्यों के लिए अच्छे बीज, आधुनिक औजार, मशीनरी आधुनिक तकनीक, खाद तथा सिंचाई सुविधाओं का प्रबन्ध करती है।

5. **सहकारी साख समिति** – इनका मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों को साहूकारों के चुंगल से बचाना होता है। यह अपने जरूरतमंद सदस्यों को आसान शर्तें तथा कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराती है।

6. **सहकारी आवास समिति** – इनका मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों को आसान शर्तों व उचित मूल्यों पर फ्लैट अथवा प्लॉट उपलब्ध करना है।

5. संयुक्त पूंजी कम्पनी :–

अर्थ– संयुक्त पूंजी कम्पनी व्यक्तियों के द्वारा बनाया गया ऐच्छिक संघ है। जिसका अपना एक अलग वैधानिक अस्तित्व, शाश्वत जीवन तथा सार्वमुद्रा होती है तथा इसकी पूंजी हस्तांतरणीय शेयरों में बंटी हुई होती है।

लक्षण–

1. **गठन** – भारतीय कंपनी अधिनियम 2013 के अनुसार कंपनी का पंजीकरण अनिवार्य है। कपंनी के गठन के लिए कई दस्तावेजों को तैयार करने और उन्हें रजिस्ट्रार के पास जमा करवाने तथा अन्य कई वैधानिक औपचारिकताएँ पूरी करनी पड़ती हैं।

2. **पृथक वैधानिक अस्तित्व** – इसकी रचना कानून के द्वारा होती है तथा समामेलन के कारण इसकी अपनी पृथक पहचान होती है। कानून की निगाह में कम्पनी तथा उसके सदस्य एक नहीं होते हैं।

3. **शाश्वत अस्तित्व** – संयुक्त पूंजी कम्पनी की रचना तथा इसका अंत केवल काननू के द्वारा ही किया जा सकता है। कम्पनी के अस्तित्व पर इसके शेयरधारियों के आने जाने, मृत्यु, पागलपन, दिवालियापन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

4. **सीमित दायित्व** – कम्पनी के प्रत्येक सदस्य का दायित्व उसके द्वारा क्रय किए गए अंशों के अंकित मूल्य तक अथवा उसके द्वारा दी गई गारंटी की राशि तक सीमित होता है।
5. **अंशों की हस्तांतरणीयता** – कम्पनी की पूंजी हस्तांतरणीय शेयरों में बंटी हुई होती है। केवल निजी कम्पनी के शेयरों के हस्तांतरण पर कुछ प्रतिबंध होते हैं।
6. **सार्वमुद्रा** – एक कृत्रिम व्यक्ति होने के कारण कम्पनी हस्ताक्षर नहीं कर सकती। जिसके कारण हर कम्पनी की एक सार्वमुद्रा होती है जो कम्पनी के अधिकारयुक्त हस्ताक्षर का कार्य करती है। कम्पनी के हर महत्वपूर्ण दस्तावेज पर इसकी सार्वमुद्रा अंकित की जाती है।
7. **नियंत्रण व प्रबंधन** – कम्पनी का प्रबन्ध व नियन्त्रण निदेशक मंडल के द्वारा किया जाता है जिसका चयन सभी अंशधारियों के द्वारा वोट देकर किया जाता है। स्वामित्व एवं प्रबंध का अलग–अलग होना कम्पनी की एक महत्वपूण विशेषता है।

संयुक्त पूंजी कम्पनी के गुण

1. **सीमित दायित्व** – अंशधारियों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे गए शेयरों के अंकित मूल्य अथवा उनके द्वारा दी गई गारंटी की राशि तक सीमित होता है।
2. **विशाल वित्तिय साधन** – कम्पनी के पास वित्तीय साधन बहुत अधिक होते हैं। वह विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियां जारी करके, जनता से जमा स्वीकार करके, विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेकर – बहुत अधिक मात्रा में वित्त इकट्ठा कर सकती है।
3. **अंशों के हस्तांतरण में सुविधा** – कम्पनी के अंश बाजार में आसानी से खरीदे और बेचे जा सकते हैं। इस कारण आम जनता को कम्पनी में पैसा निवेश करने लिए प्रोत्साहन मिलता है।
4. **स्थायी अस्तित्व** – कम्पनी का अपने सदस्यों से पृथक अस्तित्व होने के कारण, उनकी मृत्यु, दिवालियापन तथा अक्षमता का कम्पनी के अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. **वृद्धि और विस्तार** – कम्पनी के पास विशाल वित्तीय साधन होते हैं, जिसकी वजह से इसका विस्तार तथा वृद्धि करना आसानी से संभव हो पाता है।
6. **पेशेवर प्रबन्ध** – विशाल वित्तीय साधन होने के कारण कम्पनी कुशल तथा पेशेवर व्यक्तियों की सेवाएं लेने में समर्थ होती है।

संयुक्त पूंजी कम्पनी की सीमाएँ

1. **निर्माण की जटिल प्रक्रिया** – कम्पनी के निर्माण की प्रक्रिया बहुत लम्बी, कठिन, जटिल होती है। इसमें लम्बी समयावधि लगती है तथा कोई कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करना पड़ता है।
2. **गोपनीयता का अभाव** – कम्पनी को कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार समय–समय पर कम्पनियों के रजिस्ट्रार को बहुत–सी सूचनाएँ देनी पड़ती हैं। ये समस्त सूचनाएँ जन साधारण को उपलब्ध होती हैं। इस कारणवश कम्पनी के लिए गोपनीयता बनाए रखना बहुत कठिन हैं।
3. **निर्णय लेने में देरी** – कम्पनी का वास्तविक प्रबंध संचालक मंडल द्वारा किया जाता हैं। इनकी मदद के लिए संस्था में उच्च, मध्य व निम्न स्तरीय प्रबंधक भी होते हैं। इस व्यवस्था में विभिन्न प्रस्तावों के सम्प्रेषण व अनुमोदन काफी समय लग जाता है। परिणामस्वरूप निर्णय लेने में देरी होती है।
4. **प्रेरणा का अभाव** – कम्पनी का प्रबन्ध स्वामियों के द्वारा नहीं बल्कि पेशेवर प्रबन्धकों के द्वारा किया जाता है। इन्हें संस्था से अपनी सेवाओं के बदले निश्चित वेतन प्राप्त होता है। इसीलिए कम्पनी में अधिक मेहनत व कुशलता से काम करने की प्रेरणा का अभाव होता है।
5. **अल्पतंत्रीय प्रबन्ध** – सिद्धांततः कम्पनी एक लोकतात्रिंक संस्था है परन्तु वास्तविकता यह नहीं है इसका प्रबन्ध संचालक मंडल के द्वारा चलाया जाता है, जो वास्तव में कुछ अंशधारियों के प्रतिनिधि होते हो कई बार यह निर्णय लेते समय अपने व्यक्तिगत हित और लाभ को ध्यान में रखते हैं तथा कम्पनी और अंशधारियों के हितों की अवहेलना कर देते हैं।

कम्पनियों के प्रकार :–

स्वामित्व के आधार पर कम्पनियाँ दो प्रकार की होती है :–

1. निजी कम्पनी
2. सार्वजनिक कम्पनी

निजी कम्पनी

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धरा 2(68) के अनुसार निजी कम्पनी का आश्य एक ऐसी कम्पनी से है जो :–

1. अपने सदस्यों के अंश हस्तांतरण के अधिकार पर प्रतिबंध लगाती है।
2. अपने सदस्यों की संख्या 2 से 200 तक सीमित रखती है जिसमें कम्पनी के वर्तमान व भूतपूर्व कर्मचारी (जो कि कम्पनी के सदस्य भी है) की गणना नहीं होती।
3. अपने अंशों के विनियोग के लिए जनता को आमंत्रित करने पर प्रतिबंध लगाती है।
4. अपने जन विक्षेपों में विनियोग के लिए जनता को आमंत्रित करने पर प्रतिबंध लगाती है।
5. चुकता अंश पूँजी की न्यूनतम राशि 1 लाख रूपये रखती है।

सार्वजनिक कम्पनी

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(71) के अनुसार ''सार्वजनिक कम्पनी का आशय ऐसी कम्पनी से है जो कि निजी नहीं है।''

एक सार्वजनिक कम्पनी वह हैः–

1. जिसके अंशो के हस्तांतरण पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।
2. जिसकी अधिकतम सदस्य संख्या पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।
3. जो अंशो व ऋणपत्रों में विनियोग के लिए जनता को आमंत्रित कर सकती है।
4. अपने जन विक्षेपों में विनियोग के लिए जनता को आमंत्रित करने पर प्रतिबंध लगाती है।
5. चुकता अंश पूँजी की न्यूनतम राशि 1 लाख रूपये रखती है।

निजी और सार्वजनिक कम्पनी में अन्तर

आधार	निजी कम्पनी	सार्वजनिक कम्पनी
1. नाम	अंत में 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द का होना अनिवार्य है।	अंत में केवल ' लिमिडेट' शब्द का होना अनिवार्य है।
2. सदस्यों की संख्या	न्यूनतम – 2 अधिकतम – 50	न्यूनतम – 7 अधिकतम – कोई सीमा नहीं
3. संचालको की संख्या	कम से कम 2 संचालक	कम से कम 3 संचालक
4. न्यूनतम चुकता अंश पूंजी	1 लाख	5 लाख
5. जनता को आमंतत्रण	ऋणपत्रों को निर्गमित करने के लिए जनता को आमंत्रितं नहीं कर सकती।सकती है।	ऋणपत्रों को निर्गमित करने के लिए जनता को आमंत्रित कर
6. अंशों का हस्तांतरण	अंशों का हस्तांतरण की स्वतंत्रता नहीं है।सकती है।	अंशों को हस्तांतरित कर
7. सदस्यों की सूची	सदस्यों की सूची बनाना आवश्यक नहीं है।	यदि सदस्यों की संख्या 50 से अधिक है, तो सूची बनाना अनिवार्य है।
8. प्रारम्भ	समामेलन का प्रमाण–पत्र मिलने के बाद	व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण पत्र के बाद

दिमागी कसरत

प्र. तुम यह कैसे पता लगाओगे कि एक कम्पनी निजी या सार्वजनिक।

i) निजी या सावर्जनिक।

ii) निजी कम्पनियों के दो उदाहरण लिखो।

iii) सार्वजनिक कम्पनियों के दो उदाहरण दो ।

एक व्यक्ति कम्पनी (OPC)

इसका अभिप्राय एक ऐसी कम्पनी से है जिसमें केवल एक ही व्यक्ति सदस्य होता है तथा जो सामान्य कम्पनी के सिद्धांत पर काम करती है।

OPC की स्थापना के कारण

1. असंगठित क्षेत्र को संगठित बनाना :– OPC के अस्तित्व में आने से एकाकी व्यापारियों को असंगठित क्षेत्र से संगठित क्षेत्र में प्रवेश करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। अब एक एकाकी व्यापारी दूसरे लोगों को साथ मिलाए बिना भी एक कम्पनी की स्थापना कर सकता है जिससे उसे संगठित क्षेत्र के सभी लाभ प्राप्त होंगे।
2. गलत ढंग से होने वाली निजी कम्पनी की स्थापना को रोकना :– अब कम्पनी की स्थापना के लिए केवल औपचारिकता पूरी करने हेतु किसी दूसरे व्यक्ति को नाममात्र के लिए साथ मिलाने की जरूरत नहीं होगी।

OPC की विशेषताएँ

1. केवल एक व्यक्ति का होना जरूरी
2. निजी कम्पनी जैसी स्थिति
3. सीमित दायित्व
4. संचालकों की संख्या 15 तक हो सकती है।
5. OPC को वार्षिक साधरण सभा बुलाने की छूट है।
6. पृथक वैधनिक अस्तित्व
7. स्थायी अस्तित्व

6. कम्पनी का निर्माण

कम्पनी के निर्माण का अर्थ एक नई कम्पनी को अस्तित्व में लाना तथा उसका व्यवसाय प्रारम्भ कराने से होता है। एक नई कम्पनी के निर्माण की निम्नलिखित अवस्थाएं है :–

(अ) प्रवर्तन (ब) निर्गमन (स) पूंजी अभिदान (द) व्यवसाय का आरम्भ करना

निम्नलिखित अवस्थाएं है :–

(अ) प्रवर्तन (ब) निर्गमन (स) पूंजी अभिदान (द) व्यवसाय का आरम्भ करना

एक प्राईवेट कम्पनी को प्रथम दो अवस्थाओं से गुजरना होता है लेकिन एक सार्वजनिक कम्पनी को चारों अवस्थाओं से गुजरना होता है।

(अ) **प्रवर्तन** – प्रवर्तन के अन्तर्गत व्यावसायिक अवसरों की खोज की जाती है तथा कम्पनी का निर्माण किया जाता है।

प्रवर्तन में उठायें जाने वाले कदम

1) **व्यावसायिक अवसरों की पहचान करना** – प्रवर्तक का प्रथम कार्य है व्यावसायिक अवसरों की पहचान करना कि किस वस्तु या सेवा का निर्माण किया जाये।
2) **सम्भावना अध्ययन** – अवसरों की पहचान करने के बाद प्रवर्तक तकनीकी सम्भावना, वित्तीय और आर्थिक सम्भावना का अध्ययन करता है।
3) **नाम की स्वीकृति प्राप्त करना** – कम्पनी के नाम को छांटने के बाद प्रवर्तक उसे कम्पनी के रजिस्ट्रार के पास स्वीकृति के लिए प्रार्थना–पत्र देता है।
4) **पार्षद सीमानियम के हस्ताक्षर कर्ताओं को निर्धारित करना** – प्रवर्तक को कम्पनी के संचालकों को नियुक्त करना पड़ता है ताकि वे पार्षद सीमा नियम पर हस्ताक्षर कर सके।
5) **पेशेवरों की नियुक्ति** – प्रवर्तकों को कम्पनी के मर्चेंट बैंकर्स तथा अंकेक्षकों की नियुक्ति करनी पड़ती है।
6) **आवश्यक प्रपत्र तैयार करना** – प्रवर्तकों को पार्षद सीमा नियम, पार्षद अन्तर्नियम आदि वैधानिक दस्तावेजों को रजिस्ट्रार के पास भेजने के लिए तैयार कराना पड़ता है।

ब) **निगमन** – निगमन का अर्थ कम्पनी अधिनियम 1956 के अधीन कम्पनी का रजिस्ट्रेशन कराने एवं निगमन प्रमाण–पत्र प्राप्त करने से होता है। निगमन अवस्था में उठाये जाने वाले कदम :

1) **निगमन हेतु आवेदन देना** – कम्पनी के प्रवर्तक को कम्पनी का रजिस्ट्रेश कराने के लिए राज्य के रजिस्ट्रार के पास आवदेन–पत्र भेजना होता है।
2) **आवश्यक प्रपत्र जमा कराना** – प्रवर्तकों को निम्नलिखित प्रपत्र जमा कराने होते हैं :
    i) पार्षद सीमा नियम
    ii) पार्षद अंतर्नियम
    iii) पंजीकृत पूंजी का विवरण

iv) संचालकों की स्वीकृति

v) प्रस्तावित प्रबन्ध संचालकों के साथ ठहराव

vi) वैधानिक घोषणा

3) **शुल्क का भुगतान** – उपरोक्त प्रपत्रों के साथ रजिस्ट्रेशन की फीस जमा करानी पड़ती है। यह फीस अधिकृत पूंजी पर निर्भर करती है।

4) **रजिस्ट्रेशन** – रजिस्ट्रार सभी दस्तावेजों की जांच करता है। जांच ठीक पाये जाने के बाद वह कम्पनी का नाम रजिस्टर कर लेता है।

5) **निगमन का प्रामण–पत्रा प्राप्त करना** – कम्पनी का नाम रजिस्टर हो जाने के बाद रजिस्ट्रार 'निगमन प्रमाण–पत्र' जारी करता है। जिसे कम्पनी का 'जन्म प्रमाण–पत्र' कहा जाता है।

(स) **पूंजी अभिदान** – एक सार्वजनिक कम्पनी अंशों व ऋण–पत्रों को जारी करके, जनता से कोष प्राप्त कर सकती है। इसके लिए इसे प्रविवरण जारी करना होता है तथा निम्न कदम उठाने होते हैं।

1) **सेबी से स्वीकृति प्राप्त करना** – सेबी भारतीय पूंजी बाजार को नियन्त्रित करती है एक सार्वजनिक कम्पनी को जनता से पूंजी जुटाने के लिए सेबी से मंजूरी लेनी पड़ती है।

2) **प्रविवरण फाईल करना** – प्रविवरण का अर्थ ऐसे प्रपत्र से जो जनता से निक्षेप आमंत्रित करता है। कम्पनी के अंशों या ऋणपत्रों को क्रय करने के लिए जनता के आमंत्रित करता है।

3) **बैंकर्स दलालों एवं अभिगोपकों की नियुक्ति** – कम्पनी द्वारा नियुक्त बैंक आवेदन राशि प्राप्त करते हैं दलाल जनता को शेयर आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं यदि जनता सभी शेयर के लिए आवेदन नहीं करती तो अभिगोपक कमीशन लेकर सभी शेयर खरीद लेते हैं।

4) **न्यूनतम अभिदान** – सेबी के अनुसार न्यूनतम अभिदान की राशि कुल निर्गमन का 90 प्रतिशत होना चाहिए नहीं तो शेयरों का आबंटन नहीं किया जाएगा तथा कम्पनी को आगामी 10 दिनों में आवेदन राशि को वापस करना होगा ।

5) **स्टाक एक्सचेंज को आवेदन करना** – एक सार्वजनिक कम्पनी को अपने शेयर किसी शेयर बाजार में लिस्ट कराना आवश्यक है। इसलिए प्रवर्तक किसी शेयर बाजार में आववेद करते हैं।

6) **अंशों का आबंटन** – अंशों के आबंटन से अभिप्राय प्राप्त किये गये

आवेदन–पत्रों को स्वीकार करना है। शेयर होल्डर को आंबट पत्र भेजा जाता है तथा रजिस्ट्रार के पास शेयर होल्डर का नाम, पता व अन्य जानकारी भेजी जाती है।

(द) **व्यवसाय आरम्भ करना** – एक सार्वजनिक कम्पनी को व्यवसाय आरम्भ करने के प्रमाण–पत्र की आवश्यकता होती है। इसे प्राप्त करने के लिए रजिस्ट्रर के पास निम्नलिखित प्रमाण–पत्र भेजने आवश्यक है।

1) इस बात की घोषणा की न्यूनतम अभिदान 90 प्रतिशत प्राप्त कर लिया गया है।
2) इस बात की घोषणा की सभी संचालकों ने जितने शेयर प्राप्त किये हैं उनकी राशि जमा करा दी है।
3) इस बात की घोषणा की उपरोक्त आवश्यकताएं पूर्ण कर ली गई हैं। इन घोषणाओं पर सभी संचालकों के हस्ताक्षर होने चाहिए।

कम्पनी के निर्माण के प्रयोग किये जाने वाले महत्वपूर्ण प्रपत्र–

1) **पार्षद सीमा नियम** – पार्षद सीमा नियम कम्पनी का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। बिना पार्षद नियम के कोई भी कम्पनी रजिस्टर्ड नहीं कराई जा सकती । इसे कम्पनी का जीवनदायी दस्तावेज भी कहा जाता है।

   1) **स्थान वाक्य** – इस वाक्य में उस राज्य का नाम लिखा जाता है जिसमें कम्पनी का प्रजीकृत कार्यालय स्थापित किया जाता है।
   2) **उद्देश्य वाक्य** – इस वाक्य में कम्पनी के मुख्य उद्देश्य तथा मुख्य उद्देश्य के सहायक उद्देश्य दिये रहते हैं
   3) **दायित्व वाक्य** – इस वाक्य के अन्तर्गत यह बताया जाता है कि कम्पनी के सदस्यों का दायित्व उसके द्वारा लियें गए अंशों पर अदत्त राशि तक सीमित है।
   4) **पूंजी वाक्य** – इस वाक्य के अन्तर्गत उस पूंजी की मात्रा को निर्धारित किया जाता है। जिसमें कम्पनी का पंजीयन किया गया है।

2) **पार्षद अन्तर्नियम** – पार्षद अंतर्नियम में कम्पनी के आन्तरिक प्रबन्ध के नियम दिये जाते हैं। यह कम्पनी के संचालकों एवं अधिकारियों के अधिकार एवं कर्त्तव्यों का वर्णन करता है।

   पार्षद – अन्तर्नियम की विषय सामग्री –

   1) अंश पूंजी की राशि एवं अंशों के वर्ग
   2) प्रत्येक वर्ग के शेयर धारक के अधिकार

3) शेयर के आबंटन की प्रक्रिया
4) शेयर जारी करने की प्रक्रिया
5) शेयरों के हरण करने एवं पुनः जारी करने की प्रक्रिया
6) सभाओं में वोट देने एवं प्राक्सी सम्बन्धी नियम
7) संचालकों के नियुक्त करने व हटाने की प्रक्रिया
8) लाभांश की घोषणा एवं भुगतान सम्बन्धी नियम
9) पूंजी के परिवर्तन की प्रक्रिया
10) कम्पनी के समापन की प्रक्रिया

(3) **प्रविवरण** – प्रविवरण एक ऐसा प्रपत्र है जो जनता को शेयर या ऋण खरीदने के लिए आमन्त्रित करता है। इसमें कम्पनी का पूरा इतिहास होता है। इसमें कम्पनी की वर्तमान एवं भावी सम्भावनाएं विनियोजकों को बताई जाती है।

प्रविवरण की विषय सामग्री –

1) इसमें कम्पनी का नाम, पता एवं रजिस्टर्ड ऑफिस का पता दिया जाता है।
2) कम्पनी के मुख्य उद्देश्य।
3) कम्पनी की पंजीकृत पूंजी एवं अंशों के प्रकार।
4) संचालकों के नाम एवं पते।
5) बैंक का नाम, ब्रेकर का नाम एवं अभिगोपकों के नाम।
6) मचेंन्ट बैंकर्स के नाम।

(4) **स्थानापन्न प्रविवरण** – एक सार्वजनिक कम्पनी जो कम्पनी में धन विनियोग करने के लिए साधारण जनता को आमंत्रित नहीं करना चाहती वह प्रविवरण को निर्गमित नहीं करती। इस स्थिति में उसे कम्पनियों के रजिस्ट्रार के पास एक 'स्थानापन्न प्रविवरण' दाखिल करना होगा। यह सभी संचालकों द्वारा हस्ताक्षरित किया जाना चाहिए और इसका एक प्रति रजिस्ट्रार के पास जमा की जानी चाहिए। प्रविवरण आबंटन से कम–से–कम तीन दिन पहले दाखिल कर देना चाहिए।

पार्षद सीमा नियम तथा पार्षद अन्तर्नियम में अंतर

अंतर का आधार	पार्षद सीमानियम	पार्षद अन्तर्नियम
1. उद्देश्य	कम्पनी के उद्देश्यों का वर्णन करना है।	पार्षद सीमानियम में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नियम बनाना है।
2. स्थिति	कम्पनी का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रलेख है ।	कम्पनी का सहायक प्रलेख है ।
3. वैधता	सीमानियम में प्रदत्त शक्तियों से बाहर किए गए कार्य कम्पनी द्वारा किए गए कार्य नहीं माने जाते तथा इनकी पुष्टि समस्त सदस्य भी नहीं कर सकते।	अंतर्नियमों में प्रदत्त शक्तियों से बाहर किए गए कार्य भी अवैध होगें परंतु इनकी पुष्टि बाद में सदस्यों द्वारा संभव है।
4. संबंध	यह कम्पनी तथा बाहरी लोगों के मध्य संबंधों की व्याख्या करता है।	यह सदस्यों और कम्पनी के मध्य संबंधों की व्याख्या करता है।
5. आवश्यकता	कम्पनी का रजिस्ट्रेशन कराते समय इसको जमा करना पड़ता है।	निजी कम्पनी के लिए इसका होना अनिवार्य है परंतु सार्वजनिक कम्पनी के लिए यह आवश्यक नहीं है।
6. परिवर्तन	इसको आसानी से परिवर्तित नहीं किया जा सकता। कई मामलों में न्यायालय की स्वीकृति आवश्यक होती है।	इसमें विशेष प्रस्ताव द्वारा आसानी से परिवर्तन किया जा सकता है।

दिमागी कसरत

प्र. उन दस्तावेजों का नाम बताओ :–

i) जो संयुक्त पूंजी कम्पनी के उद्देश्यों का वर्णन करता है।

ii) जिसमें पार्षद सीमानियम में वर्णित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आंतरिक प्रबन्ध के नियमों का उल्लेख किया जाता है।

7.व्यवसाय के उपक्रम के चयन में विचारणीय कारक

व्यावसायिक संगठन के प्रारूप का चुनाव करते समय निम्न कारकों का ध्यान रखना चाहिए :–

1. **प्रारंभिक लागत** – एकल स्वामित्व संगठन की स्थापना के लिए कोई कानूनी औपचारिकताएँ नहीं करनी पड़ती तथा कम खर्च में हो जाती है। जबकि कम्पनी के निर्माण की कानूनी प्रक्रिया खर्चीली तथा लम्बी है। इसलिए एकल स्वामित्व अधिक उचित है।
2. **दायित्त्व** – एकल स्वामित्त्व और साझेदारी स्वामी का दायित्व असीमित होता है। परंतु सहकारी समितियों तथा कम्पनियों में दायित्त्व सीमित होता है। इसलिए, कम्पनी संगठन अधिक उचित है।
3. **निरंतरता**– एकल स्वामित्त्व तथा साझेदारी फर्मों में मृत्यु दिवालियापन या पागलपन होने पर संगठन को बंद करना पड़ता है परंतु सयुक्त हिन्दू व्यवसायों, सहकारी समितियों एक कम्पनी की निरतंरता पर इन घटकों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए कम्पनी तथा सहकारी समितियों अधिक उपयुक्त रहती हैं।
4. **प्रबंध की योग्यता** – एकल स्वामित्व तथा संयुक्त हिन्दू परिवार संगठनों में प्रचालन के सभी क्षेत्रों में विशेषज्ञों की सेवाएँ प्रदान करना कठिन होता है जबकि कम्पनियों एवं साझेदारी संगठनों में इसकी सम्भावनाएँ अधिक होती है।
5. **पूँजी की आवश्यकता** – बड़ी मात्रा में पूँजी जुटाने के लिए कंपनी अधिक श्रेष्ठ होती है जबकि मध्य एवं छोटे आकार के व्यवसायों के लिए साझेदारी या एकल सवामित्त्व अधिक उपयुक्त रहेंगे।
6. **वांछनीय नियंत्रण की सीमा**– सीधे नियंत्रण एवं निर्णय लेने के लिए एकल स्वामित्व को पंसद किया जाता है जबकि स्वामियों के नियंत्रण तथा निर्णय में भागीदारी के लिए साझेदारी या कम्पनी को अपनाया जाता है।
7. **व्यवसाय की प्रकृति** – ग्राहकों से सीधे संपर्क के लिए एकल स्वामित्व अधिक उपयुक्त रहता है परंतु जहाँ पेशेवर सेवाओं की आवश्यकता होती है वहाँ साझेदारी अधिक उपयुक्त रहती है।

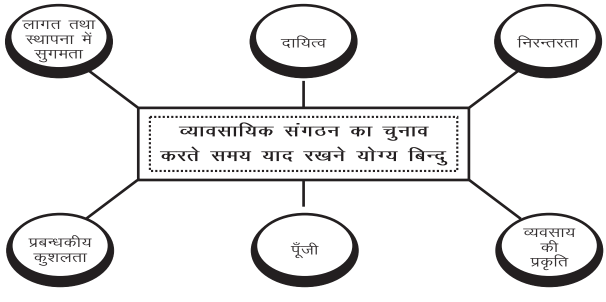
लागत तथा स्थापना में सुगमता
दायित्व
निरन्तरता
व्यावसायिक संगठन का चुनाव करते समय याद रखने योग्य बिन्दु
प्रबन्धकीय कुशलता
पूँजी
व्यवसाय की प्रकृति

याद रखने योग्य बिंदु

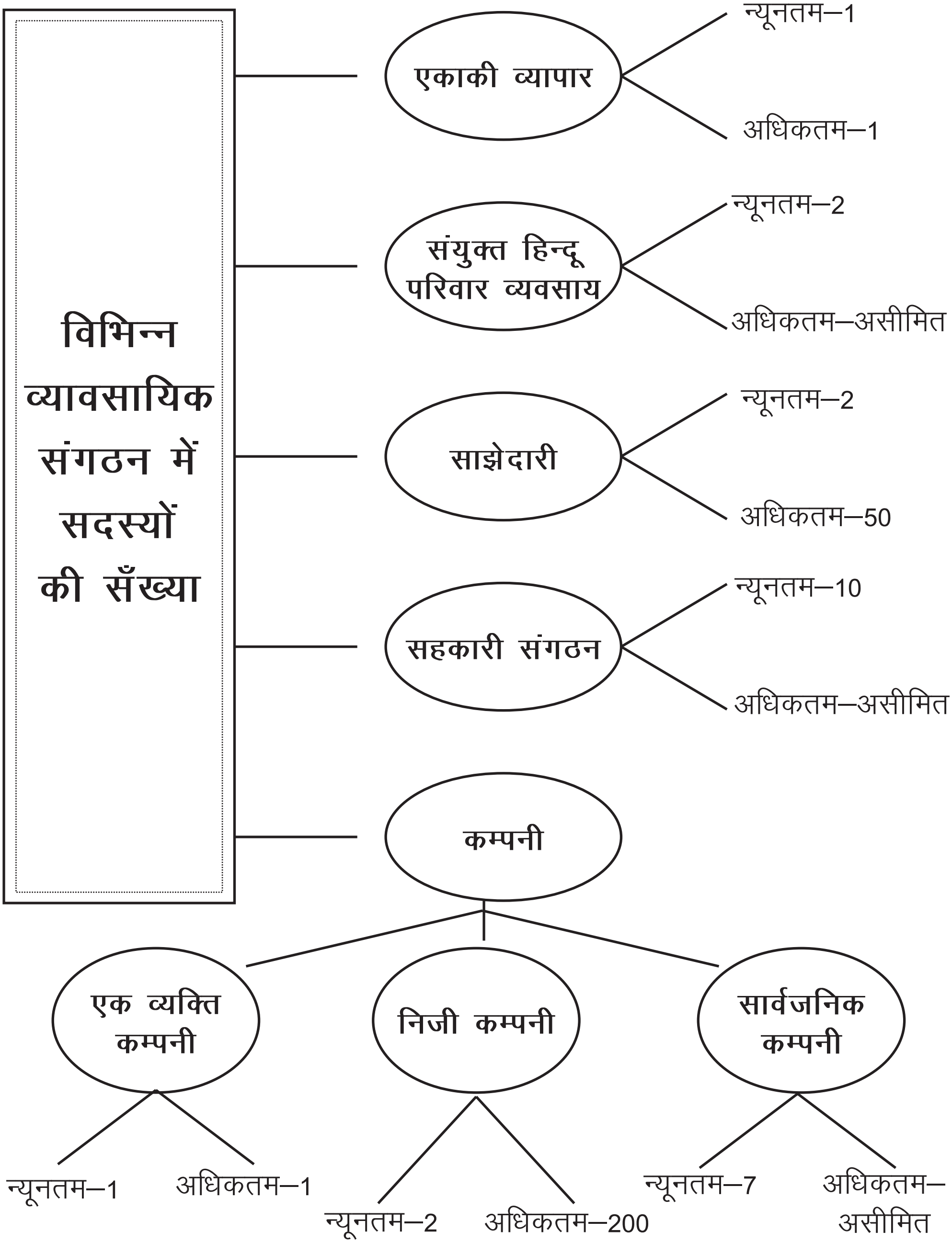
विभिन्न व्यावसायिक संगठन में सदस्यों की सँख्या
एकाकी व्यापार
न्यूनतम–1
अधिकतम–1
संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय
न्यूनतम–2
अधिकतम–असीमित
साझेदारी
न्यूनतम–2
अधिकतम–50
सहकारी संगठन
न्यूनतम–10
अधिकतम–असीमित
कम्पनी
एक व्यक्ति कम्पनी
न्यूनतम–1
अधिकतम–1
निजी कम्पनी
न्यूनतम–2
अधिकतम–200
सार्वजनिक कम्पनी
न्यूनतम–7
अधिकतम–असीमित

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किस व्यावसायिक संगठन की विशेषता असीमि दायित्व नहीं होती?

   (क) एकाकी व्यापार (ख) साझेदारी

   (ग) संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय (घ) कम्पनी

2. रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है–

   (क) एकाकी व्यापार (ख) सहकारी संगठन

   (ग) साझेदारी (घ) संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय

3. किसी सार्वजनिक कम्पनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या क्या होगी?

   (क) 50 (ख) 10

   (ग) असीमित (घ) 200

4. एक कम्पनी के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण प्रलेख कौन से है–

   (क) पार्षद सीमानियम (ख) पार्षद अन्तर्नियम

   (ग) प्रविवरण (घ) उपरोक्त सभी

5. निम्नलिखित में से कौन सी कम्पनी सार्वजनिक कम्पनी है?

   (क) सैमसंग (Samsung)

   (ख) भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड (GAIL)

   (ग) भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (BHEL)

   (घ) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL)

6. निम्नलिखित मे से किसका पृथक वैद्यानिक अस्तित्व होता है–

(क) सहकारी संगठन (ख) साझेदारी

(ग) संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय (घ) उपरोक्त सभी

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है–

(क) साझेदारी अधिनियम 1986 के अन्तर्गत साझेदारी का निर्माण होता है।

(ख) एक अव्यस्क साझेदार नहीं बन सकता।

(ग) साझेदारों के बीच लिखित समझौता साझेदारी संलेख कहलाता है।

(घ) एक व्यक्ति कम्पनी में कम से कम 3 निर्देशक होते है।

8. साझेदारी का रजिस्ट्रेशन किस अधिनियम के अन्तर्गत होता है–

(क) साझेदारी अधिनियम 1932 (ख) साझेदारी अधिनियम 1948

(ग) साझेदारी अधिनियम 1910 (घ) साझेदारी अधिनियम 2013

9. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय का प्रबन्ध किया जाता है–

(क) सबसे बड़ी महिला सदस्य (ख) परिवार के सभी सदस्य

(ग) पुरूष व महिला सदस्य संयुक्त रूप से (घ) कर्ता

10. एक साझेदार जो अपने नाम के प्रयोग की अनुमति देता है परन्तु फर्म में न तो पूँजी लगाता है और न ही प्रबन्ध मं भाग लेता है–

(क) सक्रिय साझेदार (ख) र्निदालु साझेदार

(ग) नाममात्र साझेदार (घ) अवयस्क साझेदार

सत्य / असत्य बताइये'

1. कम्पनी में गोपनीयता बनी रहती है।
2. एक अवयस्क को साझेदारी में केवल लाभ के लिए साझेदार बनाया जा सकता है
3. सार्वजनिक कम्पनी में अंशों के हस्तान्तरण पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।
4. एक निजी कम्पनी व्यापार शुरू करने का प्रमाण पत्र मिले बिना ही अपनी व्यापार शुरू कर सकती है।
5. पार्षद अन्तर्नियम के अभाव में *'Table A'* लागू होती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उतर एक या दो शब्दों में दें–

1. एक कम्पनी की स्थापना के प्रथम चरण का नाम बताएँ।
2. साझेदारी को चलाने के लिए जिस प्रलेख में सभी शर्तों का उल्लेख होता है उसका नाम बताओ।

3. उस साझेदार का नाम बताइये जो व्यवसाय में पूँजी लगाता है, लाभ व हानि के लिए उतरदायी होता है परन्तु व्यवसाय की दिन प्रतिदिन की क्रियाओं में शामिल नहीं होता।

4. सार्वजनिक कम्पनी के लिए प्रविवरण निर्गमित करना अनिवार्य है या नहीं?

5. एक सार्वजनिक कम्पनी के सदस्यों की अधिकतम सीमा क्या होती है?

प्रश्नोत्तर एक अंक वाले प्रश्न

1. व्यावसायिक उपक्रम के उस स्वरूप का नाम बताइए जो केवल भारत में पाया जाता है?
2. किन्हीं दो प्रकार के व्यवसायों का नाम बताइए जिनके लिए एकल स्वामित्व संगठन उपयुक्त हैं?
3. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय में प्रबन्ध का अधिकार किस व्यक्ति का होता है?
4. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय की सदस्यता का नियंत्रित करने वाली प्रणालियों के नाम बताइए?
5. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय का गठन करने के लिए कौन–सी दो शर्तें पूरी करना जरूरी है? लिखिए ।
6. सहकारी समिति का गठन करने के लिए न्यूनतम कितने व्यक्तियों की आवश्यकता होती है?
7. असीमित दायित्व से आपका क्या अभिप्राय है?
8. किस प्रकार की कम्पनी की न्यूनतम चुकता पूँजी 5 लाख रुपये होती है?
9. न्यूनतम अभिदान से क्या अभिप्राय है?
10. उस कम्पनी को पहचानिए जिसमें प्रतिभूतियों के हस्तांतरण में कोई प्रतिबंध नहीं होता।
11. मारुति सुजूकी प्रा. लि. और टाटा आइरन एंड स्टीन लि. दो कम्पनियों के नाम हैं। क्या यह सार्वजनिक कम्पनियाँ है या प्राईवेट कम्पनियाँ? पहचानिए।
12. रोहित और श्वेता साझेदारी फर्म में साझेदार हैं। टकराव से बचने के लिए उन्होंने एक लिखित समझौता किया। इस लिखित समझौते का नाम बताइए।
13. ABC लिमिटेड को विवरण पत्रिका जारी करने की आवश्यकता है। वह किस प्रकार की कम्पनी है?
14. DCM लिमिटेड के कर्मचारियों ने जमीन खरीद कर एक सोसाइटी बनाई जिसके अंतर्गत सदस्यों को फ्लैट निर्माण करके दिए जायेंगे। यह किस प्रकार का व्यापारिक संगठन है?

¾ अंक के प्रश्न

15. उस कम्पनी का नाम बताइए जिसको केवल दो व्यक्ति शुरू कर सकते हैं?

16. साझेदारी में पारस्पारिक एजेंसी की अवधारणा की व्याख्या कीजिए?

17. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय में कर्ता की क्या भूमिका है लिखिए?

18. प्रविवरण की परिभाषा दीजिए इसकी कोई तीन बातें बताइए?

19. गत्यारोध द्वारा साझेदार से क्या अभिप्राय है?

20. गुप्त साझेदार से आपका क्या अभिप्राय है?

21. उत्पादक सहकारी समिति पर टिप्पणी लिखिए ?

22. व्याख्या कीजिए कैसे एक सहकारी संगठन लोकतांत्रिक हैं?

23. शिव, आनन्दी व जॉन साझेदार थे। जॉन की एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई शिव व आनन्दी दोनों ने जॉन के बेटे रॉयन (जो के 16 वर्ष का है) को साझेदार बनाने का निर्णय लिया। क्या वे ऐसा कर सकते हैं ? स्पष्टीकरण करें।

24. श्री सिंह 'फैन्सी लाइटों के व्यवसाय में में 15 वर्षों से हैं। अपने मित्र श्री यादव जो कि एक नौसिखिए हैं, की मदद के लिए मोहम्मद अब्दुल (एक थोक विक्रेता) के समक्ष अपने आपको श्री यादव का साझेदार जताते हैं। मोहम्मद अब्दुल श्री सिंह के कारण श्री यादव से कोई भुगतान नहीं मांगते व उन्हें एक महीने का समय दे देते हैं। यदि श्री यादव समय पर पैसे का भुगतान नहीं कर पाए तो क्या श्री सिंह मोहम्मद अब्दुल के जवाबदेह होंगे? श्री सिंह की भूमिका का विस्तार से उल्लेख कीजिए ।

    (संकेत – गत्यावरोध द्वारा साझेदार)

25. क्या साझेदारी फर्म का पंजीकरण कराना अनिवार्य हैं? पंजीकरण न कराने के क्या परिणाम हैं?

अथवा

आकृति, सोनम व सुप्रीति दोस्त हैं। उन्होंने साझेदारी फर्म शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी फर्म का पंजीकरण नहीं करवाया क्योंकि वह अनिवार्य नहीं था। परंतु शीघ्र ही सोनम और सुप्रीति में विभिन्न कारणों से टकराव होने लगा। सोनम को एक वकील की राय लेने की आवश्यकता पड़ी। यदि आप एक वकील हैं तो आप उसे क्या राय देंगे?

26. मंगल, साज़िया और सुखबीर सिंह साझेदारी व्यवसाय प्रारंभ करना चाहते हैं। उन्होंने साझेदारी संलेख बनवाने का निर्णय लिया। साझेदारी संलेख में उन्हें किन पहलुओं का ध्यान रखना चाहिए, सुझाव दीजिए।

27. संयुक्त पूंजी कम्पनी की किन्हीं चार हानियों का वर्णन कीजिए?

28. A, B, व C एक वित्तीय फर्म के साझेदार थे। B व C व्यापार की संभावनाओं का विश्लेषण करने हेतु अमेरीका गए थे। इस कार्यकाल में A ने बहुत बड़ी

राशि एक नई कम्पनी के अंश खरीदने में लगा दी। इसके लिए उसने Mrs. X से उधार लिया। यह एक बुरा सौदा रहा क्योंकि उस कम्पनी के अंशों के मूल्यों में बहुत गिरावट आ गई। जब B व C वापस आए तो उन्होंने Mrs. X को उधार राशि देने से इनकार कर दिया। क्या B व C को यह करना सही था? साझेदारी के किस पहलू के तहत वह बाध्य हैं?

29. रोहन की स्टेशनरी उत्पादों की दुकान है। वह अपने भाई की इसे संभालने के लिए गदद लेता है और एक उपयुक्त वेतन भी देता है। वह एक 11 साल के बच्चे को भी अपनी दुकान पर लगाता है। दोनों भाई उस बच्चे के साथ दुर्व्यवहार करते हैं और उसकी मजदूरी मनमाने ढंग से काट लेते हैं।

i) यहाँ व्यवसाय का कौन–सा प्रारुप प्रयोग किया गया है?

ii) उस प्रारुप से संबंधित एक विशेषता लिखिए।

30. रवीना एक कोचिंग सैंटर में विज्ञान की शिक्षिका के रुप में कार्यरत है। वह अपने वेतन से सन्तुष्ट नहीं है, इसलिए वह स्वयं का कोचिंग सैंटर शुरू करने का निर्णय लेती है। परन्तु अधिकतर छात्र विज्ञान के साथ गणित की भी कोचिंग लेते हैं। आप रवीना को क्या सुझाव देंगे?

(संकेत – एक गणित विशेषज्ञ के साथ साझेदारी करें।)

31. एक फर्म की व्यापारिक सम्पत्तियाँ ₹70,000 की हैं। लेकिन अदत्त बकाया ₹1,00,00 की है। निम्नलिखित परिस्थितियों में लेनदार कौन–सा मार्ग अपना सकते हैं :–

i) एकल स्वामित्व फर्म में संगठन

ii) अगर वह संगठन साझेदारी है जिसमें A और B दो साझेदार हैं जो लाभों का बंटवारा बराबर करते हैं।

32. सीता व जोया दो मित्र हैं जो कि हिन्दू व मुस्लिम समुदाय से हैं। वे हस्तकला का व्यवसाय आरंभ करती हैं। उन्होंने कारखाना एक ग्रामीण क्षेत्र में खोलने का निर्णय किया और वहाँ के स्थानीय निवासियों को रोजगार देने का निर्णय किया।

i) उन्होंने किस प्रकार के व्यावसायिक प्रारुप का चयन किया है?

ii) इस प्रारुप की दो विशेषताएँ बताइए।

33. चार्मवुड ग्राम के दूध विक्रेताओं का मध्यस्थों द्वारा शोषण किए जाने के कारण उनके द्वारा अपने आर्थिक हितों की रक्षा एवं बाजार तक पहुंच के लिए एक स्वैच्छिक संगठन का निर्माण किया गया ताकि उनके प्रयत्नों के लिए उन्हें अधिकतम भुगतान प्राप्त हो सकें तथा सदस्यों का कल्याण भी हो सके।

i) चार्मवुड ग्राम के दूध विक्रेताओं द्वारा अपनाए जाने वाले व्यवसाय के स्वरूप का नाम बताइए।

ii) उपरोक्त (i) में पहचाने गए व्यवसाय का एक उदाहरण दीजिए।

iii) ऐसे संगठन किस सिद्धांत से शासित होते हैं तथा सरकार इन्हें किस प्रकार सहायता करती हैं?

34. एक कम्पनी के सभी सदस्य एक सामान्य बैठक कर रहे थे जब अचानक एक भूकंप आ गया। इस दुर्घटना में सभी सदस्यों की मौत हो गई। क्या यह कम्पनी बंद हो जाएगी? क्यों?

35. रोहित तथा मोहित मिलकर शेयरों का सौदा करते हैं। मोहित शेयर खरीदने के लिए फर्म की पूंजी का इस्तेमाल करता है। ये शेयर मोहित अपने नाम से खरीदता है। मोहित इस बारें में रोहित को नहीं बताता।

a) क्या रोहित को इन शेयरों के बेचने से प्राप्त लाभ का हिस्सा मिलेगा?

b) मोहित ने शेयर खरीदने के लिए फर्म की जो पूंजी प्रयोग की उसको फर्म किस प्रकार का लेन–देन मानेगी?

36. रोहन, सोहन तथा मोहन एक किताब प्रकाशित करने वाले व्यवसाय में साझेदार हैं। उन्होंने तीन शैक्षिक रूप में पिछड़े गाँवों के स्कूलों में मुफ्त पुस्तकें बाँटी। यहाँ व्यवसाय ने किस सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति कर रहे हैं?

37. Star Ltd. ने 50 करोड़ के शेयरों के मूल्य से 48 करोड़ की आवेदन राशि प्राप्त की। व्यवसाय को आरम्भ (स्थापित) करने के लिए Star Ltd. को कौन–कौन से प्रपत्र रजिस्ट्रार के पास जमा कराने होगें ।

(संकेत :–)

1) इस बात की घोषणा की सभी संचालकों ने जितने शेयर प्राप्त किये हैं उनकी राशि जमा करा दी है।

2) इस बात की घोषणा की उपरोक्त आवश्यकताएँ पूर्ण कर ली गई है। इन घोषणाओं पर सीाी संचालकों के हस्ताक्षर होने चाहिए।

38. आदित्य एक कम्पनी का प्रर्वतक है। कम्पनी के निर्माण (स्थायित्व) से पूर्व, आदित्य DLF Ltd. से जमीन खरीदने का अनुबंध करता है और 2 महीने में 10 करोड़ देने को तैयार हो गया। कम्पनी का निर्माण 1 महीने में ही हो गया। इन तथ्यों के आधार पर निम्न में उत्तर दो :–

1) आदित्य ने कौन–से प्रकार का अनुबंध DLF Ltd. से किया।

2) क्या यह अनुबंध कम्पनी पर कानूनी रूप से बाध्य है?

3) क्या DLF Ltd. आदित्य को भुगतान–राशि के लिए उत्तरदायी करार कर सकती है?

4) इस स्थिति में कम्पनी आदित्य को बचाने के लिए क्या कदम उठाती है?

5/6 अंक के प्रश्न

39. निजी कम्पनी तथा सार्वजनिक कम्पनी में अन्तर सपष्ट कीजिए?

40. श्री अमित कुमार एक कम्पनी का निर्माण करना चाहते हैं उन्हें कौन–से कदम उठाने चाहिए, संक्षेप में चर्चा कीजिए?

41. एकल स्वामित्व संगठन तथा साझेदारी तुलना में संयुक्त पूंजी किस प्रकार श्रेष्ठ है वर्णन करो?

42. उन तत्वों का वर्णन कीजिए, जो संगठन के उपयुक्त प्रारुप के चुनाव में सहायता करते हैं? निम्नलिखित व्यवसायों के लिए व्यवसाय का कौन–सा प्रारुप उचित है और क्यों?

क) ब्यूटी पार्लर	ख) कोचिंग सेंटर
ग) होटल	घ) शॉपिंग मॉल
ड) रेस्टोरेंट	च) छोटा फुटकर व्यापार

43. धीरू भाई चौरसिया कपड़ा उत्पादन व्यापार संचालित करते हैं। उनका संयुक्त परिवार है और बहुत–सी पैतृक संपत्ति है। परिवार के सभी 15 सदस्य व्यवसाय के भाग हैं। धीरूभाई का कुछ समय पहले पोता हुआ है, वह भी इस व्यवसाय का सदस्य है। धीरू भाई परिवार में सबसे बड़े पुरुष हैं इसलिए वे ही व्यवसाय को पूर्ण रूप से संभालते हैं। देनदारों को उनकी असीमित देयता है।

   1) धीरू भाई व्यवसाय का कौन–सा प्रकार संभालते हैं?
   2) इस व्यवसाय की दी गई जानकारी से विशेषताएँ पहचानिए।
   3) आपके अनुसार धीरूभाई द्वारा संचालित व्यवसाय किस प्रकार के उद्योग के अंतर्गत आएगा?

44. अमूल प्रतिदिन लाखों किसानों से दूध इकट्ठा करता है व उसे ब्रॉडेड उत्पाद में परिवर्तित करके देश के सभी भागों में पहुँचाता है। अमूल की कहानी दिसम्बर, 1946 में शुरू हुई जब कुछ किसानों ने बिचौलियों से बचने के लिए व बाजार में पहुँच बनाने की कोशिश की। इस प्रकार उन्होंने अपने प्रयास से अधिकतम लाभ पाया।

   1) उपरोक्त दी गई जानकारी से उद्धृत करते हुए अमूल का व्यावसायिक रूप बताइए व उसकी विशेषताएँ बताइए।
   2) आपके अनुसार अमूल किस प्रकार उद्योग के अंतर्गत आएगा।

45. एक गाँव में मोहन, सोहन और रमेश तीन भाई रहते हैं। मोहन एक किसान है। वह अपने खेत में गन्ना उगाता है। सोहन अपने दोस्तों रोहनसिंह और जितेन्द्र के साथ चीनी उत्पादन करता है। रमेश एक ट्रांस्पोर्टर है। वह अपने

ट्रक से शहर में चीनी लेकर जाता है। इस वर्ष अधिक वर्षा के कारण बहुत–सी चीनी खराब हो गई। सोहन और उसके दोस्तों ने अपना नुकसान कम करने के लिए मजदूरों को कम मजदूरी दी।

1) तीनों भाईयों द्वारा किस प्रकार की व्यावसायिक क्रियाएं की जा रही हैं? वगीकृत करें।
2) सोहन अपने मित्रों के साथ व्यवसाय के कौन–से प्रारूप से चीनी उत्पादन कार्य कर रहा है? उसकी कोई दो विशेषताएँ बताइए।
3) सोहन और उसके दोस्तों में किस मूल्य की कमी हैं?
4) उनके द्वारा किस प्रकार के जोखिम का सामना करना पड़ा ? समझाइए।

46. राहुल और संचली को लगा कि विभिन्न कार्यों में कार्यरत लोगों को ऑनलाइन किराना स्टोर की आवश्यकता है और यह एक अच्छे व्यापार का अवसर है। उन्होंने इस विचार की तकनीकी संभावना, वित्तीय और आर्थिक साध्यता जाँची। जब उन्हें सभी पहलू ठीक लगे जो उन्होंने अपनी कम्पनी का नाम 'कन्विनीयस / होम' प्राइवेट लिमिटेड रजिस्ट्रार के पास रजिस्ट्रर कराने का निर्णय लिया।

1) यहाँ कम्पनी को संचालित करने के कौन–से कदमों का उल्लेख किया गया है ? उन्हें पहचानिए।

2) उसके अन्य तीन कदमों के बारें में समझाइए।

47. लखविन्दर सिंह अपने 'रेडीमेड गारमेंट्स' के व्यवसाय के लिए प्रारुप के चुनाव से संबंधित निर्णय नहीं ले पा रहा। आप उसके मित्र हैं। आप उसे समझदारी से निर्णय कराने के लिए सभी कारकों पर चर्चा करें।

48. निम्न पर टिप्पणी दीजिए :–

1) एक्स लि. की बैठक चल रही थी जिसमें उसके सभी सदस्य उपस्थित थे। अचानक प्राकृतिक आपदा होने के कारण उसके सभी सदस्य मारे गए। एक्स लि. के अस्तित्व का क्या होगा? क्यों ?
2) ''कम्पनी एक कृत्रिम व्यक्ति होने के नाते निदेशक मंडल के माध्यम से कार्य करती है। कम्पनी की तरफ से सभी समझौते निदेशक मंडल द्वारा किए जाते हैं।'' कब निदेशक मंडल द्वारा किए गए समझौते कानूनी रुप से कम्पनी पर बाध्य नहीं होंगे?

49. सचिन के पिता महेश एक छोटी–सी दुकान चला रहे थे जिसमें वह नकली आभूषण, बालों की क्लिप तथा कॉस्मेटिक सामान बेचते थे परन्तु पिछले कुछ महीनों से उन्हें उपभोक्ताओं की माँग बढ़ने के कारण, उसके प्रबन्धन में

मुश्किल थी। परन्तु जगह होने के कारण वे दोनों ही सभी अपने पिता को सलाह दी कि समस्या के हल हेतु वह अपने दोस्त राजा के साथ हाथ मिला लें। इसके लिए उसके पिता तैयार हो गए तथा राजा के साथ लिखित समझौता कर लिया जिसमें सभी शर्तें तथा परिस्थितियाँ उल्लेखित थी।

1) महेश ने राजा के साथ किस प्रकार का व्यावयसायिक संगठन बनाया।
2) महेश तथा राजा के बीच लिखित समझौते की शर्तें तथा परिस्थितियाँ किस दस्तावेज में उल्लेखित होती है?
3) सचिन द्वारा अपने पिता की किस प्रकार के व्यावसायिक संगठन में उपभोक्ताओं पर ध्यान देने में सहायता की गई?
4) उपरोक्त 2) में पहचाने गए दस्तावेज किन्हीं छः पहलुओं को बताइए।

50. सोनू, कमला नगर में एक प्रसिद्ध बुटीक में दर्जी का काम करता था। वह कुशल कामगार था। उसे बहुत वर्षों का अनुभव था और अब उसने 5 लाख रुपयों की बचत भी कर ली थी। इसलिए उसने अपना कार्य शुरू करने का निर्णय लिया। उसने रोहिणी क्षेत्र में दुकान किराए पर ले ली। उसे थोड़ा संदेह था कि अगर दुकान नहीं चली तो अब आय की सुरक्षा भी नहीं रहेगी। परन्तु शीघ्र ही उसके कुशल संचालन के कारण लाभ होने लगा।

1) सोनू जब बुटीक में कार्यरत था तो किस प्रकार की आर्थिक क्रिया कर रहा था?
2) व्यवसाय का कौन–सा प्रारुप उसने बाद में चुना ?
3) इस प्रारुप के दो लाभ व दो सीमाएँ उपरोक्त दी गई जानकरी में से लिखे।

51. आरती एक एकल स्वामी है। पिछले 15 सालों में उसका व्यवसाय एक छोटी कुर्ती, बनावटी आभूषण, बैग, मेकअप का सामान बेचने वाली दुकान से एक बहुसंख्यक व्यापार की स्वामी जिसकी चार शाखाएँ हैं में बदल गया है। वह अभी भी अपनी चार शाखाओं को स्वयं संभाल रही है परन्तु अब उसे लग रहा है कि व्यवसाय को कम्पनी का रुप दे देना चाहिए। वह अपने व्यवसाय को और बढ़ाना चाहती है।

1) आरती के एकल स्वामी रहने के दो लाभ बताइए।
2) उसे अपने व्यवसाय को कम्पनी का रुप देने से क्या दो लाभ हो सकते हैं?
3) यदि वह अपना व्यवसाय और बढ़ाना चाहती है तो दोनों में से कौन–सा प्रारुप बेहतर हैं?

52. निम्न कथनों में साझेदारों की कौन–सी श्रेणी वर्णित हैं :–

1) साझेदार दैनिक गतिविधियों में भाग नहीं लेता।
2) वह अपने आचरण या व्यवहार द्वारा दूसरों को साझेदार होने का आभास कराता है।
3) यह अपने नाम और प्रसिद्धि से फर्म को फायदा कराता है।
4) दूसरों के द्वारा अपने आपको साझेदार कहे जाने पर कोई आपत्ति या विरोध नहीं करता।
5) ऐसे साझेदार की फर्म के साथ सम्बन्ध की जानकारी आम जनता को नहीं होती।
6) यह फर्म के प्रबंध में सक्रिय भाग लेता है।
7) यह साझेदार निष्क्रिय साझेदार भी कहलाता है।

53. निम्नलिखित स्थितियों में व्यावसायिक संगठनों का कौन–सा प्रारुप उपयुक्त है :–

1) व्यावसायिक संगठन में स्थिरता तथा निरंतरता हो।
2) व्यवसाय के निर्माण में न्यूनतम खर्च होना चाहिए।
3) यह संगठन निवेशकर्ताओं की दृष्टि से उपयुक्त है।
4) व्यवसाय के संचालन में पैतृक सम्पत्ति का प्रयोग किया जाता है।
5) इसके लिए ज्यादा पूँजी तथा व्यावसायिक सेवाओं की आवश्यकता होती है।

अध्याय-3

सार्वजनिक, निजी, व भूमंडलीय उपक्रम

भारतीय अर्थव्यवस्था

- **A** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम
  1. विभागीय उपक्रम भारतीय रेल, भारतीय डाक, दूरदर्शन
  2. वैधानिक निगम LIC, FCI
  3. सरकारी कम्पनी हिन्दुस्तान इल्स लि. BHEL
- **B** निजी क्षेत्र के उपक्रम
  1. एकल व्यापार
  2. संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय
  3. साझेदारी
  4. सहकारी संगठन
  5. कम्पनी
- **C** भूमण्डलय उपक्रम
  1. बहुराष्ट्रीय कम्पनीयाँ Ranbaxy, Lipton
  2. संयुक्त साहस Maruti Suzuki
  3. सार्वजनिक निजी साझेदारी (PPP)

भूमिका

हमारे देश में सभी प्रकार के व्यावसायिक संगठन हैं – छोटे एवं बड़े औद्योगिक या व्यापारिक, निजी स्वामित्व के एवं सरकारी स्वामित्व वाले।

भारतीय अर्थव्यस्था में निजी स्वामित्व एवं सरकारी स्वामित्व वाले दोनों व्यावसायिक उद्यम होते हैं, इसीलिए इसे मिश्रित अर्थव्यवस्था कहते हैं।

निजी क्षेत्र के उद्यम

→ व्यवसाय का स्वामी एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह होता है।

→ मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना एवं व्यवसाय का विकास करना होता है।

→ उदाहरण के लिए रिलाईन्स लिमिटेड, ITC लिमिटेड, HDFC बैंक लिमिटेड आदि।

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम

- व्यवसाय का स्वामित्व, प्रबंध एवं नियंत्रण केन्द्रीय या राज्य सरकार द्वारा अलग–अलग अथवा संयुक्त रूप से किया जाता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य जन–कल्याण अथवा सेवा होता है।
- उदाहरण भारतीय रेल, डाक, दूरदर्शन, BHEL आदि।

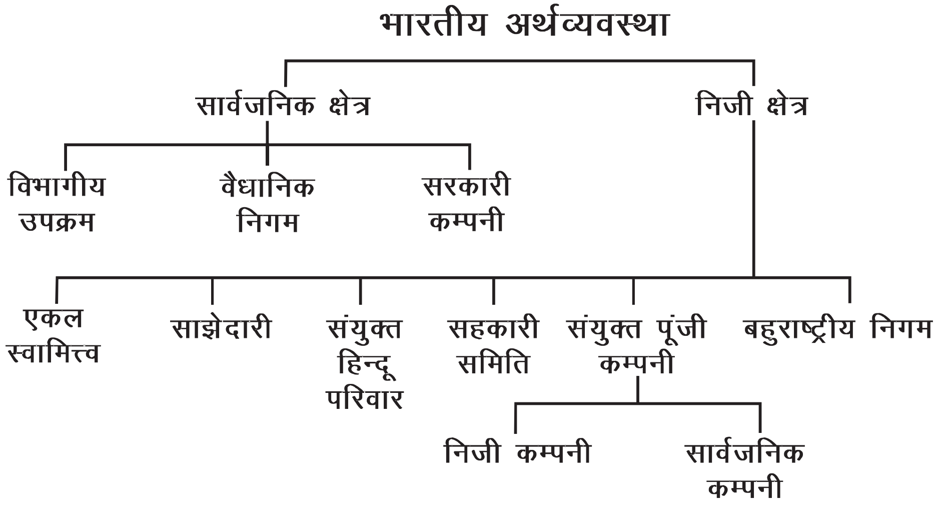
भारतीय अर्थव्यवस्था
सार्वजनिक क्षेत्र
निजी क्षेत्र
विभागीय उपक्रम
वैधानिक निगम
सरकारी कम्पनी
एकल स्वामित्व
साझेदारी
संयुक्त हिन्दू परिवार
सहकारी समिति
संयुक्त पूंजी कम्पनी
बहुराष्ट्रीय निगम
निजी कम्पनी
सार्वजनिक कम्पनी

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रारुप

1. विभागीय उपक्रम

इसमें उपक्रम को किसी मंत्रालय के एक विभाग के रूप में स्थापित किया जाता है। इसका वित्त प्रबंध, प्रशासन तथा नियंत्रण केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार अथवा दोनों के द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है।

भारतीय रेलवे, डाक तथा तार दूरदर्शन प्रसार भारती इसके उदाहरण हैं।

विशेषताएँ

1. गठन : यह केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के मंत्रालक के विभाग के रूप में गठित किया जाता।
2. अस्तित्व : इसका सरकार से अलावा कोई पृथक अस्तित्व नहीं होता है।

3. बजट/वित्त : इसकी वित्त व्यवस्था सरकार के वार्षिक बजट से की जाती है व इसकी आय सरकारी खजाने में जमा होती है।

4. अंकेक्षण व लेखांकन : इन पर अंकेक्षण एवं लेखांकन संबंधित सरकारी नियम लागू होते हैं।

5. कर्मचारी : इसके कर्मचारी, सरकारी कर्मचारी होते हैं जिनकी भर्ती तथा नियुक्ति नियम लागू होते हैं।

6. जवाबदेही : यह अपने कार्य के लिए संबंधित मंत्रालय को जवाबदेह होते हैं।

विभागीय उपक्रय के गुण-लाभ

1. सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में होने के कारण, यह सरकार द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति करने में अधिक सक्षम हैं।
2. इनकी आय सरकारी खजाने में जाती है। इसलिए यह सरकार की आय का एक स्रोत हैं।
3. ये अपने सभी कार्यों के लिए संसद के प्रति उत्तरदायी होते हैं जिससे कोषों का सही उपयोग सुनिश्चित हो पाता है।
4. बजट, लेखा तथा अंकेक्षण–नियंत्रणों के कारण इसमें सार्वजनिक धन के दुरूपयोगों का जोखिम कम होता है।
5. यह उन उपक्रमों के लिए महत्वपूर्ण हैं जिनमें अत्याधिक एवं सख्त नियंत्रण गोपनीयता की आवश्यकता होती हैं। जैसे– रक्षा उत्पादन।

विभागीय उपक्रम की सीमाएं

1. इस उपक्रम में लचीलेपन की कमी होती है जो कि एक व्यवसाय को सुगमतापूर्वक चलाने के लिए अति आवश्यक है।

बॉक्स –1

निम्नलिखित विभागीय उपक्रम, किन मंत्रालयों के अंतर्गत आते हैं :–

1. एयर इंडिया लिमिटेड
2. कोल इंडिया लिमिटेड
3. सी. बी. एस. ई.
4. केन्द्रीय विद्यालय संगठन
5. NHAI

2. उपक्रम के दिन प्रतिदिन के कार्य में राजनीतिक हस्तक्षेप होता है।
3. दिन प्रतिदिन के काम में अत्यधिक लाल–फीताशाही का बोल–बाला होता है तथा उचित प्रक्रिया के पूरे होने पर कोई कार्यवाही की जा सकती है।
4. प्रतियोगिता के अभाव तथा एकाधिकार होने के कारण यह प्रायः ग्राहकों की आवश्यकताओं के प्रति उदासीन होते हैं।
5. इनका प्रबन्ध सरकारी अधिकारियों के द्वारा किया जाता है जो कि प्रबन्ध के क्षेत्र में निपुण तथा अनुभवी नहीं होते।

उपयुक्तता

विभागीय उपक्रम निम्न स्थितियों में उपयुक्त हैं।

1. जहाँ पूर्ण सरकारी नियंत्रण आवश्यक है।
2. जहाँ गोपनीयता अति आवश्यक हो। जैसे – रक्षा उद्योग

Hints- 1. नागरिक उड्डयन मंत्रालय 2. कोयला मंत्रालय
3. स्वायत्त निकाय 4. मानव संसाधन विकास मंत्रालय
5. सड़क परिवहन एवं राज्यमार्ग मंत्रालय

2. वैधानिक निगम / सार्वजनिक निगम

इसकी स्थापना संसद या राज्य विधानमंडल द्वारा पारित किए गए विशेष अधिनियम के अंतर्गत की जाती है। अधिनियम में ही इसके उद्देश्यों, कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है।

उदाहरण – भारतीय जीवन बीमा निगम (एल. आई. सी.) भारतीय यूनिट ट्रस्ट (यूटी आई) बास गेल GAIL, SCI, FCI

विशेषताएँ

1. इसका निर्माण विशेष अधिनियम के अंतर्गत किया जाता है, जिसमें उपक्रमों के उद्देश्यों, कार्यों व अधिकारों का वर्णन भी होता है।
2. इसका एक पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है।
3. निगम का प्रबंध सरकार द्वारा नियुक्त मंडल के हाथों में होता है। दिन–प्रतिदिन के कार्य में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता।
4. इनके कर्मचारियों की भर्ती व चुनाव अधिनियम में दिए गए प्रावधानों के अनुसार होता है।
5. इसकी प्रारंभिक पूंजी सरकार के द्वारा प्रदान की जाती है। इसके अलावा यह अपनी वित्त की व्यवस्था स्वयं पूरा करते हैं। यह सरकार से ऋण लेकर अथवा अपनी वस्तुओं और सेवाओं को जनता को बेचकर धन जुटाते हैं।
6. इन पर सरकारी विभागों के लेखांकन एवं अंकेक्षण की प्रक्रिया लागू नहीं

होती।

लाभ

1. **आंतरिक स्वतंत्रता** - इन्हें दिन–प्रतिदिन के कार्यों में आंतरिक स्वतंत्रता होती है तथा ये राजनीतिक हस्तक्षेप से भी स्वतंत्र होते हैं।
2. **शीघ्र निर्णय** - ये निर्णय एवं कार्य शीघ्रता से कर सकते हैं क्योंकि ये निगम लाल फीता शाही से स्वतंत्र होते हैं।
3. **संसदीय नियंत्रण** - इनकी कार्यक्षमता की ससंद में चर्चा की जा सकती है। इससे सार्वजनिक पैसे का सही उपयोग सुनिश्चित हो पाता है।
4. **भर्ती व नियुक्ति** - यह अपने कर्मचारियों की भर्ती व नियुक्ति में स्वायत होते हैं तथा यह महत्वपूर्ण पदों पर पेशेवर, अनुभवी तथा विशेषज्ञों की नियुक्ति करते हैं।

सीमाएं

1. निगम की स्वायत्तता और लोचशीलता प्रायः नाममात्र की ही होती है। वास्तव में मंत्री, सरकारी अधिकारी और राजनीतिक दल इनकी कार्यप्रणाली में प्रायः हस्ताक्षेप करते हैं।
2. सार्वजनिक निगमों को किसी प्रकार की प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ता और उनका उद्देश्य लाभ कमाना भी नहीं होता। इसीलिए यह अपनी कार्य–कुशलता को बढ़ाने का प्रयत्न भी नहीं करते।
3. इनमें जहां कहीं भी जनता से लेन–देन की आवश्यकता होती है वहीं अनियंत्रित भ्रष्टाचार व्याप्त है।

उपयुक्तता

वैद्यानिक निगम वहाँ उपयुक्त है जहाँ :–

1. उपक्रम को अधिनियम द्वारा परिभाषित विशिष्ट शक्तियों की जरूरत है।
2. उपक्रम को अधिक मात्रा में पूंजी की जरूरत है।

सरकारी कम्पनी

→ सरकारी कम्पनी का तात्पर्य उस कम्पनी से है जिसमें कम से कम 51 प्रतिशत चुकता अंश पूंजी केन्द्र सरकार के पास या फिर राज्य सरकार के पास या संयुक्त रूप से दोनों के पास होती है।

→ इसका पंजीकरण भी कम्पनी अधिनियम 1956 / 2013 के प्रावधानों के अनुसार होता है।

→ कम्पनी के अंश भारत के राष्ट्रपति के नाम पर खरीदे जाते हैं।

→ उदाहरण – भारतीय राज्य व्यापारिक निगम, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स।

विशेषताएँ

1. सरकारी कम्पनी का समामेलन कम्पनी अधिनियम, 2013 के अन्तर्गत ही होता है।
2. इसका अपना पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है।
3. कम्पनी की कम–से–कम 51 प्रतिशत चुकता अंश पूंजी सरकार के पास होती है।
4. इसका प्रबन्ध सरकार तथा अन्य अंशधारियों के द्वारा चुने गए संचालक मंडल के द्वारा किया जाता है।
5. इसके कर्मचारियों की भर्ती तथा नियुक्ति कम्पनी के सीमानियम तथा अन्तर्नियमों के अनुसार होती है।
6. सरकारी कम्पनी को कोष सरकार एवं अन्य निजी अंशधारकों से प्राप्त होते हैं। यह पूंजी बाजार से भी कोष प्राप्त कर सकती है।

गुण-लाभ

1. सरकारी कम्पनी की स्थापना आसानी से कम्पनी अधिनियम की औपचारिकताओं को पूरा करके की जा सकती है। इसके लिए विशेष अधिनियम पारित करने की आवश्यकता नहीं होती।
2. प्रबन्धन संबंधी निर्णय लेने एवं दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलाप में इनको पूर्ण स्वतंत्रता मिली होती है।
3. ये पेशेवर प्रबंधकों को उच्च वेतन पर नियुक्त कर सकते हैं।

प्र. निम्नलिखित में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रकार पहचानकर लिखिए।

1) जहां सरकार इस उद्यम का निर्माण इसलिए करती है जिससे की वह निजी क्षेत्र के साथ प्रतियोगिता कर सके।

2) जहाँ उद्यम उपक्रम को, सामाजिक उद्देश्यों के लिए, विशेष शक्तियों की आवश्यकता होती है।

3) जहाँ सार्वजनिक हित में, निजी क्षेत्र में एकाधिकार को नियंत्रित करना हो तथा सार्वजनिक उपयोगिता वाली सेवाएं प्रदान करनी हो।

उ. 1) सरकारी कम्पनी 2) वैधानिक निगम 3) विभागीय उपक्रम

प्र. निम्नलिखित उपक्रमों का नाम बताए –

1) इस निगम का निर्माण विशेष अधिनियम के अंतर्गत किया जाता है।
2) इस संगठन को सरकार के विभाग द्वारा संचलित किया जाता है।
3) वह कम्पनी जिसकी कम से कम 51% चुकता अंश पूंजी सरकार के पास होती है।

सीमाएं

1. सरकारी कम्पनियों में सरकारी अधिकारियों, मंत्रियों तथा राजनेताओं का बहुत अधिक हस्तक्षेप होता है।
2. संसद के प्रति प्रत्यक्ष रूप से जवाबदेह नहीं होने के कारण, ये अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व से बचती है जबकि सरकारी वित्त वाली कम्पनी होने के कारण इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।
3. इनके निदेशक मंडल में मुख्यतः राजनैतिज्ञ एवं सरकारी अधिकारी होते है। जिनका मुख्य ध्येय कम्पनी की कार्यकुशलता न होकर, अपने राजनैतिक स्वामियों को खुश करना होता है।

उपयुक्तता

सरकारी कम्पनी की निम्न परिस्थितियों में उपयुक्तता होती है।

– जहाँ सरकार निजी क्षेत्र के साथ मिलकर काम करना चाहती है।
– जहाँ परियोजनाओं को सरकारी योजना और कोषों की आवश्यकता होती है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ/भूमंडलीय उपक्रम

बहुराष्ट्रीय कम्पनी से अभिप्राय ऐसी कम्पनी से है जो कई देशों से व्यवसाय करती हैं। इसके लिए इसकी शाखाएँ, कारखाने और कार्यालय कई देशों में होते हैं। परन्तु इसका मुख्यालय उस देश में होता है जिसमें समामेलन किया जाता है। उदाहरण – कोका कोला, सोनी, रीबोक

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लक्षण

1. **विशाल पूंजीगत साधान** - इनके पास भारी मात्रा में पूंजी होती है तथा ये विभिन्न स्रोतों से वित्त जुटा सकती है।
2. **अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय** - यह कई देशों में व्यवसाय करती है, जिसके लिए इनकी शाखाएं, कारखाने तथा कार्यालय कई देशों में होते हैं।
3. **केन्द्रीय नियन्त्रण** - इनकी विभिन्न देशों में फैली हुई शाखाओं का नियन्त्रण

और प्रबन्ध मौलिक देश में स्थित मुख्यालय द्वारा किया जाता है मुख्यालय द्वारा बनाई गई नीति कंपनी के व्यापक नीतिगत ढाँचे तक सीमित होती है और वे शाखाओं एवं सहायक इकाइयों के दिन प्रतिदिन के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करती।

5. **आधुनिक तकनीक** - प्रायः यह पूंजीवर्धक तकनीक तथा उत्पादन की नवीनतम तकनीक का प्रयोग करती है जिससे ये विश्वस्तरीय उत्पाद एवं सेवाएं प्रदान कर पाती है।
6. **उत्पाद नवप्रर्वतन** - इनके पास अत्याधुनिक सुविधाओं एवं उपकरणों से युक्त शोध एवं विकास विभाग होते हैं जो नये उत्पादों के विकास तथा विद्यमान उत्पादों के डिजाईनों में सुधार का कार्य करते हैं।
7. **विपणन रणनीतियाँ** - ये अक्रामक विपणन रणनीतियों का प्रयोग करती है। इनके ब्राण्ड सुप्रसिद्ध होते हैं तथा ये विज्ञापन व विक्रय संवर्द्धन पर अत्याधिक व्यय करते हैं।

प्र० किन्हीं दो भारतीय बहुराष्ट्रीय एवं दो विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के नाम बताइए।

सार्वजनिक निजी साझेदारी (पीपीपी)

सार्वजनिक निजी साझेदारी से अभिप्राय उन परियोजना अथवा सेवा से है जिसका वित्तीय पोषण एवं संचालन सार्वजनिक एवं निजी उपक्रमों की साझेदारी द्वारा हो रहा है। पीपीपी सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के मध्य एक दीर्घकालीन साझेदारी है। निम्नलिखित क्षेत्रों में पीपीपी का प्रयोग हो रहा है :–

1. यातायात (सड़क, रेलवे एवं टोल पुल)
2. स्वास्थ्य (अस्पताल)
3. जल (एकत्रण, सफाई व वितरण)
4. शिक्षा (स्कूल, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय)

पीपीपी की विशेषताएँ

1. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के मध्य साझेदारी सम्भव बनाती है।
2. पीपीपी का संबंध उच्च प्राथमिकता वाली परियोजनाओं से है।
3. पीपीपी सरकार को उसकी बजटीय व उधार लेने की सीमाओं से मुक्त करते हैं।
4. इनका प्रयोग सार्वजनिक लाभ वाली परियोजनाओं में होता है।
   जैसे– दिल्ली मेट्रो रेलवे निगम।
5. पूंजी सघन एवं भारी उद्योग जैसी बड़ी परियोजनाओं के लिए उपयुक्त।

6. आगम बंटवारा – सार्वजनिक एवं निजी उपक्रमों के मध्य तयशुदा अनुपात में आगम को बांटा जाता है।

प्र. उपक्रम की पहचान कीजिए :–

a) ऐसे उपक्रम, गृह देश से उन्नत तकनीक लेकर आते है।
b) ऐसे उपक्रम सार्वजनिक उपयोगिता वाली परियोजनाओं को, निजी क्षेत्र की सहायता से, ज्यादा तेज गति से पूरा करने में सहायक होते है।
c) ऐसी साझेदारी जहां सार्वजनिक एवं निजी उद्यम संयुक्त रूप से संचालित करते हैं।
d) ऐसे उद्यम जिन्हें लेखांकन व अंकेक्षण नियम व प्रक्रियाओं से छूट प्राप्त है। केन्द्रीय सरकार द्वारा इनके लिए एक अंकेक्षक नियुक्त किया जाता है।

उ. a) भूमंडलीय उपक्रम (बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ)
b) सार्वजनिक निजी साझेदारी (पीपीपी)
c) पीपीपी
d) सरकारी कम्पनी

याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. निजी क्षेत्र के व्यवसाय का स्वामित्व निजी व्यक्तियों को हाथों में होता है। रिलायंस इन्डस्ट्रीज, एयरटेल, एल.जी, सैमसंग।
2. सार्वजनिक क्षेत्र को व्यवसाय का स्वामित्व राज्य के हाथों में होता है।
3. विभागीय उपक्रम सरकारी विभाग के एक भाग के रूप मे सम्बन्धित मन्त्रालय के दिशा निर्देश में चलाये जाते है।
4. सार्वजनिक निगम की स्थापना संसद या विधानसभा के विशेष अधिनियम के अन्तर्गत की जाती है
5. सरकारी कम्पनी एक सार्वजनिक उपक्रम है जिसकी चुकता पूँजी का कम से कम 51 प्रतिशत हिस्सा केन्द्र सरकार या राज्य सरकार के पास रहता है।
6. बहुराष्ट्रीय कम्पनी वे कम्पनी है जो एक से ज्यादा देशों मे चालायी जाती है।
7. PPP (सार्वजनिक निजी साझेदारी) – निजी क्षेत्र के सार्वजनिक क्षेत्र में विनियोग को व्यक्त करता है जो सार्वजनिक हित के लिए किया जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. LIC एक उदाहरण है–
(क) विभागीय उपक्रम (ख) वैद्यानिक निगम का

(ग) सरकारी कम्पनी का (ग) निजी कम्पनी

2. निम्नलिखित मे से कौन सी सरकारी कम्पनी है?
(क) हिन्दुस्तान स्टील लि. (ख) टाटा स्टील लि.
(ग) जिन्दल स्टील लि. (घ) उपर्युक्त सभी।

3. निम्नलिखित में से कौन मन्त्रालय से सम्बन्धित है?
(क) भारतीय रेल (ख) FCI
(ग) कोल इण्डिया (घ) BHEL

4. निम्नलिखित में से कौन सी कम्पनी MNC नहीं है?
(क) Ranbaxy (ख) Infosys
(ग) Brook Bond (घ) |sian Paint

5. बहुराष्ट्रीय कम्पनी में केन्द्रिकृत नियंत्रण इसके द्वारा किया जाता है।
(क) शाखाएँ (ख) सहायकों
(ग) मुख्यालय (घ) संसद

6. सरकार, सरकारी कम्पनी की चुकता पूँजी का न्यूनतम .... हिस्सा अपने पास रखती है।
(क) 49% (ख) 50%
(ग) 51% (घ) 26%

7. सरकारी कम्पनी अपने अंश किसके नाम से क्रय करती हैं?
(क) प्रधानमंत्री (ख) कम्पनी का रजिस्ट्रार
(ग) राष्ट्रपति (घ) कम्पनी के निदेशक

8. निम्नलिखित मे से किस का निर्माण संसद या विद्यान सभा के विशेष अधिनियम के तहत किया जाता है?
(क) विभागीय उपक्रम (ख) वैद्यानिक निगम
(ग) सरकारी कम्पनी (घ) निजी कम्पनी

9. कौन सी एक स्वतनत्र वैद्यानिक अस्तित्व नहीं रखती?
(क) विभागीय उपक्रम (ख) वैद्यानिक निगम
(ग) सरकारी कम्पनी (घ) निजी कम्पनी

10. .... संगठन को सबसे अच्छा रूप हैं जहां राष्ट्रीय सुरक्षा का संबंध हैं।

(क) निजी उद्यम (ख) सार्वजनिक उद्यम
(ग) विभागीय उपक्रम (घ) उपरोक्त में कोई नहीं

1. सरकारी कम्पनी का नाम बताइये। (कोई एक)
2. Toyota Motors' किस देश की कम्पनी है?
3. जब निजी क्षेत्र सार्वजनिक क्षेत्र के साथ मिलकर सार्वजनिक हित के लिए कार्य करता है तो क्या कहलाता है?
4. निजी कम्पनी का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
5. सार्वजनिक क्षेत्र के किसी एक बैंक का नाम बताएँ।
6. सरकारी कम्पनी में सरकार का हिस्सा कितना होता है?
7. किन्ही दो MNC's के नाम बताएँ।
8. FCI सार्वजनिक क्षेत्र के किस प्रारूप का उदाहरण है?
9. सरकारी कम्पनी की कोई एक सीमा बताइये।
10. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम का स्वमित्व किसके पास होता है?

1 अंक वाले प्रश्न

1. ऐसे व्यावसायिक उपक्रम के प्रकार का नाम लिखो जो एक से अधिक देश में व्यापार करती है।
2. राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सार्वजनिक हित को ध्यान में रखते हुए, किस प्रकार का उपक्रम सबसे उपयुक्त है?
3. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (Enterprises) के कोई दो उद्देश्य लिखो।

संक्षेपित उत्तरीय प्रश्न (3/4 अंक वाले प्रश्न)

1. सार्वजनिक निजी साझेदारी की कोई तीन विशेषताओं का वर्णन करो?
2. निम्न में से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रकारों को पहचानकर लिखिएः–
   a) यह सबसे पुराना और पांरपरिक क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रम का प्रकार है।
   b) इस प्रकार के सार्वजनिक उपक्रम को संसद के विशेष अधिनियम द्वारा स्थापित किया जाता है।
   c) जिसमें कम–से–कम 51 प्रतिशत चुकता अंश पूंजी सरकार के पास होती है।
   d) विभागीय उपक्रम और सरकारी कम्पनी में कोई तीन अंतर सपष्ट करो?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (5/6 अंक वाले प्रश्न)

1. एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम जो भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार

स्थापित किया गया है और निजी क्षेत्र की कम्पनियों के साथ प्रतियोगिता में व्यापार करती है।

1) उस सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम का नाम बताइए।

2) इस प्रकार की कम्पनी में सरकार कम–से–कम कितना विनियोग करती है?

3) इस प्रकार की कम्पनियों के अंश किसके नाम खरीदे जाते हैं?

4) इस प्रकार की कम्पनियों के कोई दो लाभ और हानि का वर्णन करते हैं।

2. विभागीय उपक्रम के किन्हीं तीन लाभों और किन्हीं तीन सीमाओं का वर्णन करो।

3. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों उपभोक्ताओं को माल और विलासिता की चीजें बेचकर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाने के लिए विकासशील देशों में अपने आप को स्थापित करती है। वे ग्राहकों को विभिन्न प्रकार का माल वहाँ के स्थानीय फुटकर व्यापारियों से सस्ती कीमत पर उपलब्ध कराते हैं। लेकिन जब वे स्थापित हो जाती हैं तो कीमतें बढ़ा देती हैं। (i) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की विकासशील देशों में क्या भूमिका है? समझाइए।

4. 1991 के पश्चात्, सरकार आधारभूत ढाँचे का विकास शीघ्रता से करना चाहती थी, जिसके लिए भारी मात्रा में पूँजी एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता थी। आने वाली वर्षों में, सरकार ने इसके लिए एक नया तरीका खोजा जिसमें स्पष्ट समझौतों द्वारा, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने, निजी क्षेत्र के उपक्रमों की पूंजी कोषों एवं प्रबंधकीय कौशलों का उपयोग करते हुए, आधारभूत ढांचे एवं सार्वजनिक उपयोगिता वाली सेवाओं का विकास शुरू किया। जैसे इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 का विकास।

1) ऐसे समझौतों को किस नाम से जाना जाता है?

2) इस प्रकार के समझौतों के कोई 3 लाभ लिखिए ?

5. यह उपक्रम पूर्णतः सरकार (राज्य एवं केन्द्र) द्वारा संगठित, पोषित एवं नियंत्रित होता है एवं यह अपने अध्यक्ष, श्री जीवन राज (भारतीय प्रशासनिक अधिकारी), के द्वारा नियंत्रित होता है। अध्यक्ष इसके कार्यों में कोई विशेष रूचि नहीं ले रहा है क्योंकि वह अपने बेटे की 3 महीने बाद होने वाली शादी की तैयाारियों में व्यस्त है। परिणामस्वरूप, उपक्रम से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने में देरी हो रही हैं। जिससे उपक्रम की आय व जनता की भलाई संबंधी कार्य प्रभावित हो रहे हैं क्योंकि इसमें अध्यक्ष की सहमति अनिवार्य है।

1) उपरोक्त उदाहरण में किस प्रकार के उपक्रम के बारें में बताया गया है।

2) इस प्रकार के उपक्रमों द्वारों सरकार किन सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करती हैं?

3) इस प्रकार के उपक्रमों की क्या सीमाएँ होती है?

(Hints : विभागीय उपक्रम)

6. यह सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है जिसमें भारत सरकार के पास कुल चुकता पूंजी का 80% भाग है तथा यह कम्पनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत पंजीकृत है। यह इंजीनियरिंग समान के निर्माण क्षेत्र से संबंधित है और अधिक लाभ कमाने के लिए निजी क्षेत्र के उपक्रमों से प्रतियोगिता करता है।

1) सार्वजनिक क्षेत्र के किस प्रकार के उपक्रम की चर्चा उपरोक्त की गई हैं?

2) क्या इस प्रकार के उपक्रमों में कर्मचारी सरकारी कर्मचारी होते हैं?

3) इस प्रकार के उपक्रमों की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

4) इन उपक्रमों की कोई 2 सीमाएँ लिखिए।

(Hints : सरकारी कम्पनी)

7. भारतीय खाद्य निगम (FCI) की स्थापना 1964 में संसद द्वारा पारित विशेष अधिनियम द्वारा की गई जिसका मुख्य उद्देश्य खाद्यानों जैसे गेहूँ, चावल, आदि का बफर स्टॉक (भंडारण) तैयार करना था जिससे वह अकाल, बाढ़, सूखे आदि जैसी परिस्थितियों में उपयोग हो सके।

1) सार्वजनिक क्षेत्र के किस प्रकार के उपक्रम की चर्चा उपरोक्त की गई है?

2) क्या इन उपक्रमों का पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है?

3) इन उपक्रमों को आरम्भिक पूंजी कौन उपलब्ध कराता है?

4) इस प्रकार के उपक्रमों की कोई दो सीमाएँ लिखिए।

(Hints : वैधानिक निगम)

8. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर टिप्पणी कीजिए।

अध्याय-4

व्यावसायिक सेवाऐं

वित्तीय पोषण एवं संचालन सार्वजनिक एवं निजी उपक्रमों की साझेदारी द्वारा हो उद्योगों को उत्पादन करने के लिए कच्चे माल की आपूर्ति एवं उत्पादित किए गए तैयार माल को वितरित करने की आवश्यकता होती है। व्यापार के लिए भी आवश्यक हैं कि विभिन्न उत्पादकों से वस्तुओं को एकत्रित करके उन्हें अंतिम उपभोक्ताओं तक वितरित किया जाए। इन सभी क्रियाओं को सुचारू रूप से करने के लिए कुछ सेवाओं जैसे बैंकिंग, बीमा, परिवहन, भंडारण इत्यादि की आवश्यकता होती हैं। इन सब सेवाओं को व्यापार की सहायक क्रियाएं कहा जाता है।

सेवाएँ – सेवाएँ वे क्रियाऐं हैं जिनको अलग से पहचाना जा सकता है जो अमूर्त हैं जो किन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं यह आवश्यक नहीं कि वे किसी उत्पाद अथवा अन्य सेवा के विक्रय से जुड़ी हों।

इनके उदाहरण हैं– बैंकिंग, बीमा, यातायात, संग्रहण एवं संदेशावाहन व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति – व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होती है।

Business Services (व्यावसायिक सेवाएँ)

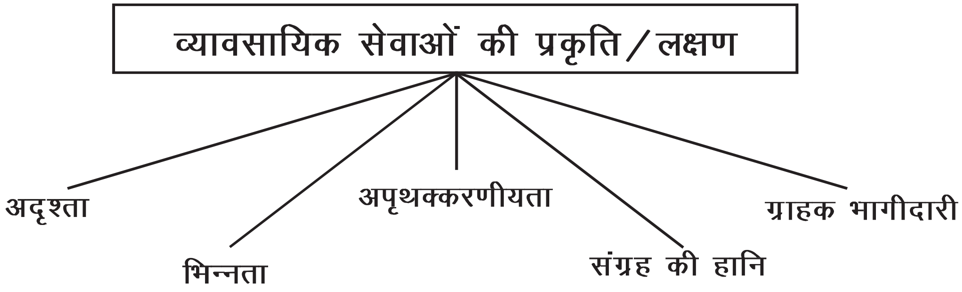
व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति/लक्षण
अदृश्ता
भिन्नता
अपृथक्करणीयता
संग्रह की हानि
ग्राहक भागीदारी

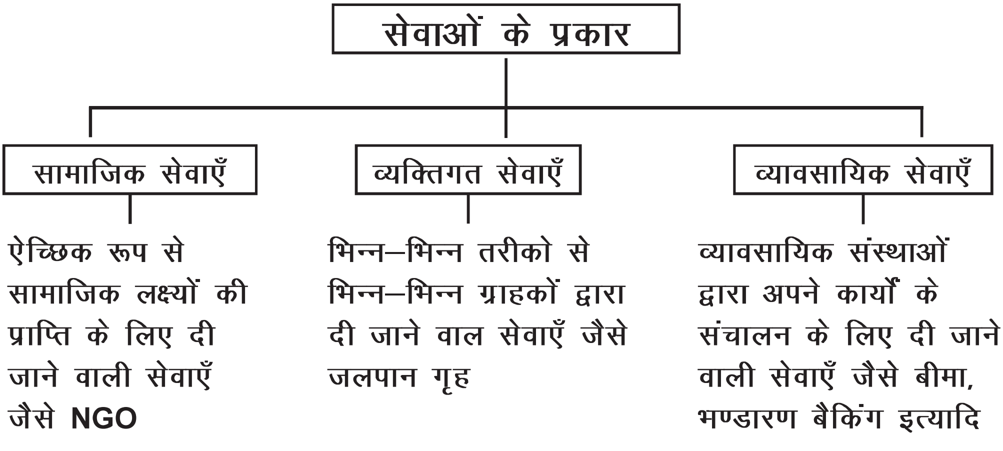
सेवाओं के प्रकार
सामाजिक सेवाएँ
व्यक्तिगत सेवाएँ
व्यावसायिक सेवाएँ

ऐच्छिक रूप से सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दी जाने वाली सेवाएँ जैसे NGO

भिन्न–भिन्न तरीको से भिन्न–भिन्न ग्राहकों द्वारा दी जाने वाल सेवाएँ जैसे जलपान गृह

व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा अपने कार्यों के संचालन के लिए दी जाने वाली सेवाएँ जैसे बीमा, भण्डारण बैकिंग इत्यादि

व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति

1. **अदृश्यकता या अमूर्तता** – सेवाओं को देखा एवं छुआ नहीं जा सकता। केवल इनका लाभ उठाया जा सकता है। इनकी प्रकृति अनुभवात्मक होती है। उदाहरण– डॉक्टर से इलाज कराना।
2. **भिन्नता** – विभिन्न ग्राहकों की मांगों एवं आशाओं में अन्तर होता है। मोबाइल सेवाएं एवं ब्यूटीपार्लर की सेवाएं।
3. **अपृथक्करणीयता** – सेवाओं का उत्पादन एवं उपभोग एक साथ होता है। जैसे एटीएम ने बैंक क्लर्क को हटा दिया है परन्तु ग्राहक (पैसा निकालने वाला) आवश्यक होना चाहिए।
4. **स्कन्ध की हानि** – सेवाओं को भावी उपयोग के लिए संग्रह करके नहीं रखा जा सकता न ही समय से पूर्व उपयोग किया जा सकता है। जैसे होटल एवं एयरलाइन्स का मन्दी के दौर में भविष्य में आने वाली तेजी के लिए संग्रह नहीं कर सकते।
5. **सम्बद्ध या ग्राहक भागीदारी** – सेवाओं की सुपुर्दगी प्रक्रिया में ग्राहक की भागीदारी आवश्यक होती है। जैसे कोई ग्राहक अपनी आवश्यकता के अनुसार सेवाओं में सुधार कराने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

बैंक का अर्थ

बैंक से अभिप्राय एक ऐसी संस्था से है जो कि मुद्रा का लेन–देन करती है यह संस्था लोगों के रुपये अपने पास जमा के रूप में स्वीकार करती है और उनका ऋण के रूप में उधार देती है। आजकल मुद्रा लेन–देन के अतिरिक्त बैंक कई और भी कार्य करते हैं जैसे साख–निर्माण, एजेन्सी कार्य, सामान्य सेवायें इत्यादि।

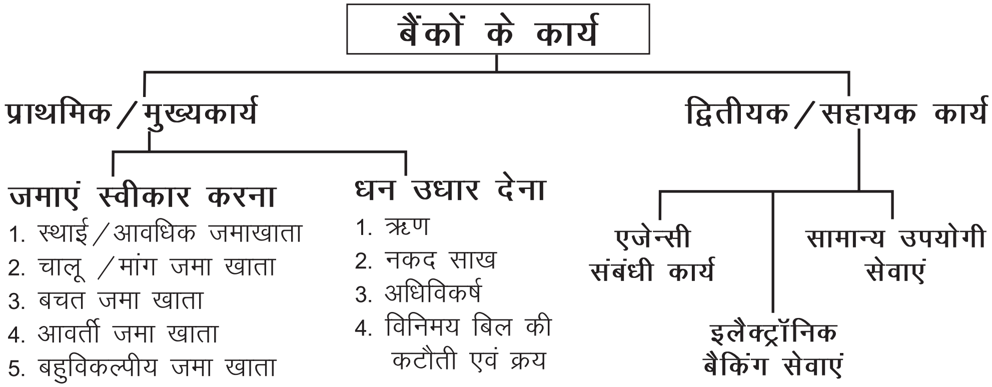
बैंकों के कार्य
प्राथमिक / मुख्यकार्य
द्वितीयक / सहायक कार्य
जमाएं स्वीकार करना
1. स्थाई / आवधिक जमाखाता
2. चालू / मांग जमा खाता
3. बचत जमा खाता
4. आवर्ती जमा खाता
5. बहुविकल्पीय जमा खाता
धन उधार देना
1. ऋण
2. नकद साख
3. अधिविकर्ष
4. विनिमय बिल की कटौती एवं क्रय
एजेन्सी संबंधी कार्य
सामान्य उपयोगी सेवाएं
इलैक्ट्रॉनिक बैकिंग सेवाएं

वाणिज्यिक बैंकों के कार्य

प्राथमिक कार्य

1. **जमा स्वीकार करना** – बैंक का प्रमुख कार्य जनता से जमा को स्वीकार करना है। बैंक विभिन्न प्रकार के ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुकूल निम्नलिखित प्रकार के खाते जैसे निश्चित कालीन जमा खाता, चालू जमा खाता, बचत जमा खाता, आवर्ती जमा खाता और बहुविकल्पी जमा खाता आदि खोलने की सुविधा प्रदान करते हैं।
2. **ऋण देना** – बैंक का दूसरा प्रमुख कार्य लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। बैंक यह कार्य निम्न प्रकार की सेवाओं तैसे ऋण देकर, बैंक अधिविकर्ष द्वारा, नकदी उधार और बिलों की कटौती आदि द्वारा करता है।

सहायक कार्य/द्वितीयक कार्य

बैंक उपरोक्त प्राथमिक कार्यों के अतिरिक्त भी कई सहायक कार्य जैसे–एजेंट के रूप में और सामान्य उपयोगिता के कार्य भी करते हैं।

1. **एजेन्ट के रूप में कार्य**
   - (क) बैंक अपने ग्राहक की ओर से चैक, किराया, ब्याज इत्यादि एकत्रित करता है और इसी प्रकार उनकी ओर से कर और बीमा की किश्तों आदि की अदायगी करता है।
   - (ख) बैंक अपने ग्राहकों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों की जानकारी प्राप्त करके, उनकी ओर से खरीदने, बेचने और उनको सुरक्षित रखने का कार्य भी करता है।
   - (ग) एक स्थान से दूसरे स्थान पर रुपया भेजना भी बैंकों का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

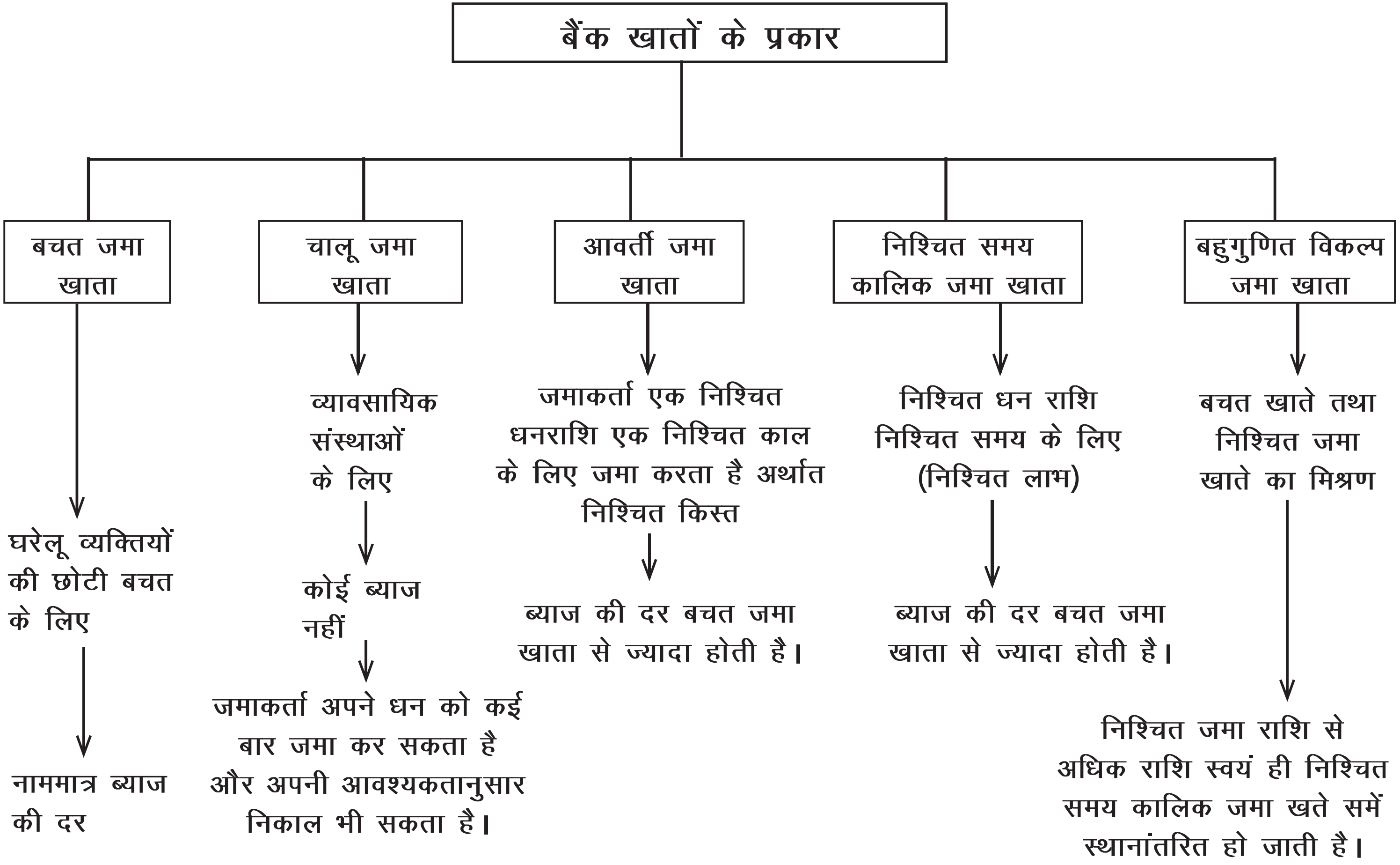
बैंक खातों के प्रकार
बचत जमा खाता
चालू जमा खाता
आवर्ती जमा खाता
निश्चित समय कालिक जमा खाता
बहुगुणित विकल्प जमा खाता
घरेलू व्यक्तियों की छोटी बचत के लिए
नाममात्र ब्याज की दर
व्यावसायिक संस्थाओं के लिए
कोई ब्याज नहीं
जमाकर्ता अपने धन को कई बार जमा कर सकता है और अपनी आवश्यकतानुसार निकाल भी सकता है।
जमाकर्ता एक निश्चित धनराशि एक निश्चित काल के लिए जमा करता है अर्थात निश्चित किस्त
ब्याज की दर बचत जमा खाता से ज्यादा होती है।
निश्चित धन राशि निश्चित समय के लिए (निश्चित लाभ)
ब्याज की दर बचत जमा खाता से ज्यादा होती है।
बचत खाते तथा निश्चित जमा खाते का मिश्रण
निश्चित जमा राशि से अधिक राशि स्वयं ही निश्चित समय कालिक जमा खते समें स्थानांतरित हो जाती है।

2. **सामान्य उपयोगिता की सेवाएं** – व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों की सुविधा के लिए कुछ अन्य कार्य भी करता हैं।

(क) बैंक अपने ग्राहकों को लॉकर्ज की सुविधा प्रदान करते हैं।

(ख) बैंक अपने ग्राहकों को यात्रा में जाते समय नकद राशि साथ न ले जाने की सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से यात्री चैक की सुविधा प्रदान करते हैं।

(ग) बैंक अपने ग्राहकों की आर्थिक स्थिति की सूचना देश–विदेश के व्यापारियों को देते हैं तथा देश–विदेश के व्यापारियों की आर्थिक स्थिति की सूचना अपने ग्राहकों को देता है।

(घ) बैंक अपने ग्राहकों की सुविधा के लिए बैंक ड्राफ्ट और भुगतान आदेश जारी करता है।

बैंकों खातों के प्रकार

(क) निश्चित कालीन जमा खाता

संचालन प्रक्रिया & जमाकर्ता केवल एक बार ही निश्चित अवधि में जमा करा सकता है।

प्रतिफल & जमा की अवधि जितनी लम्बी होती हैं ब्याज की दर उतनी ऊँची होती है।

लाभ & बचत के साथ अधिक ब्याज का प्राप्ति।

(ख) चालू जमा खाता

उद्देश्य & यह खाता प्रायः व्यापारी वर्ग के द्वारा खोला जाता है।

प्रतिफल & बैंक इस प्रकार की जमा पर ब्याज नहीं देता अपितु अपनी सेवाओं के लिए सेवा शुल्क वसूल करता है।

लाभ & जमाकर्ता जितनी बार चाहे रूपया जमा करा सकता है और कभी भी आवश्यकतानुसार निकाल सकता है।

(ग) बचत जमा खाता

संचालन प्रक्रिया – जमाकर्ता एक निश्चित समय तक प्रतिमास एक निश्चित राशि जमा करता है।

प्रतिफल – ब्याज की दर बचत बैंक खाते पर मिलने वाले ब्याज की दर से ज्यादा होती है।

लाभ– जमाकर्ता कितनी भी बार कितनी भी राशि जमा करा सकता है तथा

निकाल भी सकता है।

(घ) आवर्ती जमा खाता

संचालन प्रक्रिया – जमाकर्ता एक निश्चित समय तक प्रतिमास एक निश्चित राशि जमा करता है।

प्रतिफल – ब्याज की दर बचत ैंक खाते पर मिलने वाले ब्याजकी दर से ज्यादा होती है।

लाभ – एकमुश्त राशि जमा ना करा के जमाकर्ता एक निश्चित अवधि तक निश्चित राशि जमा करा सकता है।

(ड़) बहुविकल्प जमा खाता

संचालन प्रक्रिया – यह खाता बचत खाता एवं मियादी जमा खाते का मिश्रण है। इसके अन्तर्गत खाताधारक के निर्देश के अनुसार उसके बचत खाते में पड़ धनराशि एक निश्चित सीमा के बाद, मियादी जमा में परिवर्तित कर दी जाती है।

प्रतिफल – ब्याज की दर अधिक होती है।

लाभ – (i) ऊँची दर से ब्याज मिलता है।
(ii) चेक के अनादर होने का जोखिम कम होता है।

3. अन्य बैंकिंग सेवाएँ

1. **ऋण** – इसमें बैंक कर्जदार को एक निश्चित राशि खास समय अवधि के लिए किसी स्थाई सम्पत्ति को क्रय करने के लिए देता है। ऋण की अदायगी प्रायः मासिक, त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक किश्तों में की जाती है।
2. **बैंक अधिविकर्ष (Bank overdrafts)** – इस व्यवस्था के अन्तर्गत बैंक अपने ग्राहकों को चालू खाता में जमा की गई राशि से अधिक राशि निकालने की अनुमति देता है। कोई भी व्यवसायी कोषों की अस्थायी कमी को पूरा करने के लिए इस व्यवस्था को अपना सकता है। ब्याज केवल अधिक निकाली गई राशि पर ही लिया जाता है।
3. **नकदी उधार** – नकदी उधार, ओवर ड्राफ्ट जैसी ही एक व्यवस्था है। इसके अन्तर्गत खाताधारी किसी मूर्त संपत्ति की जमानत पर अपने खात में जमा धनराशि से अधिक एक निश्चित सीमा तक रूपया निकाल सकता है। इसके लिए चालू खाते का होना अनिवार्य नहीं है। इसमें केवल निकलवाई गई राशि पर ही ब्याज देना होता है।
4. **बिलों की कटौती** – वाणिज्यिक बैंक व्यावसायिक फर्मों को उनके विनिमय पत्रों/प्रतिज्ञा पत्रों एवं हुंडियों की कटौती के द्वारा भी ऋण प्रदान करते हैं,

बैंक द्वारा ऐसे दस्तावेजों का भुगतान कटौती पर यानी उनके अंकित मूल्य से कम पर किया जाता है।

5. **बैंक ड्राफ्ट** – बैंक ड्राफ्ट एक प्रपत्र है जिसे कोषों के हस्तांतरण के लिए प्रयोग किया जाता है। बैंक ड्राफ्ट, बैंक की एक ब्रांच द्वारा उसी बैंक की अन्य ब्रांच या किसी अन्य बैंक की ब्रांच (यदि दोनों बैंकों में कोई ऐसा अनुबन्ध है) पर लिखा जाता है जिसमें यह आदेश दिया जाता है कि उस व्यक्ति को जिसका नाम ड्राफ्ट पर लिखा गया है अथवा उसके आदेश पर एक निर्दिष्ट धन राशि का भुगतान कर दिया जाए।
6. **बैंकर्स चैक अथवा भुगतान आदेश** – यह बैंक ड्राफ्ट की भांति ही होता है। दूसरे शब्दों में यह एक ऐसा बैंक ड्राफ्ट हैं जिसका भुगतान केवल उसी शहर में किया जाता है।

इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग सेवाएँ – बैंक व्यवहारों में कम्प्यूटर व इंटरनेट के प्रयोग करने को इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग कहते हैं। इस सेवा के कारण अब ग्राहकों को बैंक से लेन–देन करने के लिए हर समय बैंक जाने की जरूरत नहीं है बल्कि 24 घण्टे कहीं भी बैठे हुए कम्प्यूटर व इंटरनेट की सहायता से बैंक से लेन–देन करना संभव है। मुख्य बैंकिंग सेवाएं निम्नलिखित है।

1. **इलेक्ट्रानिक फंड हस्तांतरण (EFT)** – इस प्रणाली के अन्तर्गत इंटरनेट के माध्यम से रुपया एक खाते से दूसरे खाते में हस्तांतरित किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः संस्थाओं के द्वारा अपने कर्मचारियों के खाते में मजदूरी व वेतन हस्तांतरण के लिए किया जाता है।
2. **स्वचालित टैलर मशीन (ATM)** – एटीएम एक ऐसी स्वचालित मशीन है जिसमें कार्ड डालने तथा अपनी व्यक्तिगत पहचान संख्या (Personal Identity Number pin) टाईप करने से रूपया निकाला तथा जमा करवाया जा सकता है। यह मशीन –24 घंटे काम करती है।
3. **डेबिट कार्ड** – यह एक प्लास्टिक कार्ड है जो बैंक को ग्राहक के खाते से पैसा निकालकर विक्रेता के खाते में स्थातंरण करने की अनुमति देतो है।
4. **क्रेडिट कार्ड** – यह एक प्लास्टिक कार्ड है जो ग्राहक को खरीदारी करने के बाद बैंक को पैसा लौटाने के लिए प्रयोग किया जाता है।
5. **टेलि बैंकिंग** – इस सुविधा के अंतर्गत बैंक का ग्राहक फोन पर किसी भी समय अपने खाते का शेष व कुछ अंतिम व्यवहारों की जानकारी प्राप्त कर सकता है।
6. **कोर बैंकिंग** – इस बैंकिंग पद्धति का पूरा नाम कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (Core Banking Solution-CBS) है। इस पद्धति में ग्राहक एक विशेष ब्रांच (केवल

वह ब्रांच जिसमें CBS सुविधा उपलब्ध हो) में खाता खोल कर पूरे देश में उस बैंक की किसी भी CBS ब्रांच में जाकर व्यवहार (Transaction) कर सकता है। CBS ब्रांच ग्राहक के लिए यह अर्थहीन है कि वह किस CBS ब्रांच का ग्राहक है।

7. **रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS) (तुरंत समग्र निपटाझन प्रणाली)** – आरटीजीएस कोषों के हस्तांतरण की प्रक्रिया है, जिसमें एक बैंक खाते में दूसरे बैंक खाते में धन का हस्तांतरण तुरंत हो जाता है। इस प्रणाली के अतंर्गत आरटीजीएस के व्यावसायिक घण्टों में कम्प्यूटर के माध्यम से लेन–देन की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।
8. **राष्ट्रीय इलैक्ट्रानिक कोष हस्तांतरण - NEFT (National Electronic Funds Transfer)** - यह कोष हस्तांतरण का अत्यंत सुरक्षित विश्वसनीय तेज एवं मितव्ययी साधन है। इस योजना के अन्तर्गत दो पक्षों के मध्य कोषों का हस्तांतरण इलेक्ट्रानिक निर्देश के द्वारा होता है। इसमें निश्चित समय अंतराल के पश्चात् समूह में लेन–देनों का निपटारा किया जाता है। अंतर्गत सोमवार से शुक्रवार दिन में 6 बार (सुबह 9.30 बजे 12.00 बजे, दोपहर 1.00 बजे, 3.00 बजे व 4.00 बजे) तथा शनिवार को दिन में 3 बार (9.30 बजे 10.30 बजे व दोपहर 12.00 बजे) कोषों का हंस्तातरण किया जाता है।

ई–बैंकिंग या इलैक्ट्रानिक बैंकिंग से ग्राहकों को लाभ

1. यह ग्राहकों को 24 घंटे एवं 365 दिन बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सहायक हैं।
2. यह प्रत्येक व्यवहार का रिकॉर्ड रखने के कारण वित्तीय अनुशासन की भावना के विकास में सहायता करती है।
3. यह ग्राहकों को कुछ व्यवहार घर या दफ्तर से या यात्रा करते समय मोबाइल फोन के माध्यम से भी करने की सुविधा प्रदान करती है।
4. नकदी लेकर यात्रा करने से बचाकर, यह ग्राहको, को अधिक सुरक्षा उपलब्ध करवाती है।

ई–बैंकिंग से बैंकों को लाभ

1. केंद्रिकृत डॉटाबेस शाखाओं के कार्यभार को घटाने में सहायक होता है।
2. यह बैंकों को प्रतियोगितात्मक लाभ प्रदान करती है।
3. यह बैंक को असीमित नेटवर्क उपलब्ध करवाती है।

आरटीजीएस (RTGS) और एनईएफटी (NEFT) में अन्तर

1. आरटीजीएस में एक बैंक खाते से दूसरे बैंक के खाते में धन का हस्तांतरण तुंरत हो जाता है जबकि एनईएफटी में धन का हस्तांतरण निश्चित समय के अन्तराल समूह में होता है।
2. दो लाख से ज्यादा कोषों को हस्तांतरण आरटीजीएस द्वारा किया जाता है जबकि दो लाख से कम कोषों को हस्तांतरण एनईएफटी द्वारा किया जाता है।

निम्न के उत्तर दें :-

1. एक कम्पनी को दूसरे शहर में दो दुकानदारों को क्रमशः 3 लाख और 1 लाख रु. उसी दिन हस्तांरित करने हैं उसे कौन–सी बैंकिंग सेवा इस्तेमाल करनी पड़ेगी।
2. आरटीजीएस (RTGS) और एनईएफटी (NEFT) में अन्तर बताइये।
3. नताशा को अचानक रात को 10 बजे रुपये की जरूरत पड़ गई और रात को बैंक बन्द होते हैं। वह कौन–सी बैंकिंग सेवा का इस्तेमाल करके अपने खाते से रुपये निकल सकती है?
4. स्कूलों में छात्रों के कौन–से प्रकार के खाते खोले जाते हैं?
5. रूबल के पास एक बैंक का क्रेडिट कार्ड है उसको 5000 रुपये की खरीददारी करनी है परन्तु उसके खाते में सिर्फ 3000 रुपये हैं। क्या वह क्रेडिट कार्ड से खरीददारी कर सकता है?

अन्य डिजिटल भुगतान के प्रकार है :-

(1) AEPS - आधार एनबेल्ड पेमेंट सिस्टम

(2) ई–वॉलेट

(3) UPI - यूनिफाईड पेमेंट इंटरफेस

(4) QR Code - क्यूआर कोड

(5) इंटरनेट बैकिंग

(6) मोबाइल बैकिंग

बीमा

बीमा का अर्थ – बीमा एक प्रकार का अनुबंध है जिसके अन्तर्गत एक पक्षकार (बीमाकर्ता या बीमा कंपनी) किसी दूसरे पक्षकार (बीमित) को एक प्रतिफल (बीमा

प्रीमियम) के बदले में किसी अप्रत्याशित घटना के फलस्वरूप होने वाली उस हानि क्षति या टूट–फूट की भरपाई के लिए एक तयशुदा राशि देने के लिए सहमत हो जाता है जिसमें बीमित व्यक्ति का वित्तीय हित हो।

बीमा वह विधि है जो एक व्यक्ति के जोखिम को अनेक व्यक्तियों में विभाजित करती है।

बीमा के सिद्धांत

1. **परम् सद्विश्वास का सिद्धान्त** – बीमा अनुबंध बीमाकर्ता तथा बीमित के बीच पारस्परिक विश्वास तथा भरोसे पर निर्भर होते हैं। हर बीमा अनुबंध की यह शर्त है कि दोनों पक्षकार–बीमाकर्ता और बीमित सारी जानकारी एक–दूसरे को दे, जिससे उनके अनुबंध में शामिल होने के निर्णय पर प्रभाव पड़ सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि बीमा अनुबंध के दोनों पक्षकारों द्वारा कोई भी महत्वपूर्ण तथ्य छुपाया नहीं जाना चाहिए।

   उदाहरण के लिए, किसी एक विशेष रोग से ग्रसित होने के बावजूद उसे छुपाने पर पॉलिसी की गई एवं उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो बीमा कंपनी अनुबंध को समाप्त कर सकती है।

2. **बीमा योग्य हित** – इसका अर्थ है बीमा अनुबंध को विषय वस्तु में कोई आर्थिक हित होना। बीमा योग्य हित का होना किसी भी बीमा अनुबंध की अनिवार्य पूर्व शर्त है बीमा की गई वस्तु में उसकी स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि उस वस्तु के बने रहने से उसे लाभ होगा और नष्ट होने से हानि। व्यापारी का अपने घर, स्टॉक, अपने और अपनी पत्नी तथा बच्चों के जीवन आदि में बीमा योग्य हित होता है।

   उदाहरण के लिए, व्यवसायी का फैक्टरी में रखे संबंध की सुरक्षा एक ऋणदाता का ऋणी के जीवन में, स्वामी का अपनी संपत्ति में इत्यादि।

3. **क्षतिपूर्ति – क्षतिपूर्ति का सिद्धान्त जीवन बीमा के अतिरिक्त अन्य सभी बीमा अनुबंधों पर लागू होता है।** इसका जीवन बीमा पर लागू न होने का कारण यह है कि जीवन बीमा में क्षति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इन बीमा अनुबंधों का उद्देश्य बीमा कराने वाले को उसकी वास्तविक हानि की क्षतिपूर्ति करना होता है। इसका अभिप्राय यह है कि बीमित केवल वास्तविक हानि के लिए क्षतिपूर्ति प्राप्त कर सकता है।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति 1,00,000 रू. के मूल्य के माल का बीमा 1,10,000 रू. में कराता है। सारा माल क्षतिग्रस्त होने पर उसे 1,00,000 रू. से अधिक भुगतान बीमा कंपनी द्वारा नहीं किया जाएगा। जबकि 70,000 रू. की हानि होने पर उसे सिर्फ 70,000 रू. ही बीमा कम्पनी देगी।

अर्थात् इस सिद्धांत के अनुसार, वास्तविक हानि और बीमित राशि में से जो भी कम होगी, बीमा कम्पनी सिर्फ उसी का भुगतान करेगी।

4. **निकटतम कारण** – बीमाकर्ता पर हानि का दायित्व तभी आता है जब उस हानि का सबसे नजदीकी कारण वही जोखिम हो जिसका बीमा कराया गया है। यदि हानि किसी अन्य कारण से होती है तो बीमाकर्ता मुआवजा के लिए बाध्य नहीं है। एक से मामलों में बीमाकर्ता का दायित्व निर्धारित करने के लिए निकटतम् कारण पर विचार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, व्यवसायी द्वारा अपने स्कंध (Stock) का बीमा आग लगने के कारण पर कराया गया है परन्तु पानी द्वारा गल जाने से माल–हानि होने पर बीमा कम्पनी उत्तरदायी नहीं होगी। वरन् स्वामी स्वयं उत्तरदायी होगा।

5. **अधिकार समर्पण – यह सिद्धांत उन सभी बीमा अनुबंधों पर लागू होता है जो क्षतिपूर्ति के अनुबंध हो।** इसके अनुसार जब बीमा कम्पनी किसी क्षति से संबंधित दावे का भुगतान कर देती है तो क्षतिग्रस्त संपत्ति से संबंधित सभी अधिकार बीमा कम्पनी को हंस्तातरित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, गाड़ी के पूर्णरूप से क्षतिग्रस्त होने पर बीमा कम्पनी द्वारा भुगतान कर दिया गया। उसके पश्चात् गाड़ी का स्वामित्व बीमा कम्पनी को माना जाएगा।

6. **अंशदान** – यदि कोई व्यक्ति अपनी वस्तु का एक से अधिक बीमा कम्पनियों से बीमा करा लेता है तो इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि क्षति होने पर सभी कम्पनियाँ हानि को अलग–अलग पूरा करेगी। भुगतान तो सभी कम्पनियों द्वारा किया जाएगा लेकिन एक विशेष अनुपात में होगा और भुगतान की कुल राशि, कुल हानि से अधिक नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए, एक बीमित व्यक्ति तीन कंपनियों से अलग–अलग बीमा करवाता है। A से 10000, B से 20000, C से 30000 क्षति होने पर तीनों कम्पनियाँ कुल हानि को 1 : 2 : 3 के अनुपात में सहन करेंगी। जीवन बीमा के लिए यह नियम मान्य नहीं होता।

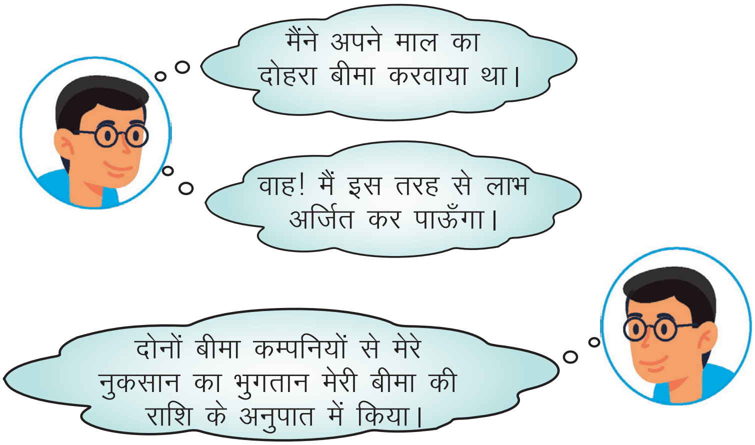
मैंने अपने माल का दोहरा बीमा करवाया था।
वाह! मैं इस तरह से लाभ अर्जित कर पाऊँगा।
दोनों बीमा कम्पनियों से मेरे नुकसान का भुगतान मेरी बीमा की राशि के अनुपात में किया।

7. **हानि को न्यूनतम करना** – बीमित का यह कर्त्तव्य है कि बीमा कृत संपत्ति के साथ कोई दुर्घटना हो जाने की स्थिति में हानि की राशि को न्यूनतम रखने के लिए सभी उचित उपाय करें। ऐसा न करने की स्थिति में उसका दावा अस्वीकृत हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि बीमाधारी के बीमित गोदाम में आग लग जाए तो उसका यह कर्त्तव्य है कि वह दमकल विभाग को सूचना दे एवं आग बुझाने का हर संभव प्रयास करें, ना कि बीमा–सुरक्षा को सोचकर निश्चिंत रहे।

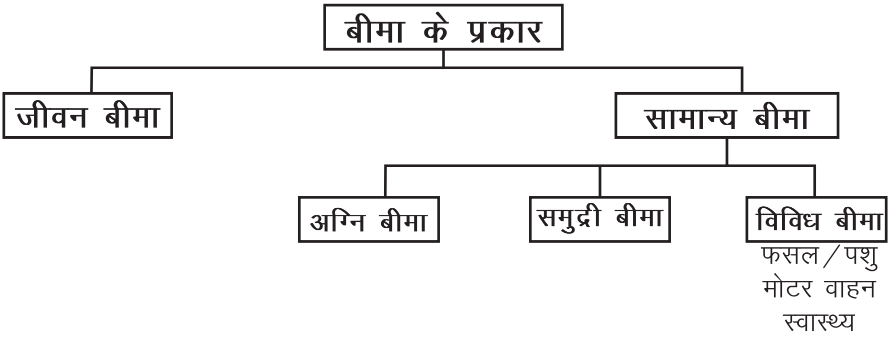
बीमा के प्रकार
जीवन बीमा
सामान्य बीमा
अग्नि बीमा
समुद्री बीमा
विविध बीमा
फसल/पशु
मोटर वाहन
स्वास्थ्य

(अ) जीवन बीमा

जीवन बीमा की अवधारणा – इसके अन्तर्गत बीमे की राशि का भुगतान पॉलिसी की अवधि समाप्त होने पर अथवा पॉलिसी धारक की मृत्यु होने पर (इसमें से जो भी पहले आता हो) किया जाता है। यदि पॉलिसी धारक पॉलिसी परिपक्व होने तक जीवित रहता है तो बीमे की राशि उसे मिल जाती है परंतु पॉलिसी की अवधि समाप्त होने से पहले यदि उसकी मृत्यु हो जाती है तो बीमे की राशि उसके परिवार को मिल जाती है। बीमा कंपनी किसी व्यक्ति के जीवन का बीमा एक प्रीमियम के बदले में करती है जिसका भुगतान एक मुश्त या समय–समय पर किस्तों में किया जा सकता है जैसे वार्षिक, त्रैमासिक या मासिक।

जीवन बीमा पॉलिसियों के प्रकार

(1) **सम्पूर्ण जीवन पॉलिसी** – इसके अंतर्गत बीमा कृत राशि का भुगतान बीमित की मृत्यु से पहले नहीं किया जाता। इन बीमा पत्रों में प्रीमियम की दर बहुत कम होती है।

(2) **बंदोबस्त जीवन बीमा पॉलिसी** – इस पॉलिसी के अंतर्गत बीमाकर्ता बीमित को या उसके द्वारा मनोनीति उत्तराधिकारियों को उसके एक निर्धारित उम्र तक पहुँचने पर या उसकी मृत्यु पर जो भी पहले हो एक उल्लेखित राशि अदा करने का वादा करता है।

(3) **संयुक्त जीवन पॉलिसी** – इस पॉलिसी में दो या दो से अधिक जीवनों का बीमा एक साथ होता है पॉलिसी की राशि उनमें से किसी की भी मृत्यु पर उत्तरजीवी अथवा उत्तरजीवियों को देय होती है।

(4) **वार्षिकी** – इसके अंतर्गत बीमित के किसी निर्धारित आयु तक पहुँच जाने के बाद राशि मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक किस्तों में देय होती है। यह पॉलिसी उन लोगों के लिए उपयोगी है जो कुछ अवधि के बाद अपने और अपने आश्रितों के लिए एक नियमित आय प्राप्त करने के इच्छुक हों।

(5) **बाल बंदोबस्ती पॉलिसी** – यह पॉलिसी बच्चों की शिक्षा और विवाह खर्च के उद्देश्य से ली जाती है। बच्चे एक निर्धारित आयु तक पहुँच जाने पर बीमाकर्ता एक निश्चित राशि का भुगतान करने को सहमत हो जाता है।

(ब) सामान्य बीमा

(1) **अग्नि बीमा** – यह बीमा अग्नि से क्षति के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान करता है। यदि बीमित की संपत्ति को अग्नि के कारण क्षति पहुँचती है तो उसे बीमा कम्पनी से क्षतिपूर्ति के रूप में क्षतिग्रस्त संपत्ति का मूल्य प्राप्त हो जाएगा परन्तु यदि संपत्ति को बीमा अवधि में अग्नि से कोई क्षति न हो तो उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। ऐसा सेवा के लिए बीमा कम्पनी प्रीमियम लेती है। विशेषताएं – 1. परम नेकनीयती 2. क्षतिपूर्ति का अनुबंध 3. बीमित विषय 4. वस्तु में बीमा योग्य हित का होना 5. निकटतम कारण का सिद्धान्त। यह वर्ष–प्रतिवर्ष का अनुबंध है। वर्ष बीते जाने के बाद जाने के बाद यह प्रायः समाप्त हो जाता है और रियायती दिनों के भीतर प्रीमियम अदा करके इसका नवीनीकरण किया जा सकता है।

(2) **समुद्री बीमा** – विदेशी व्यापार में समुद्र परिवहन एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समुद्री यात्रा के दौरान जहाज एवं उसमें रखे माल को अत्यधिक

जोखिम होता है। समुद्री बीमा ऐसे जोखिमों के विरूद्ध कवच प्रदान करता है। बीमा कंपनी द्वारा निर्धारित प्रीमियम का भुगतान करके व्यवसायी अपने माल तथा जहाज का मालिक अपने जहाज का बीता करवा सकता है। समुद्री बीमा तीन प्रकार का हो सकता है (1) जहाज का बीमा, (2) माल का बीमा और (3) भाड़े का बीमा।

(3) अन्य जोखिमों का बीमा/विविधा बीमा

स्वास्थ्य बीमा – यह आजकल लोकप्रिय होता जा रहा है। साधारण बीमा कम्पनियां सामान्य जनता के लिए विशेष स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियां उपलब्ध कराती हैं जैसे मेडिक्लेम। स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के अंतर्गत बीमा कंपनी हर वर्ष थोड़ा–सा प्रीमियम लेती है और बदले में कुछ बीमारियों के उपचार जैसे हृदय के रोग, कैंसर, ट्यूमर आदि के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाती हैं।

निम्न के उत्तर दें :–

1. एक व्यक्ति ने अपने 40000 रू. के स्टॉक का 60000 रू. बीमा करवाया। आग लगने से उसका पूरा स्टॉक जल गया। उसे बीमा कम्पनी द्वारा वास्तविक स्टॉक का मूल्य 40,000 रू. दिये जायेंगे न कि 60,000 रू., यहाँ बीमा के कौन–से सिद्धांत को अपनाया गया है। लिखिए।
2. एक व्यक्ति अपना जीवन बीमा करवाते हुए अपनी कैंसर की बीमारी को नहीं बताता। उस सिद्धांत का नाम बताइये, जिसका उसने उल्लंघन किया है।
3. क्षतिपूर्ति का सिद्धांत कौन–से बीमा पर लागू नहीं होता?
4. बीमायोग्य हित का सिद्धान्त बताइये।
5. अग्नि बीमा में बीमायोग्य हित कब विद्यमान होना चाहिए?

संचार के तरीके

- **डाक सेवाएँ**
  1. डाक
  2. पंजीकृत
  3. पार्सल
  4. स्पीड पोस्ट
- **तार सेवाएँ**
  1. सैल्यूलर मोबाइल सेवाएँ
  2. रेडियो पेजिंग सेवाएँ
  3. निश्चित लाइन सेवाएँ
  4. केबल सेवाएँ
  5. वीसेट (VSAT) सेवाएँ
  6. डी.टी.एच. सेवाएँ
- **आधुनिक माध्यम**
  1. कुरियर
  2. फैक्स
  3. इंटरनेट
  4. ई–मेल

जीवन बीमा, अग्नि बीमा तथा समुद्री बीमा में विभेद

	आधार	जीवन बीमा	अग्नि बीमा	समुद्री बीमा
1	विषय वस्तु	मानव जीवन	भौतिक वस्तु या संपत्ति	जहाज, माल तथा किराया।
2.	तत्त्व	सुरक्षा तथा विनियोग	केवल वस्तु की सुरक्षा	केवल सुरक्षा
3.	बीमायोग्य हित	पॉलिसी कराते समय	पॉलिसी कराते समय तथा मुआवजा लेते समय	पॉलिसी का मुआवजा लेते समय
4.	समयावधि	आमतौर पर एक से अधिक वर्षों के लिए।	एक वर्ष से अधिक नहीं।	एक वर्ष अथवा समुद्री यात्रा काल तक।
5.	क्षतिपूर्ति	क्षतिपूर्ति का अनुबंध नहीं है	पूर्णरूप से क्षतिपूर्ति पर होता है।	अनुबंध वस्तु के खो जाने पर होता है।

6.	हानि का मापन	रूपयों के रूप मे ही मापा जाता।	हानि को रूपयों के रूप में मापा जाता है।	मल्यों/रूपयों के रूप मे।
7.	समर्पण मूल्य	बीमा परिपक्व होने से पहले उसे समर्पित करने पर समर्पित मूल्य की प्राप्ति होती है	इस बीच मे वस्तु को जल जाने पर वस्तु के वास्तविक मूल्य से अधिक नहीं होता।	समर्पित नहीं कर सकता। इसमें कोई समर्पित मूल्य नहीं होता।
8.	मेडिकल परीक्षा	बीमित व्यक्ति की मेडिकल जाँच अनिवार्य है	मेडिकल जाँच की आवश्यकता नहीं होती	मेडिकल जाँच की आवश्यकता नहीं होती।
9.	पूर्ण सद्विश्वास	पूर्णविश्वास पर आधारित अनुबंध है।	पूर्ण विश्वास पर आधारित अनुबंध है	पूर्ण विश्वास पर आधारित अनुबंध है।

संचार – एक महत्वपूर्ण सेवा है जो व्यावसायिओं, संगठनों तथा ग्राहकों के बीच कड़ी का कार्य करती हैं। यह लोगों को शिक्षित करती है उनके ज्ञान में वृद्धि करती है एवं उनके दृष्टिकोण को विस्तृत करती है। यह लोगों व्यावसायियों एवं वाणिज्यिक क्रियाओं के सफल संचालन में सहायता करती है। संचार एक महत्वपूर्ण सेवा है जो किसी राष्ट्र के तंत्रिका केन्द्र के रूप में कार्य करती है। संचार सेवाओं को इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं डाक और दूरसंचार सेवाएं।

डाक सेवाएं – प्रत्येक व्यावसायी प्रतिदिन बहुत से पत्र, बाजार प्रतिवेदन, पार्सल, मनीऑर्डर आदि बाहर भेजता है और बाहर से भी प्राप्त करता है। यह सभी सेवाएं डाक एवं तारघर द्वारा प्रदान की जाती हैं जो कि देश भर में फैले हुए हैं। डाक विभाग द्वारा निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की जाती है।

(अ) **वित्तीय सेवाएं** – ये आम जनता को डाक बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा निम्नलिखित बचत योजनाओं के माध्यम से उनकी बचतों को गतिशील बनाते हैं जैसे कि –पब्लिक प्रॉविडेंट फंड (पीपीएफ), किसान विकास पत्र (केवीपी), राष्ट्रीय बचत, (एनएससी), आवर्ती जमा योजना (Recurring Deposit Scheme) एवं मनीऑर्डर।

(ब) डाक सेवाएं - डाक विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रमुख सेवाएं निम्नलिखित है :–

1. **पोस्टल सर्टिफिकेट के अंतर्गत (यूपीसी)** - सामान्य रूप से साधारण डाक से पत्रों को भेजने पर डाकघर कोई रसीद नहीं देता है परन्तु यदि पत्र प्रेषक पत्र के भेजे जाने का कोई साक्ष्य प्राप्त करना चाहता है तो वह डाकघर से प्रमाण–पत्र प्राप्त कर सकता है। डाकघर के अधिकारी इसके लिए कुछ चार्ज लगाते हैं तथा पत्र पर यूपीसी की मोहर लगा देते हैं। डाक विभाग द्वारा यह सेवा अब बन्द कर दी गई हैं।
2. **पंजीकृत डाक (Registered Post)** - यह ऐसी डाक सुविधा है जिसके अंतर्गत यह सुनिश्चित होता है कि डाक निश्चित रूप से प्रेषिती के पास पहुँच जायेगी अन्यथा यह प्रेषक के पास वापस आ जायेगी। इस विधि से पत्र भेजने पर डाक द्वारा पत्र प्रेषक को एक रसीद दी जाती है। पंजीकृत डाक के प्रेषक को लिफाफे पर अपना पूरा पता एक कोने में लिखना होता है।
3. **पार्सल** - यह एक डाक सुविधा है जिसके अंतर्गत वस्तुओं को सम्पूर्ण देश में या देश से बाहर भेजा जाता है। इसमें डाक व्यय पार्सल के वजन के अनुसार लगता है।
4. **स्पीड पोस्ट** - ऐसी सुविधा जिसके अतंर्गत डाक प्रेषिती के पास अति शीघ्र पहुँच जाती है उसे स्पीड पोस्ट कहते हैं। इस सुविधा के अंतर्गत पत्र, प्रपत्र एवं पार्सल जल्दी ही सुपुर्द कर दिए जाते हैं। यह सुविधा विशिष्ट डाकघरों में उपलब्ध है।
5. **कुरिअर सेवाएं** - यह सेवा निजी डाकघरों द्वारा प्रदान की जाती है। निजी डाकघर सरकारी डाकघरों के अच्छे विकल्प के रूप में उभर रहे हैं कुरिअर द्वारा पत्र, प्रलेख, पार्सल आदि भेजे जा सकते हैं। निजी काम होने के कारण कुरिअर सेवा में कर्मचारी अधिक जिम्मेदारी से काम करते हैं।

(स) अन्य सहायक सुविधाएँ

1. विभिन्न अवसरों पर ग्रीटिंग्स कार्ड भेजना
2. **मीडिया संदेश** - कम्पनियां अपने ब्रांड उत्पादों का विज्ञापन पोस्टकार्ड, लिफाफों पर कर सकती है।
3. **ई-बिल डाक** - बीएसएनएल तथा भारतीय एयरटेल हेतु बिलों का भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराना।
4. पासपोर्ट आवेदनों की सुविधा हेतु विदेश मंत्रालय के साथ पासपोर्ट सुविधा देने में मदद करना।

निम्न के उत्तर दें :-

1. राम को एक बहुत आवश्यक पत्र दूसरे शहर में भेजना है। उसे कौन–सी डाक सेवा इस्तेमाल करना चाहिए।
2. डाक विभाग द्वारा दी जाने वाली किन्हीं दो वित्तीय सेवाओं के नाम लिखो।
3. श्याम को एक पत्र जल्द से जल्द हैदराबाद भेजना है। उसे कौन–सी डाक सेवा का इस्तेमाल करना होगा?
4. डाक विभाग द्वारा चलाई जाने वाली बचत योजनाओं के नाम लिखें।
5. चिंटू को एक सामान दूसरे शहर में भेजना है वह कौन–सी सेवा का इस्तेमाल करेगा।

दूरसंचार सेवाएँ

दूरसंचार सेवाएँ – आज के समय में दूरसंचार सेवाओं के बिना व्यापार करना असंभव है। दूरसंचार सेवाएं निम्नलिखित हैं।

1. **सैल्युलर फोन** – यह एक तार रहित चलता फिरता संचार उपकरण है। संदेश चाहे लिखित हो या मौखिक संसार में किसी भी जगह पहुंच सकता है।
2. **पेजर** – यह एक मार्गीय तारहीन संचार उपकरण है जो संदेश को लिखित रूप में प्राप्त एवं रिकार्ड करता है। इसमें संदेश को किसी भी समय किसी भी जगह प्राप्त किया जा सकता है।
3. **स्थायी लाइन सेवाएँ** – इन सेवाओं में वायस एवं नान – वायस मैसेज लम्बी दूरी के ट्रैफिक से लिंक स्थापित करने के लिए डाटा सेवाओं सहित सभी प्रकार की स्थाई साइन सेवाएं शामिल हो जाती है। इनके द्वारा अन्य प्रकार की दूर संचार सेवाओं के साथ भी इन्टर–कनेक्टीविटी दी जाती है।
4. **केबल सेवाएं** – इनका उपयोग ऐसी मीडिया सेवाओं हेतु होता है जो एकमार्गीय मनोरंजन संबंधित सेवाएं होती है।
5. **अतिलघु एपर्चर टर्मिनल सेवाएं** – यह उपग्रह आधारित सेवा होती है। इसका उपयोग नवकरणीय अनुप्रयोगों जैसे टेली–केडिसिन, बाजार दरों, टेलि–मेडिसिन आदि हेतु किया जाता है।
6. **डाइरेक्ट टू होम सेवाएं** – यह भी एक उपग्रह आधारित मीडिया सेवा को एक छोटे डिश एंटीना एवं सैट टॉप बॉक्स की सहायता से टेलीविजय पर देखा जा सकता है।

व्यावसायिक सेवाएँ

प्रमुख शब्दावली

व्यावसायिक सेवाएँ – व्यापार करने के लिए सहायक

सेवाएँ – गतिविधि या प्रक्रिया

माल – भौतिक वस्तु

बैंक – यह संस्था जो जमा को स्वीकार करती है तथा उधार देती है

बीमा – प्राक्रतिक अथवा मानवकृत हानि की पूर्ति का एक साधन है। यह एक अनुबंध है जिसके अंतर्गत एक पार्टी अनुंबंधित धन (प्रीमियम) के रूप में किसी घटना के होने पर या किसी निश्चित अवधि की समाप्ति पर, एक अन्य पार्टी को देने के लिए सहमत होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'असमानता' किस प्रकार की व्यावसायिक सेवा की प्रवृत्ति है?
   (क) बैंकिंग (ख) वैद्यानिक निगम का
   (ग) सरकारी कम्पनी का (घ) निजी कम्पनी

2. ग्राहक भागीदारी.................... खरीदने के लिए आवश्यक है।
   (क) सेवा (ख) वस्तु
   (ग) दोनों (क) और (ख) (घ) कोई नही।

3. निम्न में से कोन–सी व्यावसायिक सेवा नहीं है–
   (क) बैकिंग (ख) उत्पादन
   (ग) यातायात (घ) संदेशवाहन

4. निम्न में से क्या इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग के अंतर्गत नहीं आता?
   (क) इलेक्ट्रॉनिक फण्ड हस्तांरण (ख) स्वचालित टेलर मशीन (ATM)
   (ग) डेबिट कार्ड (घ) अधि विकर्ष

5. बीमाकर्ता द्वारा अपनी सेवाएँ प्रदान करने के बदने जो शुल्क लिया जाता है, उसे..................कहते हैं।
   (क) लाभ (ख) लाभांश
   (ग) प्रीमियम (घ) किस्त

6. एक व्यक्ति यदि ₹ 50,000 मूल्य के माल का बीमा ₹ 70,000 का करवाता है। यदि उसका सारा माल क्षतिग्रस्त हो जाए तो बीमा कम्पनी उसे केवल वास्तविक हानि अर्थात ₹ 50,000 का भुगतान करेगी न कि ₹ 70,000 का। इस स्थिति मे बीमे का कौन–सा सिद्धांत लागू हुआ है?
   (क) अंशदान का सिद्धांत (ख) अधिकार समर्पण का सिद्धांत
   (ग) क्षतिपूर्ति कां सिद्धांत (ग) बीमा योग्य हित का सिद्धांत

7. अग्नि बीमा पॉलिसी सम्पूर्ण मूल्य ....के बराबर होता है।
(क) पॉलिसी की राशि (ख) पॉलिसी के मूल्य का 50%
(ग) प्रीमियम की राशि (ग) शून्य

8. निम्न में से 'क्षतिपूरक अनुबंध' के अंतर्गत क्या नहीं आता?
(क) जीवन बीमा (ख) अग्नि बीमा
(ग) सामुद्रिक बीमा (ग) चोरी बीमा

9. 'DTH' सेवाएँ .... के द्वारा प्रदान की जाती है।
(क) परिवहन कम्पनी (ख) बैंक
(ग) सैल्यूलर कम्पनी (ग) इनमे से कोई नहीं।

10. निम्न में से कौन–सा बीमा का कार्य नहीं है?
(क) जोखिम की हिस्सेदारी (ख) पूँजी निर्माण में सहायक
(ग) धन का उधार देना (ग) इनमे से कोई नहीं।

11. सी. डब्ल्यू सी. (CWC) का अर्थ है–
(क) सैंट्रल वाटर कमीशन (ख) सैंट्रल वेयर हाउसिंग कमीशन
(ग) सैंट्रल वेयर हाउसिंग निगम (ग) सैंट्रल वाटर निगम।

12. भारत का सबसे बड़ा वाणिज्यिक बैंक...........है।
(क) RBI (ख) PNB
(ग) SBI (घ) ICICI

13. बैंकर्स चैक को भी कहा जाता है–
(क) बैंक ड्रफ्ट (ख) डिमांड ड्रफ्ट
(ग) पे ऑर्डर (घ) इनमे से कोई नहीं।

14. यह एक बचत खाते का प्रकार है जिसमें एक निश्चित सीमा से अधिक जमा धन राशि को अवधि जमा सावधि में जामा कर दिया जाता है–
(क) चालू जमा खाता (ख) आवर्ती खाता
(ग) बहुविकल्पी जमा खाता (घ) इनमे से कोई नहीं।

15. RTGS यह एक धन स्थांनातरण तंत्र है जो एक बैंक से दूसरे बैंक में किया जाता है–
(क) वास्तविक समय के आधार पर (ख) संपूर्ण आधार पर
(ग) लेन–देन तुरंत ही निर्धरित हो जाता है (घ) उपरोक्त सभी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उतर एक या दो शब्दों मे दे-

1. वह कौन सी सस्ंथा है जो जमा को स्वीकार करने के साथ–साथ जनता को उधार भी देती है?
2. बैंक से एक निश्चित सीमा तक ऋण के रूप में धन किस को प्राप्त होता है?
3. किस प्रकार का जमा खता सबसे अधिक ब्याज देता है?
4. अग्नि बीमा में कौन सा तत्त्व विद्यमान होता है?
5. सामान्य बीमा की अधिकतम बीमा अवधि सीमा क्या है?

सत्य/असत्य

1. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया भारत का सैंट्रल बैंक है।
2. चालू खाता जनता की बचत को गति प्रदान करने में उपयोगी है
3. बैंक 'चालू खाता' में जमा राशि पर कोई ब्याज नहीं देता।
4. ओवर ड्राफ्ट केवल 'चालू खाते' पर ही मान्य है।
5. सावधि जमा खातों में से धन चैक द्वारा ही निकाला जा सकता है।
6. माल, जहाज तथ भाड़ा सामुद्रिक बीमा की विषय–वस्तु है।
7. पत्राचार इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं में सम्मिलित है।
8. एश्योरंस (Assurance) शब्द का प्रयोग जीवन बीमा के लिए किया जाता है।
9. 'कोरियर सर्विस निजी डाकघरों द्वारा प्रदान की जाती है जिसके अंतर्गत पत्र, दस्तावेज, पार्सल आदि को भेजा तथा प्राप्त किया जा सकता है।
10. 'वार्षिकी नीति' उन लोगों के लिए उपयोगी है जो कुछ अवधि के पश्चात् एक नियमित आय प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

प्रश्नोत्तर

1 अंक वाले प्रश्न

1. डेबिट कार्ड से आप क्या समझते है?
2. श्याम के पास–2 लाख रु. खाते में रखे हैं जिनकी उसे 2 साल बाद जरूरत है। श्याम को ज्यादा ब्याज प्राप्त करने के लिए कौन–सा खाता खुलवाना चाहिए? (मियादी जमा खाता)
3. टेली बैंकिग से आपका क्या अभिप्राय हैं?
4. यह बीमाधारी की खास जिम्मेदारी है कि जिस सम्पत्ति का बीमा कराया जाता है उसकी हानि से बचने के लिए सही–2 कदम उठाये। बीमा के सिद्धान्त का नाम लिखो। (हानि को कम करने का सिद्धांत)
5. बीमें से आप क्या समझते हैं?

6. बैंक की उस सेवा का नाम बताओं जिसमें ग्राहक अपने खाते में मौजूद रू. से ज्यादा रू. निकाल सकता है। (बैंक अधिविकर्ष)
7. क्रेडिट कार्ड क्या है?
8. राहलु के पिता जी आज 1,000,00 रू. बचाना चाहते हैं ताकि वह राहुल के स्नातमक डिग्री वाले दिन राहुल को उपहार में दे सकें। उन्हें ऐसा करने के लिए बैंक में किस प्रकार का बैंक खाता खोलना चाहिए?
9. हमारे देश में DTH (डी.टी.एच.) सुविधा प्रदान करने वाली कोई दो कम्पनियों के नाम बताओं?
10. एक कम्पनी अपने स्टॉक का आग से बचाने के लिए 15 लाख रू. का बीमा करवाती है। कम्पनी में आग लग गई और पूरा स्टॉक जल गया। आग लगने के समय 25 लाख रू. का स्टॉक था। कम्पनी को क्षतिपूर्ति कितनी मिलेगी।
11. बैंकों द्वारा दी जाने वाली दो सहायक सेवाओं के नाम लिखो।
12. व्यावसायिक सेवा के दो उदाहरण लिखो।
13. राम के पास हर महीने 3000 रू. बचत के रूप में बच जाते हैं उसे बैंक में कौन–सा खाता खुलवाना चाहिए। (आवर्ती जमा खाता)।
14. कौन–सी व्यावसायिक सेवाएं क्रमशः समय एवं स्थान उपयोगिता का सृजन करती है?
15. ई–मेल से आप क्या समझते हैं?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. श्रीमान सतीश ने अपने मकान का बीमाकर्ता से 20 लाख रू. का और B बीमाकर्ता से 10 लाख रू. आग से बचने के लिए बीमा करवाया। 3 लाख रू. की हानि हुई।
   i) श्रीमान सतीश। और B से अलग–2 कितनी–2 राशि का दावा प्रस्तुत कर सकते हैं और क्यों ?
   ii) बीमा के सिद्धांत का नाम लिखो ?
2. जीवन बीमा के क्षेत्र (Scope) को समझाइए।
3. बैंक अधिविकर्स (Bank Overdraft) से आप क्या समझते हैं?
4. नीचे दिये गए प्रत्येक विवरण के लिए बीमा के सिद्धांत का नाम लिखो।
   i) बीमाधारी ने जिस सम्पत्ति का बीमा कराया है उससे सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण तथ्य दर्शाए।
   ii) बीमाधारी का बीमा अनुबंध की विषय–वस्तु में आर्थिक हित अवश्य होना चाहिए।
   iii) बीमाधारी को बीमे का दावा करने के लिए हानि को न्यूनतम करने के

लिए सही–सही कदम उठाने चाहिए।

iv) बीमाधारी, हानि की पूर्ति उसके द्वारा की गई बीमित राशि तक के जिम्मेदार हैं।

(Hints)

i) परम सद्विश्वास का सिद्धांत

ii) बीमा योग्य हित का सिद्धांत

iii) हानि को न्यूनतम करने का सिद्धांत

iv) क्षतिपूर्ति का सिद्धांत

5. बैंक में खोले जाने वाले खातों को समझाइए।

6. इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग (Electronic Banking) द्वारा प्रदान की जाने वाली कोई चार सेवाओं का वर्णन करो।

7. क्या सभी प्रकार के बीमों में बीमायोग्य हित आवश्यक होता है? समुद्री एवं अग्नि बीमा की दशा में यह कब विद्यमान होना चाहिए?

8. एक व्यक्ति ने अपने गोदाम जिसका मूल्य 10 लाख रू. है का बीमा तीन कम्पनियों अ–2 लाख, ब–5 लाख और स– 3 लाख रू. का कराया। हानि के समय बीमा कम्पनियों द्वारा 2:5:3 के अनुपात में क्षतिपूर्ति का भुगतान किया गया। यहाँ बीमा का कौन–सा सिद्धान्त लागू होता है? समझाइए।

9. एक व्यक्ति ने अपनी सहमति का 6 लाख रू. का अग्नि बीमा करवाया। सम्पति का वास्तविक मूल्य 8 लाख रुपये थो आग लगने से सम्पति को 4 लाख की हानि हुई। औसत आधार पर बताइये बीमा कम्पनी कितनी क्षतिपूर्ति राशि देगी?

10. राम ने अपनी फैक्टरी को गिरवी रख कर श्याम से ऋण लिया। क्या श्याम इस फैक्टरी का अग्नि बीमा करवा सकता है? समझाइए।

11. राम ने अपनी कार का बीमा करवाया। ऐक्सीडेंट हो जाने से कार नष्ट हो गई और बीमा कम्पनी ने बीमे की राशि राम को दे दी। राम ने नष्ट कार को 20,000 रू. में बेच दिया। इस पर अधिकार किसका होगा और क्यों?

12. एक पति अपनी पत्नी का 15 साल के लिए जीवन बीमा पॉलिसी लेता है। 5 वर्ष के पश्चात् दोनों में तलाक हो जाता है। क्या पति पॉलिसी परिपक्व होने पर बीमा कम्पनी से मुआवजा पाने का अधिकारी है?

5/6 अंक वाले प्रश्न

1. जीवन बीमा निगम द्वारा जारी की जाने वाली विभिन्न पॉलिसियों का संक्षिप्त में वर्णन करो।

2. एक फैक्ट्री का मालिक अपने माल का बीमा कराता है। वह इस तथ्य को

छुपाता है कि बिजली विभाग से उसे अपनी फैक्ट्री के तारों को बदलने का आदेश मिला हुआ है। बाद में शार्ट–सर्किट के कारण आग लग जाती हैं। इसमें किस सिद्धांत की अवहेलना की गई है चर्चा कीजिए।

3. आरटीजीएस (RTGS), एनईएफटी (NEFT) पद्धतियों पर नोट लिखिए।
4. दिव्या गारमेन्टस ने 10 लाख रु. का कर्ज ले रहा है। उनके पास फंडस की कमी के कारण वे फंड की व्यवस्था करने की कोशिश कर रहे हैं। उनके मैनेजर ने गोदाम में आग लगने से स्टॉक की हुई हानि के लिए कम्पनी पर दावा करने के लिए सुझाव दिया। असलियत में उसका मतलब थो कि वे अपने गोदाम में आग लगा देगें कि जिस स्टॉक का बीमा–करा रखा है उसके लिए बीमा कम्पनी पर दावा कर देंगे और दावे से मिले हुए पैसों से अपना कर्जा चुका देंगे।
   - i) अगर निरीक्षक आग का असली कारण जानने के लिए आता है, तो क्या कम्पनी का दावे की राशि मिलेगी?
   - ii) अग्नि बीमा के कोई तीन तत्वों का वर्णन करो।
5. भारतीय डाक विभाग द्वारा प्रदत्त विविध सुविधाओं पर विस्तृत टिप्पणी लिखो।
6. व्यावसायिक बैंकों के कार्यों को संक्षिप्त में समझाइये।

उत्तरमाला।

बहुविकल्पीय उत्तर

1. (घ) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ)
5. (ग) 6. (ग) 7. (घ) 8. (क)
9. (ग) 10. (ग) 11. (ग) 12. (ग)
13. (ग) 14. (ग) 15. (घ)

एक या दो शब्दो के उत्तर

1. बैंक 2. खाता धारक 3. सावधि जमा खाता
4. सुरक्षा 5. 1 वर्ष

सही/गलत के उत्तर

1. (गलत) 2. (गलत) 3. (सही) 4. (सही)
5. (गलत) 6. (सही) 7. (गलत) 8. (सही)

9. (सही) 10. (सही)

अध्याय–5

ई–बिजनेस एवं सेवाओं का बाह्यकरण

पिछले दशक और उसके बाद व्यवसाय करने के तरीकों में अनेक मूलभूत परिवर्तन हुए हैं। व्यवसाय करने के तरीके को व्यवसाय पद्धति कहा जाता है और उभरते का अर्थ है कि यह परिवर्तन अब बने रहेंगे।

व्यवसाय की यह नई पद्धतियाँ नया व्यवसाय नहीं वरन् यह तो व्यवसाय करने के नये तरीके हैं।

ई–व्यवसायः– ई–व्यवसाय को ऐसे उद्योग, व्यापार और वाणिज्य के संचालन के रूप मं परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें हम कंप्यूटर नेटवर्क का प्रयोग करते हैं।

ई–व्यवसाय बनाम ई–कॉमर्स –

– ई–व्यवसाय, ई–कॉमर्स से अधिक विस्तृत/व्यापक शब्द हैं।

– ई. व्यवसाय में ई–कॉमर्स भी सम्मिलित है।

– ई–कॉमर्स एक फर्म के अपने ग्राहकों और पूर्तिकर्ताओं के साथ इंटरनेट पर पारस्परिक संपर्क को सम्मिलित करता है।

– ई–व्यवसाय न केवल ई–कॉमर्स वरन् व्यवसाय द्वारा इलेक्ट्रानिक माध्यम द्वारा संचालित किए गए अन्य कार्य जैसे उत्पादन, स्टॉक, प्रबंध, उत्पाद विकास, लेखांकन एवं वित्त और मानव संसाधन को भी सम्मिलित करता है।

अर्थ – आज जबकि इंटरनेट का जमाना है, दुनिया का आधुनिक व्यापार धीरे–धीरे इंटरनेट के साथ जुड़ने लगा है। इससे व्यापार की एक नई धारणा प्रचलन में आई हैं जिसे ई–कॉमर्स/ई–बिजनेस कहा जाता है। आज हम इंटरनेट पर अपनी दुकान खोलकर दुनिया भर के इंटरनेट उपभोक्ताओं तक पहुँचा सकते हैं। इंटरनेट उपभोक्ता घर बैठै ही माल का आदेश दे सकते हैं, माल की सुपुर्दगी ले सकते हैं और भुगतान भी कर सकते हैं

Business = Industry + Commerce

ई–बिजनिस? (e-Business?)

इसका अभिप्राय सभी औद्योगिक तथा वाणिज्यिक क्रियाओं को कम्प्यूटर नेटवर्क (अर्थात इंटरनेट) के माध्यम से पूरा करना है।

औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्रियाएं?

Industrial and Commercial Activities?

औद्योगिक क्रियाएं

- उत्पादन
- स्टॉक प्रबन्ध
- उत्पाद विकास
- लेखांकन एवं वित्त
- मानव संसाधन प्रबन्ध

वाणिज्यिक क्रियाएं

- माल के बारे में जानकारी प्राप्त करना
- आदेश देना
- सुपुर्दगी लेना
- भुगतान करना

ई-बिजनेस का क्षेत्र : ई–बिजनेस के क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है:–

1. **B2B कॉमर्स – Business to Business** कॉमर्स इसके अंतर्गत इलेक्ट्रानिक व्यवहारों को करने वाले दोनों पक्ष में व्यावसायिक इकाईयां होती हैं। उदाहरण के लिए दोनों फर्मों में से एक उत्पादन करने वाली और दूसरी कच्चा माल सप्लाई करने वाली हो सकती है। उदाहरण – मारुती उद्योग लिमिटेड कार बनाने के लिए पुर्जे जैसे–टायर, सीट, दरवाजे आदि दूसरी कम्पनी से लेने।

2. **B2C कॉमर्स – Business to Customer कॉमर्स** :– इसके अंतर्गत एक पक्ष फर्म होती है और दूसरा ग्राहक। ग्राहक घर बैठे ही इंटरनेट पर अपनी मनपंसद वस्तुओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है, आदेश दे सकता है, कुछ मदों को प्राप्त कर सकता है और भुगतान भी कर सकता है और दूसरी और फर्म किसी भी समय यह जान सकती है कि ग्राहकों का सन्तुष्टि स्तर क्या है? आजकल कॉल सेन्टर के माध्यम से यह जानकारियां उपलब्ध हो जाती हैं।

3. **Intra B कॉमर्स – Withing Business कॉमर्स** – इसके अंतर्गत व्यावसायिक क्रिया में सम्मिलित दोनों पक्ष एक ही व्यवसाय के दो व्यक्ति अथवा विभाग होते हैं उदाहरण के लिए एक फर्म का विपणन विभाग इंटरनेट के माध्यम से लगातार उत्पादन विभाग के संपर्क में रहता है ताकि ग्राहकों की इच्छानुसार

उत्पादन किया जा सके।

4. **C2C कॉमर्स – Customer to Customer** – इसके अंतर्गत व्यावसायिक क्रिया में सम्मिलित दोनों पक्ष एक ही व्यवसाय के दो व्यक्ति अथवा विभाग होते हैं। उदाहरण के लिए एक फर्म का विपणन विभाग इंटरनेट के माध्यम से लगातार उत्पादन विभाग के संपर्क में रहता है ताकि ग्राहकों की इच्छानुसार उत्पादन किया जा सके।

5. **C2B कॉमर्स** – यह उपभोक्ताओं को शॉपिंग की स्वतंत्रता देता हैं। उपभोक्ता कॉल सेंटर पर टोल फ्री नंबर के द्वारा पूछताछ कर सकते हैं।

6. **C2E कॉमर्स** – इसके अन्तर्गत कम्पनी कर्मचारियों की भर्ती इंटरव्यू (साक्षात्कार), चयन और प्रशिक्षण आदि प्रक्रिया आसानी से पूरी कर सकती है।

प्र. उस व्यावसायिक क्रिया को क्या कहते हैं जिसमें दोनों पक्षकार ग्राहक होते हैं?

प्र. ऐसे कार्य की पहचान करिए जो ई–व्यवसाय में तो है परन्तु ई–कॉमर्स में नहीं आता? (संकेत – Intra B कॉमर्स)

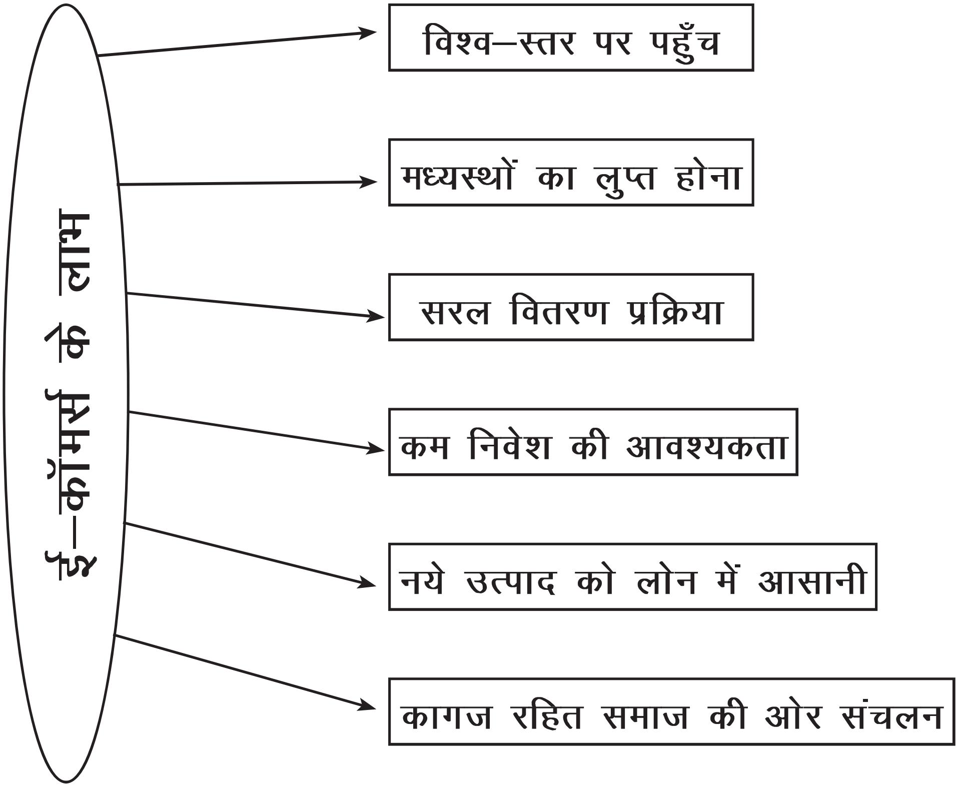
ई–कॉमर्स के लाभ
विश्व–स्तर पर पहुँच
मध्यस्थों का लुप्त होना
सरल वितरण प्रक्रिया
कम निवेश की आवश्यकता
नये उत्पाद को लोन में आसानी
कागज रहित समाज की ओर संचलन

ई-कॉमर्स के लाभ

इसके मुख्य लाभ निम्नलिखित है :–

1. **विश्व स्तर पर पहुँच** – जो व्यवसायी ई–बिजनेस से जुड़ जाते हैं उनके बाजार का विस्तार होता है। नये–नये ग्राहक संपर्क में आते हैं जिससे बिक्री में वृद्धि होती हैं।
2. **मध्यस्थ व्यापारियों का लुप्त होना** – इससे थोक और फुटकर व्यापारी लुप्त होते हैं। अधिकतर ग्राहक उत्पादकों से सीधे सम्पर्क स्थापित करने लगे हैं जिससे उपभोक्ताओं को कम मूल्य पर माल प्राप्त होता है।
3. **सरल वितरण प्रक्रिया** – ई–कॉमर्स के अंतर्गत अनेक सेवाएं एवं सूचनाएं कम्प्यूटर पर ही प्राप्त हो जाती है। जिससे वितरण प्रक्रिया सरल हो गई है और लागत में भी कमी आई है।
4. **स्थापना लागत का कम होना** – इसके अंतर्गत बड़े शोरूम या बड़ी जमीन की जरूरत नहीं होती। सिर्फ कम्प्यूटर और इंटरनेट से काम चल सकता है।
5. **नये उत्पादकों को लाने में आसानी** – इसके माध्यम से कोई भी नया उत्पाद–बाजार में लाया जा सकता है। इंटरनेट पर इसी पूरी जानकारी–उपलब्ध करा कर उपभोक्ताओं को घर बैठे उत्पादों के बारें में पूरी जानकारी उपलब्ध करा दी जाती हैं।
6. **समय की बचत** – घर बैठे उपभोक्ताओं को सामान मिल जाता है जिससे उन्हें बाजार में घूमना नहीं पड़ता।

ई-कॉमर्स के लिए आवश्यक संसाधान

1. **कम्प्यूटर सिस्टम (Computer System) :** कम्प्यूटर सिस्टम का होना ई–कॉमर्स की पहली आवश्यकता है। कम्प्यूटर के द्वारा ही इंटरनेट से जुढ़ा जा सकता है।
2. **इंटरनेट कनेक्शन (Internet Connection) :** इंठरनेट कनेक्शन लेना बहुत जरूरी है और आजकल यह घर बैठे ही बड़ी आसानी से लिया जा सकता है।
3. **वेब पेज बनाना** – ई–कॉमर्स में वेब पेज का सर्वाधिक महत्व है। इसे होम पेज के नाम से भी जाना जाता है। जिस उत्पाद को इंटरनेट पर प्रदर्शित करना होता है। उसे वेब पेज पर दर्शाते हैं।
4. **ऑनलाइन व्यवहार (Online Transaction) :** ऑन लाइन व्यवहार का अर्थ है इंटरनेट के माध्यम से माल के बारें में जानकारी प्राप्त करना, आदेश देना, सुपुर्दगी लेना, भुगतान करना आदि सम्मिलित हैं इसें अंतर्गत वस्तुओं, सूचनाओं व सेवाओं का क्रय–विक्रय संभव हैं।

कुछ ई-व्यवसाय प्रयोग

1. ई–अधिप्राप्ति
2. ई–बोली / ई–निलामी
3. ई–संचार / ई–संवर्धन
4. ई–सुपुर्दगी

5. ई–व्यापार

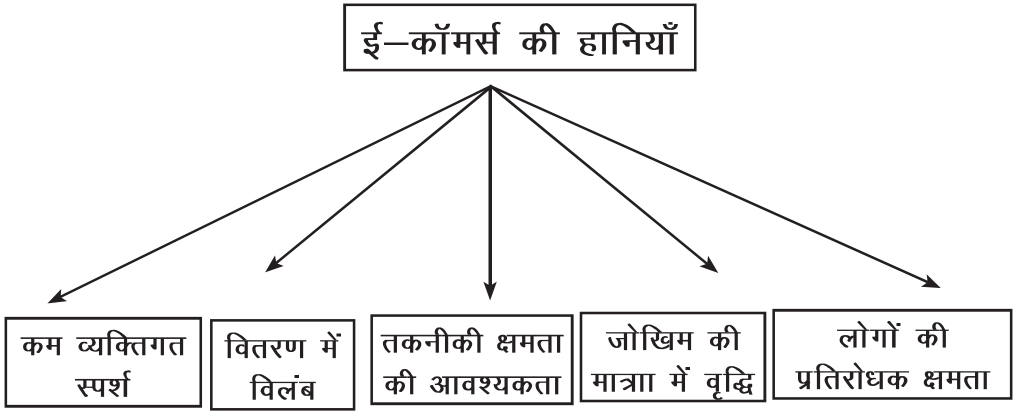
ई–कॉमर्स की हानियाँ
कम व्यक्तिगत स्पर्श
वितरण में विलंब
तकनीकी क्षमता की आवश्यकता
जोखिम की मात्राा में वृद्धि
लोगों की प्रतिरोधक क्षमता

ई-व्यवयास की सीमाएँ

(क) **अल्प मानवीय स्पर्श** :– इसमें अंतरव्यक्ति पारस्परिक संपर्क की गर्माहट का अभाव होता है।

(ख) **आदेश प्राप्ति और आदेश पूरा करने की गति के मध्य असमरूपता** :– सूचना माउस क्लिक करने मात्र से की प्रवाहित हो सकती है, परंतु वस्तुओं की भौतिक सुपुर्दगी में समय ले ही लेती हैं।

(ग) **ई–व्यवसाय के पक्षों में तकनीकी क्षमता और सामर्थ्य की आवश्यकता** :– ई–व्यवसाय में सभी पक्षों की कम्प्यूटर के संसार से उच्च कोटि के परिचय की आवश्यकता होती है

(घ) **पक्षों की आनामता और उन्हें ढूँढ़ पाने की अक्षमता के कारण जोखिम में वृद्धि** :– पक्षों की पहचान करना मुश्किल है अतः लेन–देन जोखिम पूर्ण हो सकते हैं।

(ङ) **जन–प्रतिरोध** :– नई तकनीक के साथ समायोजन की प्रक्रिया एवं कार्य करने के नए तरीके तनाव व असुरक्षा की भावना पैदा करते हैं।

(च) **नैतिक पतन** :– कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों की कम्प्यूटर फाईलों, ई–मेल खातों आदि पर अनैतिक तरह से नजर रखते हैं।

सीमाओं के बावजूद भी ई–कॉमर्स एक साधन हैं।

प्र.1 ई–व्यवसाय की एक सीमा बताएँ

प्र.2 ई–व्यवसाय में उपयोग होने वाले आवश्यक स्रोत बताइए।

पारंपरिक व्यवसाय व ई–व्यवसाय में अंतर

आधार	पारंपरिक व्यवसाय	ई–व्यवसाय
1. निर्माण	मुश्किल	सरल
2. भौतिक उपस्थिति	आवश्यक है	आवश्यक नहीं
3. प्रचालन लागत	उच्च लागत	निम्न लागत
4. ग्राहकों से संपर्क	परोक्ष	प्रत्यक्ष
5. आतंरिक संचार की प्रकृति	लंबी	तत्काल
6. संगठनात्मक ढ़ांचे का आकार	आदेश की श्रंखला के कारण लंबा	सीधे आदेश व संचार के कारण समतल
7. व्यावसायिक चक्र की लम्बाई	व्यवसाय प्रक्रिया चक्र लंबा होता है।	व्यवसाय प्रक्रिया चक्र छोटा होता है
8. अंतर वैयक्तिक स्पर्श के अवसर	बहुत अधिक	कम
9. उत्पादों के भौतिक पूर्व प्रतिचयन के अवसर	बहुत अधिक	कम
10. वैश्वीकरण में आसानी	कम	बहुत अधिक क्योंकि साइबर क्षेत्र सीमा है।
11. सरकारी सरंक्षण	कम हो रहा है	बहुत अधिक
12. मानव पूँजी की प्रकृति	अर्धकुशल यहाँ तक कि अकुशल मानवश्रम की आवश्यकता होती है।	तकनीकी एवं पेशेवर रूप से योग्य कर्मियों की आवश्यकता होती है।
13. लेन–देन जोखिम	आमने सामने संपर्क एवं लेन–देन होने के कारण कम जोखिम।	अधिक दूरी एवं पक्षों की अनामता के कारण उच्च जोखिम

प्र. व्यवसाय के प्रकार को पहचानिए :–

1) श्याम एक थोकविक्रेता है जो चाँदनी चौक में चूड़ियाँ, आदि बेचता है।

2) मोहन एक व्यवसायी है जो अपने उत्पाद – पर्स, नेकलेस आदि www.amazon.in बेचता है।

ई-लेनदेनों की सुरक्षा एवं बचाव

ई-व्यवसाय जोखिम

क) लेन-देन जोखिम

अ) विक्रेता इस बात को मना कर सकता है ग्राहक ने उसे कभी आदेश प्रेषित किया था व ग्राहक यह मना कर सकता है कि उसने कभी विक्रेता को आदेश प्रेषित किया था– **लेन-देन चूक**

ब) वस्तुओं की सुपुर्दगी गलत पते पर हो जाना या आदेश से अलग वस्तुओं की सुपुर्दगी होना – **सुपुर्दगी की चूक**

स) विक्रेता पूर्ति की गई वस्तुओं के लिए भुगतान प्राप्त नहीं कर पाया हो जबकि ग्राहक का दावा हो कि उसने भुगतान कर दिया है–**भुगतान**

संबंधी चूक

इन जोखिमों से बचने हेतु :-

– पंजीकरण के समय पहचान और पते की जाँच द्वारा और आदेश स्वीकृति एवं भुगतान वसूली के लिए एक प्राधिकार प्राप्त कर बचा जा सकता है।

– सुप्रतिष्ठित खरीदारी स्थानों से ही खरीदारी करें।

(ख) **डाटा संग्रहण एवं प्रसारण जोखिम** – सूचना अगर गलत हाथों में चली जाए तो बहुत जोखिम हो सकता है। 'वायरस' व 'हैकिंग' से भी बहुत नुकसान हो सकता है। इससे बचाव के लिए एंटीवायरस व क्रिप्टोग्राफी का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) **बौद्धिक संपदा एवं निजिता पर खतरे के जोखिम** – ऑनलाइन लेन देनों के दौरान डाटा अन्य लोगों को भी पहुँचाए जा सकते हैं जोकि इसका गलत इस्तेमाल कर नुकसान पहुँचा सकते हैं।

> प्र. ई–लेनदेनों से संबंधित कौन–से जोखिमों का उल्लेख किया गया है पहचानिए :–
>
> i) रंजीता ने बैडमिटन रैकेट www.xyz.com से आर्डर किया परन्तु उसे शट्टल पहुँचाई गई।
>
> ii) www.specialresearch.com को हैक किया गया व सारा रिकॉर्ड खराब हो गया।

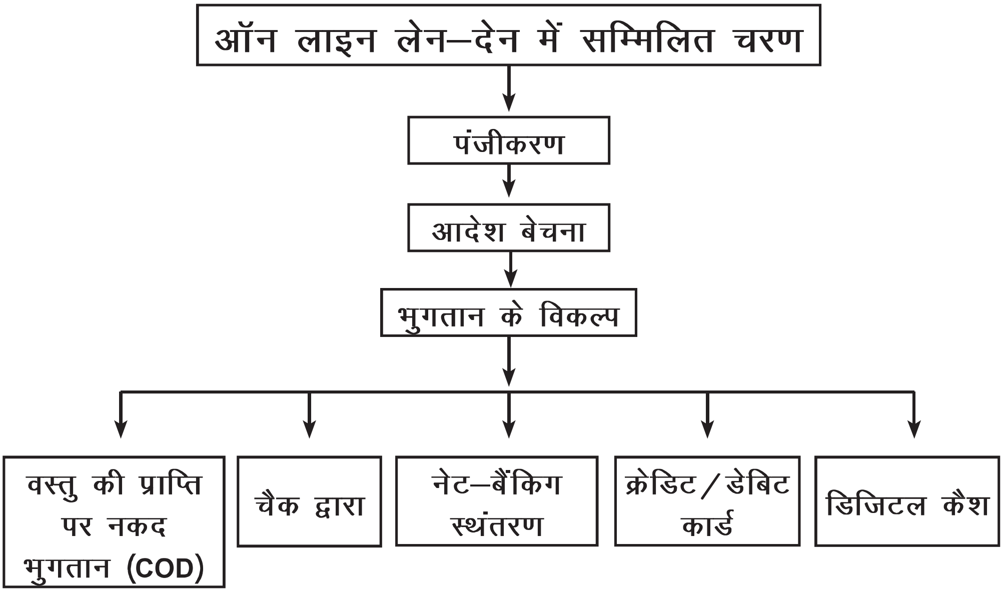
ऑन लाइन लेन–देन में सम्मिलित चरण
पंजीकरण
आदेश बेचना
भुगतान के विकल्प
वस्तु की प्राप्ति पर नकद भुगतान (COD)
चैक द्वारा
नेट–बैंकिग स्थंतरण
क्रेडिट/डेबिट कार्ड
डिजिटल कैश

भुगतान विधि (Payment Mechanism) इंटरनेट से खरीदी गई वस्तुओं का

भुगतान निम्न तरीकी से हो सकता है।

1. **सुपुर्दगी के समय भुगतान (Cash on Delivery)** – वस्तुओं की सुपुर्दगी के समय Cash अथवा Cheque से भुगतान किया जा सकता है।
2. **Net Banking Transfer** – इसमें ग्राहक Electronic Fund Transfer की पद्धति द्वारा इंटरनेट के जरिए फर्म के खाते में पैसे जा करवा सकता है।

उदाहरण

इंटरनेट सॉफ्टवेयर बनाने वाली एक मशहूर कम्पनी नेटस्केप केलिफोर्निया के सनीवेल स्थित अपने कार्यालय के मुख्य कम्प्यूटर पर लगभग हर मिनट दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से साफ्टवेयर के ऑर्डर प्राप्त करती रहती है। क्रेता ऑर्डर के साथ ही अपना क्रेडिट कार्ड का नंबर भी लिखते हैं। कंपनी अपने कार्यलय से ही इलैक्ट्रानिक ढंग से सॉफ्टवेयर की सुपुर्दगी दे देती है और तुरंत ही भुगतान भी प्राप्त कर लेती हैं।

3. **डेबिट और क्रेडिट कार्ड द्वारा** – ग्राहक बैंक द्वारा जारी किये गऐ डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड से भुगतान भी कर सकते हैं सिर्फ उन कार्डों का नम्बर और बैंक का नाम ऑन लाइन देना होता है।

   व्यावसायिक सौदों की सुरक्षा – निम्न तरीकों से हम ई–कॉमर्स में होने वाले व्यावसायिक सौदों की सुरक्षा कर सकते हैं।

   (1) **वस्तु की सुपुर्दगी से पहले विवरण** – ग्राहकों द्वारा वस्तु की सुपुर्दगी से पहले क्रेडिट कार्ड नम्बर, कार्ड जारीकर्ता की जानकारी वैधता, की तिथि आदि का विवरण ऑन लाइन देना आवश्यक है।

   (2) **एंटी वायरस प्रोग्राम** – डाटा फाइल, फोल्डर तथा कम्प्यूटर को वायरस से बचाने के लिए एंटी वायरस प्रोग्राम डालना तथा समय पर अपडेट करना।

   (3) **साइबर क्राइम सेल** – सरकार द्वारा हैंकिंग के केस देखने तथा हैकरों के खिलाफ कार्यवाही के लिए विशेष क्राइम सेल स्थापित करना।

Concepts

- **ई–कामर्स का अर्थ (Meaning of E-Commerce)**: ई–कॉमर्स से अभिप्राय एक ऐसी इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से है जिसके अंतर्गत सभी वाणिज्य क्रियाओं को इंतटरनेट के माध्यम से पूरा किया जाता है।
- **ई–बिजनिस का अर्थ (Meaning of E-Business)**: उद्योग एवं वाणिज्यिक क्रियाओं को कम्प्यूटर नेटवर्क के माध्यम से पूरा करने को E-Business कहते हैं।
- **ई–बिजनिस का क्षेत्र (Scope)**: (i) B2B Commerce (ii) B2C Commerce (iii) Intra-B Commerce (iv) C2C Commerce

वितरण प्रक्रिया, (iv) शंकाओं का तुरंत समाधान, (v) नये उत्पाद को लाने में आसानी, (vi) कर्मचारी लागत में कमी, (vii) समय की बचत, (viii) भुगतान की जोखिम में कमी, (ix) दूर–दराज के क्षेत्रों में वस्तुओं एवं सेवाएं उपलब्ध।

प्रश्नोत्तर –

1 अंक वाले प्रश्न

1. ई–व्यवसाय में 'ई' का क्या अर्थ है?
2. ई–कॉमर्स क्या है?
3. ज्योति अपना मोबाइल फोन बेचना चाहती थी लेकिन उसे कोई खरीददार नहीं मिला। अपनी सहेली के सुझाव पर उसने अपने मोबाइल फोन को www.olx.com पर डाल दिया और दो दिन के अन्दर ही उसे खरीददार मिल गया। ई–व्यवसाय का नाम बताओ।
4. ई–बिजनिस में भुगतान मुख्यतः .... से होता है।
   (a) ई–कॉमर्स (b) उत्पादन
   (c) उत्पादन विकास (d) उपरोक्त सभी
5. B2B Commerce का अर्थ है:
   (a) एक फर्म का अन्य व्यवसायों से संबंध
   (b) एक फर्म का अपने ग्राहकों से संबंध
   (c) एक फर्म की आंतरिक प्रक्रियाएं
   (d) अपरोक्त में से कोई नहीं
6. ई–बिजनिस में भुगतान मुख्यतः .... से होता है।
   (a) सुपुर्दगी पर नकदी (b) चैक
   (c) क्रेडिट व डेबिट कार्ड (d) ई–कैश
7. ई–कॉमर्स के अंतर्गत .... को सम्मिति नहीं किया जाता।
   (a) एक व्यवसाय का पूर्तिकर्ताओं से संबंध
   (b) एक व्यवसाय का अपने ग्राहकों से संबंध
   (c) एक व्यवसाय के विभिन्न विभागों के मध्य संबंध
   (d) एक व्यवसाय की दूरस्थ स्थानों पर फैली इकाइयों के मध्य संबंध।
8. उस व्यवसायिक क्रिया को क्या कहते हैं जिसमें दोनों पक्षकार ग्राहक होते हैं?
9. ई–व्यवसाय व ई–कॉमर्स में से, अंतराष्ट्रीय स्तर पर किसकी पहुँच आसान है?
10. आन–लाईन व्यवहारों में भुगतान कैसे किया जाता है?

11. उन दो मदों के नाम बताएं जिनकी संपुर्दी इंटरनेट पर हो सकती है।
12. ई–कॉमर्स के लाभ लिखिए।
13. ऑनलाइन व्यवहार से आपका क्या अभिप्राय है?

3/4 अंक वाले प्रश्न

14. 'ई–कॉमर्स और ई–व्यवसाय में अन्तर स्पष्ट करो।
15. निम्न से आप क्या समझते हैं?
    i) B2B कॉमर्स ii) B2C
    iii) अन्तं B कॉमर्स iv) C2C कॉमर्स
16. इलेक्ट्रॉनिक बिजनिस से आप क्या समझते हैं?
17. थोक व्यापारियों एवं फुटकर व्यापारियों को ई–कॉमर्स से उपलब्ध सुअवसरों का वर्णन कीजिए?
18. ई–कॉमर्स के किन्ही चार लाभों को बताएं?
19. www.xyz.com एक ई–व्यवसाय फर्म कपड़े बेचती है, निशा ने ऑनलाइन कुछ कपड़ो की खरीदारी की व भुगतान कर दिया। जब उसने सामान प्राप्त किया तो पाया वह खराब है। उसके कहने पर उन्होंने कपड़े वापिस ले लिए व पैसे लौटा दिए। इस Portal ने किस सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति की है?
20. एक जूता बनाने वाली फर्म ने अपने कार्य का बाह्यस्त्रोतिकरण एक विकासशील देश को इसलिए कर दिया क्योंकि उस देश में बाल मजदूरी व महिलाओं के लिए कार्य के सख्त नियम नहीं थे। इससे जूता कम्पनी का कार्य सस्ते में हो रहा था। जिससे मुनाफा अधिक हो रहा था। आपकी सलाह में क्या कम्पनी ठीक कर रही है, क्या यह अनैतिक नहीं है?

5/6 अंक वाले प्रश्न

21. ई–बिजनिस का अर्थ सभी औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्रियाओं (Industrial & Commercial Activity) को इंटरनेट के माध्यम से पूरा करना है इन क्रियाओं के तीन–तीन उदाहरण दीजिए?
22. www.olx.com.in और www.quicker.com.in व्यवसाय में प्रयोग की जाने वाली वेबसाइट के उदाहरण है। दिप्ती का सोफा सैट बारिश में खराब हो गया। उसकी सहेली ने सुझाव दिया कि उसे इसका कपड़ा बदलवा देना चाहिए ताकि यह नया दिखाई दे और इसको बिक्री के लिए www.olx.in पर डाल दी। दिप्ती ने अपनी सहेली की सलाह मान ली और अपने सोफा सैट

की मरम्मत करा ली ताकि अच्छा दिखाई दे और बिना सच्चाई बताये कि यह अंदर से खराब है अच्छी–अच्छी तस्वीरें (Pictures) www.olx.com.in पर डाल दी। उसे ग्राहक मिल गया और सोफा सेट का 9000 रू. में बेच दिया। एक सप्ताह बाद ग्राहक को असलियत का पता चल गया। उसन दिप्ती को फोन किया लेकिन दिप्ती ने उसके फोन का कोई जवाब नहीं दिया।

i) व्यवसाय के प्रकार का नाम लिखो।

ii) ई–व्यवसाय के दो लाभ और हानि का वर्णन करो।

23. ई–व्यवसाय से आप क्या समझते हैं ई–व्यवसाय के कोई चार लाभों का वर्णन करो।

24. व्यवसाय करने की इलेक्ट्रॉनिक पद्धति की कोई चार सीमाओं का वर्णन कीजिए। क्या ये सीमाएं इसके कार्यक्षेत्रों को प्रतिबंधित करने के लिए काफी हैं? अपने उत्तर के लिए तर्क दीजिए।

25. ई–व्यवसाय व पारंपरिक व्यवसाय में अंतर स्पष्ट कीजिए।

26. निम्न स्थितियों में किस प्रकार के ई–बिजनेस लेन–देन को दर्शाया गया है?

i) e-bay.com के माध्यम से पुराने कपड़े बेचना।

ii) एक संगठन का स्टॉक तथा नकद प्रबंध

iii)Autocops से Maruti द्वारा सिक्योरिटी लौक सिस्टम खरीदना।

iv)ATM से नकदी निकाला।

v) ई–मेल के माध्यम से कर्मचारियों द्वारा दैनिक रिपोर्ट भेजना।

vi) कम्पनी के कॉल सेन्टर में ग्राहक द्वारा शिकायत करना।

अध्याय–6

व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता

व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व?
(Social Responsibility of Business?)

इसका अभिप्राय व्यवसाय के समाज के विभिन्न अंगों के प्रति कर्त्तव्य से है।
(it refers to obligation of business towards various parties of society.)

'अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा किए बिना कोई व्यावसायिक इकाई जीवित नहीं रह सकती।'
(No business unit an live without completing its Social Responsibility.)

सामाजिक दायित्व की अवधारणा – व्यवसाय समाज का एक अंग है। व्यवसाय को उन सभी बातों का पालन करना चाहिए जो समाज के लिए जरूरी है। व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ उन नीतियों का अनुसरण करना उन निर्णयों को लेना अथवा उन कार्यो को करना है जो समाज के लक्ष्यों एवं मूल्यों की दृष्टि से वांछनीय हैं। व्यावसायिक इकाईयों को सामाजिक आकांक्षओं को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक क्रियाएँ करनी चाहिए।

समाज के विभिन्न अंग?
(Various Part of Society?)

- स्वामी
- कर्मचारी
- उपभोक्ता
- प्रतियोगी
- सरकार

सामाजिक दायित्व के पक्ष में तर्क – व्यवसाय को आधुनिक धारणा व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व की मान्यता को समर्थन देती है। इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए गए हैं।

1. **अस्तित्व एवं वृद्धि के लिए** – व्यवसाय का अस्तित्व वस्तुओं एवं सेवाओं द्वारा मानव जाति की सन्तुष्टि के लिए उपलब्ध कराने पर निर्भर करता है। व्यवसाय की उन्नति एवं विकास तभी संभव है। जब समाज को वस्तुएं एवं सेवाएं लगातार उपलब्ध होती रहें।
2. **फर्म का दीर्घकालीन हित** – एक फर्म लम्बे समय तक अधिकतम लाभ तभी कमा सकती है जब उसका एक लक्ष्य समाज सेवा करना भी हो।

3. **सरकारी नियमों से बचाव** - यदि व्यवसाय का सामाजिक दायित्वों की पूर्ति की तरफ कोई ध्यान नहीं जाता है तो सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ता है। इससे व्यवसाय की स्वतंत्रता समाप्त होती है। इसीलिए व्यवसाय को स्वेच्छा से समाज के प्रति अपना जिम्मेदारी पूरी करनी चाहिए।
4. **सार्वजनिक छवि** - यदि व्यवसाय अपने सामाजिक दायित्व को पूरा करता है तो उसकी सार्वजनिक छवि सुधरेगी जिससे उसकी सफलता को बढ़ावा मिलेगा।
5. **पर्यावरण को साफ-सुथरा रखना** : उद्योगों से पर्यावरण दूषित होता है। इस प्रदूषण से जनता के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है उद्योगों को इस प्रदूषण से जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए।
6. **व्यापारिक गतिविधियों के लिए बेहतर वातावरण** - जो व्यवसाय लोगों के जीवन की गुणवत्ता के प्रति जागरूक होता है। उसे अपना व्यवसाय चलाने के लिए परिमाण स्वरूप अच्छा समाज मिलता है।

सामाजिक उत्तरदायित्व के विपक्ष मे तर्क

1. **लाभ बढ़ाने के उद्देश्य का उल्लंघन** - व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य अधिकतम कमाना होता है इसे अपने साधन एवं शक्तियां सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में व्यर्थ नहीं करना चाहिए।
2. **उपभोक्ताओं पर अनुचित भार** - व्यवसाय द्वारा सामाजिक दायित्व को पूरा करने में बहुत –सा खर्च आता है। यह खर्च अंत में व्यवसाय के ग्राहकों को भरना पड़ता है।
3. **सामाजिक कौशल की कमी** - व्यावसायिक फर्मों के प्रबन्धकों में सामाजिक समस्या से निपटने के लिए आवश्यक कौशल की कमी होती है। इसलिए सामाजिक समस्या का समाधान अन्य विशिष्ट एजेन्सियों द्वारा किया जाना चाहिए।
4. **जन समर्थन का अभाव** - जन समुदाय द्वारा व्यवसाय का सामाजिक कार्यक्रमों का हस्तक्षेप पसंद नहीं किया जाता है। इसलिए कोई भी व्यावसायिक उपक्रम जनता विश्वास के अभाव एवं सहयोग के बिना सामाजिक समस्याओं को सुलझा नहीं सकता एवं सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकता। विभिन्न हित समूहों के प्रति व्यवसाय का सामाजिक दायित्व – व्यवसाय का समाज विभिन्न समूहों जैसे, स्वामियों, कर्मचारियों, ग्राहकों, सरकार और समुदाय के साथ रहता है। विभिन्न समूहों के प्रति व्यवसाय की जिम्मेदारियां निम्नलिखित हैं।

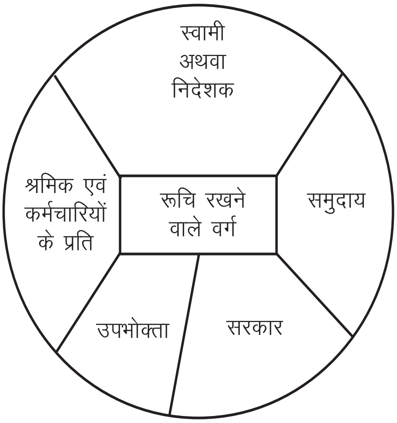

विभिन्न वर्गों के व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व

1. मालिकों अथवा निवेशकों के प्रति उत्तरदायित्व

अ. स्वामियों अथवा अंशधारियों के निवेश पर उचित एवं नियमित प्रतिफल सुनिश्चित करना।

ब. निवेश किए गए कोषों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।

स. कम्पनी की प्रति एवं

वित्तीय स्थिति की पूर्ण जानकारी निवेशकों को देते रहना।

द. व्यावसायिक सम्पत्तियों की सुरक्षा करना।

य. व्यवसाय में सभी प्रकार के निवेशकों के हितों की रक्षा करना।

2. कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व

अ. उचित पारिश्रमिक देना

ब. काम करने लिए स्वच्छ वातावरण तैयार करना।

स. व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का आदर करना।

द. नौकरी की सुरक्षा प्रदान करना।

3. उपभोक्ताओं के प्रति उत्तदायित्व

अ. अच्छी क्वालिटी की वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना।

ब. ग्राहकों की रूचि के अनुसार वस्तुएं उपलब्ध कराना।

स. वस्तुओं की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना।

द. उपभोक्ताओं की शिकायतों का शीघ्र तथा सावधानीपूर्वक निपटारा करना।

य. विक्रय के बाद सेवा प्रदान करना तथा मुनाफाखोरी व मिलावट आदि बुराईयों से दूर रहना।

4. सरकार के प्रति उत्तरदायित्व

अ. सरकार को समय–समय पर करों का भुगतान ईमानदारी से करना।

ब. सरकार द्वारा बनाए गए नियमों तथा कानूनों का निष्ठा से पालन करना।

स. अनैतिक उपायों द्वारा सरकारी तंत्र का लाभ न उठाना।

5. समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व

अ. रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।

ब. वातावरण को दूषित होने से बचाना।

स. समाज को उन्नति की तरफ ले जाने वाले कार्यक्रमों में सहयोग देना।

व्यवसाय एवं वातावरण सरंक्षण

वातावरण और पर्यावरण के बीच महत्वपूर्ण अंतर भी है। पर्यावरण प्राकृतिक आवरण है (जीव व अजीव दोनों) जो हमारे चारो ओर प्रकृति दे दिया है, वहीं वातावरण प्राकृतिक व कृत्रिम दोनों हो सकता है। पर्यावरण हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। पृथ्वी के चारों ओर घेरे विभिन्न गैसों के घेरे।

वातावरण का अर्थ – मनुष्य के आस–पास के प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वातावरण को ही पर्यावरण या वातावरण कहते हैं। ये वातावरण प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है और जो मानव जीवन के लिए उपयोगी हैं।

वातावरण प्रदूषण का अर्थ – वातावरण प्रदूषण वह होता है जिससे भौतिक, रासायनिक व जैविक लक्षणों द्वारा हवा, भूमि तथा जल में बदलाव आता है। वातावरण के प्रदूषण के साथ व्यवसाय को जोड़ा जा सकता है, क्योंकि वातावरण को दूषित करने में व्यवसाय की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए व्यावसायिक फर्मों, के लिए यह अवश्यक है कि अपने चारों ओर के वातावरण की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाएं।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण

बहुत से औद्योगिक संगठन (1) वायु (2) जल, (3) भूमि तथा (4) ध्वनि प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है। इनकी व्याख्या नीचे की गई है :–

1. **वायु प्रदूषण** – मोटर वाहनों द्वारा छोड़ी गई कार्बन मोनोऑक्साइड तथा कारखानों से निकला हुआ धुआं वायु प्रदूषण फैलता है इससे हमारी पृथ्वी के ऊपर ओजोन परत में भी छिद्र हो गया है जिससे पृथ्वी गर्म हो जाती है तो कि खतरनाक हैं
2. **जल प्रदूषण** – औद्योगिक कचरे को नदियों एवं झीलों में बहा दिया जाता है

प्रदूषण के कारण प्रतिवर्ष हजारों पशुओं की मृत्यु हो जाती है और यह मानव के लिए गंभीर चेतावनी है।

3. **भूमि प्रदूषण** – इस प्रदूषण का कारण कचरे को भूमि के अन्दर दबा देने से हैं। इसके कारण भूमि की गुणवत्ता तो नष्ट होती ही है, भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।
4. **ध्वनि प्रदूषण** – कुछ कारखाने बहुत अधिक शोर पैदा करते हैं। अधिक शोरगुल रहने से लोग अनेक बीमारियों का शिकार हो जाते हैं, जैसे, मानसिक रोग, दिल के रोग, बहरे हो जाना आदि।

प्रदूषण नियंत्रण की आवश्यकता

1. **स्वास्थ्य संबंधी आशंकाओं को कम करना** – कैंसर, हृदय एवं फेफड़ों सम्बन्धित बीमारियां हमारे समाज में मृत्यु का प्रमुख कारण है तथा ये बीमारियां वातावरण में दूषित तत्वों के कारण हैं। प्रदूषण नियंत्रण द्वारा इन भंयकर बीमारियों को कम किया जा सकता है।
2. **सुरक्षा संकटों को कम करना** – सर्दियों में वायु प्रदूषण के कारण कोहरा उत्पन्न होता है। स्पष्ट दिखाई न देने के कारण अनेक वायु रेल एवं सड़क दुर्घटनाएं होती है। दुर्घटनाओं की संभावना को कम करने के लिए वायु प्रदूषण को नियंत्रित करना आवश्यक है।
3. **आर्थिक हानियों को नियंत्रित करना** – प्रदूषण के कारण देश को बहुत–सी आर्थिक हानियां पहुचती है जैसे कि ताजमहल प्रदूषण के कारण अपनी सुंदरता को खो रहा है। पर्यावरण के प्रदूषण को नियंत्रित करने का मामला अत्यन्त गंभीर है।

पर्यावरण के सरंक्षण में व्यवसाय की भूमिका

औद्योगिक संगठनों द्वारा ऐसी तकनीक प्रयोग की जानी चाहिए जिसमें औद्योगिक कचरा कम हो तथा पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाए।

जहाँ तक हो सके औद्योगिक कचरे का पुनः प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रदूषण का कम करने के लिए संयंत्र एवं मशीनरी का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए।

व्यावसायिक गृहों को प्रदूषण की रोकथाम के लिए बनाए गए नियमों एवं कानूनों का पालन करना चाहिए।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सकारात्मक कदम उठाए जाने चाहिए। इनमे वृक्षारोपण, नदियों की सफाई एवं वन्य जीवन की सुरक्षा समिमलित है।

1 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारण बताइए?
2. निम्न में से कौन–से व्यवसाय का निवेशकों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं है?
   (a) पूंजी की सुरक्षा प्रदान करना (b) उचित लाभांश सुनिश्चित करना
   (c) पूंजी का सदुपयोग सुनिश्चित करना (d) उचित पारिश्रमिक देना
3. ध्वनि प्रदूषण के दो प्रभाव लिखिए?
4. पर्यावरण प्रदूषण का क्या अर्थ है?
5. कम्पनी की वित्तीय स्थिति की पूर्ण जानकारी देना किस समूह के प्रति व्यवसाय उत्तरदायित्व हैं?
6. एक व्यवसाय की जिम्मेदारी उसकी आर्थिक जिम्मेदारी से कहीं अधिक ज्यादा है। इस उत्तरदायित्व का नाम बताइये। (सामाजिक उत्तरदायित्व)
7. एक व्यावसायिक संगठन द्वारा इन नीति को अपनाया गया है कि वो मुनाफाखोरी और जमाखोरी बिल्कुल नहीं करेंगे। इस नीति को अपनाने से कौन–से हित समूह को ध्यान में रखा गया है? (उपभोक्ता)
8. एक औद्योगिक इकाई द्वारा अपने रासायनिक संयंत्र से विषाक्त गैस का निर्वहन किया जा रहा हैं। उपरोक्त इकाई द्वारा किस प्रकार का प्रदूषण फैलाया जा रहा है? (वायु प्रदूषण)
9. निम्न में से कौन–से व्यवसाय का उपभोक्ताओं के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं है?
   (a) अच्छी क्वालिटी की वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना
   (b) विज्ञापन में वास्तविकता को प्रकट करना
   (c) लाभ में हिस्सा प्रदान करना
   (d) वस्तुओं में मिलावट न करना
10. व्यापार को समाज के विविध हितों पर ध्यान देना चाहिए। इस कथन के समर्थन में एक कारण दीजिए। (क्योंकि व्यवसाय समाज का ही एक हिस्सा है)

3/4 अंक वाले प्रश्न

11. पर्यावरण सुरक्षा में व्यवसाय की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
12. कर्मचारियों के प्रति व्यवसाय के तीन उत्तरदायित्व लिखिए।
13. व्यावसाय उपभोक्ताओं के प्रति उत्तरदायी किस प्रकार है?
14. एक व्यवसाय को सामाजिक जिम्मेदार क्यों उठानी चाहिए?
15. पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण लिखिए ?

16. LMN लि. अपना आयकर समय पर अदा कर रहे हैं, वह अपने अंशधारियों को अपनी परियोजनाओं के बारें में जानकारी देते हैं व उन्हें उचित लाभांश देते हैं वह किस हितसमूह के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हैं?

17. ABC लि. स्वास्थ्य पेय निर्माता कम्पनी है। उसके स्वास्थ्य पेय में कीटनाशकों के तत्व पाए गए। वे किस हितसमूह के प्रति सजग नहीं हैं उन्होंने कौन–सा उत्तरदायित्व पूरा नहीं किया?

18. ABC लि. एक डियोडरेंट कम्पनी ने अपने विज्ञापन में महिलाओं को अश्लील ढंग से प्रस्तुत किया जिसको देखकर विभिन्न धार्मिक समूह भी नाराज हैं यहाँ किस प्रकार की सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा की गई है?

19. XYZ लि. कम्पनी अपनी महिला कर्मचारियों को बहुत–सी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है, जैसे, उनके बच्चों के लिए डे केयर सेंटर, घर से कार्य करने की सुविधा, कैब सुविधा। वह अपना सामाजिक उत्तरदायित्व किस हितसमूह के लिए पूर्ण कर रही हैं?

20. ABC लि. एक छोटी कम्पनी है जो कागज की पर्यावरण अनुकूल प्लेंटे बनाती है। ये प्लेटें पेड़ों की छालों एवं सूखी पत्तियों से बनाई जाती हैं जोकि उत्तर पूर्व के भारतीय राज्यों में उपलब्ध हैं।
    i) किस हित समूह के प्रति व्यवसाय अपनी सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा कर रहा है?

21. XYZ लि. एक सिगरेट बनाने वाली कम्पनी है। यह वैधानिक चेतावनी सिगरेट के पैकेट पर नहीं डालती जिसके अनुसार सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारण है।
    i) यह किस हित समूह के प्रति अपनी सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर रही।

22. XYZ लि. कम्पनी, एक कार निर्माता कम्पनी ने यह पाया कि उसके एक विशेष बैच की 100 कारों के इंजन में कुछ समस्या है। कम्पनी ने ये सारी कारें वापस मंगवाई एवं इस विशेष समस्या का समाधान किया।
    i) यहाँ कम्पनी किस हित समूह के प्रति उत्तरदायी है?

23. मारुति उद्योग लि. एक कार निर्माणी उपक्रम है जिसके द्वारा यह पाया गया कि उसके द्वारा निर्माण की गई बलेनोज डिजायर 77000 कारों में कुछ खराबी पाई गई। व्यावसायिक नैतिकता को पूरा करते हुए कम्पनी द्वारा उन गाड़ियों को वापस मंगवा लिया गया तथा खराबी को भी दूर कर दिया गया। कंपनी ने किस सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा किया?

24. यह एक विषम समस्या है जो व्यावसायिक प्रबंधकों तथा निर्णायकों को साहस

के साथ सामना करने के लिए प्रेरित करती हैं तथा मानव–निर्मित दोनों ही वातावरण को सम्मिलित किया जाता है। आज पर्यावरण लगातार प्रदूषित होता जा रहा है जो मानव जीवन के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं।

i) उपरोक्त में वर्णित विषम समस्या को पहचानिए।

ii) पहचानी गई विषम समस्या की आवश्यकता के किन्हीं दो कारणें का उल्लेख कीजिए।

25. आपका मित्र राजेश शहर में एक फैक्ट्री चलाता है। उसकी फैक्ट्री वायु, जल व शोर प्रदूषण फैला रही है। आप उसे वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने की क्या सलाह देंगे? कोई 4 बिन्दु लिखिए।

26. व्यवसाय को अपने स्वामी के हितों की रक्षा करने के साथ–साथ अन्य अनेक पक्षों के हितों की भी रक्षा करनी पड़ती है। अन्य पक्षों में कर्मचारी, उपभोक्ता, पूर्तिकर्ता, प्रतियोगी, सरकार, समुदाय एवं विश्व को सम्मिलित किया जाता है। आज केवल वही व्यवसाय अच्छा माना जाता है जो अपने स्वार्थ के हितों के साथ–साथ इन सभी पक्षों के हितों का भी ध्यान रखता हो। इस कथन में व्यवसाय की किस अवधारणा की जानकारी दी गई है? उस अवधारणा को पहचानिए व उसका अर्थ बताइए।

27. गुप्ता एंड गुप्ता प्रा. लि. के मालिक अपनी फैक्ट्री के चारों ओर पेड़ लगवाने में विशेष रूचि ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे फैक्ट्री से निकलने वाले गन्दे पानी को Effluent Treatment Plant से गुजरने के बाद ही नाले में डालते हैं। बताइए यह कम्पनी किस सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा कर रही है?

28. राजधानी फ्लोर मिल की विशेषता है कि वह अपनी कर्मचारियों को उचित परिश्रमिक देता है। मिल के कर्मचारी खुश हैं और वे अपने मित्रों को भी यहां नौकरी करने के लिए प्रेरित करते हैं। क्या फ्लोर मिल कर्मचारियों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर रही है? कैसे?

5/6 अंक वाले प्रश्न

29. उन शक्तियों का वर्णन कीजिए जो व्यावसायिक उद्यमों की सामाजिक जिम्मेदारियों को बढ़ाने के लिए उत्तरदायी है।

30. यह समाज के हित में हैं कि वह विभिन्न हितसमूहों के प्रति अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करें। वर्णन कीजिए ?

31. ''व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं होना चाहिए, वरना व्यावसायिक मूल्यों का सामाजिक मूल्यों पर प्रभुत्व (Domination) स्थापित हो जाएगा जो कि एक सुखर स्थिति नहीं है।''

व्यवसाह के सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध में इस कथन को कष्ट कीजिए।

32. कक्षा XI के छात्रों की 'व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व' पर सामूहिक चर्चा चल रही थी। रवि का मानना है कि एक व्यवसाय को समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए क्योंकि वह समाज का हिस्सा है। जबकि शमा यह नहीं मानती। उसके अनुसार व्यवसाय का मुख्य कार्य लाभ कमाना ही है। आपके अनुसार कौन सही हैं? तर्क दें।

33. ABC बैंक अपने ग्राहकों को ई–बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करा रहा हैं। बैंक के कुछ कर्मचारी ग्राहकों का निजी वित्तीय विवरण कुछ अनैतिक प्रवृति वाले लोगों के साथ बाँट रहे हैं जिससे उनका खाता हैक किया जा सकता है।

    A) उपरोक्त दी गई जानकारी से आप ई–व्यवसाय से संबंधित किस जोखिम को पहचान सकते हैं?

    b) बैंक किस हितसमूह के प्रति जिम्मेदारी नहीं निभा रहा है?

34. एक पेंटस बनाने वाली संगठन बहुत वर्षों से बाजार में मुख्य स्थान का आनन्द ले रही थी। यह संगठन नदी के किनारे अपनी अनौपचारित जहरीला अपशिष्ट काफी समय से फैंक रही थी जिससे आस–पास के गाँवों में स्वास्थ्य संबंधी काफी समस्याएँ उत्पन्न हो रही थी।

    A) उपरोक्त संस्था किस तरह के प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है?

    b) इस संस्था द्वारा किस उत्तरदायित्व का पालन नहीं किया जा रहा ?

35. एक मोटर बनाने वाली कम्पनी निम्नलिखित बातों (नीतियों) का पालन करती है :–

    1) कम्पनी द्वारा केवल उन घटकों का उपयोग किया जायेगा जो पर्यावरण के अनुकूल है।

    2) हानिकारक अपशिष्ट का निर्वहन उनके समुचित प्रक्रिया के बाद किया जायेगा।

    3) हर वाहन का प्रदूषण स्तर अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाए रखा जायेगा।

    A) व्यापार के किस पहलू को उपरोक्त में इंगित किया गया है? उसे पहचानिये एवं उसका संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

36. भारद्वाज मेडिसनस एक साझेदारी फर्म है। इस फर्म में सुनील व अनिल दो साझेदार हैं। फर्म के साझेदारी संलेख में लिखा गया है कि सुनील का दायित्व असीमित है। जबकि अनिल का सीमित। सुनील अपनी फैक्ट्री में प्रदूषण दूर करने वाला संयत्र लगाना चाहता है। लेकिन अनिल उसे ऐसा नहीं करने देता।

    इस फर्म के सभी व्यवहार (transaction) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (अर्थात् इंटरनेट)

पर की होते हैं। इस फर्म की यह विशेषता है कि यह अपना माल केवल दूसरी व्यावसायिक इकाइयों को ही बेचती हैं। फर्म अपना शोध एवं विकास का काम एक दूसरी फर्म में करवाती है तथा दूसरी फर्म को शोध एवं विकास में विशेषज्ञता हासिल है।

उपरोक्त वर्णित पैराग्राफ का अध्ययन करके निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (Hints – सीमित तथा असीमित साझेदारी)

i) साझेदारी का प्रकार बताइए।

ii) फर्म किस प्रकार का ई–बिजनिस कर रही है?

iii) उस प्रक्रिया का नाम बताइये जिसके अन्तर्गत दूसरी फर्म की विशेषज्ञता का लाभ उठाया जा रहा है?

37. किस सिद्धांत के अनुसार व्यावसायिक इकाइयों को सामाजिक आकांक्षाओं का ध्यान रखते हुए व्यावसायिक क्रियाएं करनी चाहिए तथा लाभ अर्जित करना चाहिए? सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा का वर्णन करते हुए उसकी आवश्यकता के पक्ष में चार तर्क दीजिए। (Hints – सामाजिक उत्तरदायित्व)

38. XYZ बैंक अपने ग्राहकों को ई–बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। बैंक के कुछ कर्मचारी ग्राहकों का निजी वित्तीय विवरण कुछ अनैतिक प्रवृत्ति वाले लोगों के साथ बांट रहे हैं जिससे उनका खाता हैक किया जा सकता है उपरोक्त विवरण के आधार पर निम्नलिखित के उत्तर दीजिए :–

i) उपरोक्त दी गई जानकारी के आधार पर आप ई–व्यवसाय से संबंधित किस जोखिम को पहचान सकते हैं?

ii) बैंक किस हितसमूह के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहा है?

39. सरस्वती लि0 का मुख्य प्रबन्ध मि. श्रीवास्तव सरकार के प्रति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करने में विशेष रूचि ले रहे है।

बताइए कम्पनी किन सामाजिक मूल्यों के प्रति अपनी जागरुकता का प्रदर्शन कर रही हैं। कोई तीन बिंदू लिखिए।

40. व्यवसाय द्वारा उसके सामाजिक उत्तरदायित्वों को दूसरा करने से कार्य प्रणाली में अकुशलता (Inefficiency in system) आती है।

क्या आप इस कथन से सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

अध्याय–7

व्यावसायिक वित्त के स्रोत

व्यावसायिक वित्त के स्रोत

A स्वामित्व के आधार पर

स्वामित्व फण्ड

1. समता अंश
2. पूर्वाधिकार अंश
3. प्रतिधारित आय

ऋण पूँजी

1. ऋणपत्र
2. बॉण्ड
3. बैंक तथा वितिय संस्थाओं
4. जन निक्षेप
5. व्यापारिक साख
6. अन्तः कार्पोरेट जमाएँ।

B अवधि के आधार पर

दीर्घकालीन

1. समता अंश
2. पूर्वाधिकार अंश
3. ऋण पत्र
4. प्रतिधारित आय
5. विशेष वित्तीय संस्थाएँ IDBI, UIT, LIC SIDC, ICICI

मध्यकालीन

1. ऋण पत्र
2. पूर्वाधिकार अंश
3. जन निक्षेप
4. व्यावसायिक बैंक

अल्पकालीन

1. व्यावसायिक बैंक
   - (क) अधिविकर्ष
   - (ख) नकद साख
   - (ग) अल्पकालीन ऋण
   - (घ) विनिमय पत्रों का भुनाना
2. व्यापारिक साख
3. अन्तः कार्पोरेट जमाएं

वित्त शब्द का अर्थ मुद्रा धन अथवा कोषों से लगाया जाता है। व्यवसाय द्वारा अपनी विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए कोषों की आवश्यकता को व्यावसायिक वित्त कहते हैं।

वित्त की आवश्यकता व्यावसायिक जीवन के प्रत्येक स्तर पर पड़ती है। समुचित वित्त के बिना, व्यवसाय का संचालन नहीं किया जा सकता।

व्यावसायिक वित्त की आवश्यकता

1. **स्थायी पूंजी सम्बन्धी आवश्यकताएं** – एक नया व्यवसाय आरम्भ करने के लिए स्थाई सम्पत्तियां खरीदने के लिए कोषों की आवश्यकता होती है, जैसे –भूमि, भवन, प्लांट और मशीनरी आदि। एक व्यापारिक इकाई को विनिर्माण इकाई की तुलना में कम स्थायी पूँजी की आवश्यकता होगी क्योंकि उसे संयंत्र एवं मशीनरी खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है।
2. **कार्यशील पूंजी संबंधी आवश्यकताएं** – एक व्यवसाय को अपने प्रतिदिन के कार्यों को चलाने के लिए कोष की आवश्यकता होती हैं इसे कार्यशील पूंजी कहा जाता है जैसे कच्चामाल खरीदने, मजदूरी व वेतन का भुगतान करना तथा बिजली बिल का भुगतान करने के लिए कोषों की आवश्यकता होती है। उधार माल का विक्रय करने वाली अथवा कम बिक्री करने अथवा अधिक आवर्त वाली इकाई की तुलना में अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।
3. **विविधीकरण हेतु** – एक कम्पनी को अपने उत्पाद के विविधीकरण के लिए कोषों की आवश्यकता होती है जैसे आईटीसी।
4. **तकनीकी सुधार हेतु** – आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए कोषों की आवश्यकता होती है, जैसे व्यवसाय में कम्प्यूटर का उपयोग।
5. **विकास एवं विस्तार हेतु** – तेज गति से आगे बढ़ने के लिए व्यवसाय को ज्यादा विनियोगों की आवश्यकता होती है। इसलिए व्यवसाय के विकास व विस्तार के लिए वित्त की आवश्यकता होती है।

प्र. किन्हीं दो कारकों की व्याख्या कीजिए जो किसी व्यवसाय की स्थायी पूँजी संबंधी आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं।

प्र. व्यवसाय को होने वाली 2 प्रकार की वित्तीय आवश्यकताएँ बताइए।

प्र. स्थायी संपत्तियों में लगाई जाने वाली पूँजी का नाम बताइए।

प्र. व्यवसाय के दिन–प्रतिदिन के कार्यकलापों के लिए आवश्यक पूँजी का नाम बताइए।

प्र. आरव लिमिटेड अपना सामान उधार पर बेचती है जबकि अनन्या लिमिटेड नकद पर। कौन–सी कम्पनी को ज्यादा कार्यशील पूँजी चाहिए होगी?

कोष के स्त्रोतों का वर्गीकरण

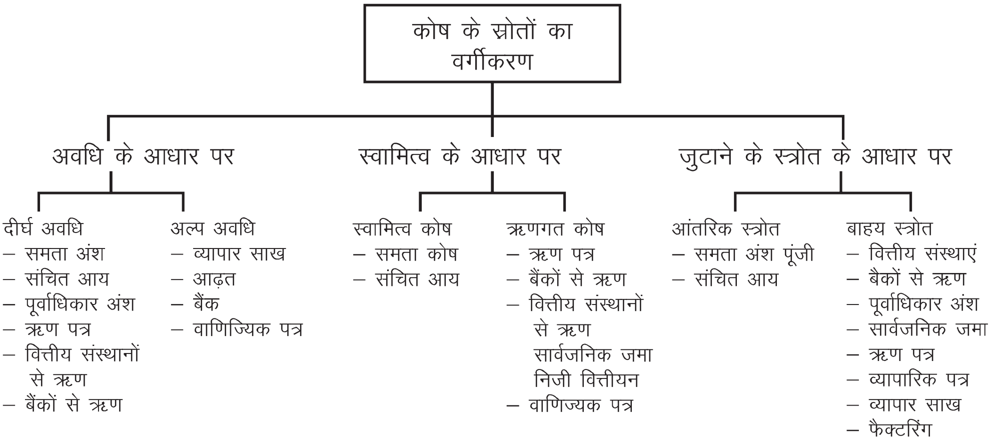
कोष के स्रोतों का वर्गीकरण
अवधि के आधार पर
स्वामित्व के आधार पर
जुटाने के स्त्रोत के आधार पर
दीर्घ अवधि
– समता अंश
– संचित आय
– पूर्वाधिकार अंश
– ऋण पत्र
– वित्तीय संस्थानों से ऋण
– बैंकों से ऋण
अल्प अवधि
– व्यापार साख
– आढ़त
– बैंक
– वाणिज्यिक पत्र
स्वामित्व कोष
– समता कोष
– संचित आय
ऋणगत कोष
– ऋण पत्र
– बैंकों से ऋण
– वित्तीय संस्थानों से ऋण
सार्वजनिक जमा
निजी वित्तीयन
– वाणिज्यक पत्र
आंतरिक स्त्रोत
– समता अंश पूंजी
– संचित आय
बाहय स्त्रोत
– वित्तीय संस्थाएं
– बैकों से ऋण
– पूर्वाधिकार अंश
– सार्वजनिक जमा
– ऋण पत्र
– व्यापारिक पत्र
– व्यापार साख
– फैक्टरिंग

वित्त प्राप्त करने की विधियां

अंशों का निर्गमन – अंशों के जारी करने से प्राप्त पूंजी को अंशपूंजी कहा जाता है। कम्पनी की पूंजी छोटे–छोटे भागों में बंटी है जिसे अंश (शेयर) कहते हैं। यदि कोई कम्पनी 10,000 शेयर 10 रुपये मूल्य पर जारी करती है तो उस कम्पनी की अंशपूंजी 100,000 रुपये होगी। जिस व्यक्ति के पास ये अंश होंगे उसे अंशधारी/अंशधारक कहा जाता है। अंश दो प्रकार के होते हैं :–

(अ) समता अंश (ब) पूर्वाधिकार अंश

(अ) समता अंश - समता अंशधारी कम्पनी का स्वामी होता है। उसे प्रबन्ध में भाग लेने का अधिकार एवं वोट देने का अधिकार होता है क्योंकि वह कम्पनी का स्वामी होता है।

लाभ/गुण

1. **स्थायी पूंजी** - लम्बी अवधि के लिए वित्त प्राप्त करने के लिए समता अंश महत्वपूर्ण है।
2. **सम्पत्तियों पर भार नहीं** - समता अंश जारी करते समय कम्पनी को अपनी सम्पत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती।
3. **अधिक लाभ** - समता अंशधारी को अधिक लाभ की प्राप्ति होती है जब कम्पनी ज्यादातर लाभ कमाती है।
4. **नियंत्रण** - समता अंशधारी प्रबन्ध में हिस्सा ले सकता है एवं उसे वोट देने का अधिकार होता है।
5. **कम्पनी पर भार नहीं** - समता अंशधारी को लाभांश का भुगतान करना जरूरी नहीं होता हैं।

सीमाएं/हानियाँ :-

1. **जोखिम** - समता अंशधारी को सबसे ज्यादा जोखिम होता है क्योंकि उसे लाभांश का भुगतान आवश्यक नहीं होता।
2. **ज्यादा लागत** - समता अंशों की लागत ऋण की लागत एवं पूर्वाधिकार शेयरों की लागत से ज्यादा होती है।
3. **अधिक देरी** - समता अंश जारी करने में ज्यादा समय लगता है।
4. **शेयर बाजार की दशाओं पर निर्भर**- समता अंशधारी को जोखिम ज्यादा होता है, इसलिए शेयर बाजार में तेजी के समय समता शेयर की मांगब ज्यादा होती है।

(ब) **पूर्वाधिकार अंश** - पूर्वाधिकार अंशों को समता अंशों के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित निवेश माना जाता है। ये एक निश्चित दर से लाभांश प्राप्त करते हैं। ये एक लेनदार की तरह होते हैं इन्हें वोट देने का अधिकार नहीं होता।

पूर्वाधिकार अंशों के प्रकार -

(1) संचयी पूर्वाधिकार अंश

(2) असंचयी पूर्वाधिकार अंश

(3) भागीदारी पूर्वाधिकार अंश

(4) अभागीदारी पूर्वाधिकार अंश

(5) परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश

(6) अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश

पूर्वाधिकार अंशों के लाभ:-

1. **निवेश की सुरक्षा** - पूर्वाधिकार अंशधारियों का निवेश सुरक्षित होता है। उन्हें लाभांश एवं पूंजी प्राप्त करने का पहले अधिकार होता है।
2. **सम्पत्तियों पर भार नहीं** - जब कम्पनी ये अंश जारी करती है तो उसे कोई सम्पत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती।
3. **नियन्त्रण** - ये अंशधारी कम्पनी के प्रबन्ध को प्रभावित नहीं करते क्योंकि इन्हें वोट देने का अधिकार प्राप्त नहीं होता।
4. **निश्चित लाभांश** - पूर्वाधिकार अंशों पर एक निश्चित दर से लाभांश दिया जाता है। इसलिए ऐसे निवेशकों के लिए बढ़िया है जो एक निश्चित दर से आय प्राप्त करना चाहते हैं।

सीमाएं-हानियाँ :-

1. **कोषों का मंहगा स्रोत** - इन पर लाभांश की दर ऋणपत्रों पर ब्याज की दर से अधिक होने के कारण यह ऋणपत्र के मुकाबले वित्त का अधिक मंहगा स्रोत है।
2. **कर की बचत नहीं** — पूर्वाधिकार अंशों का लाभांश लाभ में से नहीं काटा जाता इसलिए इससे कम्पनी को कर में बचत नहीं होती।

3. **जोखिम लेने वालों के लिए उपयुक्त नहीं** – पूर्वाधिकार अंश उन निवेशकों के लिए उपयुक्त नहीं है जो अधिक आय के लिए ज्यादा जोखिम उठाना चाहते हैं।

समता शेयर और पूर्वाधिकार शेयर में अन्तर

क्रम	आधार	समता शेयर	पूर्वाधिकार शेयर
1.	लाभांश	पूर्वाधिकार अंशों को भुगतान करने के बाद लाभांश दिया जाता है।	समता अंशधारियों से पहले लाभांश दिया जाता है।
2.	वोट देने का अधिकार	वोट देने का अधिकार होता है।	वोट देने का अधिकार नहीं होता।
3.	जोखिम	अधिक जोखिम होता है।	जोखिम कम होता है।
4.	लाभांश की दर	लाभांश की दर घटती बढ़ती रहती है।	लाभांश की दर निश्चित होती है।
5.	नियन्त्रण	प्रबन्ध पर नियन्त्रण होता है।	प्रबन्ध पर नियन्त्रण नहीं होता।

प्र. मधु लिमिटेड बच्चों के वस्त्र बनाने वाली कम्पनी है। कम्पनी पिछले कई सालों से अच्छा मुनाफा कमा रही है। इस वर्ष भी उन्हें अच्छा लाभ हुआ है। कम्पनी के पास पर्याप्त कोष है। कम्पनी क्वालिटी, समान रोजगार अवसर तथा उचित पारिश्रमिक आदि पर महत्व देती है। कम्पनी के कई अंशधारी है जो नियमित तथा स्थाई आय चाहते हैं। मोहन भी ऐसे ही अंशधारियों में से एक है।

i) मोहन के पास किस प्रकार के अंश है?

ii) कम्पनी के द्वारा पालन किए जा रहे किन्हीं दो मूल्यों का उल्लेख करो।

ऋणपत्र - दीर्घकालीन वित्त प्राप्त करने के लिए ऋण–पत्र का महत्वपूर्ण स्रोत है। ऋणपत्रधारी निश्चित दर से ब्याज प्राप्त करते हैं। ब्याज छमाही या वार्षिक चुकाया जाता है, इसलिए ऋणपत्रधारी कम्पनी के लिए एक लेनदार की तरह होते हैं। उसे ही ऋण पत्र कहते हैं।

ऋणपत्र के प्रकार

(1) सुरक्षित ऋणपत्र
(2) असुरक्षित ऋणपत्र
(3) परिवर्तनीय ऋणपत्र
(4) अपरिवर्तनीय ऋणपत्र
(5) शोध्य ऋणपत्र
(6) पंजीकृत ऋणपत्र

ऋणपत्र के लाभ :-

1. **सुरक्षित निवेश** – ऋणपत्र ऐसे निवेशकों द्वारा लिये जाते जो जोखिम नहीं लेना चाहते और जो स्थायी आय चाहते हैं।
2. **नियन्त्रण** – ऋणपत्रधारी को वोट देने का अधिकार नहीं होता।
3. **कम खर्चीला** – पूर्वाधिकार अंशों से कम खर्चीले होते हैं।
4. **कर की बचत** – ऋणपत्र पर ब्याज कर में कटौती है इसीलिऐ कर में बचत होती है।

ऋणपत्रों की सीमाएं

1. **स्थायी दायित्व** – हानि होने की दशा में भी कम्पनी को ब्याज चुकाना पड़ता है। इसलिए यह कम्पनी के लिए जोखिम भरा वित का स्रोत है।
2. **सम्पत्तियों पर भार** – सुरक्षित ऋणपत्रों को जारी करने पर कम्पनी को अपनी संपत्तियों जमानत के रूप में रखनी पड़ती है।
3. **साख में कमी** – नये ऋणपत्र जारी करने पर कम्पनी की ऋण लेने की क्षमता कम हो जाती है।

अंशों और ऋणपत्रों में अन्तर

क्रम	आधार	अंश	ऋणपत्र
1.	प्रकृति	अंशपूंजी का भाग है	ऋणपत्र के रूप में ऋण में
2.	प्रतिफल	लाभांश	ब्याज
3.	वोट देने का अधिकार	वोट देने का अधिकार	वोट देने का अधिकार नहीं है
4.	धारक	शेयर धारक के रूप में स्वामी	ऋणपत्र धारक के रूप में लेनदार
5.	प्रकार	अंश दो प्रकार के होते हैं	ऋणपत्र दो से ज्यादा प्रकार के होते हैं
6.	सुरक्षा	सुरक्षित नहीं होते।	सुरक्षित होते हैं क्योंकि कम्पनी की सम्पतियाँ प्रायः बंधक रखी जाती है।

प्र. कर में बचत केवल ऋणपत्रों के ब्याज पर उपलब्ध है। अंशों के लाभांश पर नहीं। क्यों ?

प्र. एक उच्च लाभ कमाने वाली कम्पनी भी अंश के स्थान पर ऋणपत्र का चयन कर सकती है। कोई एक कारण बताओ।

प्रतिधारित आय - शुद्ध लाभ में से कर एवं लाभांश घटाने के बाद जो भाग बचता है वह भाग बांटा नहीं जाता बल्कि पुनः नियोजन के उद्देश्य से कम्पनी में ही रख लिया जाता है। इसे संचित आय या स्वयं वित्तीयकरण अथवा लाभ का पुनः विनियोग कहते हैं।

उदाहरण -

प्रतिधारित आय/स्वयं वित्त

Retained Earning/Self Financing

X Ltd. has total capital of Rs. 50,00,000, which consists of 10% debenture of Rs. 20,00,000. 8% preference share capital Rs. 10,00,000And equity share capital Rs. 20,00,000 tax rate is 40% company's return on total capital is 20%.

Income Statement

Particulars		
Net Profit Before InterestAnd Tax (PBIT)		
	(20% of Rs. 50,00,000)	10,00,000
Less :	Interest on debentures (10% of 20,00,000)	2,00,000
	Net Profit before Tax (PBT)	8,00,000
Less :	Tax provision @40%	3,20,000
	Net ProfitAfter Tax (PAT)	4,80,000
Less :	Preference dividend (8% of 10,00,000	80,000
	Net ProfitAfter TaxAnd Preference Dividend	4,00,000
Less :	Equity Dividend	2,00,000
	Retained Earnings	2,00,000

लाभ

1. कोई लागत नहीं – कम्पनी को इसे प्राप्त करने के लिए ब्याज, लाभांश, विज्ञापन, प्रविवरण व्यय नहीं करना पड़ता।
2. सम्पत्तियों पर भार नहीं – कम्पनी को कोई सम्पत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती।
3. विकास एवं विस्तार – प्रतिधारित आय को पुनः विनियोग करके कम्पनी का विकास व विस्तार किया जा सकता है।

4. ख्याति – कम्पनी के शेयरों का बाजार मूल्य बढ़ जाता है।
5. पूँजी का स्थायी स्त्रोत – संचित आय किसी भी संगठन की पूँजी का स्थायी स्त्रोत है।
6. संचालन एवं स्वतंत्रता की लोचपूर्णता अधिक – चूँकि पूँजी आंतरिक स्त्रोतों से जुटाई गई है, अतः संचालन एवं स्वतंत्रता की लोचपूर्णता अधिक होती है।

दोष :-

1. अनिश्चित स्रोत – यह वित्तीय कोषों का अनिश्चित स्रोत है क्योंकि यह आय तभी प्राप्त होती है जब अधिक लाभ हो।
2. शेयर होल्डर में असंतोष – प्रतिधारित आय शेयर होल्डर में अन्तोष के कारण बनता है क्योंकि उन्हें कम लाभांश प्राप्त होता है।
3. कोषों का अनुपयुक्त उपयोग – इस पूँजी के संयोग लागत को बहुत–सी फर्म मान्यता नहीं देती। इससे कोषों का अनुपयुक्त उपयोग हो सकता है।

प्र. 'अभिमन्यु लिमिटेड' पुरूषों के लिए कमीज़े बनाने वाली एक कम्पनी है। कम्पनी अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहती है। जिसके लिए वह अन्य शहर में अपनी एक शाखा खोलना चाहती है। चूँकि विगत कई वर्षों से कम्पनी पर्याप्त लाभ कमा रही है। अतः कम्पनी के पास पर्याप्त कोष हैं। कम्पनी के लिए सर्वोचित वित्त का स्त्रोत क्या होगा? क्यों? इस स्त्रोत के दो लाभ तथा दो सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

प्र. शुद्ध लाभ का कौन–सा भाग अंशधारकों में वितरित नहीं किया जाता?

सार्वजनिक जमा - एक कम्पनी के द्वारा जब जनता से सीधे जमा स्वीकार किए जाते हैं तो उसे सार्वजनिक जमा कहा जाता है। इन जमाओं पर ब्याज की दर बैंक की ब्याज दरों से ज्यादा होती है। ये रिजर्व बैंक द्वारा नियंत्रित होती है तथा अपनी अंश पूंजी व रिजर्व के 25 प्रतिशत से ज्यादा जमा स्वीकार नहीं कर सकता। सार्वजनिक जमा की न्यूनतम अवधि 6 महीने और सर्वाधिक अवधि 36 महीने होती है।

लाभ

1. **सम्पत्तियों पर भार नहीं** - इन्हें प्राप्त करने के लिए कम्पनी को कोई सम्पत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती।
2. **कर की बचत** - ब्याज के भुगतान को लाभों में से घटाया जाता है इससे कर की बचत होती है।

3. **सरल प्रक्रिया** – अशों तथा ऋणपत्रों के मुकाबले सार्वजनिक जमा प्राप्त करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल है।
4. **नियंत्रण** – मताधिकार न होने के कारण वे कम्पनी के नियंत्रण को प्रभावित नहीं कर पाते।

सीमाएं –

1. **अल्पकालीन वित्त** – इनकी परिपक्वता अवधि कम होती है इसलिए कम्पनी दीर्घकालीन वित्त नहीं प्राप्त कर सकती।
2. **सीमित कोष** – सार्वजानिक जमा की राशि अंशपूंजी व संचय का 25 प्रतिशत से ज्यादा प्राप्त नहीं की जा सकती।
3. **नये व्यवसायों के लिए अनुपयुक्त** – नई कम्पनियां इन कोषों को प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव करती है।
4. **अविश्वनीय स्त्रोत** – जब कम्पनी को धन की आवश्यकता हो, तब जनता सहयोग ही न करें।

प्रश्नोत्तर–

प्र.1 भारत वर्ष में सार्वजनिक जमा की अधिकतम अवधि कितनी है?

प्र.2 किसी कम्पनी द्वारा बारम्बार सार्वजनिक जमा द्वारा पूंजी एकत्रण सार्वजनिक निवेशकों में कम्पनी की साख गिराता है। कैसे?

प्र.3 किसी कम्पनी द्वारा विशेष रूप मं जमा एकत्र करने के लिए रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा स्थापित नियमों का पालन करना होता है। इस जमा का नाम बताइए।

Trade Credit (व्यापारिक साख)

व्यापारिक साख ऐसा साख होती है जिसे माल अथवा सेवाओं को क्रय करने के सम्बन्ध में एक व्यावसायिक फर्म द्वारा दूसरी व्यावसायिक फर्म को उपलब्ध कराया जाता हे। क्रय करने वाली व्यावसायिक फर्म को शीघ्र भुगतान किए बिना माल एवं सेवाएँ प्राप्त हो जाती है।

व्यापारिक साख के गुण :-

1. **सुविधाजनक** – व्यापारिक साख सुविधाजनक एवं एक सततृ स्त्रोत है।
2. **शीघ्र भुगतान किए बिना क्रय** – व्यापारिक साख द्वारा शीघ्र भुगतान किए बिना माल एवं सेवाओं का क्रय किया जा सकता है।
3. **शीघ्र उपलब्धता** – व्यापारिक साख को शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए विक्रेता की दृष्टि में क्रेता की अच्छी साख हो।

4. **कंपनी की संपत्ति पर भार नहीं** – इसे प्राप्त करने के लिए कंपनी की संपत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती।

व्यापारिक साख के दोष :-

1. **अधिक जोखिम** – आसान व्यापारिक साख सुविधा प्राप्त होने पर फर्म बहुत अधिक व्यापार में लग सकती है। इससे फर्म के सामने जोखिम बढ़ जाता है।
2. **सीमित कोष** – व्यापारिक साख के द्‌वारा कोषों को सीमित मात्रा में ही प्राप्त किया जा सकता है।
3. **महँगा स्त्रोत** – सामान्य रूप से यह वित्त प्राप्त करने का अन्य स्त्रोतों की अपेक्षा महँगा होता है।

वाणिज्यिक बैंक — वाणिज्यिक बैंक नकद साख अधिविकर्ष, सावधि ऋण, बिलों की कटौती के रूप में ऋण व अग्रिम प्रदान करते हैं। ऋण पर निश्चित दर से ब्याज लिया जाता है।

लाभ :-

1. **समय पर सहायता** – वाणिज्यिक बैंक उचित समय पर व्यवसाय को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
2. **गोपनीयता** – वाणिज्यिक बैंकों से लिए गये ऋण के सम्बन्ध में गोपनीयता को बनाये रखा जाता है।
3. **आसानी से उपलब्ध** – वाणिज्यिक बैंक से कोष की प्राप्ति आसानी से उपलब्ध होती है क्योंकि इसके लिए प्रविवरण की आवश्यकता नहीं होती हैं।
4. **वित्त का लचीला स्त्रोत** – व्यवसाय की आवश्यकतानुसार ऋण की राशि को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। यदि वित्त व्यवस्था ठीक है तो ऋण को समय से पूर्व लौटाया भी जा सकता है।

प्र. व्यापारिक साख प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण कारक क्या होता है?

प्र. वित्त के उस स्त्रोत का नाम बताइए जो वस्तुओं के क्रय के दौरान वित्त प्रदान करता है।

सीमाएं / दोष :-

1. **केवल अल्पकालीन एवं मध्यकालीन वित्त** – दीर्घ अवधि के लिए वित्त नहीं प्राप्त किये जा सकते।

करने के लिए बहुत–सी वित्तीय संस्थाएं स्थापित की हैं। जिन्हें विकास बैंक कहा जाता है। उनमें कुछ हैं– आई.एफ.सी.आई., आई.सी.आई.सी.आई., आई.डी.बी.आई., एल.आई.सी., तथा यू.टी.आई. आदि।

लाभ

1. **दीर्घकालीन वित्त** – वित्तीय संस्थाएं दीर्घकालीन वित्त प्रदान करती है जो कि वाणिज्यिक बैंकों द्वारा नहीं दिये जाते।
2. **प्रबन्धकीय सलाह** – ये संस्थाएं वित्तीय, प्रबन्धकीय तथा तकनीकी सलाह भी व्यवसायों को प्रदान करती हैं।
3. **आसान किश्तें** – ऋण का भुगतान आसान किश्तों में किया जा सकता है जो व्यवसाय पर भार नहीं होता।
4. **मंदी में कोष उपलब्ध** – मंदी में भी कोष उपलब्ध कराए जाते हैं जबकि वित्त के दूसरे स्त्रोत उपलब्ध नहीं होते।

सीमाएं–दोष

1. **अधिक समय लगना** – ऋण देने की प्रक्रिया में अधिक समय लगता है क्योंकि वे कठोर मापदंड अपनाते हैं।
2. **प्रतिबन्ध** – वित्तीय संस्थाएं कम्पनी के संचालक मंडल पर कुछ प्रतिबन्ध भी लगाती हैं।

प्र. भारत सरकार ने अमेरिकन डिपोज़िटरी रसीद जैसा विशेष प्रपत्र जारी करने का प्रावधान किया है। उस प्रपत्र का नाम बताइए तथा उसके दो लक्षण लिखिए।

अतः कम्पनी जमाएं (Inter Corporate Deposits - ICD) का अभिप्राय एक कंपनी द्वारा दूसरी कम्पनी को दिए जाने वाले असुरक्षित अल्पकालीन वित्त से हैं। ये व्यवहार दलालों के माध्यम से होते हैं। इन जमाओं पर ब्याज की दर बैंक तथा अन्य बाजारों से अधिक होती है। यह कानूनी झंझटों से दूर है।

ICD के प्रकार

1. **तीन महीने वाली जमाएं** – ICD का सर्वाधिक प्रचलित प्रकार है। ये जमाएं कम्पनियों की अल्पकालीन पूंजी कमी की समस्या को दूर करने में प्रयोग की जाती है। इन पर ब्याज की वार्षिक दर 12 प्रतिशत के आस–पास रहती है।
2. **छः महीने वाली जमाएं** – ये जमाएं मुख्यतः प्रथम श्रेणी के कर्जदारों को उपलब्ध होती हैं। इन पर ब्याज की वार्षिक दर 15 प्रतिशत के आस–पास रहती है।

भी अपना धन वापिस ले सकता है। इन पर ब्याज की दर 10 प्रतिशत के आस–पास होती है।

ICD की विशेषताएं

1. ये व्यवहार दो कंपनियों के मध्य होता है।
2. ये जमाएं अल्पकाल के लिए होती है।
3. ये जमाएं असुरक्षित होती है।
4. ये व्यवहार प्रायः दलालों के माध्यम से होते हैं।
5. इन जमाओं का कोई संगठित बाजार नहीं है।
6. इन व्यवहारों के लिए कोई कानूनी औपचारिकताएं नहीं होती।
7. ये जमाएं ऋणदाताओं के लिए अधिक जोखिम वाली नहीं होती।

याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. समता अंश व्यावसायिक वित का प्रमुख स्रोत है।
2. ऋणपत्र, बॉण्ड तथा ऋण स्थायी लागत वाली पूँजी है।
3. पूर्वाधिकार अंशधारियों को एक निश्चित दर से लाभांश दिया जात है।
4. पूर्वाधिकार अंशधारियों को प्रबन्ध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है।
5. व्यापारिक साख वह सुविधा है जो एक व्यवसायी दूसरे व्यवसायी को देता है।
6. ऋणपत्रधारी एक निश्चित दर से ब्याज प्राप्त करते हैं।
7. ICD –अन्तः कोर्पोरेट जमाएं– एक कम्पनी द्वारा दूसरी कम्पनी को दिया गया असुरक्षित ऋण।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कम्पनी का मालिक कौन होता है?

   (क) समता अंशधारी (ख) पूर्वाधिकार अंशधारी
   (ग) ऋणपत्रधारी (घ) निर्देशक

2. ICD's किसके द्वारा निर्गमित किए जाते है?

   (क) बैंक (ख) RBI
   (ग) एक कम्पनी द्वारा दूसरी कम्पनी को (घ) SIDBI

3. समता अंशधारियों को लाभांश का भुगतान

   (क) अनिवार्य है (ख) अनिवार्य नहीं है
   (ग) विधि के द्वारा अनिवार्य है (घ) स्थायी है

4. स्थायी लागत वाली पूँजी कौन सी है?
(क) समता अंश (ख) ऋणपत्र
(ग) सार्वजनिक जमा (घ) प्रतिधारित आय।

5. स्वामित्व फण्ड में क्या शामिल होता है?
(क) ऋणपत्र (ख) SBI से ऋण
(ग) समता अंश (घ) व्यापारिक साख।

6. व्यापारिक साख उदाहरण है–
(क) लम्बी अवधि वित (दीर्घकालीन) (ख) मध्यावधि वित
(ग) अल्पकालीन वित (घ) उपर्युक्त सभी।

7. स्थायी वित्त की आवश्यकता निम्नलिखित में से किस उद्देश्य के लिए होती है?
(क) चालू संपत्तियाँ खरीदने के लिए
(ख) चालू व्यय जैसे मजदूरी, वेतन के भुगतान के लिए
(ग) भूमि तथा भवन खरीदने के लिए
(घ) कच्चे माल का स्टॉक खरीदने के लिए

8. अधिविकर्ष की सुविधा दी जाती है–
(क) RBI द्वारा (ख) वाणिज्यिक बैंको द्वारा
(ग) स्टॉक कम्पनी द्वारा (घ) वैधानिक निगम द्वारा

9. किस अंश पर वार्षिक लाभांश पाने का पूर्वाधिकार होता है?
(क) समता अंश (ख) पूर्वाधिकार अंश
(ग) अधिकार अंश (घ) उपर्युक्त सभी।

10. व्यावसायिक वित्त का आन्तरिक स्रोत है?
(क) वाणिज्यिक बैंकों से ऋण (ख) ऋणपत्र
(ग) प्रतिधारित आय (घ) समता अंश

निम्नलिखित प्रश्नों के उतर एक या दो शब्दों मे दे-

1. ऋणपत्रों का ब्याज का दर .... होता है।
2. अंतः कम्पनी जमाओ का एक लाभ बताइए।
3. व्यावसायकि वित को उस स्रोत का नाम बताओ जो जनता से सीधे जमाएँ स्वीकार करती है।
4. कम्पनियों की कौन–सी समस्या का निवारण अंतः कम्पनी जमाओं से हो सकता है?

5. अल्पकालीन व्यावसायिक वित्त प्रदान करने वाली दो वित्तीय संस्थाओं के नाम बताइये।
6. कम्पनी की वार्षिक सभा में वोट डालने का अधिकार किनको होता है?

1 अंक वाले प्रश्न

1. किस प्रकार की अंश पूंजी को जोखिम पूंजी कहा जाता है?
2. ऋणपत्र धारकों को, उनके कोषों के उपयोग से प्राप्त होने वाले प्रतिफल का नाम बताइए?
3. प्रतिधारित आय की उस विशेषता को बताओं जो वित्त के किसी अन्य स्रोत में उपलब्ध नहीं हैं?
4. पूर्वाधिकार अंश पूँजी का कोई एक लाभ बताइए।
5. किस शब्द का अर्थ व्यवसाय के लिए पर्याप्त मात्रा में पूँजी के प्रबंध एवं उपयोग से हैं ताकि व्यवसाय की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
6. व्यावसायिक क्षेत्र की माध्यम अवधि एवं दीर्घ अवधि की ऋण संबंधी आवश्यकताएँ पूरा करने के लिए केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा किन की सहायता की जाती है?
7. समता अंश पूंजी एवं पूर्वाधिकार अंश पूंजी में कोई एक समानता बताओ।
8. प्रतिधारित आय के उपयोग की एक सीमा बताइए।
9. ऋण के स्रोतों में किस पर धारक को आयकर में छूट प्राप्त होती है?

3/4 अंक वाले प्रश्न

10. अंश या शेयर को परिभाषित कीजिए और कोई दो लाभ लिखिए?
11. शेयर और ऋणपत्र में कोई दो अंतर लिखिए ?
12. समता अंश पूंजी की कोई तीन सीमाएं लिखिए?
13. प्रतिधारित आय के कोई तीन लाभ लिखिए?

5/6 अंक वाले प्रश्न

14. सार्वजनिक जमा के प्रमुख्या लाभों और हानियों को लिखिए?
15. वित्तीय संस्थानों से आप क्या समझते हैं? उनके लाभ और दोष लिखिए।
16. ''वित्त के स्रोतों में प्रतिधारित आय अन्य स्त्रोतों से बेहतर है।'' इस कथन के पक्ष में 5 कारण लिखिए।
17. 'ओजस आटो लिमिटेड' आटो क्षेत्र की एक जानी मानी कम्पनी है। जिसके पूंजी ढ़ाँचे में अंशपूंजी दीर्घकालीन ऋणों से अधिक है। यह कम्पनी विस्तार

करने हेतु एक नई इकाई पिछड़े क्षेत्र में स्थापित करना चाहती है और आदिवासी महिलाओं को कौशल विकास में प्रशिक्षण देकर उन्हें सामर्थ्यवान भी बनाना चाहती है। कम्पनी के पास रू. 1000 करोड़ के नकद रिजर्व है।

(अ) इस कम्पनी के पूंजी ढ़ाँचे की क्या स्थिति है?

(ब) नई इकाई की स्थापना हेतु, कम्पनी को किस स्रोत का उपयोग करना चाहिए।

(स) उपरोक्त प्रश्न में कम्पनी द्वारा किन मूल्यों का पालन किया जा रहा है?

(संकेत–संबद्ध पूंजी ढ़ाँचा, प्रतिधारित आय–अनुकूलतम उपभोग च नियंत्रण, संतुलित क्षेत्रीय विकास, महिला सशक्तिकरण)

18. राधा निम्नलिखित अवधारणा को समझा रही थीः–
‘यह स्वीकृति है कि कंपनी ने एक निश्चित राशि उधार ली है, जिसे वह भविष्य की तारीख में चुकाने का वादा करती है।’
वित्त के स्रोत को पहचानिए और उसके 2 लाभ और 2 सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उच्च विचार कौशल प्रश्न (Hot Questions)

1. मोहित लिमिटेड ने 4 करोड़ की अनुमानित लागत पर अपने प्लांट एवं मशीनरी का आधुनिकीकरण करके अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने का निर्णय लिया है। कम्पनी के पास पर्याप्त संचय/कोष नहीं हैं। कोई दो वित्त के स्त्रोत सुझाइए।
2. वित्त के एक स्त्रोत के रुप में प्रतिधारित लाभ अन्य स्त्रोतों से बेहतर होते हैं।
क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में एक कारण बताइए।
3. त्योहार के मौसम को विचार में रखते हुए ‘क्रिसैंट प्राइवेट लिमिटेड’ ने स्टॉक बढ़ाकर अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने का निर्णय लिया है। इसके लिए अनुमानित लागत 30 लाख रु. है। कम्पनी के वित्त प्रबन्धक के रूप में संचालकों को इस उद्‌देश्य हेतु आवश्यक वित्त प्राप्त करने के किन्हीं तीन स्रोतों के बारें में बताइए।
4. रोहन 1 लाख रु. किसी कम्पनी में निवेश (Invest) करना चाहता है। वह किन प्रतिभूतियों में विनियोग कर सकता है?

5. आजकल अनेकानेक कम्पनियाँ ऋणपत्र जारी करके वित्त व्यवस्था कर रही हैं। कोई चार कारण बताइए।

6. आप 'सत्या लिमिटेड' के वित्त प्रबंधक हैं। कम्पनी के विस्तृत के लिए आपने प्रबन्धकों को वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेने का सुझाव दिया है। अपने सुझाव के पक्ष में तर्क दीजिए।

7. श्री अरूण अपनी सरकारी सेवाओं से सेवानिवृत्त (रिटायर) हुए हैं। वह अपनी कुछ जमाराशि किसी कम्पनी में निवेश करना चाहते हैं वह बिना जोखिम के निश्चित तथा नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

   i) किस प्रकार के अंशों में उन्हें निवेश करना चाहिए?

   ii) ऊपर बताए गए अंशों के दो लाभ तथा दो सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

8. इस प्रकार के अंशों (शेयर) में समापन पर पूर्वाधिकार प्राप्त होता है। ये किस प्रकार के अंश हैं? इस प्रकार के अंशों की दो सीमाओं तथा दो लाभों का उल्लेख कीजिए।

9. इस प्रकार के अंशों (शेयर) में किसी प्रकार के कोई पूर्वाधिकार प्राप्त नहीं होते किन्तु इस प्रकार के अंशधारी ही असल में मालिक होते हैं। ये किस प्रकार के अंश हैं? उल्लेख किए गए अंशों के दो लाभ तथा दो सीमाएं बताइए।

10. रुद्र लिमिटेड एक सफल कम्पनी है जो जूते निर्माण के कार्य में लगी हैं। कम्पनी के पास काफी अधिक मात्रा में कोष उपलब्ध हैं। कम्पनी के संचालकों ने कम्पनी के विस्तार के लिए ऋण–पत्र जारी करने का निर्णय लिया। क्या उनका यह निर्णय उचित है? आपके विचार से उन्हें वित्त प्रबंध के लिए किस स्त्रोत का चुनाव करना चाहिए? अपने उत्तर के पक्ष में कारण बताओ।

11. श्री मानव शर्मा 'सेतू लिमिटेड' के वित्त प्रबन्धक है। कम्पनी को सुचारु रूप से चलाने के लिए 50 करोड़ की आवश्यकता है। इसके लिए उनके पास दो विकल्प हैं–समता अंशों का निर्गमन अथवा ऋणपत्रों का निर्गमन। स्थिति को देखते हुए काफी विचार विमर्श के पश्चात् श्री मानव ने ऋण पत्र जारी करने का निर्णय लिया। अपना विचार संचालकों के समक्ष रखते हुए श्री मानव ने बताया कि इस प्रकार वे कर में बचत कर सकते हैं। श्री मानव ने दोनों विकल्पों के विषय में संचालकों को क्या–क्या कहा होगा, बताइए।

12. महिन्द्रा एवं महिन्द्रा भारतवर्ष के पहली कम्पनी थी जिसने सन् 1990 में परिवर्तनशील ऋणपत्र जारी किए। आजकल बहुत–सी कम्पनियों के पास दीर्घ अवधि पूंजी एकत्रण के लिए परिवर्तनशील ऋणपत्र जारी करने की मंजूरी है। ऐसे ऋणपत्र जारी करने के कारण बताइए।

13. जैन लिमिटेड त्योहारों के सीज़न के दौरान पूरे देश में अपने उत्पादों की सेल की योजना बना रही है। इसके लिए कम्पनी को बड़ी हुई माँग पूरी करने के लिए उत्पाद निर्माण की आवश्यकता है।
    a) उत्पादन की मांग को पूरा करने के लिए किस प्रकार की पूंजी की आवश्यकता होगी?
    b) आवश्यक वित्त इकट्ठा करने के लिए कम्पनी को किन–किन स्त्रोतों पर विचार करना चाहिए?

14. आर्यन एक ट्रैवल एंजेसी चलाते हैं। इनके व्यापार की प्रकृति ऐसी है कि इन्हें अत्यधिक अचल संपति की आवश्यकता नहीं है। परन्तु वह दुबई में एक और ऑफिस खोलने की योजना बना रहे हैं और अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने बैंक में दीर्घ अवधि ऋण प्राप्त करने के लिए आवेदन किया है। क्या आप सोचते हैं कि वह बैंक से ऋण प्राप्त कर पाएँगे? कारण बताइए।

15. तानिया ने अपने माता–पिता से एक लाख रुपये उपहार के रुप में प्राप्त किए हैं। वह अपनी पूरी पूंजी का निवेश करना चाहती है। वह यह भी चाहती है कि उसका धन सुरक्षित रहे। विभिन्न विकल्प जहाँ वह निवेश कर सकती है बताइए।

16. एशिया लिमिटेड के निदेशक अपनी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए, अपनी कार्यशाला तथा मशीनों को बदलकर नवीनतम तकनीक वाली मशीने तथा कार्यशाला स्थापित करना चाहते हैं जिसकी लागत 5 करोड़ रुपये हैं। वे अंश जारी करके वित्त व्यवस्था कर सकते हैं परन्तु अंशों द्वारा पूरी पूंजी एकत्र करने में वे आश्वस्त नहीं हैं। कम्पनी के लिए वित्त एकत्रण के उपाय सुझाइए।

17. तारा लिमिटेड ने समता अंशों द्वारा पूंजी एकत्रण का निर्णय लिया। क्योंकि निदेशक मंडल जानते हैं कि कम्पनी को अंश धारकों को लाभांश तभी देना होता है जब कम्पनी को लाभ हो अतः उन्होंने पहले तीन वर्षों तक घाटा दर्ज करने का निर्णय लिया ताकि कम्पनी को अंशधारकों को लाभांश न देना पड़े।
    a) क्या निदेशक मंडल की सोच सही हैं?
    b) क्या लाभांश न देना निवेशकों को हताश करेगा?

18. श्री प्रदीप खिलौनों के व्यापारी है। अभी तक वे अपने उत्पाद उत्तरी तथा पश्चिमी भारत में बेचते हैं परन्तु अब वह अपने उत्पादों को दक्षिण भारत में बेचने की योजना बना रहे हैं। इसके लिए उन्होंने बैंक में अपनी ओवरड्राफ्ट सीमा 50 लाख से बढ़ाकर 75 लाख करने का आवेदन दिया है। बैंक मैनेजर ने उन्हें ओवरड्राफ्ट सीमा बढ़ाने के स्थान पर अवधि ऋण लेने की सलाह दी हैं। क्या आप सोचते हैं कि उन्हें ऐसा करना चाहिए? कारण बताइए।

19. विकास ट्रेडर्स लिमिटेड दालों का थोक व्यापार करते हैं। वित्त प्रबन्धक

कम्पनी के लिए असुरक्षित अल्पकालीन वित्त की व्यवस्था करता है। इस स्रोत पर बैंक के ब्याज दर के मुकाबले ब्याज दर देना पड़ता हैं।

क) वित्त के इस स्रोत को पहचानिए।

ख) भाग में पहचाने गए स्रोत की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अध्याय-8

लघु व्यवसाय और उपक्रम, उद्यमिता विकास

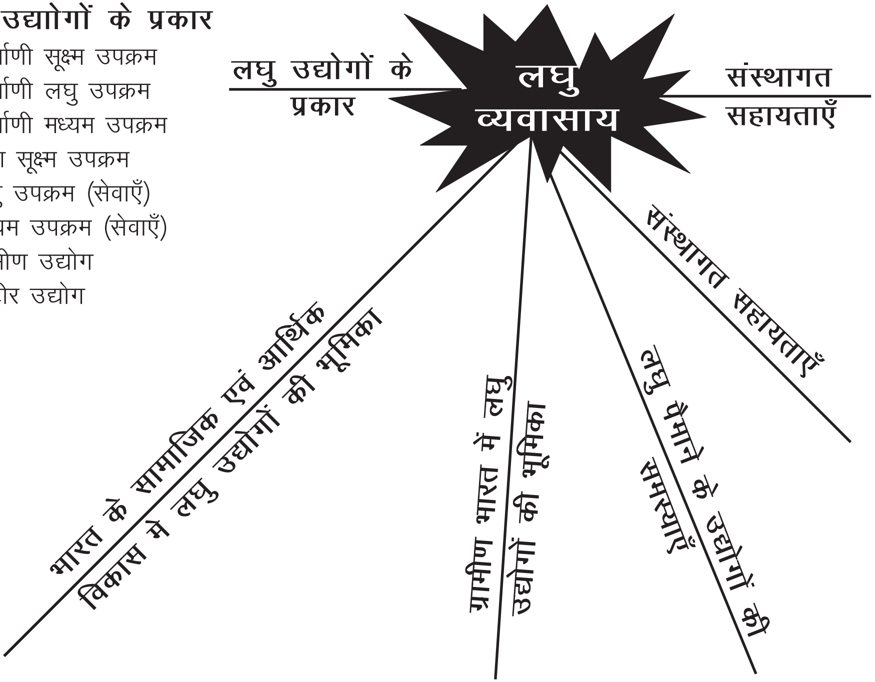
लघु व्यवासाय
लघु उद्योगों के प्रकार
संस्थागत सहायताएँ
संस्थागत सहायताएँ
लघु पैमाने के उद्योगों की समस्याएँ
ग्रामीण भारत में लघु उद्योगों की भूमिका
भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास मे लघु उद्योगों की भूमिका

लघु उद्याोगों के प्रकार

- निर्माणी सूक्ष्म उपक्रम
- निर्माणी लघु उपक्रम
- निर्माणी मध्यम उपक्रम
- सेवा सूक्ष्म उपक्रम
- लघु उपक्रम (सेवाएँ)
- मध्यम उपक्रम (सेवाएँ)
- ग्रामीण उद्योग
- कुटीर उद्योग

NSIC के मुख्य कार्य

- लघु उद्योगों के माल को निर्यात करना
- उन्हें तकनीकी ज्ञान देना
- नवीनतम तकनीकी प्राप्त करने में मदद करना
- सलाहकार सेवाएँ देना
- पट्टे पर विभिन्न यंत्र उपलबध कराना
- ओद्योगिक जोन की स्थापना

DIC के मुख्य कार्य

- जिले मं औद्योगिकरण के केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य
- लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों की स्थापना
- उनके लिए स्थाई पंजीकरण प्रमाण–पत्र जारी करना
- उन्हें विपणन सहायता देना
- उद्यमी और जिले के अग्रणी बैंक के बीच संबंध स्थापित करना
- लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों को ऋण, कार्य शैड, कच्चा माल उपलब्ध कराना

रोजगार

- उत्पादों की विविधता
- निर्यात
- संतुलित क्षेत्रीय विकास
- बडे उद्योगों के पूरक
- उत्पादन की कम लागत
- शीघ्र निर्णय
- उद्यमशीलता का विकास

ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करना

- आर्थिक दशा में सुधार
- प्रवास को रोकना
- स्थानीय संसाधनों का प्रयोग
- आय का समान वितरण
- संतुलित क्षेत्रीय विकास
- स्थानीय कारीगरों को अवसर

वित्त

- कच्चा माल एवं बिजली
- विपणन में कठिनाई
- तकनीकी समस्या
- प्रतियोगिता
- स्थानीय करों का भार
- श्रम सम्बंधी समस्याएँ
- निम्न उत्पादन गुणवत्ता

अन्य पहाड़ी, पिछडे ग्रमीण क्षेत्रों में सरकारी सहायता

- विद्युत आपूर्ति दरों मे छूट
- टैक्स छूट
- भूमि तथा जल
- सुरक्षात्मक उपाय
- वित्तीय सहायता
- बिक्री कर
- विपणन सहायता

उद्यमिता

विशेषताएँ

- व्यवस्थित क्रिया
- उदेश्यपूर्ण तथा न्यायसंगत क्रिया
- नव प्रवर्तन
- उत्पादन का संगठन
- जोखिम

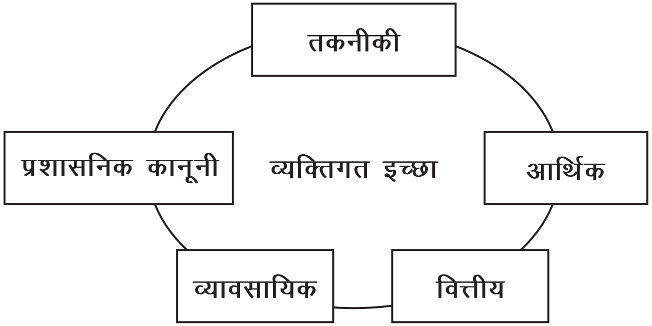

भारत द्वारा 'स्टार्ट अप' फण्ड के लिए विभिन्न योजनाएँ

- कोई निरीक्षण नहीं
- पंजीकरण
- आयकर से छूट
- पूंजीगत लाभ कर मुफ्त
- स्टार्ट अप के लिए फण्ड स्कीम

उद्यमिता की आवश्यकता

- जी.डी.पी. में योगदान
- पूँजी निर्माण
- रोजगार का सृजन
- अन्य लोगों के लिए व्यापार के अवसरों का सृजन
- आर्थिक दक्षता में सुधार
- आर्थिक गतिविधियों का बढता दायरा
- स्थानीय समुदायें पर प्रभाव
- अन्वेषण, प्रयोग और साहस की भावना को बढावा देना

बौद्धिक सम्पति अधिकार के प्रकार

- कॉपीराइट
- एकस्व
- ट्रेडमार्क्स
- भौगोलिक संकेत
- अभिकल्प
- पौध–प्रजाति
- अर्द्ध चालक एकीकृत सरकिट अभिकल्प

स्टार्ट अप व्यावसायिक ईकाई के लिए पूंजी बढाने में सहायक विकल्पों की सूची–

- स्वयं फण्डिंग
- क्रो फण्डिंग
- एंजल फण्डिंग
- साहस पूंजी
- इन्क्यूबेटर तथा त्वरकों से फण्डिंग
- विजेता प्रतियोगिता फण्डिंग
- बैंक लोन
- गैर बैंकिग वित्तीय संस्थएँ
- तीव्र मुद्रा
- सरकार द्वारा वित्तीय सहायता

उद्यमिता : अवधारणा

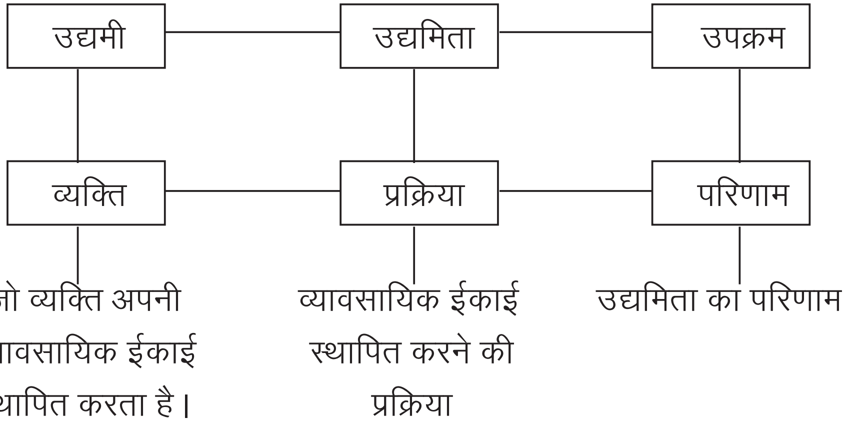

जो व्यक्ति अपनी व्यावसायिक ईकाई स्थापित करता है।

व्यावसायिक ईकाई स्थापित करने की प्रक्रिया

उद्यमिता का परिणाम

अर्थ– उद्यमिता एक व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण तथा रचनात्मक क्रिया है जो एक उद्यमित द्वारा व्यावसायिक विचारों को ऐच्छिक मौद्रिक परिणामों में बदलने के लिए की जाती है।

उद्यमिता की विशेषताएँ:

(1) **व्यवस्थित क्रिया** : यह एक स्वाभाविक क्रिया है जिसको अनुशासित ढंग से पूर्ण करने के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है।

(2) **उद्देश्यपूर्ण तथा न्यायसंगत क्रिया** : यह उद्देश्यपूर्ण तथा न्यायसंगत व्यवसाय को स्थापित करने से सम्बन्धित है। इसका उद्देश्य क्रेता को वस्तुएँ एवं सेवाएँ उपलब्ध कराना, निवेशकों का ध्यान रखना तथा उपक्रम को लाभ उपलब्ध कराना है।

(3) **नवप्रवर्तन** : इसके अन्तर्गत उत्पादन के विभिन्न तरीके खोजे जाते है जैसे नई तकनीक, नये उत्पाद, नया कच्चा माल तथा नए विपणन तरीके।

(4) **उत्पादन का संगठन** : इसके अन्तर्गत उत्पादन के नये तरीके अपनाए जाते हैं।

(5) **जोखिम** : यह हमेशा जोखिम से घिरा रहता है।

उद्यमिता की आवश्यकता

निम्नलिखित तथ्यों से उद्यमिता की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है :

(1) **विकास प्रक्रिया की शुरूआत**—अधिक से अधिक व्यावसायिक ईकाईयों की स्थापना देश के विकास को प्रतिबिम्ब करती है।

(2) **विकास को बनाये रखना**—उद्यमिता की सहायता से विकास की दर बनी रहती है।

(3) **रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना**—उद्यमिता केवल स्वरोजगार का क्षेत्र ही उपलब्ध नहीं कराती बल्कि लोगों को बड़ी संख्या में रोजगार भी उपलब्ध कराती है।

(4) **सामाजिक लाभ**—उद्यमिता के द्वारा संसाधनों का आदर्श उपयोग किया जाता है जिससे समाज में संसाधन विलुप्त होने से बच जाते हैं।

उद्यमिता विकास की प्रक्रिया

'स्टार्ट अप इण्डिया' योजना—पूरे देश में उद्यमिता को तराशने तथा पारिस्थितियों तन्त्र के विकास के लिए 'स्टार्ट अप इण्डिया' एक क्रियात्मक योजना है।

'स्टार्ट अप इण्डिया'— अर्थ

स्टार्ट अप एक व्यावसायिक उपक्रम है जो प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी, साझेदारी, सीमित दायित्व वाली साझेदारी और एकाकी व्यापार के रूप में चलाया जा सकता है। यह व्यावसायिक उपक्रम भारत में पंजीकृत होगा। जो व्यावसायिक उपक्रप पिछले पाँच वर्ष के दौरान स्थापित हुआ तथा जिसका वार्षिक कारोबार 25 करोड़ रूपये से कम है।

स्टार्ट अप इण्डिया योजना

स्टार्ट अप इंडिया भारत सरकार की सर्वोत्कृष्ट पहल है जो नवप्रवर्तन व स्टार्ट अप को प्रोत्सहित करने के लिए की गई है।

इस योजना के कुछ विशिष्ट उदेश्य हैः—

(I) उद्यमशीलता संस्कृति को बढावा देना

(ii) युवाओं में उद्यमी बनने की प्रक्रिया के बारे मे जागरूकता लाना

(iii) शिक्षित युवाओं, वैज्ञानिक को स्टार्ट अप द्वारा लाभप्रद जीविका के रूप में अभिप्रेरित करना

(iv) उद्यमशीलता विकास के प्रांरभिक चरण को बल देना।

(v) कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों जैसे महिलाओ, अनुसुचित जाति, जन जातियों को भी शामिल करके आगे बढना।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की दिनाँक 17 फरवरी, 2017 को जारी अधिसूचना के अनुसार स्टार्ट अप का अर्थ है–

- भारत में सम्मिलित अथवा पंजीकृत एक इकाई
- पाँच वर्ष से पुरानी न हो।
- पिछले किसी भी वर्ष में वार्षिक बिक्री/आवर्त 25 करोड़ रुपये से अधिक न हो।
- नवप्रवर्तन की दिशा में कार्य करना, तकनीक से संबधित उत्पादों/सेवाओं/प्रकियायों का विकास

स्टार्ट अप इंडिया – क्रियाशील बिन्दु

(I) सरलीकरण और मैत्रीपूर्ण – स्टार्ट अप के लिए सरल और परिवर्तनशी बनाना।

(ii) कानूनी सहायत और पेटेंट जल्दी – प्रथम उपयोगकर्ता का लाभ आसानी से लिया जा सकता है।

(iii) आसान निकासी – यदि व्यवसाय असफल हो जाए तो निकासी प्रक्रिया आसान होती है। पूँजी तथा अन्य संसाधनो को अन्य उत्पादक कार्यों में आबंटित किया जा सकता है।

(iv) इन्कयूबेटर से के लिए निजी क्षेत्र के संसाधन– इन्क्यूबेटर के पेशेवर प्रबन्ध को सुनिश्चित करने के लिए PPP मॉडल को नियोजित किया जा रहा है।

(v) कर में छूट – स्टार्ट अप क्रियाओं से होने वाला लाभ तीन वर्ष तक के लिए कर कर मुक्त है।

सामान्य योजनाएं निम्नलिखित हैं–

(1) कोई निरीक्षण नहीं–तीन वर्षों तक स्टार्ट अप व्यावसायिक ईकाई के निरीक्षण की कोई आवश्यकता नहीं।

(2) पंजीकरण–अप्रैल 2016 से शुरू की मोबाइल रूप के माध्यम से स्टार्ट अप में पंजीकरण केवल एक दिन में हो जाता है।

(3) **आयकर से छूट**—मंत्रालय से एक प्रमाण पत्र लेने के बाद शुरू के तीन वर्ष तक इस व्यावसायिक ईकाई को कोई कर नहीं देना।

(4) **पूंजीगत लाभ कर मुक्त**—शुरू के तीन वर्षों तक पूंजीगत लाभ भी कर मुक्त होगा।

(5) **एकस्व एवं बौद्धिक पूंजी पर लाभ**—एकस्व एवं बौद्धिक पूंजी पर 80% छूट का दावा किया जा सकता है।

(6) **स्टार्ट अप के लिए फण्ड स्कीम**—सरकार ने नये स्टार्ट अप व्यवसाय के लिए 10000 करोड़ रूपये तथा उधार/ऋण के लिए 500 करोड़ रूपये की योजनाओं की घोषणा की है।

स्टार्टअप व्यावसायिक ईकाई के लिए पूंजी बढ़ाने में सहायक फण्डिंग विकल्पों की सूचीः

(1) **स्वयं फण्डिंग**—व्यवसाय शुरू करने के लिए स्वयं की पूंजी सबसे पहला विकल्प है। प्रारंभिक आवश्यकता छोटी होने की दशा में यह निधिकरण का अच्छा विकल्प है।

(2) **जनता निधिकरण**—इस विधि में इन्टरनेट के माध्यम से स्टार्टअप की सूचना देकर लोगों से फण्ड इकठ्ठा किया जाता है।

(3) **ऐंजल (Angel) निवेश/दिव्य निवेशक**—धनी लोग जिनके पास अतिरिक्त नकदी होती है, तथा स्टार्टअप के विकास में रूचि रखते हैं, व्यावसायिक ईकाई में निवेश कर सकते हैं।

(4) **साहस पूंजी/उपक्रम पूंजी**—इस विधि में बड़ी क्षमता वाली कम्पनी पेशेवर तरीके से फण्ड का प्रबन्ध करते हैं।

(5) **इन्क्यूबेटर तथा त्वरकों से फण्डिंग**—स्टार्ट अप के बाद संगठन के विकास के लिए वित्तीय संस्थाओं द्वारा इन्क्यूवेटर और फण्डिंग को त्वरक कहा जाता है।

इन्क्यूबेटर – चलना
त्वरक – दौड़ना

(6) **विजेता प्रतियोगिता फण्डिंग**—इस विधि के अन्तर्गत सबसे अच्छी स्टार्टअप योजना प्रस्तुत करके फण्ड एकत्रित किया जाता है तथा प्रतियोगिता जीती जाती है।

(7) **बैंक लोन**—इसके अन्तर्गत विभिन्न वाणिज्यिक बैंकों से ऋण लेकर फण्ड की व्यवस्था की जाती है।

(8) **गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएँ** (NBFC's) — जो स्टार्टअप व्यवसायक वाणिज्यिक बैंकों की शर्तों को पूरा नहीं कर सकते वे आसानी से NBFC's से ऋण ले सकते हैं।

(9) **सरकार**—स्टार्ट अप के लिए वित्तीय सहायता देने के लिए सरकार ने 10000 करोड़ रूपये की व्यवस्था केन्द्रित बजट में की है।

(10) **तीव्र मुद्रा**—इसके अन्तर्गत स्टार्टअप फण्ड की व्यवस्था निम्नलिखित प्रकार से हो सकती है।

(i) उत्पाद बेचकर (ii) सम्पत्ती बेचकर (iii) क्रेडिट कार्ड द्वारा 'APPLE' और 'SAMSUNG' जैसी कम्पनियाँ माल की पूर्ति करने से पहले ग्राहकों से भुगतान प्राप्त कर लेती हैं।

बौद्धिक संपदा अधिकार

- नए अद्वितीय आविष्कारों को प्रोत्साहन मिलता है जैसे कैंसर का उपचार औशधि की रचना
- यह लेखकों, रचयिताओं को अनेक कार्य के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि यह उनकी आय की हानि को रोकने में सहायता करता है।
- यह किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कार्य को केवल उसकी अनुमति से जनता तक पहुँचाने की अनुमति देता है।
- रचनाकारों और डेवलपर्स को उनके काम के लिए मान्यता मिलती है।
- टी.आर.आई.पी.एस. पर भारत द्वारा हस्ताक्षरकर्ता बनने पर अंतर्राश्ट्रीय आबंधों को पूरा करते हुए प्राज्ञ सम्पत्ति अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई अधिनियम पारित किये गये।

बौद्धिक /प्राज्ञ सम्पति के प्रकार

प्रतिलिप्याधिकार/प्रतिलिपि न बनाने का अधिकार — यह अधिकार साहित्यिक, कलात्मक, संगीतमय, ध्वन्यालेखन तथ फिल्मों के लिए रचनाकारों को दिया जात है।

व्यापार चिन्ह : यह कोई शब्द, नाम या प्रतीक (या उनका संयोजन) है जो हमें किसी व्यक्ति, कम्पनी आदि के माल की पहचान कराता है।

व्यापार चिन्ह

परंपरागत व्यापार चिन्ह	गैर परंपरागत व्यापार चिन्ह
शब्द, रंग संयोजन, नाम पत्र, चिन्ह, पैकेजिंग, माल की आकृति आदि	जो चिन्ह पहले इस वर्ग मे सम्मिलित नहीं थे परन्तु समय के साथ अपनी पहचान बना रहे है जैसे ध्वनि चिन्ह, गत्यात्मक चिन्ह आदि

भौगोलिक संकेतः यह एक संकेत है जो कृषि संबंधी, प्राकृतिक, या निर्मित उत्पादों (हस्तशिल्प, औद्योगिक माल तथा खाद पदार्थ) के एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से उसकी गुणवत्ता व प्रतिष्ठा से जुडा हुआ है।

उदाहरण : नागा मिर्चा, मिजोचिली, वर्ली चित्रकारियाँ, दार्जिलिंग आदि

एकस्व (पेटैंट) : यह वैज्ञानिक खोजों (उत्पाद और या प्रकिया) को संरक्षित करता है जो पहले से उपलब्ध उत्पादों में तकनीकी प्रगति दिखाता है।

यह अन्य सभी को आविष्कार खोजें बेचने, प्रयोग करने, निर्यात करने पर प्रतिबन्ध लगाता है

एक आविष्कार को पेटैंट कब मिलता हैं ?

- यह नया होना चाहिए
- तकनीकी क्षेत्र में कौशल व्यक्ति के लिए यह बिल्कुल नया होना चाहिए।
- औद्योगिक अनुप्रयोग के योग्य होना चाहिए।

डिजाइन–

- इसमें आकार, पैटर्न, पंक्तियों का प्रबन्ध, रंगों का मिश्रण शामिल है जो किसी भी वस्तु पर प्रयोग किया जा सकता है। यह 10 साल के लिए वैद्य होता है और उसके बाद 5 वर्ष तक नवीनीकरण हो सकता है।

पौध प्रजाति

– पौधों का उनकी वानस्पतिक विशेषताओं के आधार पर श्रेणियों में समूहीकरण करना है। उदाहरणार्थ, आलू का संकरित रूप।

अर्ध सुचालक एकीकृत परिपथ डिजाइन

– सर्किट कार्य के संचालन में एक कम्प्यूटर चिप बनाने का तरीका।

व्यापारिक केन्द्र

– व्यापारिक भेद मूलतः एक गोपनीय सूचना हैं जो तीव्र प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा देती है। उदाहरण– कोका–कोला का नुस्खा।

भारत में व्यापारिक भेद 'भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872' के अंतर्गत संरक्षित किए जाते हैं।

परंपरागत ज्ञान

– परंपरागत ज्ञान का तात्पर्य संपूर्ण विश्व में स्थानीय समुदायों के बीच प्रचलित ज्ञान, प्रणालियों, नवप्रवर्तनों एवं व्यवहारों से हैं। जैसे– आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध।

भारत सरकार द्वारा एक 'परंपरागत ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय' विकसित किया गया है जो हमारे परंपरागत ज्ञान के अनाधिकृत एकस्वीकरण को रोकने में सहायता करती है।

बौद्धिक सम्पदा अधिकार और व्यवसाय

– प्रत्येक व्यवसाय सदैव नवप्रवर्तन के विषय में सोचेगा अन्यथा वह पिछड़ जाएगा। और अन्ततः बन्द हो जाएगा। इसलिए बौद्धिक सम्पदा अधिकार व्यवसाय को गतिशील बनाने में सहायता करता है।

उद्यम तथा उद्यमिता

उद्यम / उपक्रम–यह एक व्यावसायिक संगठन है जो वस्तुएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराता है, रोजगार का सृजन करता है तथा राष्ट्रीय आय में योगदान देता है। यह भूमि, श्रम तथा पूंजी के साथ उत्पादन का चौथा साधन है।

उद्यमिता–उद्यमी की उन सभी क्रियाओं का योग है। जो वह व्यावसायिक विचारों को ऐच्छिक मौद्रिक परिणामों में बदलने के लिए करता है।

प्रश्न–

(I) उद्यमिता क्या है और इसकी आवश्यकता क्यों होती है?

(ii) स्टार्ट अप को परिभाषित करो। स्टार्ट अप के लिए भारत सरकार द्वारा फण्ड के लिए शुरू की गई विभिन्न योजनाओं की व्याख्या करे?

(iii) बौद्धिक सम्पति अधिकार की व्याख्या करो तथा इसमें क्या–क्या शामिल हैं?

(iv) स्टार्ट–अप की फंडिग के विभिन्न स्त्रोत वर्णन कीजिए।

एक व्यवसाय जिसका संचालन छोटे पैमाने पर किया जाता है जिसमें कम पूंजी, कम श्रम और कम मशीनों का प्रयोग किया जाता है। उसे छोटा या लघु व्यवसाय कहा जाता है। वस्तुओं का उत्पादन छोटे पैमाने पर होता है। इसका प्रबंध एवं संचालन व्यवसाय के स्वामी द्वारा होता है। भारत में लघुव्यवसाय में ग्रामीण और लघु उद्यम में परम्परागत – हैंडलूम, हस्तशिल्प, खादी एवं ग्रामीण उद्योग तथा आधुनिक लघु उद्योगों में, लघु पैमाने के उद्योग व पावर लूम आदि शामिल हैं।

MSMED Act 2006 के अनुसार, लघुस्तरीय उपक्रम कर अभिप्राय उस उपक्रम से है जहां प्लांट व मशीनरी में विनियोग 25 लाख रुपये से अधिक हो लेकिन 5 करोड़ रुपये से अधिक न हो।

व्यवसाय के आकार का मापन करने के लिए कई मापदण्डों का प्रयोग किया जाता है जैसे व्यवसाय में लगे लोगों की संख्या उसमें पूंजी निवेश उत्पादन की मात्रा एवं मूल्य, बिजली का उपभोग।

एक नई अधिसूचना 01.07.2020 को लागू की गई हैं जिसके अनुसार सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के निम्नलिखित मानदंड हैं :–

1. सूक्षम उद्यम वह है जिसमें संयंत्र और मशीनरी अथवा उपस्कर में 1 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश नहीं होता तथा उसका करोबार 5 करोड़ रूपये से अधिक नहीं होता है।
2. लघु उद्यम वह है जिसमें संयंत्र और मशीनरी अथवा उपस्कर में 10 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश नहीं होता है तथा उसका कारोबार 50 करोड़ रूपये से अधिक नहीं होता है।

3. मध्यम उद्यम वह है जिसमें संयंत्र और मशीनरी अथवा उपस्कर में 50 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश नहीं होता हैं तथा उसका कारोबार 250 करोड़ रूपये से अधिक नहीं होता हैं।

भारत सरकार ने लघु व्यवसाय को परिभाषित करने के लिए संयंत्र एवं मशीनरी में निवेश को आधार बनाते हुए इसे निम्न भागों में बांटा है :—

उद्योगों के प्रकार	**निवेश सीमा**
सूक्ष्म उपक्रम (निर्माणी)	संयंत्र एवं मशीनरी में ₹25 लाख तक
लघु उपक्रम (निर्माणी)	संयंत्र और मशीनरी में ₹25 से अधिक और ₹ 5 करोड़ तक
मध्यम उपक्रम (निर्माणी)	संयंत्र और मशीनरी मे ₹5 करोड़ से अधिक और ₹10 करोड़ तक
सूक्ष्म उपक्रम (सेवाएँ)	उपकरणों में ₹10 लाख तक का विनियोग
लघु उपक्रम (सेवाएँ)	उपकरणों में ₹10 लाख से अधिक और ₹2 करोड़ तक
मध्यम उपक्रम सेवाएँ	उपकरणों में ₹2 करोड़ से अधिक और ₹5 करोड़ तक
ग्रामीण उद्योग	ग्रामीण क्षेत्र में कोई उद्योग जो कोई वस्तु का उत्पादन करता या कोई सेवा उपलब्ध कराता है। इसमें केन्द्र सरकार समय—समय पर प्रति व्यक्ति या प्रति कर्मचारी स्थाई पूंजी में निवेश की सीमा कप निर्देश देती है। — यह बिजली का प्रयोग करके या बिना करे किया जा सकता है।
कुटीर उद्योग	— यह पूँजी निवेश के आधार पर नहीं आंका जाता। — इसमे ज्यादातर श्रमिक परिवार के सदस्य होते हैं, कम पूंजी और मशीनों का प्रयोग होता है। — अगर मशीनों का प्रयोग होता है तो सरल और स्वदेशी तकनीक प्रयोग करते हुए की जाती है।

प्रश्नोत्तर

1. लघु उद्योग में संयत्र और मशीनरों में निवेश की अधिकतम सीमा क्या है जिसका मुख्य उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना और आधुनिकीकीरण हो? (10 करोड़)
2. सहायक लघु उद्योग इकाई के विशिष्ट विशेषता का उल्लेख कीजिए। (अपनी मूल इकाई को 5% उत्पादन देना)
3. MSMED Act 2006 के अनुसार, व्यवसाय के मापन का क्या आधार है? (संयत्र एवं मशीनरी में निवेश पूंजी)
4. हरीश ने प्लास्टिक के खिलौने का निर्माण के लिए 15 लाख रुपये संयत्र एवं मशीनरी में निवेश किए। MSMED के अनुसार, उसका उद्यम लघु व्यवसाय के किस श्रेणी में आता है? (सूक्ष्म व्यावसायिक उद्यम (विनिर्माण क्षेत्र)

भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की भूमिका

1. **रोजगार** : कृषि के बाद लघु उद्योग सबसे ज्यादा रोजगार उपलब्ध कराता है। भारत में 95 प्रतिशत यूनिट लघु औद्योगिक इकाइयों की है। ये उपक्रम श्रम प्रधान होते हैं और भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में श्रमिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
2. **उत्पादनों की विविधता** : लघुस्तरीय उद्योगों, द्वारा रेडीमेड गारमेन्ट्स, स्टेशनरी, साबुन, चमड़े की वस्तुएं, रबर व प्लास्टिक का सामान आदि बहुत–सी वस्तुएं बनाई जाती है।
3. **निर्यात** : भारत के कुल निर्यात का 45 प्रतिशत भाग लघु उद्योगों का है जिससे हमें विदेशीमुद्रा प्राप्त होती है। इससे भुगतान संतुलन की समस्या को हल करने में सहायता मिलती है।
4. **संतुलित क्षेत्रीय विकास** : लघुस्तरीय उद्योग कहीं भी स्थापित किये जा सकते हैं क्योंकि इनमें स्थानीय संसाधनों, कम पूंजी एवं साधारण टेकनोलजी का प्रयोग किया जाता है।
5. **बड़े उद्योगों के पूरक** : लघुस्तरीय उद्योग बड़े उद्योगों को विभिन्न प्रकार के उपकरण टूल्स आदि की पूर्ति करते हैं।
6. **उत्पादन की कम लागत** : लघुस्तरीय उद्योग में बने हुए माल की लागत कम आती है 5 क्योंकि ये स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हैं।

7. **शीघ्र निर्णय** : संगठन का आकार छोटा होने के कारण ये शीघ्र एवं समय पर निर्णय ले सकते हैं। इन्हें अन्य लोगों से परामर्श करने की आवश्यकता नहीं होती।

8. **उद्यमशीलता का विकास** : नौजवान युवक व महिलाओं को अपने व्यवसाय शुरू करने के अवसर लघु उद्योगों द्वारा प्रदान किये जाते हैं।

ग्रामीण भारत में लघु उद्योगों की भूमिका

1. **ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करना** : लघु एवं कुटीर उद्योग भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है।

2. **आर्थिक दशा में सुधार** : लघु पैमाने के उद्योगों द्वारा आय के विभिन्न स्रोत ग्रामीणों को प्राप्त होते हैं। इससे आर्थिक दशा में सुधार होता है एवं ग्रामीणों के जीवन स्तर में भी वृद्धि होती है।

3. **प्रवास को रोकना** : ग्रामीण उद्योगों का विकास, ग्रामीण जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों में प्रवास रोकता है क्योंकि उन्हें गांव में ही रोजगार प्राप्त हो जाता है।

4. **स्थानीय संसाधनों का प्रयोग** : लघुस्तरीय उद्योग अपने उत्पादन में स्थानीय संसाधनों जैसे कॉपर, लकड़ी व अन्य संसाधनों को प्रयोग करते हैं, जो कि वैसे बिना उपयोग के रह जाते हैं या बहुत कम उपयोग हो पाता है। इनमें प्राकृतिक स्थानीय संसाधनों का सही प्रयोग हो जाता है।

5. **आय का समान वितरण** : लघुस्तरीय उद्योग एवं कुटीर उद्योग राष्ट्रीय आय के समान वितरण में भी योगदान करते हैं। जिससे राष्ट्रीय आय शहर में रहने वाले कुछ उद्योगपतियों के हाथों में ही नहीं रह जाती।

6. **संतुलित क्षेत्रीय विकास** : ये उपक्रम प्रायः उत्पादन के स्थानीय स्रोतों पर आधारित होते हैं। इस प्रकार इनसे उद्योग एक ही स्थान पर केन्द्रित न होकर बिखर जाते हैं। इससे संतुलित क्षेत्रीय विकास संभव होता है।

7. **स्थानीय कारीगरों को अवसर** : लघु व्यवसाय उन स्थानीय कारीगरों को अवसर प्रदान करने में सहायक होता है जिनमें विभिन्न क्षेत्रों में महारत हासिल है परन्तु अवसर के अभाव में उनका कौशल दुनिया के सामने नहीं आ पाता।

लघु पैमाने के उद्योगों की समस्याएं

1. **वित्त :** लघु पैमाने के उद्योगों को कार्यशील पूंजी की कमी का सामना करना पड़ता है। इन्हें बैंकों से उचित दर पर ऋण लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
2. **कच्चा माल एवं बिजली :** वित्त एवं भंडारण सुविधाओं के अभाव में, लघु पैमाने के उद्योग कच्चा माल थोक मात्रा में खरीदने में असमर्थ होते हैं। बिजली की कमी एक अन्य कारक है जो संयंत्र की कुल क्षमता के उपयोग में बाधक बनता है।
3. **विपणन में कठिनाई :** कोषो की कमी के कारण लघु पैमाने के उद्योग अपने उत्पादों के विज्ञापन और वितरण पर ज्यादा रकम खर्च नहीं कर पाते। ये मध्यस्थों पर निर्भर होते हैं जो इन का शोषण करते हैं।
4. **तकनीकी समस्या :** पूंजी की कमी के कारण ये नई मशीन और तकनीकी का प्रयोग नहीं कर पाते हैं। पुरानी मशीनों का प्रयोग करते हैं। इसलिए इनकी उत्पादन की लागत बढ़ जाती है।
5. **प्रतियोगिता :** ये उद्योग न केवल बड़े उद्योगों से प्रतियोगिता करते हैं बल्कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से भी प्रतियोगिता करते हैं। ये उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण के कारण हो रहा है।
6. **अन्य समस्याएं :**
   - (अ) प्रबन्धकीय कुशलता की कमी जो कि ग्रामीण इलाकों में पेशेवरों की गैर उपलब्धता के कारण है।
   - (ब) उत्पादित माल की मांग की कमी
   - (स) स्थानीय करों का भार
   - (द) श्रम सम्बंधी समस्याएं जो कुशल एवं निपुण कारीगरों की गैर उपलब्धता के कारण होती है
   - (ड़) निम्न उत्पाद गुणवत्ता

लघु पैमाने के उद्योगों तथा लघु व्यावसायिक इकाइयों को प्राप्त सरकारी सहायता / सरकार द्वारा उठाये गये कदम

(1) संस्थागत सहायताएं

1. **राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम** (NSIC) : इसकी स्थापना 1955 में लघु उद्योगों की सहायता व तेजी से विकास के लिए भारत में की गई।

उद्यमीयों के सामने मुख्य बाधा मशीनरी व यंत्र खरीदने के लिए पर्याप्त पूंजी का अभाव था। पूंजी की कमी के कारण ही अनेक नए उद्यमी उद्यमीय अवसरों का लाभ उठाने से वंचित रह जाते थे। उद्यमियों की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही NSIC की स्थापना की गई।

NSIC ने निम्नलिखित दो उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए लघु व्यवसायों के निष्पादन तथा साख श्रेणी (Performance and Credit Rating) की नई योजना लागू की गई :–

1) साख श्रेणी की आवश्यकता के बारे में लघु उद्योगों को जानकारी देना।
2) अच्छे वित्तीय रिकार्ड बनाए रखने के लिए लघु व्यावसायिक इकाईयों को प्रोत्साहित करना।

इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं :–

1) यह किराया क्रम पद्धति के आधार पर लघु उद्योगों को कच्चा माल व मशीनें उपलब्ध कराता है।
2) यह लघु उद्योगों के माल को निर्यात करता है।
3) यह लघु उद्योगों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करता है।
4) नवीनतम तकनीकी प्राप्त करने में मदद करना।
5) सलाहकार सेवाएं प्रदान करना।
6) पट्टे पर विभिन्न यंत्र उपलब्ध कराना।
7) औद्योगिक बस्तियों की स्थापना करना।

(2) जिला औद्योगिक केन्द्र (DIC)

DIC की अवधारणा 1977 के दौरान आई, जब भारतीय सरकार ने 23 दिसम्बर, 1977 को नई औद्योगिक नीति की घोषणा की। DIC का मुख्य उद्देश्य सभी आवश्यक सेवाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध करना है। DIC की स्थापना के लिए आवश्यक वित्त, संबंधित राज्य तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा बराबर–बराबर उपलब्ध कराई जाती है।

जिला औद्योगिक केन्द्र के कार्य :

(1) जिले में औद्योगिकरण के केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करता है।

(2) लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए प्रोजेक्ट व उद्यमियों की पहचान करना।

(3) लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों को स्थायी पंजीकरण प्रमाण–पत्र जारी करना।

(4) लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों को विपणन सहायता उपलब्ध कराना।

(5) उद्यमी तथा जिले के अग्रणी बैंक के बीच संबंध स्थापित करना।

(6) बिजली बोर्ड, जल आपूर्ति बोर्ड, आदि से लाइसेंस लेने में उद्यमियों की मदद करना।

(7) लघुस्तरीय औद्योगिक इकाइयों को ऋण, कार्य शैड व कच्चा माल उपलब्ध करवाना।

(8) शिक्षित बेरोजगारों के लिए सरकारी सहायता प्राप्त स्कीमों को लागू करना।

(9) मशीनरी व कच्चा माल आयात के लिए उद्यमियों को सहायता प्रदान करना।

प्रश्नोत्तर :

1. उस संस्था का नाम बताइये जो बैंकों के माध्यम से लघु उद्योगों के लिए ऋण प्रवाह सुनिश्चित करती है? (NSIC)
2. NSIC के द्वारा लागू की गई उस योजना का नाम बताइये जिससे साख श्रेणी के प्रति जागरूकता फैलाई जाती है?

अन्य पहाड़ी, पिछड़े तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी सहायता

1. **विद्युत आपूर्ति** : कुछ राज्य इन क्षेत्रों को आधी दरों पर विद्युत आपूर्ति करते हैं।
2. **टैक्स छूट** : इन क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करने से पांच वर्ष तक टैक्स छूट मिल जाती है।
3. **भूमि तथा जल** : रियायती दरों पर भूमि की उपलब्धता व जल की आपूर्ति न लाभ न हानि के आधार पर की जाती है।

4. **सुरक्षात्मक उपाय** : सरकार ने लघुस्तरीय उद्योगों के लिए 800 प्रकार के उत्पाद सुरक्षित रखे हैं तथा कच्चे माल व मशीनों की स्थापना में सहायता दी जाएगी।

5. **वित्तीय सहायता** : पूंजीगत संपत्ति के निर्माण में 10–15 प्रतिशत का आर्थिक सहायता। रियायती दरों पर लोन उपलब्ध कराना।

6. **बिक्री कर** : सभी संघ शासित प्रदेशों में लघु उद्योगों को बिक्री कर से मुक्त रखा गया है जबकि कुछ राज्यों में 5 वर्ष के लिए रियायत दी गई है।

7. **विपणन सहायता** : सरकार ने इनकी विपणन समस्याओं को हल करने के लिए सूचनाओं में सुधार एवं सामान के विक्रय की गारंटी देने जैसे उपाय किए।

8. **चुंगीकर** : ज्यादातर राज्यों ने चुंगीकर खत्म कर इन उद्योगों की सहायता करने का प्रयास किया है। मूल्य आधारित टैक्स (VAT) या अन्य स्थानीय करों से भी कुछ समय के लिए छूट मिलती है।

प्रश्न

1. हमारे पारंपरिक ज्ञान की गलत पेटेटिंग को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा किस रिपोजिटरी की रचना की गई?

2. भारतीय सरकार ने 1995 में अमेरिकी पेटेंट कार्यालय द्वारा घाव भरने के गुण वाले उत्पाद के लिए दिए गए पेटेंट के खिलाफ विरोध किया और जी हासिल की। वह कौन सा उत्पाद थ?

   (क) हल्दी (ख) धनिया
   (ग) ऐंटिसैपटिक क्रीम (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

3. ललित एक प्रतिभाशाली चित्रकार है। वह चाहता है कि उसके कोई भी चित्र बिन की प्रतिलिपि बिना उसकी अनुमति के न बनाई जाए। इसके लिए उसे क्या करना चाहिए?

4. कोको कोला बनाने की विधि किस प्रकार के बौधिक सम्पति अधिकार के अंतर्गत आती है?

   (क) व्यापारिक (राज) भेद (ख) पेटेंट (एकस्व)
   (ग) कॉपीराइट (प्रतिलिप्याधिकार) (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

6. ‘योग’ भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली का एक भाग है। अगर कोई अन्य देश इसका पेटेंट कराना चाहे तो क्या वह कर सकता है? क्यों?

विश्व व्यापार संगठन कौन सा समझौता बौधिक सम्पति अधिकार के महत्व और भूमिका को व्यक्त करता है?

कॉपीराइट ‘प्रतिलिपि न बनाने’ का अधिकार है। सत्य / गलत

7. निम्न में से कौन सी श्रेणी व्यापार चिन्ह के रूप में विश्व के अन्य देशों में मान्य है परन्तु भारत में नहीं?

(क) नाम पत्र (ख) चिन्ह
(ग) रंग सयोजन (घ) महक और स्वाद

8. पेटेंट केवल एक आविष्कार पर अधिकार पाने के लिए किया जा सकता है .... .के लिए नहीं.
(क) 10 साल (ख) 15 साल
(ग) 20 साल (घ) 25 साल

9. पेटेंट एक ....एकाधिकार है

10. एक अभिकल्प (डिजाइन) के संरक्षा की अवधि 5 साल है। सही / गलत

(3 / 4 Marks)

1. एक दिन श्री रवि दूबे ने अपनी पत्नी को फ्रिज साफ करते हुए देखा। वह विनेगर और पानी का प्रयोग कर रही थी परन्तु एक निशान हटने का नाम ही नहीं ले रहा था। उन्हें खाद्य ग्रेड सारकृत द्रव्य से युक्त ‘वैट (गीले)’ टिशू बनाने का विचार आया। आपके अनुसार सरकार द्वारा संचालित स्टार्ट अप भारत स्कीम उनकी कोई मदद कर पाऐगी? कैसे?

1 अंक वाले प्रश्न

1. लघु व्यवसाय के किस प्रकार में व्यवसाय चलाने के लिए पारिवारिक श्रम और स्थानीय संसाधनों का प्रयोग किया जाता है।

2. एक अतिलघु व्यावसायिक उद्यम निर्माणी क्षेत्र में कार्यरत है और इसका कुल पूंजी निवेश रु. 24 लाख है। विस्तार हेतु, यह उपक्रम अपनी निवेश सीमा को

रु. 4 लाख और अधिक बढ़ाना चाहता है। ऐसा करने पर यह लघु व्यवसाय के किस प्रकार के अंतर्गत आ जाएगा।

3. लघु व्यवसाय के उस प्रकार का नाम लिखों जिसका स्वामित्व एवं प्रबंध महिलाओं द्वारा किया जाता है और पूंजी निवेश में भी महिलाओं की भागीदारी कम–से–कम 51 प्रतिशत होती है ?
4. ऐसे दो क्षेत्रों के नाम लिखिए जिनमें लघु व्यवसाय के उपक्रमों को वैश्वीक उपक्रमों से खतरा है ?
5. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मुकाबले लघु व्यवसाय के उपक्रमों के कोई दो लाभ बताइए ?
6. सहायक लघु उद्योग इकाई तथा अति लघु इकाई में अन्तर बताइए।

Application Oriented Questions :

1. प्रीत फूड इंडस्ट्री हरियाणा के ग्रामीण इलाके में खाद्य प्रसंस्करण का एक प्लांट स्थापित करना चाहती है तथा स्थानीय स्तर पर श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण श्रम प्रधान तकनीक का प्रयोग करना चाहती है। इसके निदेशक मंडल ने रु 50 लाख प्लांट एवं मशीनरी के लिए रु. 1 करोड़ जमीन के लिए, रु. 20 लाख दैनिक खर्चों को पूरा करने में निवेश करने का निर्णय लिया।
   (अ) उस अधिनियम का नाम बताइए जो उपरोक्त इंडस्ट्री पर लागू होगा।
   (ब) यह इंडस्ट्री भाग (अ) के अधिनियम के अंतर्गत व्यवसाय के किस प्रकार में शामिल होगा।
   (स) इस प्रकार के व्यवसाय में निवेश की अधिकतम सीमा लिखो।

(संकेत :– MSMED Act, 2006 लघुस्तरीय उद्योग, रु. 5 करोड़ रोजगार सृजन, संतुलित क्षेत्रीय विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजगता।)

2. "Bio Pure Water Ltd." कम्पनी के निदेशक मंडल ने अपनी कम्पनी की पहली इकाई हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में स्थापित करने का निर्णय लिया। कम्पनी का इसके लिए रु. 3 करोड़ एवं कार्यशील पूंजी के लिए रु. 50 लाख की आवश्यकता है। कम्पनी ने अपने लाभ का 15 प्रतिशत कर्मचारियों एवं उनके परिवारों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में खर्च करने का भी निर्णय लिया।

(अ) MSMED अधिनियम 2006 के अनुसार, उपरोक्त कम्पनी लघु व्यवसाय के किस वर्ग में आती है?

(ब) कम्पनी द्वारा अपनी इकाई की स्थापना के लिए पहाड़ी इलाके को चुने जाने का कोई एक व्यावसायिक कारण भी बताएं ?

(स) आपके अनुसार, अपनी दीर्घकालीन एवं लघुकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कम्पनी के पास उपलब्ध विकल्पों को लिखो।

(संकेत :– लघुस्तरीय उद्योग)

3. सुशांत सिंह ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में B-Tech किया है, परन्तु उसे व्यवसाय का कोई भी अनुभव नहीं है। वो एक लघु व्यवसाय विनिर्माण इकाई शुरू करना चाहता है। उसने हल्के इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्माण चुना जो कि निर्माताओं और प्रतिस्थापन बाजार में विपणन किया जाएगा।

(1) उसे अपनी इकाई शुरू करने से पहले किस सरकारी संस्था के पास जाना चाहिए जहाँ उसे उपयुक्त मार्गदर्शन मिल सके?

(2) उस संस्था से उसे किस प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हो सकती है।

(संकेत :– (1) DIC व (2) DIC के कार्य)

4. भारत सरकार ने ग्रामीण, पिछड़े व पहाड़ी क्षेत्रों में लघु व्यवसाय के विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू की हैं।

(1) ऐसी किन्हीं 3 योजनाओं का वर्णन कीजिए।

(संकेत :– (1) अविकसित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए मदद प्रदान करना

(2) आत्म निर्भरता का सृजन)

5. हमारे देश में लगभग हर जिले में एक जिला औद्योगिक केन्द्र (DIC) सरकार द्वारा खोले गये हैं।

(1) इन केन्द्रों के खोलने के लिए किन्हीं 4 उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

6. ''सकल औद्योगिक मूल्य वर्धित का 40% भाग का उत्पादन करके लघु व्यावसाय देश के आर्थिक विकास में अपना मूल्यवान योगदान देते हैं। परन्तु फिर भी उन्हें हमेशा आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।'' लघु व्यवसायों में रहने वाली आर्थिक तंगी के कारणों का वर्णन कीजिए।

अध्याय–9

आंतरिक व्यापार

आंतरिक व्यापार

थोक विक्रेता

थोक विक्रेताओं की विनिर्माओ के प्रति सेवाएँ

जो ब वि स–संग्रहण

- जो – जोखिम उठाना
- ब – बडे पैमाने पर उत्पाद मे सहायक
- वि – विपणन में सहायक विशिष्ट ज्ञान वित्तीय सहायता

फुटकर विक्रेता के प्रति सेवाएँ

- विशिष्ट ज्ञान
- विपणन में सहायक
- वस्तुओं को उपलब्ध कराना
- साख प्रदान करना

फुटकार विक्रेता

उत्पादको को और थोक विक्रेताओं को सेवाएँ

- बाजार संबधी सूचनाएँ एकत्रित करना
- प्रवर्तन में सहायक
- बड़े पैमाने पर परिचालन में सहायक
- वस्तुओं के वितरण में सहायक
- व्यक्तिगत विक्रय

उपभोक्ताओं को सेवाएँ

- उत्पादों की नियमित उपलब्धता
- नए उत्पादों के संबंध में सूचना
- क्रय में सुविधा
- चयन के पर्याप्त अवसर
- बिक्री के बाद की सेवाएँ
- उधार की सुविधा

स्थान के आधार पर फुटकर व्यापार का वर्गिकरण

वर्गीकरण

भ्रमणशील फुटकर विक्रेता

- फेरी वाला
- सावधिक बाजार व्यापारी
- पटरी विक्रेता
- सस्त दर की दुकान

स्थाई दुकानदार

छोटे स्थाई फुटकर विक्रेता

- जनरल स्टोर
- विशिष्टिकृत भंडार
- गली में स्टाल
- पुरानी वस्तुओं की दुकान

बडे पैमाने के भंडार गृह

- विभागीय भंडार
- श्रृंखला भंडार
- डाक आदेश भंडार

जी.एस.टी तथ्य

- एकल कर
- मूल्यों में कम होने की संभावना
- गंतव्य आधारित कर
- मुनाफाखोरी के खिलाफ दुकान एक कदम
- व्यापारियों को ळैज के अंतर्गत पंजीकरण करना होगा।

आंतरिक व्यापार में प्रयोग होने वाली मुख्य प्रपत्र:

- बीजक
- प्रोफार्मा बीजक
- डेबिट नोट
- क्रेडिट नोट
- वाहन रसीद
- रेलवे रसीद

व्यापारिक मदें:

- सुपुर्दगी पर नगदी
- जहाज पर मूल्य
- लागत बीमा व भाड़ा

व्यापार – लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से वस्तुओं के क्रय–विक्रय की प्रक्रिया को व्यापार कहा जाता है।

क्रेता और विक्रेता की भौगोलिक स्थिति के अनुसार, व्यापार को दो भागों में बाँटा जा सकता है :–

(i) आंतरिक व्यापार (ii) बाह्य व्यापार

आंतरिक व्यापार – जब वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय एक ही देश की सीमाओं के अंदर किया जाता है तो इसे आंतरिक व्यापार कहते हैं।

आंतरिक व्यापार की विशेषताएं –

- देश की सीमाओं के अंदर व्यापार
- कोई सीमा शुल्क नहीं लगाया जाता
- वस्तुओं का स्वतंत्र आना जाना
- देश की सरकारी मुद्रा में भुगतान

आंतरिक व्यापार को दो भागों में बांटा जा सकता है।

(क) थोक व्यापार (ख) फुटकर व्यापार

थोक व्यापार :– पुनः विक्रय अथवा मध्यवर्ती प्रयोग के लिए बड़ी मात्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय–विक्रय को थोक व्यापार कहा जाता है। थोक व्यापारी निर्माताओं एवं फुटकर व्यापारियों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

थोक व्यापार की विशेषताएं :–

- निर्माताओं से बड़ी मात्रा में वस्तुओं का क्रय
- विशेष वस्तुओं में व्यापार
- वस्तुओं को छोटी–छोटी मात्रा में फुटकर व्यापारी को बेचना
- निर्माताओं एवं फुटकर व्यापारियों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी
- वे विभिन्न गतिविधियों जैसे उत्पादों की ग्रेडिंग, छोटे ढेरों में पैंकिग, परिवहन, विज्ञापन, बाजार की जानकारी एकत्र करते है।

थोक व्यापारियों की निर्माताओं को सेवाएं:–

1. थोक व्यापारी, निर्माताओं से भारी मात्रा में वस्तुएं खरीदते हैं जिसके कारण निर्माता बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं जिससे उन्हें बड़े पैमाने के लाभ प्राप्त होते हैं।
2. थोक व्यापारी वस्तुओं का क्रय–विक्रय अपने नाम से करते हैं तथा विभिन्न जोखिम जैसे कीमतों में कमी, चोरी, खराब होने की सम्भावना आदि वहन करता है।
3. थोक व्यापारी निर्माताओं से नकद क्रय करते हैं अतः वह उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
4. थोक व्यापारी निर्माताओं को ग्राहकों की रुचि बाजार की स्थिति आदि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं।
5. थोक व्यापारी, फुटकर व्यापारियों को वस्तुएं बेचते हैं जो उन्हें उपभोक्ताओं को बेचेते हैं अतः वे निर्माताओं को विपणन क्रियाओं के भार से मुक्त कर देते हैं। यह उत्पादकों को उत्पादन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने से सक्षम बनाता है।
6. थोक व्यापारी माल को बड़ी मात्रा में खरीदकर अपने गोदामों में रख लेते हैं अतः निर्माताओं को संग्रहण की आवश्यकता नहीं पड़ती।
7. थोक विक्रेता माल का उत्पादन होते ही उसे खरीद लेते हैं, इस प्रकार थोक विक्रेता उत्पादन की निरंतरता में सहायक होता है।

थोक व्यापारियों की फुटकर व्यापारियों को सेवाएं

1. थोक व्यापारी, फुटकर व्यापारियों को विभिन्न उत्पादकों की वस्तुओं को उपलब्ध कराते हैं जो उन्हें उपभोक्ताओं को बेचते हैं।
2. थोक व्यापारी विज्ञापन तथा अन्य विक्रय संवर्धन क्रियाओं के माध्यम से उपभोक्ताओं को वस्तु क्रय करने के लिए प्रेरित करते हैं अतः वे फुटकर व्यापारियों को विपणन में सहायता करते हैं।
3. थोक व्यापारी द्वारा फुटकर व्यापारियों को उधार की सुविधाएं दी जाती हैं।

4. थोक व्यापारी फुटकर व्यापारियों को छोटी–छोटी मात्राओं में वस्तुएं बेचते हैं अतः फुटकर व्यापारियों को मूल्य में गिरावट, संग्रहण, छीजन आदि से होने वाला नुकसान का जोखिम नहीं उठाना पड़ता।
5. थोक व्यापारी अपने विशिष्ट ज्ञान के द्वारा फुटकर व्यापारियों को नए उत्पादों, उनकी उपयोगिता, गुणवत्ता, मूल्य आदि सम्बन्धी सूचनाएं प्रदान करते हैं।

फुटकर व्यापार

थोक विक्रेताओं से बड़ी मात्रा में माल का क्रय कर के उन्हें अंतिम उपभोक्ताओं को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बेचने को फुटकर व्यापार कहा जाता है।

फुटकर व्यापार की विशेषताएं

- थोक विक्रेताओं से विभिन्न वस्तुएँ क्रय करना
- अनेक वस्तुओं में व्यापार
- थोड़ी–थोड़ी मात्रा में उपभोक्ताओं को वस्तुएँ बेचना
- मध्यस्थों की श्रृंखला की अन्तिम कड़ी

फुटकर व्यापारियों की उत्पादकों एवं थोक विक्रेताओं को सेवाएं

1. फुटकर व्यापारी, उत्पादकों एवं थोक विक्रेताओं के उत्पादकों को अंतिम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराते हैं।
2. फुटकर व्यापारी, उत्पादकों एवं थोक विक्रेताओं को ग्राहक की रुचि, पसंद एवं रूझानों से अवगत कराते हैं।
3. फुटकर व्यापारी उपभोक्ताओं को छोटी–छोटी मात्राओं में माल बेचते हैं जिससे निर्माता एवं थोक विक्रेता व्यक्तिगत विक्रय के भार से मुक्त हो जाते हैं तथा अन्य महत्वपूर्ण क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।
4. फूटकर व्यापारी विभिन्न विधियों का प्रयोग करके वस्तुओं के संवर्धन में सहायता करते हैं।
5. फुटकर व्यापारी, उत्पादकों को बड़े पैमाने पर उत्पादन करने में सहायता करते हैं जिससे उन्हें बड़े पैमाने की बचत प्राप्त हो सके।

फुटकर व्यापारियों की उपभोक्ताओं को सेवाएं

1. फुटकर व्यापारी, उपभोक्ताओं को विभिन्न वस्तुएं नियमित रूप से उपलब्ध कराते हैं।
2. उनके द्वारा उपभोक्ताओं को नये उत्पादों की सूचना दी जाती है।
3. उनके द्वारा विभिन्न किस्म की वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती है जिससे ग्राहकों को चयन के अधिक अवसर मिलते हैं।
4. इनके द्वारा ग्राहकों को बिक्री के बाद की विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं जैसे घर पर सुपुर्दगी, ग्राहकों की ओर ध्यान देना आदि।
5. इनके द्वारा ग्राहकों को उधार की सुविधा भी दी जाती है जिससे उपभोक्ता अधिक खरीदारी करके अपने जीवन–स्तर को ऊंचा उठा सके।
6. ये अधिकांश आवासीय क्षेत्रों के समीप होते हैं जिससे ग्राहकों को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को खरीदना सुविधाजनक हो जाता है।

प्रश्नोत्तर

1. पवन, दीपक से बड़ी मात्रा मे चावल खरीदता है और उन्हें थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दुकानदारों को बेचता है। बताइए पवन किस प्रकार का व्यापारी है?
2. व्यावसायिक मध्यस्थों की अन्तिम कड़ी कौन है?
3. थोक विक्रेताओं द्वारा ऐसे कौन से कार्य किए जाते हैं जोकि अन्यथा उत्पादकों या फुटकर व्यापारियों को करने पड़ते?
4. अतुल की एक छोटी सी फूटकर दुकान है लेकिन उसके पास सभी प्रकार के सामान का स्टॉक है जो इस इलाके के लोग नियमित रूप से उपयोग करते है। वह अपने ग्राहक को होम डिलीवरी सेवाएं भी प्रदान करते हैं। अतुल द्वारा अपने ग्राहकों को कौन–सी सेवाएं प्रदान की जाती है?

वस्तु एवं सेवा कर (GST)

''भारत सरकार एक राष्ट्र तथा एक कर'' के सिद्वान्त का अनुसरण करते हुए समरूप–बाजार चाह रही है। वस्तुओं और सेवाओं के सहज प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने 1 जुलाई 2017 से GST लागू किया। इसका उद्देश्य उत्पादकों, निवेशकों और ग्राहकों के जीवन को सरल बनाना है। इसे भारतीय कर

इतिहास में एक क्रान्तिकारी कर सुधार माना गया है।

GST एक गंतव्य आधारित एकलकर प्रणाली है जो उत्पादकों से उपभोक्ताओं तक पूर्ति की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं पर लगने वाले एक कर पर आधारित है और केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बहुत से अप्रत्यक्ष करों को प्रतिस्थापित करता है। इस प्रकार देश एक समरूप बाजार की तरफ परिवर्तित है।

GST एक ऐसी प्रणाली है जो अप्रत्यक्ष कर को राष्ट्रीय स्तर पर समरूप तथा आसान बनाती है। इसको इसलिए अस्तित्व में लाया गया ताकि अंतिम उपभोक्ता को कर के उपर कर का भुगतान ना करना पड़े।

GST में प्रयोग होने वाली विभिन्न मदें

1. आंतरिक पूर्ति (Inward supply)– वे वस्तुएँ तथा सेवाएँ जो पूर्तिकर्ता उत्पादकों के लिए भेजते हैं।
2. बाह्य पूर्ति (Outward Supply)– वे वस्तुएँ तथा सेवाएँ जो पूर्तिकर्ता क्रेता को सप्लाई करते हैं।
3. आगत कर (Input Tax)– यह वह कर है जो किसी व्यक्ति या व्यावसायिक ईकाई द्वारा आंतरिक पूर्ति पर दिया जाता है
4. उत्पादन कर (Output Tax)– यह वह कर है जो व्यक्ति या व्यावसायिक ईकाई द्वारा बाह्य पूर्ति पर भुगतान किया जाता है।
5. आगत कर साख (ITC) यह वह राशी है जिसके द्वारा एक पूर्तिकर्ता उत्पादन कर को कम करता है। यह वह राशी है जो पूर्तिकर्ता द्वारा आगत कर के रूप में भुगतान की जा चुकी है।

   शुद्ध देयकर = उत्पादन कर – आगत कर साख
6. राज्यान्तरिक पूर्ति – जब मॉल एवं सेवाओं की पूर्ति एक राज्य से दूसरे राज्य में की जाती हो तो इसे अन्तर्राज्यीय पूर्ति कहेंगे।
7. अन्तर्राज्यीय पूर्ति – जब वस्तुओं व सेवाओं की पूर्ति एक राज्य से दूसरे राज्य में की जाती हो तो इसे अन्तर्राज्यीय पूर्ति कहेंगे।
8. केन्द्रीय GST – कुल GST का जो हिस्सा केन्द्र सरकार को मिलता है उसे

CGST कहते हैं। यह राज्यान्तरिक पूर्तिकर्ताओं द्वारा एकत्रित किया जाता है। कुल GST का 50% हिस्सा केन्द्रिय GST का होता है।

9. राज्य GST (SGST)– कुल GST का जो हिस्सा राज्य सरकार को मिलता है उसे SGST कहतें है। यह राज्यान्तरिक पूर्तिकर्ताओं द्वारा एकत्रित किया जाता है कुल GST का 50% हिस्सा राज्य GST का होता है।

10. एकीकृत GST (IGST)– अन्तर्राज्यीय पूर्ति पर लगवे वाला कर एकीकृत GST (IGST) है। इस कर का 50% हिस्सा राज्य का तथा 50% हिस्सा केन्द्र का है।

11. मूल्य वृद्वि– यह मूल्य वृद्वि पर लगाया जाने वाला कर है परन्तु कर पर कर नहीं है। अन्य शब्दों में, क्रेता वस्तु की कीमत (लाभ सहित) पर कर भुगतान करेगा। कर की गणना करते वक्त आगत कर को वास्तविक मूल्य तथा लाभ में नहीं जोड़ा जाएगा।

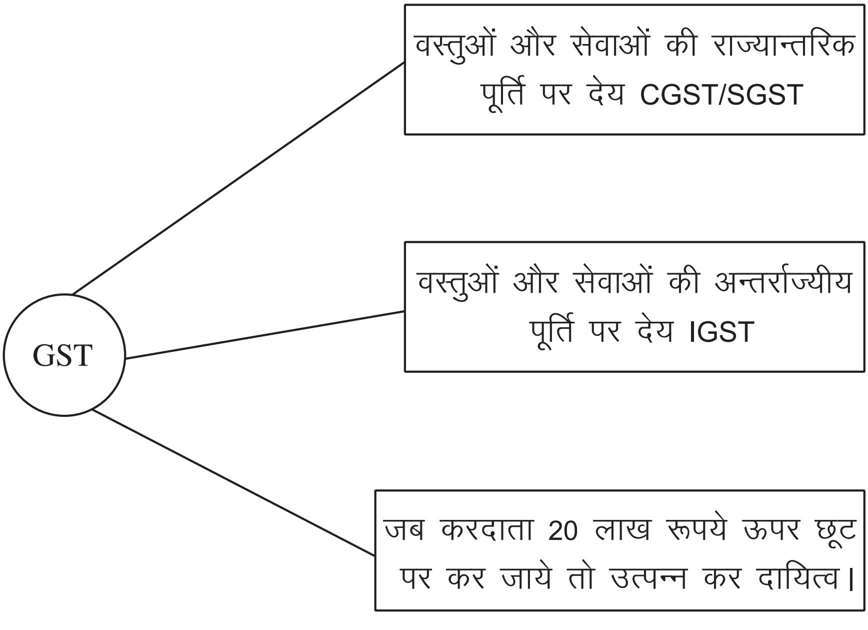
वस्तुओं और सेवाओं की राज्यान्तरिक पूर्ति पर देय CGST/SGST
वस्तुओं और सेवाओं की अन्तर्राज्यीय पूर्ति पर देय IGST
GST
जब करदाता 20 लाख रूपये ऊपर छूट पर कर जाये तो उत्पन्न कर दायित्व।

GST **की विशेषताएँ**

(1) GST का पूरे देश में प्रादेशिक फैलाव है जिसमें जम्मू एवं कश्मीर भी शामिल है।

(2) GST वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति पर लागू होता है। बिक्री कर तथा

उत्पादकों पर कर जैसी अवधारणा को हटाकर GST लगाया गया।

(3) यह उद्गम आधारित कर की जगह गंतव्य आधारित कर सिद्वान्त पर आधारित है।

(4) वस्तुओं और सेवाओं का आयात अन्तर्राज्यीय पूर्ति मानी जाती है और कस्टम ड्यूटी के अतिरिक्त IGST के दायरे में जाएगी।

(5) GST परिषद के तत्ववधान में केन्द्र तथा राज्य सरकार की आपसी सहमति से CGST, SGST तथा IGST की दरें निर्धारित होती हैं।

(6) चार टैक्स स्लैब हैं–

5%, 12%, 18%, तथा 28% सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए।

(7) निर्यात तथा SEZ को पूर्ति पर शून्य दर है।

(8) कर दाता द्वारा देय कर को भुगतान करने के विभिन्न तरीके हैं Internet Banking, Debit Card, Credit Card, NEFT, RTGS.

फुटकर व्यापार के प्रकार

व्यापार के निशिचित स्थान के आधार पर फुटकर व्यापारियों को निम्न दो प्रकारों में बांटा जाता है। :–

(क) भ्रमणशील फुटकर विक्रेता

(ख) स्थायी दुकानदार

भ्रमणशील फुटकर विक्रेता

ये वे फुटकर व्यापारी है जो किसी स्थायी स्थान से व्यापार नहीं करते हैं। यह अपने सामान के साथ ग्राहकों की तलाश में गली–गली एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। इनकी निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं –

1. ये छोटे व्यापारी होते हैं जिनके पास सीमित साधन होते हैं।
2. इनके द्वारा प्रतिदिन उपयोग में आने वाली उपभोक्ता वस्तुओं जैसे फल, सब्जियां आदि का व्यापार किया जाता है।
3. इनके द्वारा ग्राहकों को उनके घर पर वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती है।

4. इनके व्यापार का नियत स्थान नहीं होता है इसलिए यह माल का स्टॉक मुख्यतः घर में रखते हैं।

भारत में निम्नलिखित भ्रमणशील फुटकर व्यापारी होते हैं

(क) **फेरी वाले** : ये छोटे व्यापारी होते हैं जो वस्तुओं को साईकिल, हाथ–ठेली, साईकिल रिक्शा या अपने सिर पर रखकर तथा जगह–जगह घूमकर, ग्राहकों के घर पर जाकर माल का विक्रय करते हैं। इनके द्वारा कम मूल्य वस्तुएं जैसे – खिलौने, फल–सब्जियां आदि बेची जाती है। फेरी वालों का मुख्य लाभ उपभोक्ताओं के लिए सुविधाजनक होना है। फेरी वालों का दोश यह है कि जो उत्पाद यह बेचते है उनकी कीमत व गुणवत्ता वि वसनीय नहीं होती।

(ख) **बाजार व्यापारी** : ये छोटे फुटकर व्यापारी होते हैं जो विभिन्न स्थानों पर निश्चित दिन को दुकान लगाते हैं जैसे प्रति मंगलवार या शनिवार आदि। इनके द्वारा एक ही प्रकार का सामान बेचा जाता है जैसे – खिलौने, क्रॉकरी का सामान आदि। यह मुख्यतः कम आय वाले ग्राहकों के लिए माल बेचते हैं।

(ग) **पटरी विक्रेता** : ये छोटे विक्रेता होते हैं जो ऐसे स्थानों पर पाए जाते हैं जहां लोगों का भारी आवागमन रहता है जैसे बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि। इनके द्वारा साधारण रूप में उपयोग में आने वाली वस्तुओं को बेचा जाता है जैसे – स्टेशनरी का सामान, समाचार–पत्र आदि। ये बाजार व्यापारी इस रूप में अलग है क्योंकि ये अपने व्यापार के स्थान को बार–बार नहीं बदलते।

(घ) **सस्ते दर की दुकान** : ये छोटे फुटकर विक्रेता होते हैं जिनकी स्वतंत्र अस्थायी दुकान होती है इनके द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं में व्यापार किया जाता है तथा यह व्यापार संभावनाओं के आधार पर अपना क्षेत्र बदलते हैं परन्तु वे फेरी वालों और बाजार व्यापारी के मुकाबले वे प्रायः अपना स्थान नहीं बदलते।

स्थायी फुटकर दुकानदार :

ये वह फुटकर विक्रेता होते हैं जिनके विक्रय के लिए स्थायी रूप से संस्थान होते हैं।

स्थायी फुटकर विक्रेता की विशेषताएं :

- अधिक संसाधन
- विभिन्न वस्तुओं का व्यापार
- ग्राहकों में अधिक साख
- ग्राहकों को अनेकों सेवाएँ देना जैसे गारंटी प्रदान करना, मरम्मत, उधार बिक्री आदि।
- उपभोक्ताओं के मन में इन स्थायी दुकानों के प्रति अधिक वि वसनीयता होती है क्योंकि उनके पास एक स्थायी दुकान होती है।

आकार के आधार पर स्थायी दुकानदारों को दो प्रकार में बांटा जाता है :–

(क) छोटे फुटकर विक्रेता

(ख) बड़े स्थायी फुटकर विक्रेता

(क) छोटे फुटकर विक्रेता

इनके अंतर्गत निम्नलिखित फुटकर व्यापारी आते हैं :–

1. **जनरल स्टोर** : यह स्थानीय बाजार या आवासीय क्षेत्रों में स्थित होते हैं। ये ऐसे सामान का स्टॉक रखते हैं जो उपभोक्ताओं के प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यह स्टोर लम्बे समय तक खुले रहते हैं। वे प्रायः अपने कुछ जनरल स्टोर के लाभ निम्नलिखित है :–

   (i) ये उपभोक्ताओं को सुविधाजनक की सुविधा प्रदान करते है।

   (ii)ये अपने नियमित उपभोक्ताओं को साख सुविधा प्रदान करते है।

   (iii) ये स्टोर इसलिए सफल होते है क्योंकि ग्राहकों के बीच इनका अच्छा तालमेल होता है।

2. **विशिष्टकृत भंडार** : जैसा कि नाम से पता चलता है ये स्टोर उत्पादों की एक विशिष्ट लाइन की बिक्री में विशेषज्ञ है। उदाहरण के लिए, खिलौने व उपहार की दुकानें, स्कूल वर्दी की दुकानें, किताबों की दुकानें आदि।

   ये भंडार प्रायः केन्द्रीय स्थल पर स्थित होते है जहाँ बड़ी संख्या में ग्राहक आकर्शित किए जा सकते है। वे बेचने के लिए 'उत्पाद–लाइन' के भीतर ग्राहकों को व्यापक विकल्प प्रदान करते हैं।

3. **गली में स्टॉल** : ये विक्रेता गली के एक कोने मुख्यतः मुहाने पर होते हैं जहाँ लोगों की भीड़ अधिक होती है। इस प्रकार वो आते–जाते उपभोक्ताओं को आकर्शित कर पाते है।

   ये सस्ती वस्तुओं जैसे– खिलौने, सॉफ्ट ड्रिंक, चाय इत्यादि बेचते है। इनके आवरण में सीमित क्षेत्र होता है। ये अपना सामान स्थानीय आपूर्तिकत्ताओं और थोक व्यापारियों से खरीदते हैं।

4. **पुरानी वस्तुओं की दुकानें** : जैसा कि नाम से विदित है ये दुकानें पहले से प्रयोग की हुई एवं पुरानी वस्तुएँ बेचती है। उदाहरण के लिए, किताबें, वाहन, फर्नीचर और अन्य घरेलु वस्तुएँ।

   अधिकतर कम आय वर्ग के लोग इन दुकानों से सामान खरीदते हैं क्योंकि यह सामान नए के मुकाबले सस्ता होता है। कभी–कभी ऐसी दुकानें, दुर्लभ और प्राचीन मूल्य के सामान का स्टॉक रखते है जोकि अधिक कीमत पर बिकता है। ये दुकानें प्राय स्टॉल या अस्थायी संरचना के रूप में गली के कोने या मुहाने पर स्थित होते है।

(ख) बड़े स्थायी फुटकर दुकानदार

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित व्यापारियों को सम्मिलित किया है :–

1. **विभागीय भंडार** : एक विभागीय भंडार एक बड़ी इकाई होती है जो विभिन्न प्रकार के उत्पादों को एक ही छत के नीचे विभिन्न विभागों में बांट कर बिक्री करती है। इनके द्वारा ग्राहकों की लगभग सभी आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश की जाती है। इनकी निम्नलिखित विशेषताएं होती है :–

   (i) ये शहर के केन्द्र में स्थित होते हैं ताकि अधिक ग्राहकों की मांग की सन्तुष्टि कर सकें।

   (ii) इनके द्वारा ग्राहकों को विभिन्न सुविधाएं जैसे जलपानगृह, विश्रामगृह, टेलीफोन बुथ आदि सुविधाएं प्रदान की जाती है।

   (iii) इन्हें संयुक्त पूंजी कम्पनी के रूप में स्थापित किया जाता है तथा इनका प्रबंध निर्देशक मंडल द्वारा किया जाता है।

   (iv) इनके द्वारा माल को सीधे उत्पादक से क्रय किया जाता है तथा ग्राहकों को बेचा जाता है। जिसके कारण उनके बीच अनावश्यक

मध्यस्थ उत्पन्न नहीं होते।

(v) इनमें माल का क्रय केन्द्रीय व्यवस्था से होते है जबकि विक्रय विभिन्न विभागों के माध्यम से किया जाता है।

(vi) ये उच्च श्रेणी के ग्राहकों को अधिकतम सेवाएँ प्रदान करते हैं जिनके लिए मूल्य द्वितीय महत्व की बात होती है।

विभागीय भंडार के लाभ

1. ये केन्द्रीय स्थलों पर स्थित होते हैं जिसके कारण बड़ी संख्या में ग्राहक आकर्षित होते हैं।
2. इनके द्वारा एक ही छत के नीचे विभिन्न वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती है जिससे ग्राहकों की अधिकतम मांगों को सन्तुष्ट किया जा सके।
3. इनके द्वारा ग्राहकों को विभिन्न आकर्षक सेवाएं उपलब्ध कराई जाती है जैसे जलपानगृह, विश्रामगृह, टेलीफोन आदि।
4. इनके द्वारा विज्ञापनों आदि पर काफी खर्च किया जा सकता है जिससे इनकी बिक्री में वृद्धि हो सकती है।
5. ये बड़े पैमाने पर वस्तुओं को बेचने के लिए उत्पादक से क्रय करते हैं जिससे इन्हें बड़े पैमाने पर परिचालन के लाभ मिलते हैं।

विभागीय भंडार की सीमाएं

1. इनका आकार बहुत बड़ा होता है। परिणाम स्वरूप ग्राहकों पर व्यक्तिगत ध्यान देना संभव नहीं होता।
2. इनके द्वारा अनेक आकर्षक सेवाएं उपलब्ध कराई जाती है जिसके कारण इनकी परिचालन लागत काफी अधिक होती है।
3. ऊंची परिचालन लागत एवं बड़े पैमाने पर कार्य करने के कारण इनकी हानि की संभावना अधिक होती है।
4. ये केन्द्रीय स्थलों पर स्थित होते हैं अतः तुरन्त आवश्यकता पड़ने पर किसी वस्तु को खरीदना आसान नहीं होता।

श्रृंखला भंडार अथवा बहुसंख्यक दुकानें

इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक जैसी दिखाई देने वाली कई दुकानें देश के विभिन्न भागों में विभिन्न स्थानों पर खोली जाती है जिनको एक ही संगठन चलाता है तथा जिन पर मानकीय एवं ब्रांड की वस्तुएं बेची जाती है। जैसे बाटा, रेमण्ड्स आदि के शोरूम।

श्रृंखला भंडार की विशेषताएँ

- फुटकर इकाइयों के लिए उत्पादन / क्रय करना मुख्यालय में केन्द्रित
- मुख्यालय द्वारा सभी शाखाओं का नियंत्रण
- वस्तुओं का एक ही मूल्य व विक्रय नकद
- प्रधान कार्यालय निरोक्षकों की नियुक्ति करता है।

श्रृंखला भंडार के लाभ

1. केन्द्रीयकृत क्रय अथवा उत्पादन के कारण इन्हें बड़े पैमाने की बचत के लाभ प्राप्त होते हैं।
2. इनके द्वारा सीधे ग्राहकों को वस्तुएं बेची जाती है अतः वस्तुओं की बिक्री में मध्यस्थों को समाप्त कर दिया जाता है।
3. इनके द्वारा नकद विक्रय किया जाता है अतः अशोध्य ऋण की सम्भावना नहीं होती है।
4. यदि वस्तुओं की मांग एक स्थान पर नहीं होती तो उन्हें उस स्थान पर भेज दिया जाता है जहां उनकी मांग होती है।
5. एक दुकान की हानि की पूर्ति दूसरी दुकानों के लाभ से हो जाती है अतः संगठन का कुल जोखिम कम हो जाता है।
6. क्रय का केन्द्रीकरण, मध्यस्थों की समाप्ति, बड़े पैमाने पर बिक्री आदि के कारण परिचालन लागत कम होती है।

श्रृंखला भंडार की हानियां

1. इन दुकानों द्वारा सीमित वस्तुओं में व्यापार किया जाता है। अतः उपभोक्ताओं को चयन के सीमित अवसर ही प्राप्त होते हैं।
2. इनके अन्तर्गत कार्यरत कर्मचारियों को प्रधान कार्यालय से प्राप्त आदेशों का पालन करना होता है जिसे उनकी पहल क्षमता समाप्त हो जाती है।
3. प्रेरणा तथा पहल क्षमता के अभाद में कर्मचारियों में उदासीनता आ जाती है

	आधार	विभागीय भंडार	बहुसंख्यक दुकान
1	स्थिति	यह शहर के किसी केन्द्रिय स्थान पर स्थित होते है।	यह दुकाने अलग–अलग स्थानों पर स्थित होती हैं जहाँ पर ग्राहकों की संख्या अधिक हो।
2	उत्पादों की श्रेणी	यहाँ अलग–अलग उत्पादों का विक्रय होता है।	यह किसी एक वस्तु की विभिन्न प्रकारों की पूर्ति करता है।
3	प्रदत सेवाएँ	यह अपने ग्राहकों की अधिकतम सेवाएँ प्रदान करने पर जोर देता है।	यह सीमित सेवाएँ ही प्रदान करती है जैसे गारंटी और मरम्मत (वस्तु की)
4	मूल्य	यहाँ सभी विभागों में मूल्य नीति समान नहीं होती।	यह निर्धरित मूल्यों पर माल बेचती हैं तथा उनकी सभी दुकानों पर एक ही मूल्य रहता है।
5	ग्राहकों का वर्ग	यह ज्यादातर उच्च आय वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं जो कम मूल्य से अधिक सेवाओं की अपेक्षा करते हैं	यह ग्राहकों के विभिन्न वर्गों की आवश्यकतो की पूर्ति करते हैं जिनमें कम आय वर्ग भी है।
6	उधार की सुविधा	यह कुछ नियमित ग्राहकों को उधार की सुविधा देते हैं।	यहाँ सभी बिक्री पूर्णतः नकद से होती है
7	लोचपूर्ण	यहाँ उत्पादन विपणन के लिए अधिक लोचशीलता उपलब्ध होती है	यहाँ लचीलापन कम होता है।

जिससे व्यक्तिगत सेवा का अभाव हो जाता है।

4. इन दुकानों में बेची जाने वाली वस्तुओं की मांग में यदि कमी आ जाए तो संगठन को भारी हानि हो सकती है क्योंकि केन्द्रीय भंडार में बड़ी मात्रा में बिना बिका माल बच जाता है।

प्रश्नोत्तर

1. फुटकर व्यापार के उस प्रारूप को पहचानिये जिसमें एक वस्तु की अनेक दुकानें खोली जाती है और सभी पर वस्तु का मूल्य समान होता है।

2. फरीदाबाद के बाटा शोरूम में रोबिन को अपने भाई के लिए एक जोड़ी जूता पसंद आता है। परन्तु उस दुकान पर उसके भाई के नाप का जूता नहीं है। उसी वक्त दुकान का मैने जर पास के दूसरे बाटा शोरूम में फोन करता है व राबिन को आश्वस्त करता है कि 1 घंटे में आकर वो जूता ले जाए। उपरोक्त कथन में श्रृंखलाबद्ध श्रेणी की किस विशेषता को दर्शाया गया है?

3. पटरी विक्रेता किस प्रकार बाजार विक्रेता से भिन्न है?

4. (i) पुरानी वस्तुओं की दुकानों द्वारा किस प्रकार की वस्तुओं का विक्रय किया जाता है?

   (ii) पुरानी वस्तुओं की दुकानें किस प्रकार के उपभोक्ताओं की आव   यकताओं की पूर्ति करती है?

कुछ याद रखने योग्य बिन्दु

1. थोक विक्रेता, उत्पादक और फुटकर विक्रेता के बीच की कडी होता है।

2. फुटकार विक्रेता वह व्यापारी होता है जो उपभोक्ता से सीधा व्यवहार करता है।

3. फुटकर व्यापार को वर्गीकृत किया जा सकता है– (i)फुटकर विक्रेता भ्रमणशील (ii) स्थायी दुकानदार

4. विभागीय भंडार वह बड़ी इकाई है जो विभिन्न प्रकार के उत्पादों को एक ही छत के नीचे विभिन्न विभागों में बाँट कर बिक्री करती है।

5. विभागीय भंडार की विशेषताएँ:

   – शहर के केन्द्र में स्थित

   – ग्राहकों को विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करता है

– संयुक्त पूँजी कम्पनी के रुप मे स्थापित

– फुटकर व्यापार और भंडारण के कार्य को मिलाकर करते हैं।

– उच्च श्रेणी के ग्राहकों, जिनके लिए उत्पाद मूल्य से अधिक सेवाएँ आकर्षक हैं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

6. श्रृंखला भंडार एक ऐसी व्यसस्था के अंतर्गत आती हैं जिसमे एक जैसी दिखने वाली कई दुकाने देश के विभिन्न भागों में विभिन्न स्थानों पर खोली जाती है। इनको एक ही संगठन चलाता है तथा इन पर मानकीय एवं ब्रांड की वस्तुएँ बेची जाती हैं। उदाहरणः बाटा विशेषताएँ (पूर्व पेज पर दी गई है)

बहुविल्पीय प्रश्न

1. ....समय उपयोगिता और स्थान उपयोगिता दोनों का सृजन करते है।

2. बिक्री की पद्धतियों के आधार पर फुटकर व्यापार को निम्न दिए गए किस प्रकार में वर्गीकृत किया जाता है–

(क) बड़े / मध्यम / छोटे फुटकर व्यापारी

(ख) एकांकी व्यापार / साझेदारी फर्म / सहकारी स्टोर / कंपनी

(ग) विशिष्ट दुकानें / विभागीय भंडार / सुपार बाजार

(घ) उपरोक्त मे से कोई नही

3. रामलाल अपनी सब्जियाँ साइकिल रिक्शा द्वारा जगह–जगह जाकर बेचता है। वह अपने ग्राहकों को उनके घर के पास जाकर यह सुविधा है। वह किस प्रकार का भ्रमणशील फुटकर विक्रेत है?

(क) सावधिक बाजार व्यापारी (ख) फेरी वाला

(ग) पटरी विक्रेता (घ) सस्ते दर की दुकान

4. इफतार सिद्दकी की नई सड़क, दिल्ली में पुरानी किताबों की दुकान है। वह किस प्रकार का फुटकर व्यापारी है–

(क) जनरल स्टोर (ख) विशिष्टीकृत भंडार

(ग) गली में स्टाल (घ) पुरानी वस्तुओं की दुकान

5. जॉन जेकब की दक्षिण दिल्ली में उपभोक्ता इलैक्ट्रोनिक उत्पादों की दुकान है। वह किस प्रकार का फुटकर व्यापार कर रहें हैं?

(क) जनरल स्टोर (ख) विशिष्टीकृत भंडार

(ग) गली में स्टाल (घ) पुरानी वस्तुओं की दुकान

6. मैक डॉनल्ड किस प्रकार के फुटकर व्यापार के अंतर्गत आता है?

(क) विभागीय भंडार (ख) श्रृंखला भंडार

(ग) विशष्टीकृत भंडार (घ) जनरल स्टोर

7. ''एक दुकान की हानि की पूर्ति दूसरी दुकानों के लाभ से हो जाती है जिससे संगठन का कुल जोखिम कम हो जाता है।''

यहाँ किस प्रकार के फुटकर व्यापार के लाभ के बारे में लिखा गया है?

8. किस कर को 'एक राष्ट्र और एक कर'' के सिद्धान्त पर निर्धारित किया गया है?

(क) बिक्री कर (ख) GST

(ग) कस्टम ड्यूटी (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

9. जी.एस.टी से .... अप्रत्यक्ष करों और.................. उपकारों का परिस्थापन किया गया है।

10. बिग बाजार स्थाई फुटकर व्यापार का कौन सा प्रकार है

(क) विशिष्टीकृत भंडार (ख) विभागीय भंडार

(ग) श्रृंखला भंडार (घ) जनरल स्टोर

11. जी.एस.टी. एक .... आधारित एकल कर है जो निर्माणकर्ताओं से लेकर उपभोक्ताओं तक वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति पर लागू होता है।

12. वह कौन सा फुटकर व्यापार है जिसमे क्रेता और विक्रेता के बीच कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं होता ?

(क) डाक आदेश व्यवसाय (ख) श्रृंखला भंडार

(ग) विभागीय भंडार (घ) उपरोक्त मे से कोई नहीं

13. जब वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय देश की सीमाओं के अंदर किया जाता है ता उसे अंतराष्ट्रीय व्यापार कहते है। (सही / गलत)

उत्तर

1. थोक विक्रेता
2. ग
3. (ख)
4. (घ)
5. (ख)
6. (ख)
7. श्रृंखला भंडार
8. (ख)
9. 17, 23
10. (ख)
11. गंतव्य
12. (क)
13. गलत

अतिलघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक वाले)

1. व्यापार की परिभाषा दीजिए?
2. व्यापार की मुख्य दो श्रेणियां बताइए?
3. कौन–सी दुकानें विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं का व्यापार करती है?
4. श्रृंखला स्टोर का एक उदाहरण दीजिए?
5. फुटकर विक्रेताओं द्वारा विक्रेताओं और निर्माताओं के लिए किस प्रकार की बाजार जानकारी एकत्र की जाती है?
6. जी.एस.टी. को गंतव्य आधारित कर क्यों कहा जाता है?
7. जी.एस.टी. की विभिन्न टैक्स स्लैब कौन–कौन सी है?
8. किस प्रकार का फुटकर व्यापार सामान्यः एक संयुक्त स्टॉक कम्पनी के रू में बनाया जाता है?
9. बहुसंख्यक दुकानों में अशोध्य ऋणों के कारण हानि क्यों नहीं होती?
10. विभागीय भण्डार अपने उपभोक्ताओं को कौन–सी सेवाएं प्रदान करते है?
11. लाल सब्जियों को अपने हाथ–ठेले पर लादकर बेचता है। वह किस तरह का भ्रमणीय फुटकर विक्रेता है?
12. रोहित रेलवे स्टेशन के पास एक व्यस्त सड़क के कोने पर विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं को बेचता है। वह किस प्रकार का विक्रेता है?
13. किन्हीं दो फुटकर व्यापार करने वाली इकाईयों के नाम बताइए।
14. थोक व्यापारी तथा फुटकर व्यापारी के मध्य अन्तर स्पष्ट केवल एक बिन्दु से करें।
15. उस कर का नाम बताइए जो वस्तुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में ले जाने पर लगाया जाता है?

लघु उत्तर वाले प्रश्न (3–4 अंकों वाले)

1. थोक व्यापार की मुख्य विशेषताएं बताइए?
2. फुटकर व्यापारी द्वारा ग्राहकों को क्या सेवाएं प्रदान की जाती है?
3. बहुश्रृंखला दुकानों और विभागीय भंडार में अंतर कीजिए?
4. विनय एक मिठाई वाला (हलवाई) है। दिवाली पर मांग बढने के कारण उसने रमेश से 1000 किलो खोया खरीदा, जो कि उस क्षेत्र का एकमात्र खोया आपुर्तिकर्ता है। रमेश ने उसे क्रेडिट सुविधा भी उपलब्ध करवाई क्योंकि विनय के लिए इतनी बड़ी राशि का तुरन्त भुगतान करना संभव नही है। विनय आपुर्ति किए गए खोए की गुणवत्ता के बारे में जानकारी देता रहता है।
   - (क) विनय किस प्रकार का व्यापारी है?
   - (ख) रमेश किस प्रकार का व्यापारी है?
   - (ग) रमेश, विनय को किस प्रकार की सुविधा प्रदान करता है?
   - (घ) विनय, रमेश को किस प्रकार की सुविधा प्रदान करता है?
6. एक कपड़ा निर्माता कम्पनी भारत में विभिन्न स्थानों पर अपनी दुकानें खोलती है। इन दुकानों की साजसज्जा एक–सी है और इन पर केवल नकद विक्रय होता है। कपड़े का मूल्य स्थिर है। इस प्रकार कम्पनी अपने और उपभोक्ता के बीच से अवांछनीय मध्यस्थों को हटाकर उपभोक्ताओं को लाभ प्रदान करती है।
   - (क) उपर्युक्त उदाहरण में किस प्रकार की दुकान के विषय में बात की जा रही है?
   - (ख) इन दुकानों की कोई तीन विशेषताओं की व्याख्या करें।
7. ज्योति ने एक नवनिर्मित कालोनी में अपना मकान लिया है। आसपास के क्षेत्र में फुटकर दुकानों कर अभाव है। आप की समझ से ज्योति को इन हालात में किस प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है ?

   (Hint – फुटकर व्यापारी द्वारा उपभोक्ता को दी सेवाएँ)
8. विशाल बड़ी मात्रा में उत्पादक से वस्तुएँ खरीदकर छोटी–छोटी मात्रा में अनेक छोटे दुकानदारों को बेचता है। वह किस प्रकार का व्यापारी है ?
   - (क) इस प्रकार के व्यापार की चार मुख्य विशेषताएं बताइए।

9. उस खुदरा व्यापार का नाम बताओ जहां वस्तुओं के एक ही प्रकार को देश भर में एक जैसी कीमतों में बेचा जाता है। इस प्रकार के व्यापार की तीन मुख्य विशेषताएं बताओ।

10. निम्नलिखित कथनों के सही करें यदि गलत हों –
    (क) एक थोक व्यापारी फुटकर व्यापारी से माल खरीदता है।
    (ख) एक थोक व्यापारी के उपभोक्ताओं के साथ सीधा सम्बन्ध होता है।
    (ग) फुटकर व्यापारी थोक व्यापारी को उधार की सुविधा देता है।
    (घ) थोक व्यापार की तुलना में फुटकर व्यापार के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।

11. नोएडा में 'ग्रेट इंडिया प्लेस' एक बहुत ही मशहूर शॉपिंग कॉम्पलेक्स है। अनेक प्रकार की वस्तुएँ एवं सेवाएँ यहाँ एक ही छत के नीचे उपलब्ध है। इनमें ग्राहक वस्तुएँ खरीदने के साथ–साथ मनोरंजन और भोजन आदि की आधुनिक सुविधाएँ भी प्राप्त करते हैं। फुटकर व्यापार की इस संस्था को पहचानिये व इसकी विशेषताएँ लिखिए।

12. 'विभागीय भण्डार खरीदारी को आसान करता है' व्याख्या कीजिए।

13. राम और श्याम मित्र हैं। उन्हें अपने एक दोस्त की जन्मदिन की पार्टी में जाना हैं राम अपने माता–पिता के साथ 'पोशाक बाल गारमेन्ट' से पार्टी के लिए एक पोशाक ले कर आता है, जबकि श्याम 'सम्राट गारमेन्ट' से लेकर आता है। वहीं से उसके माता व भाई भी कपड़े अपने लिए खरीदते हैं। राम और श्याम जिन स्टोर में गए उन्हे पहचानिए व उनकी विशेषताएं लिखिए।

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न (5–6 अंकों वाले)

1. थोक व्यापार और खुदरा व्यापार में अंतर लिखिए?

2. सुपर बाजार क्या है ? उनके लाभ तथा सीमाएं बताइए?

3. भ्रमणकारी खुदरा व्यापारियों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए?

4. भ्रमणशील व्यापारी भारत के आन्तरिक व्यापार के अभिन्न अंग हैं। बड़े पैमाने के फुटकर व्यापारियों से प्रतियोगिता होने के बावजूद भी उनके बने रहने के कारणों का विश्लेषण करें?

5. उमा एक ग्रामीण क्षेत्र की वासी पहली बार अपने एक रिश्तेदार के घर दिल्ली आती है। वह अपनी बहन के साथ एक बड़ी दुकान पर जाती है। वह यह देखकर आश्चर्य चकित होती है कि इस दुकान में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ

बेची जा रही हैं। तथा यहाँ दुकान के अंदर ही खान–पान की सुविधा भी है।

(अ) आप इस दुकान को पहचानें।

(ब) उपरिलिखित पैरा में से लाइन लिखते हुए इस प्रकार की दुकान की दो विशेषताएं बताइए।

(स) इस प्रकार की दुकान के चार लाभ समझाइए।

6. एक लंदन स्थित वाशिंग मशीन निर्माणी कम्पनी भारत में अपने दो नए उत्पाद – A.C. तथा फ्रिज लाना चाहती है। दस थोकव्यापारी फर्मो में से वह दो जिनका प्रस्ताव प्रतियोगी व आकर्षक तथा अधिकारी महिलाएँ हैं को चुनती है। A.C. थोक व्यापारी फर्म दिल्ली में A.C. के विक्रय के लिए टेन्डर में हरी एक विकलांग फुटकर विक्रेता जिसने सबसे कम कीमत दी थी को चुनती है।

हरी, थोक व्यापारी फर्म को जानकारी देता है कि दिल्लीवासी दिल्ली की भीषण गर्मी को देखते हुए एक ऐसा A.C. चाहते हैं जो ऑफिस से घर पहुँचने से पहले ही घर को बिल्कुल ठंडा कर दे।

(अ) फुटकर व्यापारी द्वारा थोक व्यापारी को दी जाने वाली चार सेवाओं को बताइए?

7. पृथ्वी फर्म विभिन्न उत्पादकों से बासमती चावल बड़ी मात्रा में खरीदती है तथा छोटी–छोटी मात्रा में रणधीर संस, अविचल ब्रदर्श आदि को बेचती है। (अपने नाम से)।

1) आपके विचार से पृथ्वी फर्म, रणधीर सन्स तथा अविचल ब्रदर्श को कौन–सी दो सेवाएं प्रदान करेगी ?

2) पृथ्वी फर्म उत्पादकों को कौन–सी दो महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करती है?

3) पृथ्वी फर्म द्वारा समाज को कौन–सी दो सेवाएँ प्रदान की जाती है?

8. थोक विक्रेता को वितरण माध्यम से हटा दिया जाए। इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।

9. दीनानाथ एक ऐसे क्षेत्र में रहता है जहाँ कोई स्थानीय बाजार नहीं है। स्थानीय बाजार न होने के कारण दीनानाथ को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। व्याख्या कीजिए।

10. विभागीय भण्डार व बहुसंख्यक दुकानें दोनों ही दीर्घ स्तरीय फुटकर व्यापार है, परंतु फिर भी एक दूसरे से भिन्न हैं। व्याख्या कीजिए।

अध्याय-10

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

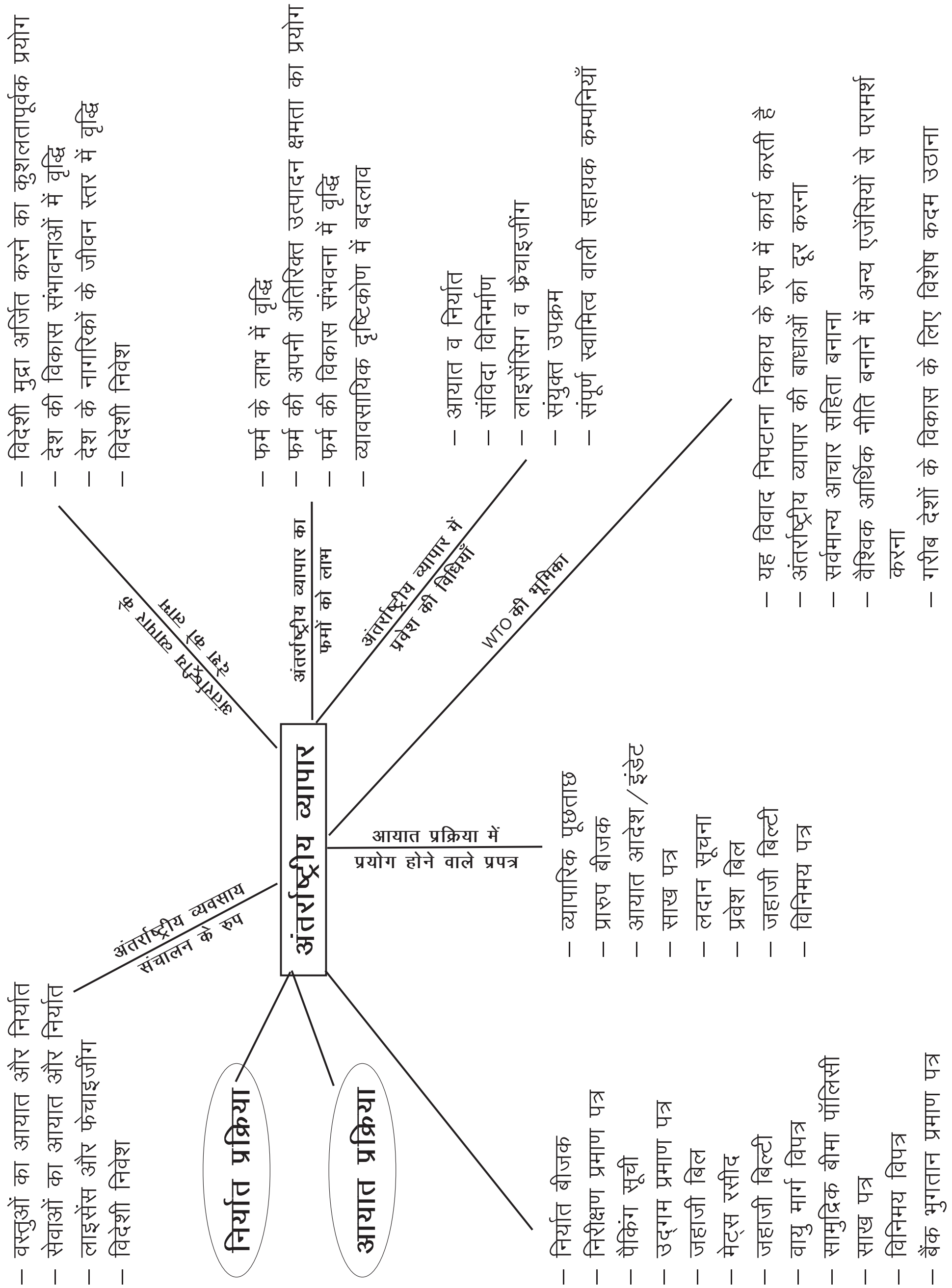

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के देशों को लाभ
- विदेशी मुद्रा अर्जित करने का कुशलतापूर्वक प्रयोग
- देश की विकास संभावनाओं में वृद्धि
- देश के नागरिकों के जीवन स्तर में वृद्धि
- विदेशी निवेश

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का फर्मों को लाभ
- फर्म के लाभ में वृद्धि
- फर्म की अपनी अतिरिक्त उत्पादन क्षमता का प्रयोग
- फर्म की विकास संभवना में वृद्धि
- व्यावसायिक दृष्टिकोण में बदलाव

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश की विधियाँ
- आयात व निर्यात
- संविदा विनिर्माण
- लाइसेंसिंग व फ्रैंचाइजींग
- संयुक्त उपक्रम
- संपूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनियाँ

WTO की भूमिका
- यह विवाद निपटाना निकाय के रुप में कार्य करती है
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की बाधाओं को दूर करना
- सर्वमान्य आचार सहिता बनाना
- वैश्विक आर्थिक नीति बनाने में अन्य एजेंसियों से परामर्श करना
- गरीब देशों के विकास के लिए विशेष कदम उठाना

आयात प्रक्रिया में प्रयोग होने वाले प्रपत्र
- व्यापारिक पूछताछ
- प्रारुप बीजक
- आयात आदेश/इंडेंट
- साख पत्र
- लदान सूचना
- प्रवेश बिल
- जहाजी बिल्टी
- विनिमय पत्र

- निर्यात बीजक
- निरीक्षण प्रमाण पत्र
- पैकिंग सूची
- उद्‌गम प्रमाण पत्र
- जहाजी बिल
- मेट्‌स रसीद
- जहाजी बिल्टी
- वायु मार्ग विपत्र
- सामुद्रिक बीमा पॉलिसी
- साख पत्र
- विनिमय विपत्र
- बैंक भुगतान प्रमाण पत्र

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय संचालन के रुप
- वस्तुओं का आयात और निर्यात
- सेवाओं का आयात और निर्यात
- लाइसेंस और फेंचाइजींग
- विदेशी निवेश

निर्यात प्रक्रिया

आयात प्रक्रिया

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय का अर्थ

जब किसी देश द्वारा अपनी भौगालिक सीमाओं से बाहर विनिर्माण एवं व्यापार किया जाता है तो उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। संप्रेषण, तकनीक, आधारगत ढांचा आदि में विकास के कारण यह सम्भव हो पाया है। नये–नये संप्रेषण के माध्यम एवं परिवहन के तीव्र एवं अधिक सक्षम साधनों के विकास के कारण आज विभिन्न देश एक–दुसरे के नजदीक आ गए हैं जिसके कारण उनके बीच व्यापार सम्भव हो पाया है, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. प्राकृतिक संसाधनों का असमान वितरण तथा उत्पादकता में अंतर के कारण एक देश अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम नहीं हो पाता।

2. विभिन्न सामाजिक, आर्थिक भौगोलिक एवं राजनीतिक कारणों से विभिन्न राष्ट्रों में श्रम की उत्पादकता तथा उत्पादन लागत में भिन्नता पाई जाती है।

3. उत्पादन के विभिन्न साधन जैसे श्रम, पूंजी एवं कच्चा माल आदि संसाधनों की उपलब्धता अलग–अलग देशों में अलग–अलग होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय का क्षेत्र

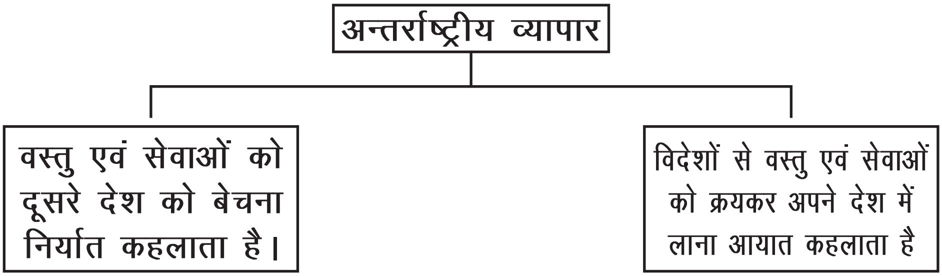

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

वस्तु एवं सेवाओं को दूसरे देश को बेचना निर्यात कहलाता है।

विदेशों से वस्तु एवं सेवाओं को क्रयकर अपने देश में लाना आयात कहलाता है

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रमुख व्यावसायिक क्रियाएं आती हैं :

1. वस्तुओं का आयात एवं निर्यात : वस्तुओं से अभिप्राय उन मूर्त वस्तुओं से है जिन्हें देखा एवं स्पर्श किया जो सकता है। वस्तुओं के निर्यात का अर्थ है मूर्त वस्तुओं को दूसरे देशों को भेजना।

   मूर्त वस्तुओं के उदाहरण – मशीनरी, इलेक्ट्रोनिक वस्तुएँ, धातुएँ एवं रसायन आदि।

2. सेवाओं का आयात एवं निर्यातः सेवाओं से अभिप्राय उन अमूतं वस्तुओं से जिन्हें देखा एवं स्पर्ष नहीं किया जा सकता। जैसे पर्यटन एवं मात्रा मनोरंजन, संप्रेषण आदि। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सेवाओं का व्यापार होता है।

   अमूर्त वस्तुओं के उदाहरण – भ्रमण एवं देशाटन, परिवहन संचार, मेडिकल, विज्ञान आदि।

3. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश का एक और मार्ग लाइसेंस एवं फ्रेंचाइजी है। किसी दूसरे देश में वहीं के व्यवसायी को कुछ फीस के बदले अपने ट्रेडमार्क, पेटेंट या कॉपी–राइट के अंतर्गत वस्तुओं के उत्पादन एवं विक्रय की अनुमति देना लाइसेंसिंग कहलाती है। फ्रेंचाइजी भी लाइसेंस प्रणाली के समान है परन्तु यह सेवाओं के संदर्भ में प्रयुक्त होती है। उसी प्रकार, मैक्डोलंड् फ्रेंचाइसीज के माध्यम से विश्व भर में अपने रेस्टोरेन्ट चलाता है। उदाहरण–कोका कोला, स्थानीय, कम्पनीयों को लाइसेंस देता है जिससे इसका उत्पादन विश्व भर में होता है।

4. विदेशों में निवेश करना अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय का एक और महत्वपूर्ण प्रकार है। विदेशी निवेश दो प्रकार का हो सकता है। प्रत्यक्ष एवं संविभाग निवेश। प्रत्यक्ष निवेश में निवेश को विदेशी कम्पनी में नियंत्रण का अधिकार होता है। इसके अन्तर्गत किसी देश में वस्तु तथा सेवाओं के उत्पादन एवं विपणन के लिए वहां संयंत्र एवं मशीनों आदि परिसंपत्तियों में किए गए निवेश को शामिल किया जाता है जबकि संविभाग निवेश एक कम्पनी का दूसरी कम्पनी में उसके शेयर खरीद या फिर ऋण के रूप में निवेश होता है। इसके अन्तर्गत निवेशक उत्पादन एवं विपणन क्रियाओं में लिप्त नहीं होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एक देश तथा व्यावसायिक फर्मों दोनों के लिए महत्वपूर्ण होता है। इसके अनेक लाभ मिलते हैं।

राष्ट्रों को लाभ

1. इसके द्वारा एक देश विदेशी मुद्रा अर्जित करता है जिसका प्रयोग वह विदेशों से विभिन्न वस्तुओं का आयात करने के लिए कर सकता है।
2. इसके कारण एक देश उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषताएं/विशिष्टता प्राप्त कर लेता है जिन्हें वह कुशलता पूर्वक एवं मितव्ययी तरीके से उत्पादित कर सकता है।
3. इसके कारण एक देश की विकास की संभावनाओं एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।
4. इसके कारण ही एक देश के नागरिक अन्य देशों में उत्पादित वस्तु एवं सेवाओं का उपभोग कर पाते हैं जिनके द्वारा उनके जीवन स्तर में वृद्धि भी होती है।

फर्मों को लाभ

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय के कारण फर्में उन देशों में अपनी वस्तुओं को बेचकर अधिक लाभ कमा सकती है जहां उन्हें अधिक कीमतों पर बेचा जा सकता है।
2. इसके कारण फर्में अपनी अतिरिक्त उत्पादन क्षमता का प्रयोग करके उत्पादन लागत में कमी तथा प्रति इकाई लाभ में वृद्धि कर सकती है।
3. अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के कारण फर्मों की विकास की संभावनाएं बढ़ जाती है।
4. यह आंतरिक बाजार में उत्पन्न घोर प्रतियोगिता से बचाव का एक मार्ग भी है। घोर प्रतियोगिता की स्थिति में अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के द्वारा फर्में पर्याप्त विकास प्राप्त कर सकती है।
5. इसके कारण फर्में अधिक प्रतियोगी तथा विविधतापूर्ण हो जाती है अतः उनके व्यावसायिक दृष्टिकोण में बदलाव आता है।

घरेलू व्यवसाय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में अंतर

क्रम स.	आधार	घरेलू व्यवसाय	अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय
1.	क्रेता तथा विक्रेता की राष्ट्रीयता	क्रेता व विक्रेता दोनों एक ही देश के होते हैं	क्रेता तथा विक्रेता भिन्न–भिन्न देशों के होते हैं
2.	उत्पादन के साधनों की गतिशीलता	इसके अन्तर्गत उत्पादन के साधन अधिक गतिशील होतें हैं।	इसके अन्तर्गत उत्पादन के साधन कम गतिशील होते हैं।
3.	परिवहन के साधन	सुविधा के अनुसार परिवहन का चयन जैसे– रेल, सड़क, हवाई यात्रा	माल देश की भौगोलिक सीमाओं से बाहर केवल समुद्री या हवाई माध्यम से भेजा जाता है।
4.	भुगतान का प्रकार	नकद, चैक या ड्राफ्ट द्वारा भुगतान किया जाता है।	भुगतान साख पत्र, विनिमय बिल या तार अंतरण द्वारा किया जाता है।
5.	परिवहन की लागत	काफी कम लागत	घरेलू व्यावसाय की तुलना में अधिक महंगी क्योंकि लम्बी दूरी की डिलवरी करनी होती है
6.	सरकारी रजिस्ट्रेशन	व्यापार एक बार स्थापित होने के बाद किसी विशेष लाइसेंस की आवश्यकता नहीं है	उद्यम को आयात–निर्यात संगठन में रजिस्टर होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के लिए आई.ई.सी. सर्टिफिकेट लेना होगा।
7.	बाजार में ग्राहकों के स्वरूप में भिन्नता	अधिक समरूपता पाई जाती है।	इसमें भाषा, रीतिरिवाजों आदि की भिन्नता के कारण होती है।
8.	व्यवसाय में प्रयुक्त मुद्रा	अपने देश की मुद्रा का प्रयोग।	एक से अधिक देशों की मुद्रा का प्रयोग
9.	राजनैतिक प्रणालियाँ एवं जोखिम	इसमें केवल एक ही देश की राजनैतिक प्रणाली एवं जोखिमों का सामना करना पड़ता है।	इसमे अलग–अलग देशों की राजनैतिक प्रणाली एवं जोखिमों का सामना करना पड़ता है।

निर्यात प्रक्रिया

1. निर्यातक को प्रस्तावित क्रेता से पूछताछ प्राप्त होती है जिसमें वह मूल्य क्वॉलिटी और माल के निर्यात की अन्य शर्तें व नियमों की जानकारी चाहता है। निर्यातक उसे निर्ख (कोटेशन) भेजता है जिसे प्रायप बीजक कहा जाता है।
2. यदि क्रेता निर्यात की कीमतों और शर्तों व नियमों से संतुष्ट होता है तो वह माल के लिए आदेश या इंडेट भेजता है।
3. आदेश प्राप्त होने पर निर्यातक आयातक की ऋणसाख के बारे में पूछताछ करता है ताकि भुगतान न किए जाने के जोखिम का आंकलन हो सके। इस तरह के जोखिमों को कम करने के लिए अधिकतर निर्यातक, आयातकों से साखपत्र की मांग करते है। साखपत्र, आयातक के बैंक द्वारा जारी गारंटी है कि यह निर्यातक के बैंक को, निर्यात बिल का भुगतान करवाएंगा।
4. निर्यातक फर्म का निर्यात लाइसेंस प्राप्त करना पड़ता है जिसकी प्रक्रिया निम्न है :
    - प्रधिकृत किसी बैंक में खाता खोलना तथा उसकी खाता संख्या प्राप्त करना।
    - प्रमुख निर्देशक विदेशी व्यापार या क्षेत्रीय आयात निर्यात लाइसेसिंग प्राधिकरण से आयात–निर्यात कोड संख्या प्राप्त करना।
    - उपयुक्त निर्यात संवर्धन परिषद के साथ पंजीकरण करना।
    - भुगतान प्राप्त न होने के जोखिम के विरूद्ध सुरक्षा हेतु निर्यात ऋण एवं गारंटी निगम के पास पंजीकरण करवाना।
5. निर्यात लाइसेंस प्राप्त होने के बाद निर्यातक अपने बैंक के पास उत्पादन करने के लिए पूर्व–लदान वित्त प्राप्त हेतु जाता है।
6. पूर्व–लदान वित्त प्राप्त करने के पश्चात् निर्यातक आयातक के आदेशानुसार माल तैयार करता है।
7. भारत सरकार यह सुनिश्चित करती है कि केवल अच्छी क्वालिटी के माल का ही निर्यात हो अतः निर्यातक को निर्यात के समय अन्य प्रलेखों के साथ पूर्व–लदान निरीक्षण रिपोर्ट भी प्रस्तुत करना आवश्यक है।
8. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम के अनुसार निर्मित वस्तुओं में प्रयुक्त माल पर उत्पाद शुल्क दिया जाना चाहिए। इसके लिए निर्यातक उस क्षेत्र के

उत्पाद शुल्क अधीक्षक की बीजक की एक प्रति के साथ आवेदन भेजता है।

9. शुल्कों में रियायतें और अन्य छूटें प्राप्त करने के लिए आयातक, निर्यातक से उदगम प्रमाण पत्र भेजने को कह सकता है।

10. निर्यातक जहाजी कंपनी को जहाज पर स्थान प्रदान करने के लिए आवेदन करता है। उसे निर्यात किए जाने वाले माल से संबंधित पूर्ण जानकारी लदान की संभावित तिथि तथा गंतव्य बंदरगाह की जानकारी देनी पड़ती है।

11. वस्तुओं की पैकिंग की जाती है और उन पर आवश्यक सूचनाएं जैसे आयातक का नाम एवं पता, सकल और निवल भार, लदान वाले तथा गंतव्य बंदरगाह का नाम आदि चिन्हित कर दिया जाता है।

12. वस्तुओं की समुद्री यात्रा के दौरान हानि के जोखिम से सुरक्षा के लिए निर्यातक किसी बीमा कम्पनी से वस्तुओं का बीमा करवाता है।

13. माल के लदान से पहले उसकी कस्टम से निकासी करवानी पड़ती है जिसके लिए जहाजी बिल तैयार किया जाता है। निर्यात जहाजी बिल की पांच प्रतियों के साथ निम्न दस्तावेज कस्टम घर पर कस्टम मूल्यांक के पास प्रस्तुत करता है।

    1) उद्गम प्रमाण पत्र
    2) वाणिज्यिक बीजक
    3) निर्यात अनुबंध/आदेश
    4) साख पत्र
    5) निरीक्षण प्रमाण आवश्यक हो तो
    6) समुद्री बीमा पॉलिसी

    इन दस्तावेजों को जमा कराने के बाद संबंधित बंदरगाह के न्याय अधीक्षक से माल को ढोने का आदेश प्राप्त किया जाता है। जो बंदरगाह पर तैनात कर्मचारियों के लिए आदेश रूप में होता है कि वे माल को डॉक के भीतर प्रवेश करने दें।

निर्यात प्रक्रिया

1. पूछताछ पत्र की प्राप्ति एवं कोटेशन भेजना
2. आदेश प्राप्ति (इंडेट)
3. आयातक की साख जाँच
4. निर्यात लाइसेंस प्राप्त करना
5. पुर्व–लदान वित्त की प्राप्ति
6. आयातक के अनुसार वस्तुएँ खरीदना या निर्माण करना
7. पूर्ण लदान निरीक्षण रिपोर्ट प्राप्त करना
8. उद्‌गम प्रमाण–पत्र प्राप्त करना
9. जहाज पर स्थान आरक्षण
10. पैकेजिंग और अंग्रेषण
11. वस्तुओं का बीमा
12. कस्टम से निकासी
13. मेट्‌स रसीद प्राप्त करना
14. भाड़े की गणना व जहाजी बिल्टी

14. माल के जहाज पर लदने के बाद जहाज का कप्तान बंदरगाह के अधीक्षक के नाम एक मेट्‌स रसीद जारी करता है जिसमें पैकेजों का विवरण, लदान की तिथि, चिह्न, माल की दशा आदि जानकारियां होती हैं।

15. निकासी व प्रेषक एजेन्ट मेट्‌स रसीद कंपनी को दे देता है। जिसके आधार पर भाड़े की गणना की जाती है। जहाजी कम्पनी भाड़ा प्राप्त होने पर जहाजी बिल्टी जारी करती है।

16. निर्यातक भेजी गई वस्तुओं का बीजक बनाता है। जो माल की मात्रा तथा आयातक द्वारा चुकाई गई राशि की जानकारी देता है। इसे कस्टम अधिकारियों द्वारा सत्यापित किया जाता है।

17. माल के लदान के बाद आयातक को उसकी सूचना भेजी जाती है। विभिन्न प्रलेख जैसे बीजक की सत्यापित प्रति, जहाजी बिल्टी, पैकिंग सूची, बीमा पॉलिसी आदि निर्यातक द्वारा बैंक के माध्यम से भेजे जाते हैं जिनका प्रयोग माल की कस्टम से अनुमति प्राप्ति के लिए आवश्यकता होती है।

प्र.1 उथ्थपा अपना माल निर्यात करना चाहता है। क्या उसे निर्यात लाइसेंस प्राप्त करने के लिए साख पत्र की आवश्यकता है? उत्तर दीजिए।

प्र.2 जयकिशन एक नियोजक है। वह अपना माल सामुद्रिक मार्गों द्वारा भेजता है। जब भी उसका माल जहाज पर लाद दिया जाएगा। जहाज़ का कप्तान पोर्ट सुपरिटेन्डेन्ट को कौनसी रसीद देगा। रसीद का नाम बताइए।

प्र.3 उद्गम प्रमाण पत्र की आवश्यकता क्यों होती है?

प्र.4 निर्यातकों को पूर्व–लदान वित्त की आवश्यकता क्यों होती है?

निर्यात प्रक्रिया में प्रयुक्त प्रलेख

(A) वस्तुओं से संबंधित	(B) लदान से संबंधित	(C) भुगतान से संबंधित
• निर्यात बीजक	• मेट्स रसीद	• साख पत्र
• उद्गम प्रमाण–पत्र	• जहाजी बिल	• विनिमय विपत्र
• निरीक्षण प्रमाण–पत्र	• वायु मार्ग प्रपत्र	• बैंक भुगतान प्रमाण पत्र
• पैकिंग सूची	• जहाजी बिल्टी	
	• सामुद्रिक बीमा पॉलिसी	

निर्यात लेन–देन में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख प्रलेख

(क) वस्तुओं से संबंधित प्रलेख

1. **निर्यात बीजक** : यह विक्रेता का विक्रय माल बिल होता है जिसमें बेचे गए माल के संबंध में सूचना दी होती है जैसे मात्रा, कुल मूल्य, पैकेजों की संख्या, पैकिंग पर चिह्न गन्तव्य बंदरगाह, जहाज का नाम, जहाजी बिल्टी संख्या, सुपुर्दगी संबंधित शर्तें एवं भुगतान आदि।

2. **निरीक्षण प्रमाण–पत्र** : उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने कुछ उत्पादों का किसी अधिकृत एजेंसी द्वारा निरीक्षण अनिवार्य कर दिया है। भारतीय निर्यात निरीक्षण परिषद् द्वारा माल का निरीक्षण किया जाता है एवं प्रमाण पत्र जारी किया जाता है कि प्रेषित माल का निर्यात गुणवत्ता नियंत्रण एवं निरीक्षण अधिनियम 1963 के अनुसार है।
3. **पैकिंग सूची** : यह प्रलेख एक विवरण के रूप में होता है जो पेटियों की संख्या व उनमें भरे गए माल का विवरण देता है।
4. **उद्‌गम प्रमाण पत्र** : इसके द्वारा इस बात का निर्धारण किया जाता है कि माल व उत्पादन किस देश में हुआ है। यह प्रमाणपत्र आयातक को शुल्कों में रियायत जैसे कुछ निर्धारित देशों में निर्मित वस्तुओं पर कोटा–पाबंदियों का लागू न होना आदि प्राप्त करने में सहायक होता है।

(ख) लदान से संबंधित प्रलेख

1. **जहाजी बिल** : इस प्रलेख के आधार पर कस्टम द्वारा माल के निर्यात की अनुमति प्रदान की जाती है। इसमें निर्यात किए जा रहे माल का पूर्ण विवरण, जहाज का नाम, निर्यातक का नाम व पता, अंतिम गंतव्य देश का नाम आदि का पूर्ण ब्यौरा होता है।
2. **मेट्स रसीद** : यह रसीद जहाजी कप्तान या मेट द्वारा माल के जहाज के लादने के बाद निर्यातक को जारी की जाती है। इसमें जहाज का नाम, पैकेजों का विवरण, चिह्न, जहाज में लदान के समय माल की स्थिति आदि का विवरण होता है।
3. **जहाजी बिल्टी** : यह प्रलेख जहाजी कम्पनी द्वारा जारी जहाज पर माल प्राप्ति की रसीद है तथा साथ ही गंतव्य बंदरगाह तक उन्हें ले जाने की शपथ भी है। यह बेचान एवं सुपुर्दगी द्वारा स्वतंत्र रूप से हस्तांतरणीय है।
4. **वायु मार्ग विपत्र** : यह एयर लाइन कम्पनी की हवाई जहाज पर माल की प्राप्ति की विधित रसीद होती है जिसमें वह माल को गंतव्य हवाई अड्डे तक ले जाने का वचन देती है। इसे माल पर मालिकाना हक के प्रलेख के रूप में भी जाना जाता है।

प्र.1 'कोहिनूर बासमती चावल' लि. कोरिया को चावल आयात करना चाहती है। क्या ई.आई.सी.आई की 'कोहिनूर' कम्पनी द्वारा उत्पादत चावलों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में कोई भूमिका है? वर्णन कीजिए।

प्र.2 मेट्स रसीद क्या है? इसके घटक क्या है?

प्र.3 जहाजी बिल्टी का क्या अर्थ है? इसका क्या महत्व है?

5. **सामुद्रिक बीमा पालिसी** : यह एक ऐसा प्रलेख है जिसमें निर्यातक और बीमा कम्पनी के मध्य अनुबन्ध होता है कि एक निर्धारित भुगतान, जिसे प्रिमियम कहा जाता है के बदले बीमाकर्ता कम्पनी बीमित व्यक्ति को समुद्र यात्रा के संकटों में होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति करेगा।

(ग) भुगतान संबंधित प्रलेख

1. **साख पत्र** : यह आयातक के बैंक द्वारा दी जाने वाली गारंटी है जिसमें वह निर्यातक के बैंक को एक निश्चित राशि तक के निर्यात बिल के भुगतान की गारंटी देता है।

2. **विनिमय विपत्र** : यह एक लिखित प्रपत्र है जिसमें इसको जारी करने वाला दूसरे पक्ष को एक निश्चित राशि, एक निश्चित व्यक्ति अथवा इसके धारक को भुगतान का आदेश देता है। आयात–निर्यात लेन–देन में यह निर्यातक द्वारा आयातक पर लिखा जाता है।

3. **बैंक भुगतान प्रमाण–पत्र** : यह इस बात को प्रमाणित करता है कि एक निश्चित निर्यात प्रेषण से संबंधित प्रलेखों का प्रमापण कर लिया गया है एवं विनिमय नियंत्रण नियमों के अनुरूप भुगतान प्राप्त कर लिया गया है।

आयात प्रक्रिया

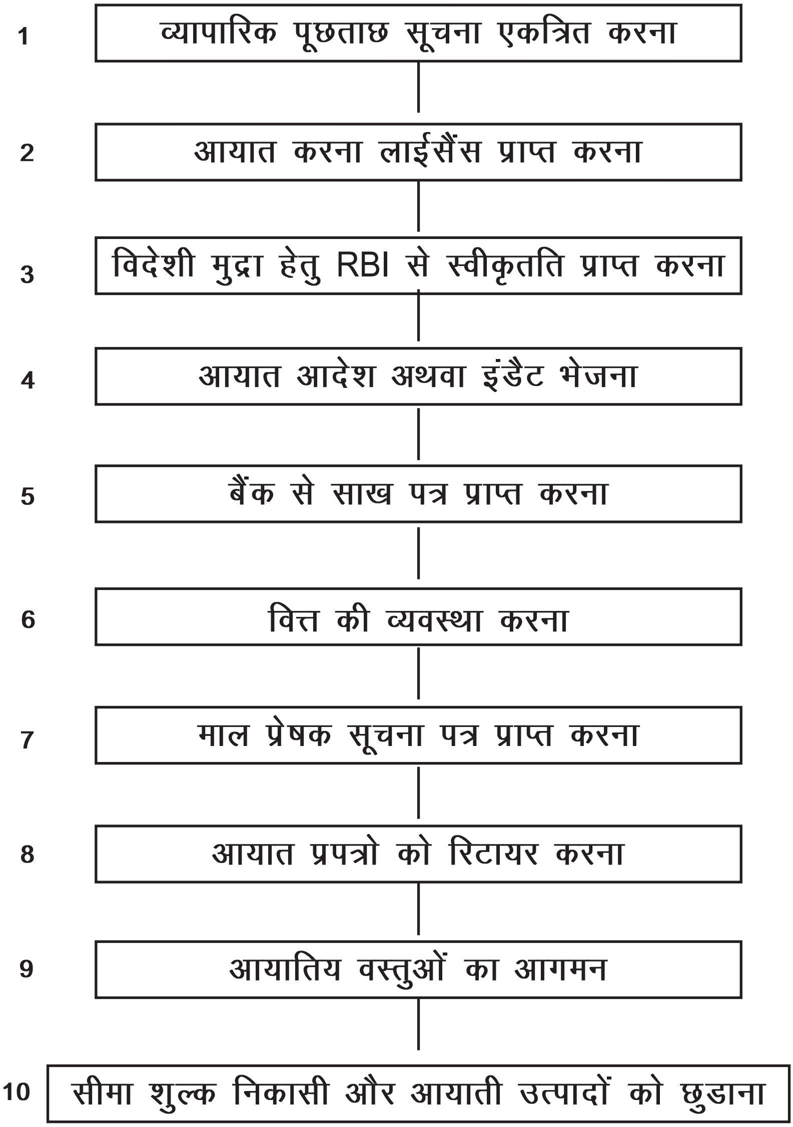
1
व्यापारिक पूछताछ सूचना एकत्रित करना
2
आयात करना लाईसैंस प्राप्त करना
3
विदेशी मुद्रा हेतु RBI से स्वीकृतति प्राप्त करना
4
आयात आदेश अथवा इंडैट भेजना
5
बैंक से साख पत्र प्राप्त करना
6
वित्त की व्यवस्था करना
7
माल प्रेषक सूचना पत्र प्राप्त करना
8
आयात प्रपत्रो को रिटायर करना
9
आयातिय वस्तुओं का आगमन
10
सीमा शुल्क निकासी और आयाती उत्पादों को छुडाना

आयात प्रक्रिया

1. माल के आयात के दौरान सर्वप्रथम आयातक फर्म उन देशों व फर्मों के संबंध में सूचना एकत्रित करता है जो इस माल का निर्यात करते हैं। ऐसी जानकारी व्यापारिक डायरेक्टरी, व्यापार धंधों और अन्य संगठनों से प्राप्त की जा सकती है।

2. आयातक को यह जानना आवश्यक होता है कि जिन वस्तुओं का वह आयात करना चाहता है उन पर आयात लाइसेंस लागू होता है अथवा नहीं। यदि उन वस्तुओं के आयात के लिए लाइसेंस की आवश्यकता है तो आयातक को आयात लाइसेंस प्राप्त करना पड़ेगा।

3. आयात लेन–देन से संबंधित आपूर्तिकर्ता विदेश में रहता है अतः उसे भुगतान विदेशी मुद्रा में ही करना होता है। भारत में सभी विदेशी विनिमय संबंधित लेन–देनों का भारतीय रिजर्व बैंक के विनिमय हेतु स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती है। इस स्वीकृति को प्राप्त करने के लिए आयातक को आयात लाइसेंस के साथ रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी विनिमय के लिए अधिकृत बैंक के पास आवेदन करना पड़ता है।

4. लाइसेंस प्राप्त होने के बाद आयातक वस्तुओं की आपूर्ति हेतु निर्यातक के पास आयात आदेश अथवा इंडैट भेजता है। इस आदेश में माल की कीमत, क्वालिटी, मात्रा, आकार और ग्रेड तथा पैकिंग लदान, भुगतान की विधि आदि से संबंधित जानकारियां होती है।

5. जब विदेशी पूर्तिकर्ता और आयातक के मध्य भुगतान की शर्तें तय हो जाती हैं तो आयातक अपने बैंक से साखपत्र प्राप्त करता है और उसे विदेशी पूर्तिकर्ता को प्रेषित कर देता है।

6. आयातक कोषों के लिए अग्रिम व्यवस्था करता है जिससे बंदरगाह पर माल पहुंचने पर निर्यातक को भुगतान किया जा सके।

7. जहाज में माल के लदान कर देने के पश्चात विदेशी आपूर्तिकर्ता आयातक को माल भेजने की सूचना भेजता है। माल प्रेषण सूचना पत्र में बीजक संख्या, जहाजी बिल्टी, वायुमार्ग बिल नम्बर एवं तिथि, जहाज का नाम एवं तिथि, निर्यात बंदरगाह, आदि की सूचना होती है।

8. माल रवानगी के बाद विदेशी पूर्तिकता वाणिज्यिक बीजक, जहाजी बिल्टी, बीमा पॉलिसी, उद्‌गम् प्रमाणपत्र आदि अपने बैंकर को उन्हें आगे आयातक को सौंपने के लिए दे देता है।

9. आयातक के देश में माल पहुंच जाने के बाद वाहन का अभिरक्षक गोदी अथवा हवाई अड्‌डे पर तैनात देख–रेख अधिकारी को माल के आयातक देश

में पहुंच जाने की सूचना देता है। वह उन्हें एक विलेख सोंपता है जिसमें आयातित माल का विस्तृत विवरण दिया होता है। इसे ''आयात सामान्य माल सूची'' कहते है।

प्र. लोकान्ता समुद्री बीमा कम्पनी एक प्रतिष्ठित बीमा कम्पनी है जो समुद्री परिवहन और कार्गो के सभी प्रकार के बीमा सुनिश्चित करती है। 'पोलो' लि. विभिन्न देशों के लिए अपने कपड़े निर्यात करता है। 'पोलो कार्गो' भी 'लोकान्ता' कम्पनी से बीमित है। एक समुद्री जहाज जो पोलो गारमेन्टस लेकर जा रहा था। दुर्घटना ग्रस्त होकर डूब जाता है। क्या पोलो कम्पनी बीमा कम्पनी से किसी प्रकार के दावे की हकदार है? व्याख्या कीजिए।

10. भारत के आयातित माल को सीमा शुल्क निकासी से गुजरना होता है। इसके लिए अनेक औपचारिकताओं को पूरा करना पड़ता है। इसके लिए आयातक निकासी एवं लदान वाले एजेंट की नियुक्ति करते हैं।

11 सर्वप्रथम आयातक सुपुर्दगी आदेश पत्र प्राप्त करता है जिसे बेचान भी कहते हैं। इसे संबंधित जहाजी कंपनी के द्वारा किया जाता है। आयातक को माल को अपने अधिकार में लेने से पहले भाड़ा चुकाना होता है। इसके अलावा आयातक बंदरगाह न्याय शुल्क की रसीद के लिए गोदी व्यय का भी भुगतान करना पड़ता है। इसके लिए आवेदक को आयात हेतु आवेदन की दो प्रतियों को भरकर अवतरण एवं जहाजी शुल्क कार्यालय में जमा करवाना पड़ता है। गोदी व्यय का भुगतान करने के बाद आयातक को रसीद–रूप में आवेदन की एक प्रति वापस दे दी जाती है। इस रसीद को बंदरगाह न्याय शुल्क रसीद कहते हैं।

प्र.1 राधिका आयातकर्त्ता बनना चाहती है। आयात व्यापार का विचार मन में आते ही राधिका को सबसे पहले कार्य क्या करना चाहिए ?

प्र.2 लक्ष्मण एक चीन की कम्पनी से 1000 लेपटॉप आयात करवाना चाहता है। चीन की कम्पनी को लक्ष्मण अपनी साख के लिए कौन–सा प्रमाण भेजेगा ?

प्र.3 मेडी इक्वीपमेंट्स लिमिटेड ने जर्मनी से 20 एम.आर.आई. मशीनें आयात की। जहाज से मशीनें उतरवाने के लिए कम्पनी को कौन–सा दस्तावेज चाहिए होगा?

12 अंत में आयातक आयात शुल्क के निर्धारण के लिए प्रवेश बिल फार्म भरता है एक मूल्यांकन कर्ता सभी विलेखों का ध्यान से अध्ययन कर निरीक्षण के लिए आदेश देगा। आयातक मूल्यांकनकर्ता के द्वारा तैयार विलेख को प्राप्त करेगा तथा सीमा शुल्क का भुगतान करेगा। आयातक प्रवेश बिल को गोदी अधीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करेगा। आयातित माल का निरीक्षण करके निरीक्षक प्रवेश बिल पर अपना अनुवेदन लिख देगा। आयातक प्रवेश बिल को बंदरगाह अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करेगा तथा आवश्यक शुल्क लेने के बाद अधिकारी माल की सुपुर्दगी का आदेश दे देगा।

आयात लेन–देनों में प्रयुक्त प्रलेख

1. **व्यापारिक पूछताछ** : आयातक की ओर से निर्यातक को लिखित प्रार्थना देनी होती है जिसमें वह निर्यातक की वस्तुओं के मूल्य एवं विभिन्न शर्तों की सूचना प्रदान करने के लिए कहता है।
2. **प्रारूप बीजक** : वह प्रलेख जिसमें निर्यात के माल के मूल्य, गुणवत्ता श्रेणी, डिजाइन, माप, भार तथा निर्यात की शर्तों का विस्तृत वर्णन होता है प्रारूप बीजक कहलाता है।
3. **आयात आदेश अथवा इंडैट** : यह वह विलेख है जिसमें आयातक, निर्यातक को मांगी गई वस्तुओं की आपूर्ति का आदेश देता है। इसके अन्तर्गत आयात की वस्तुओं, मात्रा एवं गुणवत्ता मूल्य, माल लदान की पद्धति, पैकिंग आदि से सम्बन्धित सूचना दी जाती है।
4. **साख पत्र** : यह आयातक के बैंक द्वारा निर्यातक बैंक को एक निश्चित राशि के निर्यातक बिल के भुगतान की गारंटी है। यह निर्यातक, आयातक को वस्तुओं के निर्यात के बदले में जारी करता है।
5. **लदान सूचना** : इसके द्वारा आयातक को इस बात की सूचना दी जाती है कि माल का लदान हो चूका है। लदान सूचना, बीजक संख्या, जहाजी बिल्टी, जहाज का नाम, निर्यात का बंदरगाह आदि सूचनाएं प्रदान करता है।

6. **प्रवेश बिल** : इसे आयातक माल की प्राप्ति पर भरता है। इसकी तीन प्रतियाँ होती हैं तथा इसे सीमा शुल्क कार्यालय में जमा कराया जाता है। इसमे आयातक का नाम एवं पता, जहाज का नाम, माल की मात्रा एवं मूल्य, निर्यातक का नाम एवं पता, गंतव्य बंदरगाह एवं देय सीमा शुल्क आदि सूचनाएं होती है।

7. **जहाजी बिल्टी** : यह जहाज के नायक द्वारा तैयार एवं हस्ताक्षरयुक्त विलेख होता है जिसमें वह माल के जहाज पर प्राप्ति को स्वीकार करता है। इसमें माल को निर्धारित बंदरगाह तक ले जाने से संबंधित शर्तें दी हुई होती है।

8. **विनिमय विपत्र** : पहले स्पष्ट किया जा चुका है।

प्र. एक देश निर्यात की तुलना में आयात अधिक करता है? निम्न में से कौन–सा कथन सत्य है?

अ) देश के भुगतान का एक सकारात्मक संतुलन है।

ब) देश के व्यापार का एक सकारात्मक संतुलन है।

स) देश कर्ज़े में है।

द) देश का व्यापार घाटे में है।

विदेशी व्यापार प्रोन्नति प्रोत्साहन एवं संगठनात्मक समर्थन

सरकार द्वारा निर्यात फर्मों की प्रतियोगिता योग्यता बढ़ने के लिए कई योजनाएं व प्रोत्साहन आरंभ किए गए हैं। सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में संलग्न फर्मों को विपणन में सहायता एवं बुनियादी ढ़ांचागत समर्थन प्रदान करने के लिए संगठन स्थापित किए हैं।

संगठन समर्थन

विश्व व्यापार संगठन

इसकी स्थापना 1 जनवरी, 1955 को हुई थी। इसका मुख्यालय जेनेवा, स्विटजरलैण्ड में स्थित है। यह एक स्थायी संगठन है जिसकी स्थापना अंतर्राष्ट्रीय समझौते से हुई है तथा जिसे सदस्य देशों की सरकारों एवं विधान मंडलों ने प्रमाणित किया है। इसके द्वारा व्यापारिक समस्याओं को सुलझाने और बहुआयामी व्यापारिक पराक्रमण हेतु मंच उपलब्ध कराया जाता है। विश्व व्यापार संगठन न केवल वस्तुओं के व्यापार बल्कि सेवाओं और बौद्धिक संपदा अधिकारों का भी संचालन करता है।

विश्व व्यापार संगठन एक सदस्य संचालित और नियम आधारित संगठन है क्योंकि सभी निर्णय सर्वसम्मति के आधार पर सदस्य राष्ट्रों द्वारा लिए जाते है। यह देशों के बीच व्यापार की समस्याओं को सुलझाने और बहुपक्षीय व्यापार वार्ता के लिए एक मंच प्रदान करने का एक प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय निकाय है। इसके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं :–

विश्व व्यापार संगठन के उद्देश्य–

1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सुचार प्रवाह में विभिन्न देशों द्वारा लगाए गए व्यापार शुल्कों और बाधाओं को कम करने के लिए।
2. जीवन स्तर में सुधार, रोजगार सृजन, आय और प्रभावी मांग में वृद्धि और उच्च उत्पादन और व्यापार को सुविधाजनक बनाना।
3. संसाधनों का बेहतर उपयोग करके सतत विकास को बनाए रखना।
4. राष्ट्रों के बीच एकीकृत, अधिक व्यवहार्य और टिकाऊ व्यापार प्रणाली को बढावा देना।

विश्व व्यापार संगठन की भूमिका / कार्य

1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की बाधाओं को दूर करना।
2. यह सुनिश्चित करना कि सभी सदस्य देश अपने आपसी विवादों को हल करने के लिए अधिनियम द्वारा निर्धारित सभी नियम एवं कानूनों का पालन करें तथा सदस्य देशों के बीच व्यापारिक झगड़ों का निपटारा करना।
3. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए सर्वमान्य आचार संहिता बनाना जिसका उद्देश्य व्यापार में टैरिफ और गैर–टैरिफ रूकावटों को कम करने के लिए नियम बनाना।
4. अन्य संबंद्ध एजेंसियों से विचार–विमर्श करना जिससे वैश्विक आर्थिक नीति बनाने में अधिक समझ एवं सहयोग का समावेश किया जा सके।
5. सदस्य देशों को विदेशी व्यापार, राजकोषीय नीति के प्रबन्ध के लिए आवश्यक तकनीकी सलाह और मार्ग दर्शन देना।
6. अति गरीब राष्ट्रों के विकास के लिए विशेष प्रयास करना।
7. सदस्य देशों की आर्थिक नीतियों व व्यापार संबंधी नीतियों का पुनरावलोकन करना।
8. विश्व व्यापार नीति निर्माण में समन्वय लाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक को सहयोग देना।
9. व्यापार उदारीकरण के लिए कार्य करना।

बहु–विकल्पीय प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही (✓) पर निशान लगाएं।

1. निम्न में से कौन–सा निर्यात व्यापार का लाभ नहीं है?

   (क) अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रवेश का सरल मार्ग

   (ख) तुलना में कम जोखिम

   (ग) विदेशी बाजारों मे सीमित उपस्थिति

   (घ) निवेश की आवश्यकत कम।

2. निम्न में से कौन–सी मद भारत की प्रमुख निर्यात मदों मे से एक नहीं है?

   (क) कपड़ा एवं वस्त्र (ख) रत्न एवं जेवरात

   (ग) तेल एवं पैट्रोलियम (घ) बासमती चावल।

3. निम्न में से कौन–सी मद भारत की प्रमुख आयात मदों में से एक नहीं है?

   (क) आयुर्वेदि दवाइयाँ (ख) तेल एवं पैट्रौलियम उत्पाद

   (ग) मोती एवं कीमती पत्थर (घ) मशीनरी

4. निम्न में से कौन–सा देश भारत के प्रमुख आयातकों मदों में से एक नहीं है?

   (क) यू.एस.ए (ख) यू.के

   (ग) जर्मनी (घ) न्यूजीलैंड

5. निर्यात लाइसेंस प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित में से कौन से प्रलेखें की आवश्यकता नहीं होती।

   (क) आई.ई.सी. नंबर

   (ख) साख पत्र

   (ग) पंजीयन संग सदस्यता प्रमाण पत्र

   (घ) बैंक खाता संख्या

6. निम्न में से कौन सा शुल्क वापसी योजना का अंग नहीं है?

   (क) उत्पादन शुल्क की वापसी (ख) सीमा शुल्क की वापसी

   (ग) निर्यात कर की वापसी (घ) लदान बंदरगाह पर बंदरगाही

7. निम्न में से कौन–सा निर्यात संबंधित प्रलेखों में सम्मिलत नहीं है?

(क) वाणिज्यिक बीजक (ख) उद्गम स्थान प्रमाण पत्र
(ग) प्रवेश बिल (घ) कारिंदे की रसीद

8. जब माल का जहाज पर लदान करा दिया जाता है तो जहाज के कप्तान द्वारा जारी रसीद को कहते हैं–

(क) जहाजरानी रसीद (ख) कारिंदे की रसीद
(ग) नौभार माल रसीद (घ) जहाज के किराए की रसीद

9. निम्न में से कौन–सा प्रलेख निर्यातक द्वारा बनाया जाता है जिसमें जहाज से माल भेजने से संबंधित विवरण होता है जैसे भेजने वाले का नाम, पैकेजों की संख्या, जहाजी बिल, गंतव्य बंदरगाह, जहाज का नाम आदिः

(क) जहाजी बिल (ख) पैकेजिंग सूची
(ग) कारिंदे की रसीद (घ) विनियम पत्र

10. प्रलेख जिसमें बैंक द्वारा उस पर निर्यातक द्वारा लिखे बिल के भुगतान की गारंटी दी होती है। वह है–

(क) बंधक पत्र (ख) साख पत्र
(ग) जहाजी बिल्टी (घ) विनियम पत्र

11. टी.आर.आई.पी (TRIP), विश्व व्यापार संगठन के समझौते में से है जो संबंधित है–

(क) कृषि व्यापार (ख) सेवा व्यापार
(ग) व्यापार संबधित निवेश उपाय (घ) इनमें से कोई नही

12. विश्व को आजकल वैश्विक गाँव क्यों कहा जाता है?

13. मिलान करें:–

उद्गम का प्रमाण पत्र	जहाज का नायक जहाज पर माल के लदान के पश्चात निर्यातक को देता है
मेटस् रसीद	जहाजी कम्पनी द्वारा जारी जहाज पर माल प्राप्ति की रसीद तथा गंतव्य बंदरगाह पर पहुँचाने की शपथ।

जहाजी बिल्टी	इस प्रलेख में आयतित माल की विस्तृत जानकारी होती है। इसी के आधार पर जहाज उतरवाया जाता है
आयातित माल की सूची	यह बताता है कि माल का उत्पादन किस देश में हुआ है।

अतिलघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक वाले)

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय क्या है?
2. विदेशी निवेश के दो प्रकार बताइए?
3. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में प्रवेश के कोई दो तरीके बताइए।
4. इंडैट क्या होता है ?
5. भुगतान से संबंधित दो प्रलेखों के नाम बताइए?
6. प्रारूप बीजक क्या है?
7. दो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्थाओं के नाम बताइए ?
8. उस दस्तावेज का नाम बताइए जिसमें आयातक के बैंक द्वारा गारंटी अथवा आश्वासन दिया जाता है कि वह निर्यातक द्वारा उस पर लिखे हुए बिलों का भुगतान कर देगा।
9. प्री–शिपमेन्ट निरीक्षण (जहाज पूर्व लदान निरीक्षण) की निर्यातक फर्म को क्यों आवश्यकता होती है?
10. प्रवेश बिल (Bill of Entry) का क्या महत्त्व है ?
11. F.D.I. का विस्तार करें।
12. C&F एजेन्ट कौन होता है।
13. एक भारतीय फर्म हॉजरी कपड़े का निर्माण अमेरिका की तुलना में बेहतर गुणवत्ता तथा कम लागत पर कर सकती है। ऐसे में भारतीय फर्म को अपना उत्पादन कहाँ बेचना श्रेयस्कर होगा?
14. रॉबिन और मयंक निर्यातक हैं। रॉबिन फलों व सब्जियों का आयात करता है जबकि मयंक शीपिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाता है। मयंक और रॉबिन द्वारा किए गए व्यापार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

15. रमन एक जूता निर्माता है। वह अपना माल निर्यात करना चाहता है। रमन के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से राष्ट्र को होने वाले कोई एक लाभ बताओ।

16. अमर विदेश मे विनियोग करना चाहता है। उसे कोई एक विदेशी विनियोग का माध्यम बताइए।

17. उत्पादन के लिए ग्लोबल सोरसिंग क्या है?

लघु उत्तरीय प्रश्न (3–4 अंक वाले)

1. आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अन्तर स्पष्ट करें।

2. विश्व व्यापार संगठन के कार्यों का वर्णन कीजिए?

3. जहाजी बिल्टी क्या है? यह प्रवेश बिल से किस प्रकार भिन्न है।

4. विश्व व्यापार संगठन के क्या उद्देश्य हैं?

5. चाइना भारत से तुलनात्मक रूप में इलैक्ट्रानिक वस्तुओं का उत्पादन बहुत ही कम लागत पर करता है। यदि भारत चीन से इन वस्तुओं का व्यापार करता है तो भारत को क्या लाभ होगा?

6. IEC नम्बर प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यवाही क्या है?

7. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में आने वाली चार बाधाएँ क्या हैं?

8. निर्यात लाइसेंस प्राप्त करने के लिए क्या–क्या आवश्यक है?

9. निम्न प्रपत्रों को समझाइए :

   1) मेट्स रसीद

   2) साख पत्र

   3) जहाजी बिल

   4) उद्गम प्रमाण–पत्र

10. ब्रैटन वूडस् सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया था कि एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन (ITO) स्थापना की जानी चाहिए जिसका उद्देश्य सदस्य देशों के मध्य व्यापार आसान बनाए। पर यह विचार संभव नहीं हो पाया। इसकी बजाए भाग लेने वालों ने GATT नामक व्यवस्था स्थापित की और अन्त में वे एक संगठन ITO बनाने में सफल हुए।

    1) स्थापित संगठन का नाम लिखें।

2) GATT का क्या अर्थ है?

3) यह प्रस्ताव शुरू में क्यों नहीं पूरा हो पाया?

4) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नियम बनाते समय किन मूल्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

11. मि. राज ने एक दक्षिण कोरिया की कम्पनी को 1000 मोबाईल फोन का आदेश दिया। उसने आदेश में माल की मात्रा, किस्म, मूल्य व अन्य सभी संबंधित बातों का उल्लेख किया। उसके भाई रामपाल ने जापानी कम्पनी को 500 मोबाईल फोन का आदेश दिया। उसने आदेश में माल के आयात संबंधी सभी बातों का उल्लेख नहीं किया।

आप बताइए कि विदेशी व्यापार की भाषा में आदेश को क्या कहते हैं? राज व रामपाल द्वारा दिए गए आदेशों को विदेशी व्यापार की भाषा में क्या कहेंगे?

12. ''प्राकृतिक साधनों के असमान वितरण का सामना करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय एक अनिवार्यता है''। तर्क दीजिए।

13. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भुगतान का सबसे उपयुक्त व सुरक्षित तरीका कौन–सा है? निर्यातकर्त्ता इस पत्र की माँग आयातकर्त्ता से क्यों करता है? वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न (5–6 अंक वाले)

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय से राष्ट्र तथा फर्मों को होने वाले लाभ का वर्णन कीजिए?

2. निर्यात में प्रयुक्त होने वाले मुख्य प्रलेखों का वर्णन कीजिए ?

3. आयात प्रक्रिया का वर्णन कीजिए ?

4. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए ?

   1) व्यापारिक पूछताछ

   2) निर्यात लाइसेंस

   3) साख पत्र

   4) विश्व व्यापार संगठन

5. आप अमेरिका से लैपटॉप आयात करना चाहते हैं। इनका आयात करने के लिए आपको क्या कार्यविधि अपनानी होगी ?

6. S Ltd. इण्डोनेशिया को कपड़ों का निर्यात करना चाहती है इस कार्यविधि में S Ltd. को कौन–कौन से प्रलेख तैयार करने होंगे।

7. आप एक शर्ट निर्माता हैं। आप इन शर्टों का निर्यात यूगांडा करना चाहते हैं। इसमें आपको किन–किन परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है ?

8. RIPPLES इण्डस्ट्रीज को अमरीका के वालमार्ट से 5000 बच्चों की जीन्स का आर्डर मिला है। इसको इस निर्यात के लिए क्या कार्यवाही करनी होगी?

9. निम्न प्रलेखों को पहचानें :

   1) यह रसीद जहाज के नायक द्वारा जहाज पर माल के लदान के पश्चात् निर्यातक को दी जाती है।
   2) यह प्रलेख जहाजी कम्पनी द्वारा जारी जहाज पर माल की प्राप्ति की रसीद है तथा गंतव्य बंदरगाह तक उसे ले जाने की शपथ भी।
   3) अन्तर्राष्ट्रीय सौदों के निपटान के लिए भुगतान का सबसे उपयुकत एवं सुरक्षित साधन।
   4) इस प्रलेख के आधार पर कस्टम अधिकारी निर्यात की अनुमति देता है।
   5) वह प्रपत्र आयातित वस्तुओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।
   6) इस प्रपत्र के आधार पर आयातित वस्तुएँ जहाज से उतारी जाती है।

10. विश्व व्यापार संगठन की क्या भूमिका है?

11. श्री मनचन्दा गुड़गांव में एक स्कूटर निर्माता हैं। उनका पुत्र अमेरिका से एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर भारत वापस आया है। वह अपने पिता को यह सुझाव देता है कि वे अपनी एक फैक्ट्री बैंकाक में स्थापित करें जिससे वे दक्षिण–पूर्व एशिया और मध्य पूर्व के देशों में भी व्यापार कर पाएंगे।

    श्री मनचन्दा इस प्रस्ताव की अनुमति नहीं देते। वे यह चाहते हैं कि यह फैक्ट्री वे दक्षिण भारत में स्थापित करें। इस पर दोनों में बहस छिड़ जाती है।

प्र. 1 आपके विचार से इस बहस में वे दोनों क्या–क्या दलील देंगे।

प्र. 2 आप किससे सहमत हैं ? अपनी सहमति के लिए कारण स्पष्ट करें।

अभ्यास प्रश्न पत्र-I

व्यवसाय अध्ययन

हल सहित प्रश्न पत्र

अधिकतम समय 3 घण्टे **अकितम अंकः 80**

सामान्य निर्देश

प्रश्न	अंक
1—20	1
21—24	3
25—30	4
31—34	6

प्रश्न 1. किस आधार पर भारत सरकार छोटे व्यवसायों का वर्गीकरण करती है?

(क) उत्पाद का आकार

(ख) संयंत्र और मशीनरी में पूंजी निवेश

(ग) बिजली की खपतः

(घ) उत्पाद का मूल्य

प्रश्न 2. छोटे व्यवसायों के प्रदर्शन और क्रेडिट रेटिंग की योजना किस सरकारी संस्था द्वारा छोटे व्यवसायों को सहायता प्रदान कर रही है?

(क) राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम

(ख) जिला औद्योगिक केंद्र

(ग) लघु उद्योग विकास बँक

(घ) नाबार्ड

प्रश्न 3. व्यापार दस्तावेजों में किस शब्द का उपयोग यह कहने के लिए किया जाता है। कि गलतिया और चीजों को भुला दिया जाये?

प्रश्न 4. विनोद एक फल और सब्जी विक्रेता है। वह फल और सब्जियों को हाथ की गाड़ी में रखकर उन्हें पास की कॉलोनी में बेचने के लिए ले जाता था। वह किस प्रकार का भ्रमणकारी व्यापारी है?

(क) फेरीवाला

(ख) सस्ते दर की दुकान

(ग) पटरी व्यापारी

(घ) सावधिक बाजार व्यापारी

प्रश्न 5. दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय ने एनजीओ अन्नपूर्णा के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित स्कूलों के छात्रों को मध्याह्न भोजन प्रदान किया जाता है। एनजीओ लच ब्रेक के दौरान रोजाना स्कूली छात्रों को पका हुआ मिड–डे मील प्रदान करता है। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय और एनजीओ ''अन्नपूर्णा'' के बीच यह सहयोग क्या है?

(क) संयुक्त उद्यम
(ख) बाह्य स्त्रोतिकरण
(ग) सरकारी निजी भागीदारी
(घ) समझौता ज्ञापन

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से कौन सी सी–टू–बी (ग्राहक–से–व्यवसाय) के उदाहरण के रूप मे सबसे अच्छा है

(क) खुदरा विक्रेताओं को उत्पादों का ई–कैटलॉग भेजने वाला थोक व्यापारी।
(ख) विक्रेता और उपभोक्ता के बीच ऑनलाइन बैठक (meeting)
(ग) उत्पाद से संबंधित प्रश्नों के लिए उपभोक्ता द्वारा कॉल सेंटर मे कॉल करना ।
(घ) एक व्यक्ति ebay जैसी नीलामी वेबसाइटों पर अपने उत्पाद को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न 7. ....एक प्रमाणपत्र है जो उस देश को निर्दिष्ट करता है जिसमें सामान का उत्पादन किया जा रहा है।

प्रश्न 8. पूजा अपनी नौकरी को लेकर काफी व्यस्त है। इसलिए उसके लिए किराने की दुकान में नकदी ले जाना और खरीदना हमेशा संभव नहीं होता है। उसे समझदारी से खरीदारी करने का बेहतर तरीका सुझाए।

प्रश्न 9. एक व्यक्ति तीन इंश्योरेंस कंपनियों से अपनी फैक्ट्री (50,00,000 रुपये) का बीमा करवाता है– A रु20,00,000 B रु20,00,000 और C रु10,00,000! नुकसान होने पर, क्षतिपूर्ति का भुगतान बीमा कंपनियों द्वारा 2:2:1 के अनुपात में किया जाएगा। बीमा का कौन–सा सिद्धांत यहाँ पर बताया गया है?

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से कौन सा अकेले एक व्यावसायिक उद्यम में एक प्रभावी नैतिकता कार्यक्रम सुनिश्चित कर सकता है?

(क) कोड का प्रकाशन
(ख) सभी स्तरों पर कर्मचारियों की भागीदारी

(ग) अनुपालन तंत्र की स्थापना
(घ) शीर्ष प्रबंधन प्रतिबद्धता

प्रश्न 11. पीके प्राइवेट लिमिटेड ने अपनी सभी विनिर्माण इकाइयों में जल उपचार संयंत्र स्थापित किया है। यह निश्चित रूप से व्यवसाय के लिए एक अतिरिक्त लागत है। लेकिन प्रबंधन चिंतित है क्योंकि तैयार माल में अतिरिक्त लागत को जोड़ा जाएगा और इससे उनके उत्पाद की कीमतों में थोड़ी वृद्धि होगी। इसका परिणाम कम बिक्री और अंततः कम मुनाफा हो सकता है। सामाजिक दायित्व में व्यवसाय की भागीदारी के विरुद्ध कौन सा तर्क यहाँ बताया गया है?.

प्रश्न 12. लेखांकन और वित्त ई–व्यवसाय का हिस्सा है। यह तय है या गलत

प्रश्न 13. किस उद्योग के लिए इंजीनियरिंग और वास्तु कौशल की आवश्यकता है?
(क) निष्कर्षण उद्योग
(ख) निर्माण उद्योग
(ग) रचनात्मक उद्योग
(घ) तृतीयक उद्योग

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किस आर्थिक गतिविधियों के लिए पेपर निकाय से योग्यता और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है?
(क) व्यवसाय
(ख) रोजगार
(ग) पेशा
(घ) उद्योगपति

प्रश्न 15. आन्तरिक वित्तपोषण अथवा स्वयं वितणेषण का स्रोत क्या है।
(क) व्यापारिक उधार
(ख) आढ़त
(ग) सचित आय
(घ) पट्टे का वित्तपोषण

प्रश्न 16. अन्तराष्ट्रीय भाषा में वस्तुओं का आर्डर देना कहलाता हैं............................
(क) हिला देखि पिल
(ख) शिपिंग विल
(ग) इडेट
(घ) वीजक

प्रश्न 17. SAIL उदाहरण है......................का!

(क) सरकारी कंपनी

(ख) वैधानिक निगम

(ग) भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड

(घ) विभागीय उपक्रम

प्रश्न 18. वैधानिक निगमों का वित्त पोषण सीधे केंद्र सरकार के बजट से होता है। (सही / गलत)

प्रश्न 19. एक निजी कंपनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या कितनी होती है?

(क) 100

(ख) 200

(ग) 50

(घ) ऐसी कोई सीमा नहीं होती

प्रश्न 20. अतीत में, उपमहाद्वीप के किस शहर को ज़री के काम के लिए जाना जाता है?

(क) वाराणसी

(ख) उज्जैन

(ग) सूरत

(घ) तक्षशिला

प्रश्न 21. ''क्राउड फडिंग'' शब्द की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 22. ''सदस्य आ सकते हैं और जा सकते हैं लेकिन कंपनी का अस्तित्व बना रहता है।'' इस कथन में कंपनी व्यवसाय की किस विशेषता को दर्शाया गया है। इसे समझाए और कंपनी की किसी भी अन्य विशेषताओं की व्याख्या करे।

प्रश्न 23. गोदाम में आग से संबंधित जोखिम के बारे में अमित चिंतित है। इस तरह के जोखिम को कवर करने के लिए उन्होंने AB सामान्य बीमा कंपनी से अग्नि बीमा लिया। कुछ दिनों के बाद आग के प्रज्वलन के बिना अधिक ताप लगने के कारण होने वाले नुकसान के कारण होता है। अमित नुकसान का दावा करता है। क्या अमित को एबी जनरल इंश्योरेंस कंपनी से हजाने का दावा मिलेगा? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 24. अल्फा लिमिटेड के निदेशक मंडल कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में एक नीति तैयार कर रहे हैं। वे उपभोक्ताओं के प्रति कंपनियों की

जिम्मेदारी को शामिल करने के लिए सुझावों की तलाश कर रहे थे। सुझाव दें कि कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी में क्या शामिल किया जाना चाहिए।

प्रश्न 25. वित्त के इस स्रोत को व्यापार के लिए धन का एक स्थायी स्रोत कहा जाता है। स्रोत को पहचानें और वित्त के ऐसे स्रोत के किसी भी दो गुणों की व्याख्या करें।

प्रश्न 26. सीता और गीता ने बायोडिग्रेडेबल मास्क और हर्बल सेनिटाइज़र बनाने के लिए एक बड़े व्यापारिक विचार की पहचान की क्योंकि COVID-19 सुरक्षा उपायों के कारण वे अधिक मांग में होंगे। इस प्रकार उन्होंने आर्थिक, वित्तीय और तकनीकी व्यवहार्यता का अध्ययन किया। उन्हें विशाल वित्त की भी आवश्यकता है क्योंकि वे प्रस्तावित उत्पादों को बड़े पैमाने पर उत्पादित करना चाहते हैं। उनके पास वित्त व्यक्तिगत रूप से कमी है और इसलिए वे जनता के माध्यम से वित्त लेना चाहते हैं। व्यवसाय की स्थापना की प्रक्रिया में वे व्यवसाय का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार कर रहे थे जो उनके व्यवसाय के उद्देश्यों को परिभाषित करता है।

उपरोक्त पैराग्राफ के आधार पर निम्नलिखित उत्तर दे.

(क) सीता और गीता किस तरह का व्यवसाय स्थापित कर रहे हैं?

(ख) जिस व्यवसाय को ये स्थापित कर रहे है उसमें सीता और गीता की स्थिति क्या है?

(ग) वे किस महत्वपूर्ण दस्तावेज की तैयारी कर रहे हैं? इस दस्तावेज के मुख्य बिंदुओं में से एक की व्याख्या करें।

प्रश्न 27. व्यवसाय और परंपरागत व्यवसाय में अंतर स्पष्ट ई–व्यवसाय कीजिए। (कोई –4)

अथवा

ई. व्यवसाय के कोई कोई चार लाभों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 28. उपमहाद्वीप में प्राचीन काल के दौरान व्यापार में व्यापार मण्डल की भूमिका स्पष्ट करें।

प्रश्न 29. पूजा और रिया ने हाल ही में अपना चार्टर्ड एकाउंटेंसी कोर्स पूरा किया है। पूजा बतौर चीफ अकाउंटंट MNC में शामिल हुई। जबकि रिया ने व्यक्तिगत रूप से लेखाकन और ऑडिट का अभ्यास करना शुरू किया। अब निम्नलिखित का उत्तर दें:

(1) उन आर्थिक गतिविधियों का नाम बताइए जिनमें दोनों शामिल हैं।

(2) निम्नलिखित के आधार पर जिन आर्थिक गतिविधियों में दोनों शामिल है, के बीच अंतर करे

(क) उनके द्वारा किया गया पूंजी निवेश
(ख) जोखिम
(ग) उनके काम का पारिश्रमिक
(घ) आवश्यक योग्यता

प्रश्न 30. निहारिका एक एमएनसी के उच्च पद पर कार्यरत है। उसकी दिनचर्या इस प्रकार से है कि, वह रोजमर्रा की आवश्यक की चीजों को खरीदने के लिए हर एक दुकान पर नहीं जा सकती। इसलिए वह एक बड़े स्टोर में जाती है जहाँ हवाई जहाज से लेकर सुई तक बेचा जाता है। उसे वहाँ अच्छा महसूस। होता है क्योंकि यह टॉयलेट, रेस्तरा और किडस प्ले एरिया की सुविधा प्रदान करता है। इसलिए बच्चों को वहां ले जाना हमेशा सुरक्षित होता है। परन्तु यह स्टोर इतना बड़ा था कि एक अटेंडेंट को ढूंढने और वांछित उत्पादों को खोजन कभी–कभी एक बड़ी समस्या बन जाती है। इसके अलावा स्टोर शहर की केंद्र में स्थित है और वह शहर के उप–शहरी क्षेत्र में रहती है। यही कारण है की उसके लिए दैनिक आवश्यक उत्पादों को खरीदने के लिए वहां पहुंचना हमेशा संभव नहीं होता है।

उपरोक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित का उत्तर दें

(1) सामान खरीदने के लिए निहारिका किस तरह की दुकान पर जाती है?

(2) उस दुकान को (i) जो कि में पहचाना गया है के किन गुणों का पता चलता है? उन पंक्तियों को भी उद्धृत करें। (कोई दो)

(3) (i) में चिन्हित दुकान के कौन से अवगुणों को दर्शाया गया है? साथ ही लाइनों को कोट करें। (कोई दो)

प्रश्न 31. उस अंतरराष्ट्रीय संगठनों का नाम बताइए जो सदस्य देशों के बीच बहुपक्षीय व्यापार वार्ता के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस अंतराष्ट्रीय संगठन द्वारा निष्पादित कार्यों को भी सूचीबद्ध करें। (कोई भी चार)

अथवा

निम्नलिखित आधार पर घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अंतरः

(i) उत्पादन के कारको को जुटाना।

(ii) ग्राहक की विवधता
(iii) जोखिम
(iv) प्रयुक्त मुद्रा
(v) कर की दर (टैरिफ)।

प्रश्न 32. सार्वजनिक निजी साझेदारी मॉडल क्या है? पीपीपी मॉडल किन क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है? इसकी मुख्य विशेषताएं बताइए

अथवा

वैश्विक उपक्रम क्या है? इसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। (कोई भी चार)

प्रश्न 33. वित्त के किस स्रोत को वित्त का सस्ता स्रोत कहा जाता है? वित्त के इस स्त्रोत को परिभाषित करें और उसके गुण बताए।

अथवा

वित्त का कौन सा स्रोत कंपनी के स्वामित्व का प्रतिनिधित्व करता है? इसकी मुख्य विशेषताएं और गुण बताए।

प्रश्न 34. निम्नलिखित आयात दस्तावेजों की व्याख्या करें
(i) प्रारूप बीजक
(ii) प्रवेश बिल
(iii) साख पत्र
(iv) विनिमय पत्र

सैम्पल पेपर की अंकन योजना (2022-23)

1. (ख) संयंत्र और मशीनरी में पूंजी निवेश

2. (क) राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम

3. त्रुटि और चूक अपवादित (इ एवं ओइ)

4. (क) फेरीवाला

5 (ग) सरकारी निजी भागीदारी

6. (ग) उत्पाद से सबंधित प्रश्नों के लिए उपभोक्ता द्वारा कॉल सेंटर में कॉल करना।

7. उदगम प्रमाण पत्र

8ण आप उसे सुझाव दे सकते हैं (i) ऑनलाइन ई–कॉमर्स साइट से खरीदारी (ii) ऑनलाइन माध्यमों से भुगतान करें– ई–वॉलेट, डेबिट या क्रेडिट कार्ड, यूपीआई आदि।

9. अंशदान

10. (क) कोड का प्रकाशन

11. उपभोक्ताओं पर बोझ

12. सत्य

13. (ग) पेशा

15. (ग) संचित / प्रतिधारित आय

16. इण्डेट

17. (क) सरकारी कंपनी

18. असत्य

19. (ख) 200

20. (ग) सूरत

21. क्राउडफंडिंग यह एक समान लक्ष्य के लिए लोगों के समूह द्वारा संसाधनों को एकत्र करना है। क्राउडफंडिंग भारत के लिए नया नहीं है। फडिंग के लिए आम लोगों तक संगठनों के पहुंचने के कई उदाहरण है। हालाँकि

प्लेटफॉर्म का उद्‌भव जो क्राउडफडिंग को बढ़ावा देता है, भारत के लिए नया है। ये प्लेटफॉर्म स्टार्टअप्स या छोटे व्यवसायों को उनकी फंडिंग आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते हैं।

22. शाश्वत उत्तराधिकार एक कंपनी जो कानून द्वारा निर्मित होती है, उसे केवल कानून द्वारा समाप्त किया जा सकता है। यह केवल तब तक ही अस्तित्व में रहेगा जब इसके समापन की एक विशिष्ट प्रक्रिया, जिसे बाइंडिंग अप कहा जाता है, ना पूरा हो जाये। सदस्य आ सकते है और सदस्य जा सकते हैं, लेकिन कंपनी का अस्तित्व बना रहता है।

किसी अन्य विशेषता की व्याख्या करें कृत्रिम व्यक्ति, अलग कानूनी इकाई, गठन, नियंत्रण देयता, सामान्य मुहर या जोखिम वहन ।

23. अग्नि बीमा अनुबंध द्वारा कवर किया गया जोखिम आग या किसी अन्य कारण से होने वाला नुकसान है, और जो नुकसान का अनुमानित कारण है। यदि इग्निशन के बिना ओवरहीटिंग से नुकसान होता है, तो इसे अग्नि हानि नहीं माना जाएगा। इसलिए अमित को हर्जाने का दावा नहीं मिलेगा।

24. उपभोक्ताओं के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी की सुझाव सूची

(i) उपभोक्ताओं को सही गुणवत्ता वाले सामान और सेवाओं की आपूर्ति

(ii) उचित मूल्य प्रभार

(iii) उद्यम को मिलावट, माल की खराब गुणवत्ता के खिलाफ उचित सावधानी बरतनी चाहिए।

(iv) ऐसा प्रचार और विज्ञापन नहीं करना जो भ्रामक और बेईमान है।

(v) उपभोक्ता को उत्पाद के संबंध में सभी नियम और शर्तों की जानकारी दें।

25. प्रतिधारित आय। इसके मुख्य गुण हैः (कोई भी दों)

(i) प्रतिधारित आय किसी संगठन को उपलब्ध धन का एक स्थायी स्रोत है।

(ii) इस पर ब्याज, लाभाश या प्रवर्तन लागत के रूप में कोई स्पष्ट लागत नहीं लगती है।

(iii) यह अप्रत्याशित नुकसान को अवशोषित करने के लिए व्यवसाय की क्षमता को बढ़ाती है।

(iv) इससे किसी कंपनी के इक्विटी शेयरों के बाजार मूल्य में वृद्धि हो सकती है।

26. (i) व्यवसाय का रूप– कंपनी

(ii) वे प्रवर्तक है।

(iii) वे एक पार्षद सीमा नियम तैयार कर रहे हैं।

पार्षद सीमा नियम के विभिन वाक्यों में से एक पूंजी वाक्य नाम वाक्य रजिस्टर्ड ऑफिस वाक्य दायित्व वाक्य उद्देश्य वाक्य है। इस सपोर्ट मटीरियल NCERT के अनुसार किसी एक का वर्णन करे)

27.

28. अर्थ व्यापार मंडल व्यापारियों के औपचारिक स्वायत्त निकाय हैं जो व्यापारियों के हित की रक्षा के लिए बनाए गए थे।। व्यापार मंडल की भूमिका निम्नलिखित थी.

(i) वे अपने स्वयं के नियम और पेशेवर आचार संहिता बनाते थे जिसे राजा भी स्वीकार करते थे।

(ii) वे राजा के साथ सीधे बात करते था और अन्य व्यापारियों की ओर से कर और शुल्क के निपटान पर बातचीत करते थे।

(iii) ये मंदिरों के निर्माण के लिए धन दान करके धार्मिक गतिविधियों के संरक्षक के रूप में भी कार्य करते हैं।

29. (i) पूजा रोजगार में है जबकि रिया पेशे से है।

(ii) रोजगार और पेशे के बीच अंतर नीचे दिया गया है:

आधार	रोजगार	
(क) पूँजी निवेश	किसी पूँजी निवेश की आवश्यकता नहीं है	स्थापना के लिए सीमित पूँजी की आवश्यकता है।
(ख) जोखिम	निश्चित और नियमित वेतन, थोडा या नाममात्र का जोखिम	शुल्क सामान्यत नियमित और निश्चित होता है, थोड़ा जोखिम मौजूद है.
(ग) काम का पारिश्रमिक	वेतन और मजदूरी	पेशेवर शुल्क
(घ) आवश्यक योग्यता	नियोक्ता द्वारा निर्धारित योग्यता और प्रशिक्षण	पेशेवर संस्था द्वारा निर्धारित विशिष्ट क्षेत्र में योग्यता. अनुभव और प्रशिक्षण

30. (i) डिपार्टमेंटल स्टोर

(ii) गुणः

(अ) खरीदने में सुविधा उद्धृत लाइने– ''इसलिए वह एक बड़े स्टोर ने जाती है जहाँ ''हवाई जहाज से लेकर सुई'' तक बेचा जाता है।''

(ब) आकर्षक सेवाए उद्धृत लाइनें– ''उसे वहाँ अच्छा महसूस होता है। क्योंकि यह टॉयलेट, रेस्तरां और किड्स प्ले एरिया की सुविधा प्रदान करता है। इसलिए बच्चों को वहा ले जाना हमेशा सुरक्षित। होता है।श

(iii) अवगुणः

(अ) व्यक्तिगत ध्यान का अभाव उद्धृत लाइन– ''परन्तु यह बड़ा कि एक अटेंडेंट को ढूंढने और वांछित उत्पादों खोजन कभी–कभी समस्या बन जाती है।''

(ब) असुविधाजनक स्थान उद्धत लाइन– ''इसके अलावा की केंद्र में स्थित और शहर उप–शहरी क्षेत्र यही कारण की उसके लिए दैनिक आवश्यक खरीदने के लिए वहां पहुँचना हमेशा संभव नहीं होता है।''

31. विश्व व्यापार संगठन

विश्व व्यापार संगठन द्वारा निष्पादित कार्यः (इस सहायक सामग्री/NCERT पुस्तक में दिए गए कोई भी चार)

अथवा

घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अंतरः–

आधार	घरेलू व्यापार	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
1. उत्पादन के कारकों को जुटाना	अधिक गतिशील	अपेक्षाकृत कम गतिशील
2. ग्राहक की विविधता	घरेलू बाजार अपेक्षाकृत अधिक एकरूपता है।	अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भाषा, वरीयताओं, रीति'रिवाजों आदि में अंतर के कारण समरूपता का अभाव है।

3. जोखिम	घरेलु व्यवसाय में कम जोखिम होता है क्योंकि यह एक राष्ट्र तक सीमित होता है।	अधिक जोखिम, क्योंकि इसमें विभिन्न राष्ट्र शामिल होते है।
4. प्रयुक्त मुद्रा	घरेलू मुद्रा का उपयोग किया जाता है।	व्यापार में एक से अधिक राष्ट्रों की मुद्रा का उपयोग किया जाता है।
5. कर की दर (टैरिफ)	एक राष्ट्र की कराधान प्रणाली लागू होती है।	शुल्क, कस्टम डयूटी और एक्साइज दरें राष्ट्रों के बीच द्वि–पक्षीय या बहुपक्षीय व्यापार समझौतों द्वारा तय की गई हैं।

32. पीपीपी मॉडल पब्लिक प्राइवेट पार्टनर शिप मॉडल सार्वजनिक और निजी भागीदारों के कार्यों, दायित्वों और जोखिमों को इष्टतम तरीके से आबंटित करता पीपीपी सार्वजनिक भागीदार सरकारी संस्थाएं अर्थात मंत्रालय, सरकारी विभाग, नगरपालिका राज्य स्वामित्व वाले उद्यम

पीपीपी मॉडल तहत, सार्वजनिक क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता और सुनिश्चित करता है सामाजिक दायित्वों को किया जाए और क्षेत्र सुधार और सार्वजनिक निवेश सफलतापूर्वक प्रयोग हो। साझेदारी निजी क्षेत्र भूमिका संचालन कार्यों प्रबंधन और नवाचार को कुशलता चलाने के अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करना

जिन क्षेत्रों PPP पूरे चुके उनमें बिजली उत्पादन और वितरण, जल और स्वच्छता निपटान, पाइपलाइन अस्पताल, स्कूल भवन और शिक्षण सुविधाएँ स्टेडियम हवाई यातायात नियंत्रण, जेल, रेलवे, सडक, बिल्डिंग अन्य सूचना प्रौद्योगिकी प्रणाली और आवास शामिल हैं।

अथवा

वैश्विक उद्यम वैश्विक उद्यम विशाल औद्योगिक संगठन जो कई देशों अपनी शाखाओं एक नेटवर्क के माध्यम से अपने औद्योगिक और विपणन कार्यों का विस्तार करते हैं। वैश्विक उद्यम विशाल निगम जो कई देशों में अपना परिचालन करते हैं। अपने विशाल आकार बड़ी संख्या में उत्पादों

उन्नत प्रौद्योगिकी विपणन रणनीतियों और पूरी दुनिया में संचालन के नेटवर्क की विशेषता है।

वैश्विक उद्यमों की विशेषताएँ:

(i) विशाल पूँजी संसाधन (ii) विदेशी सहयोग
(iii) उन्नत तकनीक (iv) उत्पाद नवाचार
(v) विपणन रणनीतियाँ (vi) बाजार क्षेत्र का विस्तार
(vii) केंद्रीकृत नियंत्रण

(किन्ही चार का वर्णन, सहायक सामग्री/NCERT पुस्तक में से)

33. पत्र किसी कंपनी द्वारा जारी किया गया ऋण पत्र इस बात की पावती होती कि कंपनी ने एक निश्चित राशि उधार ली है, जिसे वह भविष्य की तारीख में चुकाने का वादा करता है।

ऋण पत्र के गुण–

(i) यह उन निवेशकों द्वारा पसंद किया जाता जो कम जोखिम पर निश्चित आय चाहते हैं।

(ii) ऋण पत्र स्थिर प्रभार वाले कोष और कंपनी के लाभ हिस्सेदारी नहीं लेते है।

(iii)ऋण पत्र उस स्थिति में उपयुक्त जब बिक्री और कमाई अपेक्षाकृत स्थिर हो

(iv) ऋणपत्रधारियों को मतदान का अधिकार नहीं होता ऋण पत्र माध्यम वित्तपोषण करने से प्रबंधन पर समता शेयरधारकों का नियंत्रण कमजोर नहीं होता है।

(v) ऋण पत्र वित्त का एक सस्ता स्रोत क्योंकि ऋण पत्र ब्याज एक कर कटौती योग्य व्यय है। (कोई भी चार)

अथवा

समता अश पूँजी वित्त का एक स्रोत जो ''कंपनी के स्वामित्व'' का प्रतिनिधित्व करता है। समता अंश पूंजी की विशेषताएँ:

(i)समता अंश पूंजी कंपनी के निर्माण के लिए एक आधारभूत शर्त है।
(ii) समता अंशधारकों को लाभांश की एक निश्चित राशि नहीं मिलती है।

(iii) समता अंशधारकों को अवशिष्ट स्वामी इस लिए कहते क्योंकि कंपनी की आय पर सभी दावों के पूरा होने पर, बाद बची आय समता अंशधारको का ही मिलती है।
(iv) समता शेयरधारकों के पास मतदान का अधिकार होता और बैठको भाग लेते हैं और निर्णय लेते हैं।

समता अश पूँजी के लाभः–
(i) इक्विटी शेयर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो उच्च आय के लिए जोखिम लेने को तैयार हैं।
(ii) समता अंशधारकों को लाभांश का भुगतान अनिवार्य नहीं इसलिए इस संबंध कंपनी पर कोई वितीय बोझ नहीं होता है।
(iii) समता पूँजी स्थायी पूजी के रूप कार्य करती क्योंकि इसे किसी कंपनी परिसमापन के समय ही चुकाना होता है।
(iv)कंपनी की परिसंपत्तियों पर कोई शुल्क बनाए बिना समता अंशो माध्यम कोष जुटाया जा सकता है।

34. (i) प्रारूप बीजक यह एक दस्तावेज है. जिसमें खरीदार (आयातक) आपूर्तिकर्ता (निर्यातक) को अपेक्षित सामान की आपूर्ति के लिए आदेश देता है। आदेश या इंडेंट में जानकारी होती है जैसे कि आयात की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा और गुणवत्ता कीमत वसूल की जानी, सामान भेजने की विधि, पैकिंग की प्रकृति भुगतान का तरीका आदि।

(ii) प्रवेश बिल यह एक फॉर्म है जो सीमा शुल्क कार्यालय द्वारा आयातक को दिया जाता है। यह सामान प्राप्त करते समय आयातक द्वारा भरा जाना है। इसे तीन प्रतियों में तैयार किया जाता है और सीमा शुल्क कार्यालय में जमा करना होता है। प्रविष्टि के बिल में आयातक का नाम और पता, जहाज का नाम पैकेज की संख्या पैकेज पर निशान माल का विवरण, मात्रा और मूल्य माल का नाम और पता, गंतव्य का बंदरगाह, सीमा शुल्क देय आदि की जानकारी शामिल होती है।

(iii) साख पत्र यह एक दस्तावेज है जिसमें आयातक के बैंक की तरफ से निर्यातक के बैंक के लिए गारंटी है कि यह निर्यातक द्वारा आयातक को माल के निर्यात के लिए जारी किए गए बिलों की एक निश्चित राशि तक के भुगतान का सम्मान करने का उपक्रम करता है।

(iv) विनिमय पत्रः यह एक लिखित प्रपत्र है, जिसके तहत जारी करने

वाला व्यक्ति दूसरे पक्ष को एक निश्चित व्यक्ति या साधन के वाहक को एक निर्दिष्ट राशि का भुगतान करने का निर्देश देता है। एक निर्यात–आयात लेन–देन के संदर्भ में, निर्यातक द्वारा विनिमय बिल लिखा जाता है जो बाद वाले को एक निश्चित व्यक्ति या विनिमय के बिल के वाहक को एक निश्चित राशि का भुगतान करने के लिए कहता है। निर्यात प्रेषण को शीर्षक देने वाले दस्तावेज आयातक को तभी दिए जाते हैं, जब आयातक विनिमय पत्र में निहित आदेश को स्वीकार करता है।

अभ्यास प्रश्न पत्र-II

अधिकतम समय 3 घण्टे **अकितम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

प्रश्न	अंक
1–20	1
21–24	3
25–30	4
31–34	6

प्रश्न 1. अधिक वित्तीय साधनों की उपलब्धता तथा व्यवसाय की निरंतरता का लाभ किस व्यवसायिक संगठन से प्राप्त होता है।

(क) कम्पनी (ख) एकल स्वामित्व

(ग) साझेदारी (घ) संयुक्त हिंदु परिवार

प्रश्न 2. विजय अपनी मोटर बाइक बेचना चाहता है परन्तु उसे कोई खरीदार नहीं मिल रहा है। अपने एक मित्र के सुझाव से उसने अपनी मोटर बाईक के चित्र को फनपबामत पर बिक्री के लिए भेज दिया है और तीन दिनों में उसे एक खरीदार मिल गया। ई–व्यवसाय के प्रकार का नाम बताईये।

प्रश्न 3. एक व्यवसाय जिसमें लोग दूसरों के लिए काम करते है और बदले में पारिश्रमिक पाते है।

(क) व्यवसाय (ख) पेशा

(ग) रोजगार (घ) इसमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. स्वाद एग्रो के मालिक ने अपनी मिल का ओरियन्दल इंशोरेंस कम्पनी से अग्नि बीमा करवाया बीमा करवाते समय उन्होंने बीमा कम्पनी से यह बात छुपा ली की बिजली विभाग से उसके पास मिल की पुरानी बिजली तारे अतिशीघ्र बदलवाने का नोटिस आया हुआ है। बीमा करवाने के तीन महीने बाद ही पुरानी तारों में आग लग गयी बिल के मालिक को क्षतिपूर्ति नहीं मिली यहाँ किस बीमे के सिद्धाँत का उल्लंघन हुआ है।

(क) क्षतिपूर्ति (ख) बीमा योग्य हित

(ग) अंशदान (घ) परम् सद्विश्वास

प्रश्न 5. .... पर लाभांश की दर निश्चित होती है

(समता अंश / पूर्वाधिकार अंश)

प्रश्न 6. ई–बिजनिस के अंतर्गत .... को सम्मिलित किया जाता है

(क) ई–कॉमर्स (ख) उत्पादन

(ग) उत्पादन विकास (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 7. UCO Bank किस क्षेत्र का उदाहरण है।

(क) निजी क्षेत्र (ख) सार्वजनिक क्षेत्र

(ग) मिश्रित क्षेत्र (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8. साझेदारों की संख्या एक व्यवसाय में अधिक नहीं हो सकती

(सत्य / असत्य)

प्रश्न 9. .... भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य देश में नवाचार के पोषण के लिए एक मजबूत इकों–सिस्टम बनाना है।

(क) स्टार्टअप इंडिया स्कीम (ख) मेक इन इंडिया स्कीम

(ग) डिजिटल इंडिया स्कीम (घ) ग्रोइंग इंडिया स्कीम

प्रश्न 10. वाणिज्यिक बैंक .... के रूप में ऋण प्रदान नहीं करते है।

(क) अधिविकर्ष (ख) सावधि ऋण

(ग) आरक्षित निधि (घ) नकदी ऋण

प्रश्न 11. अंचल संपत्तियों में निवेश किए गए वित्त को कार्यशील पूँजी कहा जाता है (सत्य / असत्य)

प्रश्न 12. भारत के किस बैंक को शीर्ष बैक के नाम से जाना जाता है

(क) भारतीय स्टेट बैंक (ख) भारतीय रिजर्व बैंक

(ग) केन्द्रीय बैंक (घ) बैंक ऑफ इण्डिया

प्रश्न 13. एक सार्वजनिक कम्पनी की स्थापना करने के लिए सदस्यों की न्यूनतम संख्या ....है।

(क) 5 (ख) 7

(ग) 12 (घ) 21

प्रश्न 14. निम्न में से कौन से व्यवसाय का उपभोक्ताओं के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं है।

(क) अच्छी क्वालिटी की वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना।
(ख) विज्ञापन में वास्तविकता को प्रकट करना।
(ग) लाभ में हिस्सा प्रदान करना।
(घ) वस्तुओं में मिलावट न करना।

प्रश्न 15. उत्पादन – थोक व्यापारी – फुटकर व्यापारी – उपभोक्ता .... का उदाहरण है।

(क) फुटकर व्यापार
(ख) थोक व्यापार
(ग) प्रत्यक्ष व्यापार
(घ) अप्रत्यक्ष व्यापार

प्रश्न 16. "भारतीय रेलवे" सार्वजनिक उपक्रमों के .... प्रारूप का उदाहरण है।

(क) विभागीय उपक्रम
(ख) सार्वजनिक क्षेत्र
(ग) सरकारी कम्पनी
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 17. एक व्यक्ति यदि रु 50,000 मूल्य के माल का बीमा रु 70,000 करवाता है यदि उसका सारा माल क्षतिग्रस्त हो जाए तो बीमा कम्पनी केवल वास्तिवक हानि अर्थात् रु 50,000 का भुकतान करेगी न कि रु 70,000 का। इस स्थिती में बीमा का कौन सा सिद्धांत लागू हुआ है?

(क) अंशदान का सिद्धांत
(ख) अधिकार समर्पण का सिद्धांत
(ग) क्षतिपूर्ति का सिद्धांत
(घ) बीमा योग्य हित का सिद्धांत

प्रश्न 18. आर्धिक क्रियाएँ–

(क) व्यवसाय + पेशा
(ख) व्यवसाय + रोजगार
(ग) पेशा + रोजगार
(घ) व्यवसाय + पेशा + रोजगार

प्रश्न 19. कर्मचारियों की बेईमानी किस तरह का व्यवसायिक जोखिम है।

(क) मानवीय
(ख) प्राकृतिक
(ग) आर्थिक
(घ) सरकारी नीतिया

प्रश्न 20. ऐसे व्यवसायिक संगठन का नाम बताइए जिसमें पृथक वैधानिक अस्तित्व की विशेषता होती है

(क) एकल स्वामित्व
(ख) साझेदारी
(ग) सहकारी समिति
(ग) सभी व्यवसायिक संगठन

प्रश्न 21. लाभों का बंटवारा ही साझेदारी के अस्तित्व का निश्चयात्मक प्रमाण नहीं है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न 22. व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं होना चाहिए वरना व्यवसायिक मूल्यों का सामाजिक मूल्यों पर प्रभुत्व स्थापित हो जाएगा जो कि एक सुखद स्थिति नहीं है।
व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध से इस कथन को स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न 23. एक कम्पनी समता अंशधारियों (equity Shares) का प्रबंधकीय क्रियाओं में भागीदार बनाकर किन सामाजिक मूल्यों का पालन करती है।

प्रश्न 24. एक व्यापारी अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में भागीदार होकर किन सामाजिक मूल्यों का पालन करता है।

प्रश्न 25. क्या सार्वजनिक क्षेत्र कार्यकुशलता एवं लाभ (Effiency annd Profit) को लेकर निजी क्षेत्र में प्रतियोगिता कर सकता है।

प्रश्न 26. राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी के मालिक मान सिंह के पास 20 ट्रक हैं। क्रय करने के लिए उसने 'ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स' से ऋण लिया जिसकी वापसी वार्षिक किस्तों में की जाएगी। मान सिंह की फर्म में 50 लोग काम करते हैं। अपने कर्मचारियों के हित के लिए उसने एक डिस्पेंसरी की व्यवस्था की हुई है। डिस्पेंसरी में डॉ. भास्कर प्रतिदिन एक घण्टे के लिए आते हैं। डॉ. भास्कर का अपना स्वयं का अस्पताल भी है। मान सिंह के व्यवसाय में एक बहुत बड़ी कमी यह है कि उसने ट्रकों का बीमा नहीं करवाया।
(क) मान सिंह द्वारा बैंक के लिए गए ऋण का प्रकार बताइए।
(ख) मान सिंह द्वारा की जा रही क्रिया का नाम बताइए।
(ग) मान सिंह के पास जो 50 लोग काम करते हैं वे कौन–सी आर्थिक क्रिया कर रहे हैं?
(घ) डॉ. भास्कर जब अपना अस्पताल चलाते हैं तो यह उनकी कौन–सी आर्थिक क्रिया है?

(ङ) मान सिंह द्वारा ट्रकों का बीमा न करवाने के क्या परिणाम होंगे?

प्रश्न 27. 'तेजस्व प्रा० लि०' मध्यकालीन वित्त (Medium Term Finance) की कमी से जूझ रही है। यह जानने के लिए कि कंपनी को कौन–से वित्त स्रोत

(Source of Finance) का प्रयोग करना चाहिए इसके लिए विशेषज्ञों की राय ली जा रही है। एक वित्त विशेषज्ञ मि० राममूर्ति धारीवाला ने यह राय दी कि कंपनी को ऐसी प्रतिभूति (Security) का प्रयोग करना चाहिए– "जिस पर उन्हें कर–लाभ (Tax Advantage) प्राप्त हो और निवेशको (Investors) का प्रबंधकीय क्रियाओं में भी हस्तक्षेप न हो।" एक दूसरे वित्त विशेषज्ञ मि अक्षय अग्रवाल ने राय दी कि कंपनी को ऐसी प्रतिभूति जारी करनी चाहिए– "जो निवेशकों के दृष्टिकोण से अधिक तरल (Liquid) हो भले ही उन्हें प्रबंध में बिल्कुल हिस्सेदारी न मिले।" इसी प्रकार एक तीसरे वित्त विशेषज्ञ कु० बिंदु गुगलानी ने अपनी राय दी कि कंपनी को ऐसी प्रतिभूति जानी करनी चाहिए– "जो कंपनी के पूँजी ढांचे (Capital Structure) में लोचशीलता (Flexibility) पैदा करे व कर–लाभ प्रदान करें।" कंपनी ने सभी की राय जानने के बाद एक विशेष प्रतिभूति जानी करके पूंजी की व्यवस्था कर ली।

उपरोक्त अनुच्छेद में पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए पूंजी स्रोतों को पहचानिए।

प्रश्न 28. अब्दुल कादिर व सुनील कुमार ने मिलकर एक साझेदारी फर्म की स्थापना की। फर्म का कारोबार बड़े पैमाने पर ऑयल व फ्लोर का उत्पादन व विक्रय करना था। दोनों साझेदारों ने पर्याप्त मात्रा में पूंजी निवेश किया। उनके व्यवसाय का उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्यवर्धक ऑयल व फ्लोर उपलब्ध करना था। उन्होंने अपने उत्पाद का भाव अन्य प्रतियोगियों से बहुत कम रखा। उनके ब्राण्ड का नाम 'फुलवारी' था। बढ़िया क्वालिटी व कम भाव होने के कारण लोगों ने इस फर्म के उत्पाद को हाथों–हाथ लिया। फर्म ने अपने पूरे व्यवसाय को दो डिविजन में विभक्त किया हुआ था। पहले डिविजन का प्रबंधक मि० सुखबीर सिंह था। इसके डिविजन में की जाने वाली क्रियाएं इस प्रकार थीं– उत्पादन, स्टॉक प्रबंधक, उत्पाद विकास, लेखांकन एवं वित्त (Accounting and Finance) एवं मानव संसाधान प्रबंध (Human Resource Management) दूसरे डिविजन का प्रबंधक मि० रोहतास गांधी था। इस डिविजन में की जाने वाली क्रियाएं इस प्रकार थीं–माल के बारे में जानकारी प्राप्त करना, आदेश देना, सुपुर्दनी लेना व भुगतान करना। दोनों डिविजन अपनी सभी क्रियाएँ इंटरनेट के माध्यम से कर रहे थे। फर्म का व्यवसाय धीरे–धीरे विकास की ओर अग्रसर था। उपरोक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) रोहतास गांधी के डिविजन में की जाने वाली क्रियाओं को आधुनिक व्यावसायिक शब्दावली के आधार पर क्या कहा जाएगा?

(ख) मि० सुखबीर सिंह व मि० रोहतास गांधी द्वारा देखी जा रही क्रियाओं को सामूहिक रूप से आप क्या नाम देंगे?

(ग) यह फर्म किस सामाजिक मूल्य को प्रभावित कर रही है?

प्रश्न 29. दो मित्रों मि० नारायण मिश्रा व मि० गोविन्द राय ने भिन्न प्रकार के बीमा–पत्र (Insurance Policies) लिए। मि० नारायण मिश्रा ने अपने मकान का रु 50,00,000 रुपये का बीमा 'New India Insurance Co.' से करवाया। कंपनी इस जोखिम को अधिक समझ रही थी। उसने इसमें से रु 30,00,000 रुपये का बीमा 'New India Insurance Co.' से करवा लिया। कुछ दिन बाद भूंकप आया और मि० मिश्रा का मकान पूरी तरह नष्ट हो गया। 'New India Insurance Co.' ने पूरे रु 50,00,000 रुपये का भुगतान मि० मिश्रा को कर दिया। अब 'New India Insurance Co.' रु 30,00,000 'New India Insurance Co.' से प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार पहली कंपनी ने अपने जोखिम को कम कर लिया। दूसरे मित्र मि० गोविद राय ने 'Reliance Life Insurance Company Ltd.' व 'Life Insurance Corporation of India' से क्रमशः रु 10,00,000 रुपये व रु 5,00,000 रुपये का अपना जीवन बीमा करवाया। एक निश्चित अवधि तक वह जीवित रहा।

(क) उपरोक्त अनुच्छेद में दोनों मित्रों द्वारा किए गए बीमा अनुबंधों के प्रकार को पहचानिए।

(ख) मि० नारायण मिश्रा के बीमा अनुबंध में दो बीमा कंपनियों का सम्मिलित होना किस प्रकार के बीमा की ओर संकेत करता है।

(ग) मि० गोविन्द राय के बीमा अनुबंध में दो बीमा कंपनियों का सम्मिलित होना किस प्रकार के बीमा अनुबंध की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 30. समता अंशो एवं पूर्वधिकार अंशो में अंतर बताईये, किन्ही 5 आधारों के अनुसार उत्तर लिखे।

प्रश्न 31. स्पष्ट कीजिए कि निम्नलिखित उपक्रम सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sector) की किस श्रेणी से संबंधित

(क) भारतीय डाक–तार विभाग (Indian Postal & Telegraph Department)

(ख) Indian Railway (भारतीय रेलवे)

(ग) भारतीय जीवन बीमा निगम (Life Insurance Corporation of India)

(घ) कोल इंडिया लि० (Coal India Ltd.)

प्रश्न 32. पिंकी, चक्षु व साक्षी तीनों मिलकर एक व्यवसाय प्रारंभ करती है। उनके व्यवसाय की यह विशेषता है कि उनके कार्य स्थल (Work Place) को अनेक विभागों में बांट दिया जाता है तथा प्रत्येक विभाग कुछ विशेष वस्तुओं का विक्रय करता है। इस प्रकार ग्राहक की लगभग सभी आवश्यकताएँ एक ही जगह पूरी हो जाती हैं।
आपके विचार से उनके द्वारा किए जा रहे व्यवसाय का क्या नाम है ? इसकी कोई छः विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

इस तरह के व्यवसाय का नाम 'विभागीय भण्डार' (Departmental Store) है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

प्रश्न 33. सोनम राजपूत उत्तरप्रदेश के एक बहुत छोटे गांव की रहने वाली है। वह अपनी एम० बी० ए० की पढ़ाई पूरी कर चुकी है। क्योंकि वह गांव में रहती थी इसलिए उसने गांव के लोगों की समस्याओं को नजदीक से देखा है। उसके गांव के अधिक लोग बेरोजगार थे। कुछ लोग बहुत छोटे पैमाने पर फल उगाते थे। थोड़ी–थोड़ी मात्रा में फलों को बेचना उनके लिए एक बड़ी समस्या थी। उन्हें फल बेचने के लिए शहर जाना पड़ता था। वहाँ फलों के क्रेता बहुत कम भाव पर फल खरीद कर उनका शोषण करते थे। सोनम ने अपने कुछ सहपाठियों के साथ इस समस्या का हल निकालने पर चर्चा की। सभी ने मिलकर गांव में फलों का जूस बनाने की एक फैक्ट्री लगाने का निर्णय लिया। इससे लोगों को रोजगार भी मिलेगा और वे क्रेताओं के शोषण से भी बच सकेंगे। अंततः 'Friends Juice Manufactures' के नाम से फैक्ट्री स्थापित कर दी गई। सोनम के स्वयं के गांव व आस–पास के गांवों के लोग फल बेचने के लिए वहां आने लगे। सभी ने राहत की सांस ली। इतना ही नहीं बल्कि लगभग 200 लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ। देखते ही देखते उनका 'गुगली' ब्राण्ड जूस काफी लोकप्रिय हो गया। फैक्ट्री के सभी कर्मचारी खुश थे क्योंकि एक ओर उन्हें उचित पारिश्रामिक मिल रहा था तथा दूसरी ओर मुख्य निर्णयों में उनसे राय भी ली जाती थी। सोनम व उसके मित्रों ने शपथ ली कि वे किसी भी कीमत पर जूस में मिलावट नहीं करेंगे। वास्तव में उनका उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्यवर्धक पेय (Drink) प्रदान करना था।

एक दिन उनकी फैक्ट्री में उनका एक मित्र आया और उन्हें कर चोरी के अनेक रास्ते बताए लेकिन उन्होंने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया धीरे–धीरे उनके व्यवसाय का विस्तार हो रहा है। अब सभी साझेदारों को अपने निवेश (Investment) पर पर्याप्त लाभ भी प्राप्त होने लगा है। पूरे इलाके में सोनम व उसके मित्रों के निर्णय का जोरदार स्वागत हुआ है।

(क) उपरोक्त अनुच्छेद में पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए पहचानिए कि किन पक्षकारों (Parties) के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन किया जा रहा है। (पांच उदाहरण दीजिए)

(ख) सोनम व उसके मित्रों द्वारा समाज को प्रेषित एक मूल्य को पहचानिए।

अथवा

वातावरण संरक्षण से आप क्या समझते है वातावरण को व्यवसाय से कैसे खतरा है तथा व्यावसायिक प्रदूषण के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 34. यदि थोक व्यापारी को बिचोलियों की श्रृंखला से हटा दिया जाए तो निर्माता को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

अथवा

उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार में अंतर कीजिए किन्हीं 6 आधारों पर उत्तर लिखे।

उत्तरमाला (Answer Key)

उत्तर 1. कम्पनी

उत्तर 2. C2C

उत्तर 3. रोजगार

उत्तर 4. परम सद्विश्वास

उत्तर 5. पूर्वाधिकार अंश

उत्तर 6. उपरोक्त सभी

उत्तर 7.

उत्तर 8. असत्य

उत्तर 9. स्टार्टअप स्कीम

उत्तर 10. आरक्षित निधि

उत्तर 11. False/असत्य

उत्तर 12. भारतीय रिवर्ज बैंक

उत्तर 13. (ख) – 7

उत्तर 14. (ग) लाभ में हिस्सा प्रदान करना।

उत्तर 15. (ग) प्रत्यक्ष व्यापार

उत्तर 16. (ख) सार्वजनिक क्षेत्र

उत्तर 17. (ग) क्षतिपूर्ति का सिद्धांत

उत्तर 18. (घ) व्यवसाय + पेशा + रोजगार

उत्तर 19. (क) मानवीय

उत्तर 20. (ग) सहकारी समिति

उत्तर 21. यह कथन बिल्कुल सत्य है क्योंकि लाभ के बंटवारे से ही कोई संगठन साझेदारी संगठन साझेदारी संगठन नहीं बन जाता है साझेदारी संगठन की विशेषताएँ।

1. एक से अधिक व्यक्तियों का होना।

2. व्यवसाय का होना

3. अनुबंधित संबंध

4. स्वामी एवं एंजेट संबंध

उत्तर 22. इसका अभिप्राय यह है कि जब सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूक है तो प्रारिम्भक वर्षों में लोग उससे इतने प्रभावित हो जाऐंगे कि भविष्य के व्यवसाय समाज पर प्रभुत्व की स्थिति में आ जाएगा और उस समय वह समाज के अवलेहना कररने अनुचित लाभ कमाने का प्रत्यन कर सकता है। जब–जब किसी एक भी बड़ी संस्था चाहे वो धार्मिक, व्यावसायिक सेना या कोई अन्य हो ने समाज पर प्रभुत्व किया है जब तब उसके परिणाम अच्छे नहीं निकले है।

उत्तर 23. 1. सामाजिक उत्तरदायित्व

2. पारदर्शिला

3. औद्यौगिक विकास

4. निवेश वृद्धि

उत्तर 24. 1. विश्वः शान्ति में भागीदारी

2. रोजगार के अवसरों में वृद्धि

3. उच्च जीवन स्तर

4. संस्कृति का आदान–प्रदान

उत्तर 25. नहीं, सार्वजनिक क्षेत्र, कार्यकुशलता एवं लाभ को लेकर निजी क्षेत्र से प्रतियोगिता नहीं कर सकता

1. प्रबंध में अंतर (Difference in Management)

2. उद्देश्य (Motive) सार्वजनिक क्षेत्रों का उद्देश्य सेवा करना होता है अपितु निजी क्षेत्रों का उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है।

उत्तर 26. (1) अवधि ऋण (Term Loan)

(2) व्यवसाय (Business)

(3) रोजगार (Employment)

(4) पेशा (Profession)

(5) यातायात के नियमों की अवहेलना पर जुर्माना।

- जोखिम में वृद्धि।
- मानसिक अशान्ति।

उत्तर 27. (1) मि० राममूर्ति धारीवाल की राय
"जिस पर उन्हें कर लाभ .... हस्तक्षेप न हो।
- ऋणपत्र (Debentures)

(2) मि० अक्षय अग्रवाल की राय
"जो निवेशकों के दृष्टिकोण .... हिस्सेदारी न मिले।"
- ऋणपत्र (Debentures)

(3) कु० बिंदु गुगलानी की राय
"जो कंपनी के पूंजी ढांचे .... कर–लाभ प्रदान करें।"
- ऋणपत्र (Debentures)

उत्तर 28. (क) ई–कामर्स (e-commerce)
(ख) ई–बिजनिस (e-Business)
(ग) सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility)

उत्तर 29. (क) 1. मि० नारायण मिश्राः क्षतिपूरक अनुबंध (Contract of Indemnity)
2. मि० गोविन्द रायः जीवन बीमा अनुबंध (Life Insurance Contract)

(ख) पुनर्बीमा (Re-Insurance)

(ग) दोहरा बीमा (Double-Insurance)

अंतर का आधार (Basis of Difference)	समता अंष (Equity Share)	पूर्वाधिकार अंष (Preference Share)
1. प्रबंध में भाग (Participation in Management)	समता अंशधारियों को कम्पनी के प्रबंध में भाग लेने का पूरा अधिाकार होता है।	सामान्य परिस्थितियों में इन्हें प्रबंध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता।
2. लाभांश की क्रमबद्धता (Sequence of Dividend)	कम्पनी के लाभों में से समता अंशों पर लाभांश बाद में दिया जाता है।	इन्हें लाभांश समता अंशों से पहले दिया जाता है।

3. पूँजी वापसी का क्रम (Sequence of Refund of Capital)	कम्पनी के समापन पर इन्हें पूंजी की वापसी पूर्वाधिकार अंशों के बाद की जाती है।	इन्हें पूंजी की वापसी समता अंशों से पहले की जाती है।
4. जीवनकाल में पूँजी की वापसी (Refund of Capital During Life)	कम्पनी अपने जीवनकाल में समता अंश पूंजी को वापिस नहीं कर सकती।	शोध्य पूर्वाधिकार अंशों की पूंजी वापस की जा सकती है।
5. लाभांश की निश्चितता (Permanency of Dividend)	इस पर लाभांश अनिश्चित होता है अर्थात् लाभांश घटता–बढ़ता रहता है।	इन पर लाभांश की दर निश्चित होती है।
6. अनिवार्यता (Compulsion)	कम्पनी की स्थापना के लिए समता अंशों का निर्गमन किया जाना अनिवार्य है।	इनका निर्गमन अनिवार्य नहीं है।
7. संचयी प्रकृति (Cumulative nature)	यदि किसी वर्ष इन पर लाभांश न मिले तो लाभांश का संचय नहीं होता। अर्थात् पूर्व वर्ष के लाभांश को अलग वर्ष में नहीं लिया जा सकता।	संचयी पूर्वाधिकार अंशों का लाभांश जमा होता रहता है और पर्याप्त लाभ वाले वर्ष में प्राप्त हो जाता है।

उत्तर 31. 1. विभागीय उपक्रम (Department Undertake)
2. विभागीय उपक्रम (Department Undertake)
3. सार्वजनिक निगम (Public Corporation)
4. सरकारी कम्पनी (Government Company)

किन्हीं दो की विषेताओं को लिखे

उत्तर 32.इस तरह के व्यवसाय को विभागीय भण्डार कहते है।

विशेषताएँ (Characteristics)

1. एक की छत के नीचे अनेक विभाग होते हैं।
2. इनमें सभी प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध रहती हैं।

3. ये प्रायः बड़े नगरों में स्थित होते हैं।
4. ग्राहकों को अनेक निःशुल्क सेवायें प्रदान की जाती हैं।
5. इनमें कुशल विक्रेता कार्य करते हैं।
6. प्रत्येक विभाग के लिए पृथक प्रबन्धक होता है।

उत्तर 33.

(क) 1. "इतना ही नहीं बल्कि .... रोजगार भी प्राप्त हुआ।"
- समुदाय के प्रति (Towards public in general)

2. "फैक्ट्री के सभी कर्मचारी .... राय भी ली जाती थी।"
- कर्मचारियों के प्रति (Towards employees)

3. "सोनम व उसके मित्रों ने .... मिलावट नहीं करेंगे।"
- उपभोक्ताओं के प्रति (Towards Consumers)

4. "एक दिन उनकी फैक्ट्री .... ध्यान नहीं लगाया।"
- सरकार के प्रति (Towards Government)

5. "अब सभी साझेदारों को .... प्राप्त होने लगा है।"
- स्वामियों के प्रति (Towards Owners)

(ख) सामाजिक शोषण पर ध्यान लगाना (Concern for Social Exploitation)

अथवा

1. वायु प्रदूषण
2. जल प्रदूषण
3. शोर प्रदूषण

के बारे में विस्तार से लिखें

उत्तर 34. सर्पोट मेटिरियल के आंतरिक व्यापार अध्याय को पठे व लिखे।

अथवा

सर्पोट मेटिरियल के अध्याय व्यवसाय का प्रादूर्भाव एवं मूल तत्व को पढे व लिखें।

नोट्स

नोट्स

नोट्स